उराँव लोक-साहित्य

डॉ. तेतरू उराँव

उराँव लोकसाहित्य

डॉ० तेतरू उराँव

उराँव लोकसाहित्य

डॉ0 तेतरू उराँव
Assistant Professor, Kartik Oraon College, Gumla

2021

प्रकाशक
झारखण्ड झरोखा, राँची

प्रथम संस्करण : 2021
सर्वाधिकार : © तेतरू उराँव

Copyright: 2021 Tetru Oraon
Name: Oraon, Tetru. 1983—
Title: Urām̐v Lok-sāhitya (Oraon Folklore)
Publisher: Jharkhand Jharokha
Subject: Folk literature, Kurukh / Oraon
Description: Ranchi : Jharkhand Jharokha. xi + 320pp. Text mostly in Hindi, with examples in Kurukh. Includes bibliographical references and an index.
Price:Rs 350/-

विषय सूची

दो शब्द iv
भूमिका v
मानचित्र vii
गीत viii
तालिका ix
संक्षिप्त शब्दावली xi

प्रथम अध्याय

1. उराँव जनजाति 01
1.1 नामकरण 01
1.2 निवास 03
1.3 जनसंख्या 04
1.4 कुड़ुख़ भाषा बोलने वाले 04

द्वितीय अध्याय

2 उराँव लोकसाहित्य 07
2.1 लोकसाहित्य की परिभाषा 08
2.2 लोकसाहित्य की विशेषता 09
2.3 लोकसाहित्य का वर्गीकरण 11
2.4 लोकसाहित्य का महत्व 13

तृतीय अध्याय

3 उराँव लोकगीत 17
3.1 उराँव लोकगीत की परिभाषा 19
3.2 उराँव लोकगीत का वर्गीकरण 22
3.2.1 ऋतु संबंधी गीत 22
3.2.2 पर्व–त्योहार संबंधी गीत 32
3.2.3 खेती के गीत 67
3.2.4 संस्कार गीत 71
3.2.5 राग के आधार पर गीत 156
3.2.6 खेल गीत 158
3.2.7 बाल गीत 171
2.8 लोरी गीत 174
3.2.9 लड़का–लड़की के गीत 176
3.2.10 भजन गीत 180
3.3. उराँव लोकगीत की विशेषता 184

चतुर्थ अध्याय

4. उराँव लोककथा 186
4.1 उराँव लोककथा की परिभाषा 187
4.2 उराँव लोककथा का वर्गीकरण 188
4.2.1 मानव संबंधी कथा 189
4.2.2 पशु–पक्षी संबंधी कथा 193
4.2.3 भूत–प्रेत की कथा 195
4.2.4 साहसिक कथा 198
4.2.5 धार्मिक कथा 202
4.2.6 ऐतिहासिक कथा 208
4.2.7 मनोरंजन कथा 211
4.2.8 सृजन कथा 215
4.2.9 परिकथा 218
4.2.10 बाल कथा 223
4.2.11 सामाजिक कथा 226
4.3 उराँव लोककथा की विशेषता 228
4.3.1 पशु–पक्षियों का चित्रण कथा 231
4.4 लोककथा के तत्व 234
4.5.1 करम कथा 235
4.5.2 जितिया करम कथा 245
4.5.3 करम की विशेषता 246

पंचम अध्याय

5 उराँव मंत्र 247
5.1 मंत्र की परिभाषा 249
5.2 तंत्र–मंत्र की उत्पति 250
5.3 डायन विद्या 253
5.4 बिसाहा 254
5.5 ओझा–गुणी या भगत 254
5.6 मंत्र का वर्गीकरण 255
5.7 भगत के मंत्र 257
5.8 भगतों के प्रकार 257
5.8.1 भूंईभूट भगत 258
5.8.2 नागमतिया भगत 267
5.8.3 कौंरू भगत 277
5.8.4 दानाहा भगत 284
5.8.5 नेम्हा भगत 284

5.8.6 टाना भगत 286
5.9 कुछ बिमारी का दवा 297
6 उपसंहार 301
7 संदर्भ ग्रंथ की सूची 303
8 पत्र–पत्रिकाओं की सूची 307
09 साक्षात्कार की सूची 308
10 सामग्री संकलन क्षेत्र 310
11 शब्द सूची 311
12 परिशिष्ट 317

दो शब्द

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि श्री तेतरू उराँव द्वारा संकलित एवं लिखित ''उराँव लोकसाहित्य'' प्रकाशित किया जा रहा है। उन्होंने कई वर्षों के अथक प्रयास से कुँड़ुख़ भाषा एवं संस्कृति को विकसित करने का कार्य किया है। वे छात्र जीवन से ही सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चिन्तनशील व्यक्ति रहे हैं। उनकी लेखनी से स्पष्ट है कि उराँव जाति के बहुमुल्य सम्पति को लोगों के सामने लाने का प्रयास किया है।

लोकसाहित्य से ही लोक संस्कृति का निर्माण और विकास होता है। उराँव लोकसाहित्य लोक भाषा का ही जीवन्त रूप है। इसी माध्यम से सांस्कृतिक पुनर्जागरण संभव हो पाता है और यही हमारे सामाजिक मुल्यो, धर्म तथा दर्शन की संरक्षिका भी होती है। लोकसाहित्य के कारण ही लोक संस्कृति मानव जीवन और परम्परा का अभिन्न अंग बन जाती है। सांस्कृतिक इतिहास की सामग्री तो लोकसाहित्य में ही छिपी रहती है। संस्कृति के भग्नावशेषों के आधार पर जो लोकसाहित्य में छिपे पड़े रहते हैं, सांस्कृतिक इतिहास की खोज की जा सकती है। उराँव लोकसाहित्य अपने प्रकृति और सामाजिक पर्यवरण से ही लोकगीतों का विषय चयन करता है और उन्हें अपने समाज के आदर्शों के अनुकूल ढालने का प्रयास करता है। यही कारण है कि लोकसाहित्य उस समाज का उस समाज का स्वाभाविक और सटीक चित्रण प्रस्तुत करने में सक्षम है।

अतः हम निःसंदेह हम यह कह सकते हैं कि उराँव लोकसाहित्य का संबंध जितना प्रचीन है, उतना घनिष्ठ भी। इसके स्वरूप में उराँव समुदाय की प्रकृति एवं संस्कृति अपने रूप का बखान करती है। आदिकाल से ही उराँव जनजीवन प्रकृति के प्रांगण में जीवन–यापन करता आया है। इनकी लोक कथाओं का उद्भव–विकास भी प्रकृति के साथ हुआ। लोक कथाओं में पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, आकाश, धरती, नदियाँ और झरने आदि मनुष्य के साथ हंसते–बोलते, उसी तरह आचरण करते और एक दूसरे के सुख–दुःख में साथ रहते। कहीं उनकी सहयोगी तो कहीं संरक्षक हैं। उराँव लोक कथाएँ अपने समय की रूढ़ियों, नीतियों, प्रथाओं और सामाजिक एवं धार्मिक नियमों की व्याख्या करती है।

उन्होंने जीवन के सभी अनुभव और समस्त ज्ञान, उराँव लोकसाहित्य के माध्यम से संरक्षित किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक उराँव समाज और कुडुख़ भाषा के पाठकों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। मैं पुस्तक के लेखक डॉ0 तेतरू उराँव तथा उनके परिवार के साथ प्रकाशक को साधुवाद देते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

अध्यक्ष
डॉ0 नारायण भगत
कुँड़ुख़ (उराँव) साहित्य आकादमी
झारखण्ड

भूमिका

मनुष्य का प्रथम पाठशाला परिवार है। जहाँ बालक अपने माता–पिता की गोद में रहकर खाना–पीना, चलना–फिरना के साथ अपनी भाषा एवं संस्कृति को सीखता है। उन्हीं में से एक उराँव जाति भी है। इन्हें हम मुख्यतः उराँव, कुड़ुख़ या कुड़ख़र के नाम से संबोधित करते हैं। इनकी भाषा कुड़ुख़ है। इनका निवास स्थान मुख्यतः जंगलों–पहाड़ों या उनके समीप मैदानी क्षेत्र है। जंगलों के बीच एवं समीप रहने के कारण इनका लगाव प्रकृति से रहा है, अतः इन्हें प्रकृति का उपासक भी कहा गया है। कुड़ख़र को आदिकाल से ही कई नामों से सम्बोधित किया गया है, परन्तु उराँव जनजाति के नाम से ही प्रसिद्ध है। हम कहीं भी जाएँ, उराँव जनजाति के नाम से ही जाने जाते हैं। झारखण्ड एक बहु भाषी प्रदेश है। यहाँ कई भाषा–भाषी के लोग पाये जाते हैं। जिनकी अपनी भाषा, संस्कृति एवं विशेषताएँ हैं। उराँव भाषा, उराँव लोगों की भाषा है। जो द्रविड़ भाषा परिवार के अन्तर्गत आता है। इसी भाषा परिवार के अन्तर्गत मालतो भी आती है। उराँव भाषा झारखण्ड राज्य के अलावे छत्तीसगढ़, असम, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बंगाल, बिहार आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

उराँव लोकसाहित्य, उराँव लोक का दर्पण है क्योंकि उराँव लोगों का सारा जीवन–यापन लोकगीतों में ही समाहित रहता है। ये लोकगीत, लोकसाहित्य के अन्तर्गत आते हैं। ये लोकगीत मौखिक एवं गेय रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्थान्तरित होते चली आ रही है। इस लिए कुड़ुख़ लोकगीतों का संग्रह ''लील ख़ो–र'आ ख़े–ख़ेल'' किताब को कुड़ख़ों का ''कत्थ पण्डी'' कहा गया है। बच्चों को भी ज्ञान देने के लिए गीतों एवं कहानियों का प्रयोग आदिकाल से करते आ रहे हैं। जिससे हमारे जीवन में अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति जुड़ाव बनी रहे। अतः उराँव जनजाति वर्ष में अलग–अलग त्योहार मनाते हैं। प्रत्येक त्योहार के लिए अलग–अलग गीत एवं राग है। उराँव लोग उन्हीं गीत को गाते हैं, जो उस पर्व एवं मौसम से संबंधित हो। जो आज आधुनिकता के प्रभाव से, लोगों से दूर होता चला जा रहा है।

फुर्सत के क्षण, शाम के समय दादा–दादी, नाना–नानी हमें गीत, कहानी, बुझावल, कहावत आदि सुनाते थे। उनके साथ सुनने वालों को हुँकारी भी भरना पड़ता था, जिससे उत्साह वर्धक ज्ञान, जिज्ञासा, लक्ष्य की ओर बढ़ने की दिशा एवं प्रेरणा प्राप्त होता था। उराँव लोकसाहित्य की प्रासंगिकता आज भी गाँव देहातों में बनी हुई है जो संचार के साधनों से दूर हैं। आज टेलिविजन एवं अन्य मनोरंजन के साधनों का आविष्कार के फलस्वरूप इसकी प्रासंगिकता का अभाव होता जा रहा है। इस प्रकार उराँव लोकसाहित्य व्यक्ति और समाज से वंचित होता जा रहा है।

आदिवासी समाज में खास बात यह है कि पृथ्वी के सभी जीव–जन्तु, पेड़–पौधों को भी सर्व श्रेष्ट माना है। क्योंकि इनमें से, किसी में असमानता हो

जाने पर, पृथ्वी की ही संतुलन बिगड़ जाता है। हमें कई तरह के आपादाओं का सामना करना पड़ता है। आज पर्यावरण को संतुलन बनाये रखने के लिए विश्व के लोग लगे हुए हैं। हम बिना जीव–जन्तु और प्रकृति के नहीं रह सकते हैं। सभी हमारे लिए किसी न किसी रूप में सहयोगी रहे हैं।

इस धरती पर मानव का होना उतना ही जरूरी है, जितना की जीव–जन्तु और पेड़–पौधों का, इसे वैज्ञानिकों ने भी माना है। जैसा कि कुछ वर्ष पूर्व की बात है, माता–पिता बताते थे कि ''पानी'' हमारे जीवन में पीने के लिए उपयोगी है और इसका एकमात्र साधन कुँआ ही था। कुँआ का पानी में कीड़ा–मकोड़ा न हो इसके लिए कुँआ में मछली डालते थे, ताकि मछली, कुँआ का कीड़ा–मकोड़ा को खा जायेगा और पानी भी साफ रहेगा। यहाँ पर मछली, पानी को साफ करने में हमारी सहायता की है।

इस प्रकार उराँव लोकसाहित्य के अमूल्य ज्ञान एवं धरोहर को बनाए रखना, इसे लोगों के बीच फैलाना, अपनी भाषा, संस्कृति एवं रीति–रिवाज को संरक्षित रखना अनिवार्य है। अतः उराँव लोकसाहित्य का उद्‌भव और विकास कैसे हुआ, आगे चलकर इसका क्या महत्व होगा, हमारे पूर्वज जाने अनजाने में ही सही, लोकसाहित्य के निर्माण का कार्य करते रहे हैं, इसे इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत करना, इसका मूल उद्देश्य है।

इस पुस्तक को मूल रूप देने के लिए मैं सर्वप्रथम डॉ0 नारायण भगत को तहे दिल से धन्यावाद देता हूँ। जिन्होंने हर तरह से प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं सुझाव दिये। इसके आलावे जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के डॉ0 हरि उराँव, डॉ. त्रिवेणी नाथ साहु, डॉ0 उमेश नन्द तिवारी, इन्हें भी इनके प्रेरणा, मार्ग दर्शन के लिए धन्यावाद देता हूँ। साथ ही स्व0 बबलु तिर्की, बेन्दोरा, चैनपुर एवं डॉ0 (प्रो0) मासातो कोबायाशी, टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान, इन्हें भी इनके प्रेरणा, मार्ग दर्शन एवं सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ। इसके आलावे पुगु बड़का टोली के श्रीमति गोहरा उराँव, मनेश्वर उराँव, अरांगी, घाघरा, जन्ना, गुमला के श्री महादेव उराँव, पलमा डुगडुगिया के श्री चामु उराँव, दुन्दुरिया गुमला के श्री बलकु भगत, खोरा पतरा टोली, गुमला के स्व0 चरवा भगत, इन सभी के सहयोग के लिए भी मैं तहे दिल से धन्यावाद देता हूँ। साथ ही मेरे गुरूजी श्री विश्वनाथ प्रधान एवं श्री मनोज चीक बड़ाईक को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने विपरीथ परिस्थितियों में मेरा हौसला अफजाई किया है। इसके आलावे इस पुस्तक के प्रकाशक ''झारखण्ड झरोखा'' को भी धन्यावाद देता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का जिम्मेदारी लेकर, समाज में लाने में सहयोग किये।

डॉ0 तेतरू उराँव

चित्र 1 : क्षेत्रीय कार्य का मानचित्र

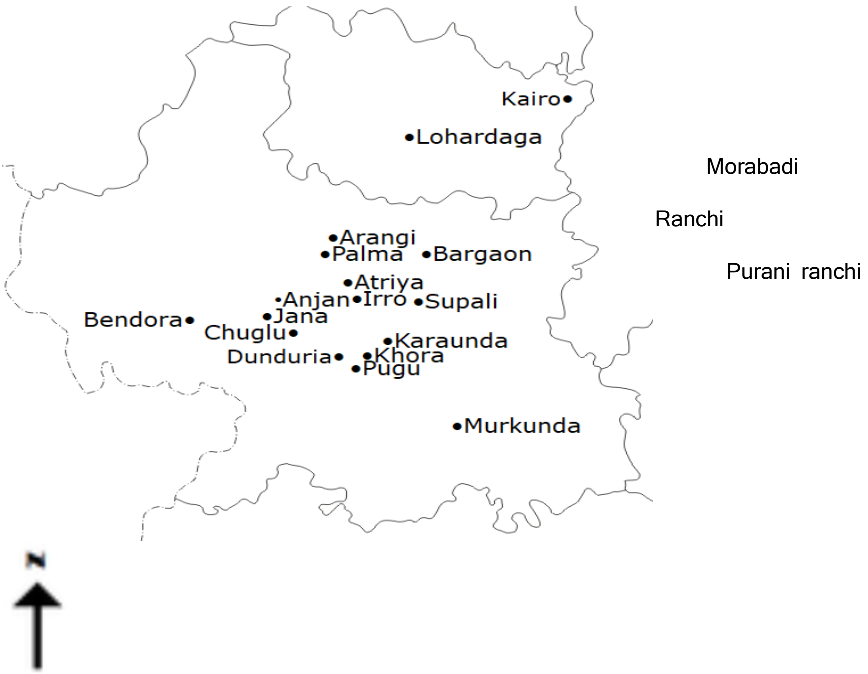

सामग्री संकलन क्षेत्र का मानचित्र

गीत

लोकगीत	: 1
ऋतु संबंधी गीत	: 2–5
जेठवारी गीत	: 5
आसारी गीत	: 6–10
जतरा गीत	: 11–14
अगहनिया गीत	: 15–16
ख़द्दी गीत	: 17–21
बुढ़ी करम गीत	: 22–25
करम गीत	: 26–59
विनती	: 52,192,193,194
खेती के गीत	: 60–68
जन्म संस्कार के गीत	: 69
विवाह गीत	: 70–121
मृत्य संस्कार गीत	: 122–126
राग के आधार पर गीत	: 127–130
खेल गीत	: 131–142
बाल गीत	: 143–147
लोरी गीत	: 148–150
लड़का–लड़की के गीत	: 151–160
भजन गीत	: 161–165
लोककथा के अन्तर्गत गीत	: 166–174
मंत्र	: 175–192, 196

तालिका

1. कुडुख़ भाषा बोलने वालों की संख्या 04
2. डॉ0 सान्ताराम के अनुसार विशेषता 10
3. डॉ. भुनेश्वर अनुज के अनुसार वर्गीकरण 11
4. श्रीराम शर्मा के अनुसार वर्गीकरण 12
5. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार वर्गीकरण 12
6. उराँव लोकसाहित्य का वर्गीकरण 13
7. नाच के आधार पर वर्गीकरण 20
8. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण 21
9. उराँव लोकगीत का वर्गीकरण 22
10. ख़द्दी पर्व का उद्देश्य 41
11. देवचरण भगत के अनुसार विवाह के प्रकार 109
12. विश्वनाथ भगत के अनुसार विवाह के वर्जनाएं 132
13. उराँव लोकगीत की विशेषता 184
14. उराँव लोकगीत की अन्य विशेषता 285
15. उराँव लोककथा का वर्गीकरण 188
16. परियों द्वारा सहायता की श्रेणी 218
17. लोककथा की विशेषता 228
18. उराँव लोककथा की अन्य विशेषता 230
19. कुमार सिंह खलखो के अनुसार करम डाली 237
20. बबलु तिर्की के अनुसार करम डाली 237
21. विन्देश्वर उराँव के अनुसार करम डाली 237
22. अपने अनुसार करम डाली 238
23. डाइन–डाईया के प्रति लोगों की धारणा 255
24. नागपुरी मंत्रों का वर्गीकरण 256
25. भगतों के मंत्रों का भाग 256
26. भगतों के प्रकार 257
27. नागमतिया मंत्र के प्रकार 270
28. चिती का नाम 273
29. पाठ बांधने की सामग्री 277
30. कौंरू भगत के कार्य का बांटवारा 278
31. टाना भगत का सामाजिक कार्य 290
32. टाना भगतों की विशेषता 291

संक्षिप्त शब्दावली

उ.स	.– उराँव संस्कृति
उ.स.ध.सं	– उराँव सरना : धर्म और संस्कृति
कु.क.क.	– कुडुख़ कत्थ'अइन अरा कत्थटूड़
छो.उ.री.	– छोटानागपुर के उराँव रीति–रिवाज
कु.लो.सा.	– कुडुख़ लोकसाहित्य
छो.आ.	– छोटानागपुर के आदिवासी
आ.ल.आ	– आदिवासी और लरका आन्दोलन
ना	– नागपुरी
कु.क.प.	– कुडुख़ कत्थपण्डी
लो.सा.प्र.	– लोकसाहित्य के प्रतिमान
ना.लो.सा.	– नागपुरी लोकसाहित्य
हि.भ.सा.लो.	– हिन्दी भक्ति साहित्य में लोक तत्व
उ.सं.प.दि.	– उराँव संस्कृति : परिवर्तन एवं दिशाएं
कु.भा.सं.	– कुडुख़ भाषा और संस्कृति
कु.क.कु.प.	– कुडुख़ कत्थपण्डी गहि कुन्दरना अरा परदना
ना.लो.	– नागपुरी लोकसाहित्य
मं.की.यं.त.	– मंत्र कीर्तन यंत्र और तंत्र
मं.र.	– मंत्र रहस्य
झ.इ.सं.	– झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति
कु.टा.	– कुडुख़ टाना
हि.सा.को.	– हिन्दी साहित्य कोष, भाग 1.
क.लो.सा.	– कनौजी लोकसाहित्य
ख.बो.लो.सा.	– खड़ी बोली का लोकसाहित्य
लो.सा.भू	– लोकसाहित्य कि भूमिका
लो.सा.सि.प्र.	– लोकसाहित्य के सिद्धान्त और प्रयोग
कु.क.ख़ी.ड.	– कुडुख़ कत्थख़ीरी अरा डण्डी
हि.भा.कुँ.भा.	– हिन्दी भाषा और कुँडुख़ भाषा
ख.लो.गी.प.	– खड़िया लोकगीतों की पहचान
अ.लो.सा.	– अवधी लोकसाहित्य
हि.भ.सा.लो.त	– हिन्दी भक्ति साहित्य में लोक तत्व
कु.क.क.कु.प.	– कुँडुख़ कत्था–कत्थपंडी गहि कुन्दरना अरा परदना
कु.भा.सं.	– कुँडुख़ भाषा और संस्कृति
स.द.	– सरना दर्शन
स.स.ड.	– सत्य सरना डहर

बी.व.का.रा. – बीस वर्ष की काली रात
अ.ने.ध. – अद्दियर गहि नेग धर्म
कु.भा.नृ.क.सं. – कुँडुख़ भाषा, नृत्य, कला और संस्कृति
भा.सं.आ. – भारतीय संस्कृति और आदिवासी
चिं.ड.खी. – चिंच्चो डण्डी अरा ख़ीरी
स.द. – सरना दर्शन
स.स. – सरना फूल, सरहुल पूर्व संध्या
रा.प. – राजी पड़हा : संदेश
स.क. – सरना फूल करम पूर्व संध्या
K.L.G.T.L – Kurux Language, Grammar, Texts and Lexicon.
O.R.C. – Oraon Religion and Customs.
O.Ch. - The Oraon of Chotanagpur.
B.G. – The Blue Grove.
O.C. – My Oraon Culture
S. - Sevatham
C.S.N.R. – Cradle Song and Nursery Rhymes

नोट – गीत, मंत्र, विनती, प्रार्थना आदि में बांयी पारा में कुडुख़ या अन्य भाषा में लिखा गया है और दाहिना पारा में उसी का हिन्दी लिखा गया है।

प्रथम अध्याय

1 उराँव जनजाति

छोटानागपुर खनिज सम्पदा से अछादित है। इस पावन धरा पर 32 जनजातियाँ निवास करती है। संथालों के बाद दूसरी बहुसंख्यक जनजाति उराँव है। वे सरना धर्मावलम्बी है जो प्रकृति पूजा पर आधारित हैं। इसके लिए सूर्य को धर्मेश (भगवान) का नाम दिया है। इन्हें हम मुख्यतः उराँव, कुडुख़ या कुड़ख़र के नाम से संबोधित करते हैं। इनकी भाषा उराँव/कुडुख़ है। इनका निवास स्थान मुख्यतः जंगलों–पहाड़ों या उनके समीप मैदानी क्षेत्र है। जंगलों के बीच एवं समीप रहने के कारण इनका लगाव प्रकृति से रहा है, अतः इन्हें प्रकृति का उपासक भी कहा गया है। उनका विश्वास है कि भगवान सर्व शक्तिमान है और कण–कण में विराजमान रहते हैं। इसलिए जहाँ सका वहीं भगवान को याद करने लगा।

आदिवासियों के बीच संगठित होने के नाते धर्मों के प्रचार–प्रसार के पूर्व प्रकृति को मानने वाले आदिवासियों को कभी भी भगवान की आवश्यकता नहीं हुई। आज भी संगठिन रूप से रहने वाले आदिवासी भगवान को नहीं मानते हैं। वे सिर्फ अपने पूर्वजों के अस्तित्व को ही मानते हैं और वे अपने कमाई का हिस्सा सबसे पहले पूरखों को ही अर्पित करते हैं। साथ ही प्रकृति को भी हिस्सा देने की प्रथा है। किसी भी प्रकार का पाकवान बनने पर सबसे पहले पूर्वजों को ही दिया जाता है। इसका प्रमुख उदाहरण इनके पर्व–त्योहारों में देखी जा सकती है और इनका पर्व त्योहार प्रकृति से ही जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि आदिवासियों का धर्म ग्रंथ नहीं है। वे प्रकृति को ही धर्म ग्रंथ मानते हैं। उनका विश्वास है कि यदि प्रकृति से खिलवाड़ करोगे तो तुम्हें उसका दण्ड अवश्य मिलेगा। इस लिए इन्हें डर है तो सिर्फ प्रकृति से। और आज यह विकट स्थिति भी सामने दिखाई दे रही है। इसी का परिणाम कभी बेमौसम वर्षा तो कहीं ओलावृष्टि देखी जा सकती है।

1.1 नामकरण

उराँव आदिवासी को आदिकाल से ही कई नामों से सम्बोधित किया गया है, परन्तु उराँव जनजाति के नाम से ही प्रसिद्ध है। हम कहीं भी जाएँ, उराँव जनजाति के नाम से ही जाने जाते हैं, न कि कुड़ख़र से।

इसी प्रकार A Dravidian Etymological Dictionary, T. Burrow and M.B. Emeneau,151 में कुडुख़ का अर्थ ''पश्चिम'' बताया गया है। डॉ0 शान्ति खलखो ने (उ.सं.प.दि.04) में उराँव लोककथा का जिक्र की है। उराँव लोककथा में मंगरा कुजूर का अलग ही तर्क है। वे एक उराँव समाज के कर्मठ, सामाजिक

कार्यकर्ता, उराँव धर्म एवं संस्कृति के संबंध में गहन चिन्तन मनन करने वाले विद्वान हैं। उनके द्वारा उराँव लोककथा में सत्यता प्रतीत होती है। क्योंकि अभी भी यह परंपरा उराँव जाति में प्रचलित है। उराँव जाति के मुख्य पर्व सरहुल में सूर्य देव एवं धरती माँ की आराधना की जाती है। जिससे सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है। यह पर्व इनके धर्म का मुख्य आधार है। कुड़ुख़ भाषा में ''रम्फ'' का अर्थ ''सूर्य की किरण'' होता है। सूर्य की किरण (रम्फ) से सृष्टि हुई है। अपनी सृष्टि को समाप्त करने के लिए धर्मे बाबा ने दुनियाँ में आग लगा दी। जिससे सबकुछ जलकर नष्ट हो गया। इसके बाद 'धर्मेश' पृथ्वी पर आये। पृथ्वी का यह दृश्य देख कर उन्हें दया आयी, वे पश्चाताप कर रहे थे। तभी उन्होंने दो बच्चों (एक लड़का और एक लड़की) को एक गुफा में छिपे हुए पाया जो उन्हीं को याद कर रहे थे, उनसे विनती कर रहे थे 'ओ रम्फ'' ये आपने क्या किया, ''ओ रम्फ'' हमारी रक्षा करें। सृष्टि का पुनः निर्माण करें आदि। 'धर्मे' ने उन बच्चों की विनती सुन ली, उन्हें बच्चों पर दया आ गई। उन्होंने बच्चों को खेत बनाने को कहा और स्वयं बीज लाने चले गये। बीज लेकर आने के बाद भगवान ने उन्हें कृषि कार्य का विधि भी बताया। उन्हें पशु–पक्षी भी दिया और स्वयं लुप्त हो गये। यही बच्चे उराँव के प्रथम पूर्वज थे। अभी भी अनावृष्टि होने पर उराँव लोगों में डर समा जाता है कि पेड़–पौधे सूख रहे हैं और कहीं कोई अनिष्ट होनेवाला है। वे तरह–तरह के विधि–विधान करते हैं। ''ओह रम्फ'' हमारी मद्द करो, इस तरह विनती करते हैं। यही 'ओह राम' सुनाई पड़ता है। तब दूसरे (बाहरी) लोगों ने उन्हें ''ओ राम'' व्यक्ति कहा, यही ''ओ राम'' से ''उराँव'' शब्द बना। आज भी उराँव समाज में स्नान के बाद रोज दिन भगवान सूर्य को जल अर्पित करते है।

साधारणतः कुँड़ुख को उराँव का पयार्यवाची शब्द माना जाता है। परन्तु गहराई से विचार करे तो दोनों में अन्तर, स्पष्ट दिखाई देता है। उराँव जनजाति अपनी भाषा में स्वयं को कुड़ुख़र कहते हैं। जिनकी अपनी भाषा कुड़ुख़ है एवं जाति उराँव है। परन्तु देखा जाए तो कुड़ुख़ शब्द, भाषा एवं जाति दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। जैसे– ''नाम कुड़ख़त तलदत।'' (हम कुड़ुख़ जाति के हैं) यहाँ ''कुड़ुख''. शब्द जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार–'नम्हय भख़ा कुड़ुख तली' (हमारा भाषा कुड़ुख़ है) में ''कुड़ुख़'' शब्द भाषा की ओर संकेत करता है।[1]

डॉ0 भगत (छो.उ.री.16) कुड़ुख़ शब्द का नामकरण ''कुरू'' राजा के नाम

[1] उराँव और कुड़ुख़ शब्द के उत्पति के संबंध में और अधिक जानकारी कई पुस्तकों में मिलती है। इस कारण से इसे विस्तार से जाना नहीं चाहता हूँ। सबसे अधिक डॉ0 शान्ति खलखो की किताब, उराँव संस्कृति : परिवर्तन एवं दिशाएं, में विस्तार से बताया गया है। इसमें लगभग सभी विद्वानों के कथन का संग्रह है। जैसे कि ''द उराँव ऑफ छोटानागपुर, एस.सी.राय'', कुड़ुख़ ग्रामर, एफ.हान, बिहार के आदिवासी, जियाउद्दीन अहमन, बिहार के उराँव, डॉ0 प्रकाश उराँव, मुण्डा एवं उराँव का धार्मिक इतिहास, डॉ0 दिवाकर मिंज जैसे कई विद्वानों का संग्रह किया हुआ है। इस लिए इस विषय पर और आधिक लिखने की अवश्यकता नहीं लगता है।

पर पड़ा होगा, जो कुरू क्षेत्र के राजा थे। प्राचीन काल में कुरू क्षेत्र को कुड़ुख़ क्षेत्र कहते थे। कुड़ुख़ क्षेत्र से ''कुरूख़ क्षेत्र'' और बाद में ''कुरूक्षेत्र'' कहलाने लगा।

1.2 निवास

उराँव परम्परा के अनुसार (छो.उ.री.14) उराँव जाति के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मोहनजोदड़ो और हड़प्पा (सिंधु घाटी सभ्यता) में था। कालान्तर में इनका विकास–विस्तार दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र के डेकन में कोंकन नामक स्थान पर हुआ, ये नन्दनगढ़, पिपरीगढ़, हरदीनगर, आदि स्थानों में थे। उराँव लोगों का दूसरा दल सिंधु घाटी से दिउली, कुरूक्षेत्र, अजमगढ़, पटनोगढ़ (पटना) बनारस होते बिहार के शाहाबाद जिला में सोन नदी के तट, रोहतास की पहाड़ी में केन्द्रित होकर जा बसे। रोहतासगढ़ में इनकी शासन व्यवस्था थी। वहाँ इनका रहन–सहन, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था उच्चकोटि की थी। इसी कारण से उरगन ठाकुर कहनाते थे। इस संबंध में डॉ0 भगत (वही 21) ने बताये हैं कि प्राचीन काल में उराँव लोग राज्य संचालन में बहुत निपुण थे, उराँवों की अपनी शासन व्यवस्था थी। वे स्वयं राज्य चलाते थे, शासन पद्धति और रहन सहन उच्च कोटी की थी। उराँव लोग स्वयं ''जनेऊ'' धारण करते थे। अन्य जाति का पकाया हुआ भोजन ग्रहन नहीं करते थे। उच्च कोटी के रहन–सहन के कारण ऊँची जाति में समझा जाता था, इसी वजह से ''उरागन ठाकुर'' कहलाते थे। महिला वर्ग में राजा, मंत्री, दीवान, सेनापति हुआ करती थी।

पुरखों का यह भी कहना है कि हमारे पूर्वज जनेऊ धारण करते थे और किसी प्रकार का नशापान नहीं करते थे। जनेऊ धारण करने कारण ही उन्हें ''उरागन ठाकुर'' के नाम से जाना जाता था। (स.द.21:2017) अन्त में ई0 पूर्व में रोहतासगढ़ से झारखण्ड के पठारी भाग तथा राजमहल की पर्वतीय इलाकों में इनका विस्तार हुआ। इसी तरह से उरगन ठाकुर के नामकरण के पीछे यह भी तर्क है कि उराँव जाति में जब किसी की मृत्यु हो जाती है और शव को दफनाकर, जब नदी, तालाब या पोखरों में स्नान करने जाते हैं, वहाँ पंच लोग ही, लोगों का बाल उतारने का कार्य अर्थात ''ठाकुर'' (नाई) का काम करते हैं।[2] इसी लिए उराँव जाति को ''उरागन ठाकुर'' के नाम से भी पुकारने लगे।

आज भी उराँव जाति अपने पूजा–पाठ करने के समय, अपने पुरखों के स्थानों को याद करते हुए कि किन–किन स्थानों पर होते हुए, यहाँ तक आये,

---

[2] उराँव समाज में पंच को ही भगवान मानता है। इसीलिए बाहर से किसी की मृत्यु के समय किसी ठाकुर का बाल उतारे के लिए नहीं बुलाते हैं। पंचों को ही परमेश्वर माना गया है। रही सबसे बड़ी बात, तो इन्हें दक्षिणा के नाम पर एक रूपया भी नहीं देना पड़ता है और इनमें किसी प्रकार का लोभ की भवना नहीं होती है। वे अपने निस्वार्थ भाव से उनके घर का सारा कार्य करते हैं। बस उन्हें चाहिए तो मान–सम्मान केवल। हिन्दु धर्म में बाल उतारने का कार्य ठाकुर करते हैं और ठाकुर के लिए दान–दक्षिणा के रूप में कुछ न कुछ देना पड़ता है।

उसका नाम लेते हैं। इनमें से सभी नाम तो नहीं परन्तु अधिकतर नामों की चर्चा अपने पूजा पाठ में करते हैं। जैसे कि रोहतासगढ़, पिपरागढ़, हरदीनगर, अजमगढ़, पटनोगढ़ आदि।

कुड़ुख़ भाषा में एक कहावत है ''कुड़खय का तुड़कय? कुड़ुख़ कत्थन बलदय।'' (उराँव हो या दूसरे जाति के? कुड़ुख़ भाषा नहीं जानते हो।) यह कहावत आज भी लोगों के जुबान पर सुनी जा सकती है। कुड़ख़य यानि अपने जाति का और तुड़कय यानि तुर्क या दूसरे जाति का। इस कहावत को डॉ0 नारायण उराँव (स.स.5:1991) ने इस प्रकार से व्याख्या किये हैं। इस कहावत से पता चलता है कि पूर्व में भाषा का आधार पर ही एक दूसरे सम्प्रदाय से भिन्न समझा जाता था। साथ ही इससे तुर्क के आगमन का भी संकेत मिल जाता था। निश्चय ही तुर्कों की लूट–खसोट एवं विनाशकारी से तंग आकर अपने पूर्वजों ने अपनी पहचान का आधार, भाषा को ही बनाया होगा। उस समय भाषा का महत्व कुछ और ही था, किन्तु आज से इसे कम महत्व दिया जा रहा है। कहीं ऐसा न हो, जब आपसे ही पूछा जाय कि–''कुड़ख़य का तुड़कय? कुड़ुख़ कत्था बलदय।'' तब कितना आपमान जनक बात होगी।

1.3 जनसंख्या

उराँव जाति की अपनी भाषा ''कुडुख'' है। जिन्हें भाषा विद्वानों ने द्रविड़ भाषा परिवार में रखा है। कुड़ुख़ भाषा भारत के मुख्यतः झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उड़िसा, पश्चिम बंगाल, असम, दिल्ली आदि राज्यों में प्रमुखतः से बोली जाती है। इसके पश्चात भारत के अन्य पड़ोसी देश नेपाल, बंगलादेश, भूटान में भी बोली जाती है। परन्तु महेश भगत के अनुसार (कु.भा.सं.9) इन देशों के अलावे यू0 ए0 एस0, रोम, स्वीडेन आदि देशों के कुछ हिस्सों में पाये जाते हैं। कुड़ुख़ भाषा द्रविड़ भाषा परिवार से संबंध रखती है। इनकी जनसंख्या 2011 के अनुसार 4,411,000 लोग पूरे भारत में निवास करते हैं। और पूरे विश्व में 4,570,000 के लगभग निवास करते हैं और कुड़ुख़ भाषा बोलने वालों की संख्या 20 लाख है। 2011 के जनगणना के अनुसार पूरे भारते में 2.28 मिलियन है।

1.4 कुड़ुख़ भाषा बोलने वाले

कुड़ुख़ भाषा बोलने वाले जनगणना 2011 के अनुसार भारत के विभिन्न राज्यों में निम्न प्रकार से हैं।

तालिका 1 : कुड़ुख़ भाषा बोलने वाले की संख्या

1.	झारखण्ड	1,703,000
2.	छत्तीसगढ़	760,000
3.	असम	710,000
4.	पश्चिम बंगाल	635,000

5.	उड़ीसा	354,000
6.	बिहार	143,000
7.	महाराष्ट्र	43,000
8.	मध्यप्रदेश	28,000
9.	त्रिपुरा	12,000
10.	अरूणाचल प्रदेश	10,000
11.	अण्डामन निकोबर	7,100
12.	उत्तर प्रदेश	2,500

बंगलादेश में कुडुख़ बोलने वालों की जनसंख्या एक अनुमान के अनुसार 65,000 निवास करते हैं। (The Kurux of bangaldesh: A Sociolinguistic Survey,09) जो भारत विभाजन के दौरान रह गये। उनमें आज भी वैवाहिक संबंध बना हुआ है और विवाह के दौरान कुछ दिन के लिए आना जाना होता है। (बंधन उराँव, दीनाजपुर पं0 बंगाल) अभी भी वहाँ के लोग अपने लोगों के बीच वार्तालाप करते हैं, तो 96 प्रतिशत कुडुख़ भाषा का प्रयोग करते हैं। इसी तरह नेपाल में 28,600 और भूटान में 5,000 के लगभग लोग बोलते हैं। इनमें ब्राहुई और मालतो इनकी सबसे नजदीकी भाषा है। मालतो झारखण्ड के राजमहल, गोड्डा, पाकुड़ के इलाकों में बोली जाती हैं। इसी तरह किसान बोली 2011 के अनुसार 206,100 लोग बोलने वाले हैं। इतनी अधिक बोली जाने वाली भाषा होने के वावजूद कुडुख़ भाषा आज संकट के दौर से गुजर रही है। इस प्रकार देखा जाय तो झारखण्ड के आलावे कई राज्यों के साथ अपने पड़ोसी देशा में भी कुडुख़ भाषा बहुत्या से बोली जाती हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस नाते अपनी रीति–रिवाज को अच्छुन बनाए रखना अति आवश्यक है। उराँव जनजाति के रीति–रिवाज बहुत अधिक समृद्ध है। इनकी रीति–रिवाज को जानने के लिए जबतक इनकी गहराई तक नहीं जायेगें, तब तक इनकी वास्तविकता को समझ पाना सम्भव नहीं है। इनकी रीति–रिवाज एवं स्वाभाव को जानने के लिए इनकी गहराई तक पहुँच कर ही महत्व एवं विशेषता को समझ सकते हैं। उराँव जनजाति अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक व्यवस्था में अलग पहचान के लिए जानी जाती है। इनकी रीति–रिवाज के अन्तर्गत लोकगीत, लोककथा, पर्व–त्योहार, रहन–सहन, खान–पान सभी आदिकाल से ही एक विशिष्ट पहचान बना चुका है। क्योंकि उराँव समाज में इनकी धर्म एवं संस्कृति ही इनका धरोहर है। यह किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़ा हुआ है और समाज के लोगों को एक साथ बांध कर रखा है। इन्हें एक दूसरे से अलग कर, इनकी मूल रूप को नहीं देखा जा सकता है। संस्कृति समाज का दर्पण होता है, जो अपने जीवन में स्वाभाविक रूप से चली आ रही है तथा मानव जीवन में जन्म से मृत्यु तक चलती है।

एकता एवं अखण्डता के साथ–साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक एवं अन्य पर पड़ता है। जिसके फलस्वरूप इनका सम्पूर्ण जीवन प्रभावित होता है। विभिन्न नामों से प्रचलित होने के कारण आज इनकी जनसंख्या का सही आंकलन नहीं हो पाता है। आज विभिन्न नामों ने इनकी अस्तित्व एवं पहचान को खतरे में डाल दिया हैं। जहाँ एक ओर सरकार जनजातियों के विकास के लिए प्रयासरत है, वहीं दूसरी ओर विद्वानों द्वारा अपनी पुस्तकों में गलत, तथ्यहीन बातें लिख दिया गया है, जिससे लोग उत्साहित होने के बजाय हतोत्साहित होते हैं। वर्तमान में इनकी भाषा और संस्कृति के बारे में लिखने की जरूरत समझते हुए इनकी संस्कृति और परम्पराओं के बारे में लिखा जा रहा है। आदिवासियों ने अपना धर्म–ग्रंथ तो नहीं लिखा, परन्तु उनके अनुसार अपना जीवन यापन किया। उनके लिए समय–समय पर गीतों को गाया और कहानियों को समय–समय पर लोगों को बताया और अपने जन–जीवन में इसे संजोकर रखा हैं।

आज भी आदिवासियों को इनकी मुख्य धारा से ही पहचाना जा रहा है। आज कुछ सभ्य वर्ग ही अपनी संस्कृति, परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं। जब हम उराँव जनजाति की बात करते हैं तो यह जाति बहुत ही समृद्ध जाति रही है। ये जाति और लोगों को अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गाँव में बसाया है। उराँव या कुड़ुख़ नामकरण तो छोटानागपुर आने के बाद हुआ है। जिसमें विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने तर्क दिये हैं। डॉ0 नारायण भगत एवं श्री विगलाल उराँव का भी मानना है कि हमारे पूर्वज छोनागपुर आने के पूर्व समृद्ध जाति रही होगी। यहाँ आने के बाद उराँव जाति को असभ्य जाति कहने लगे, ऐसी बात नहीं है। महली लिविंस तिर्की (करम, 5) ने भी माना है कि उराँव जाति, पहले सभ्य एवं समृद्ध जाति रही है। इतिहास के विद्वान लिखते है कि सिधु घाटी सभ्यता के भाषाविद प्रो0 पारपोला आदि का मानना है कि द्रविड़ों के पुरखे भूमध्य सागरीय इलाके में रहने वाले कहलाते थे। द्रविड़ जाति के लोगों ने करीब 3500 ई0पू0 ईरान होते हुए भारत वर्ष में प्रवेश किया और सिंधु घाटी की सभ्यता की नींव डाली। करीब 2500 ई0र्पू0 और 2100 ई0पू0 के बीच इनकी सभ्यता तरक्की की शिखर तक पहुंच गयी। इनकी सभ्यता द्रविड़ सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध हुई। द्रविड़ों ने हराप्पा, मोहेन जोदाड़ो, कालीबंगन आदि नगर बासाये। इसी तरह से जीतु उराँव (सिं.घा.47) ने लिखा है कि सच तो यह है कि सिंधु सभ्यता निवासी कुड़ख़र विकास के उच्चतम शिखर पर विराजमान थे। जहाँ उनकी सामाजिक स्थिति इतनी सुदृढ़ थी कि वे किसी भी प्राकृतिक आपदा से अपने समुदाय को सुरक्षित बाहर ले जाने में पूरी तरह सक्षम थे। इससे स्पष्ट पता चलता है कि द्रविड़ जाति के लोग ही उराँव जाति के हैं। जिसकी सभ्यता संस्कृति बहुत ही उन्नत थी। जिसे कई तरह के प्रताड़ना के कारण कई टुकड़ो में बिखर कर रह गया हैं। अतः हमें इनकी भाषा, संस्कृति, परम्परा की सही व्याख्या कर ही हम उराँव जाति को विकास के शिखर पर पहुँचा सकते हैं।

द्वितीय अध्याय

2 उराँव लोकसाहित्य

उराँव लोकसाहित्य, उराँव लोक का दर्पण है क्योंकि उराँव लोगों का सारा जीवन–यापन लोकगीतों एवं लोक कथाओं में ही समाहित रहता है। ये लोकगीत एवं लोककथा, लोकसाहित्य के अन्तर्गत आते हैं। ये साहित्य मौखिक एवं गेय रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्थान्तरित होते चली आ रही है। इस लिए उराँव़ लोकगीतों का संग्रह ''लील ख़ोर'आ ख़ेख़ेल'' किताब को उराँवों का ''कत्थ पण्डी'' कहा गया है। इन्हीं गीतों से लोगों को कई तरह के ज्ञान प्रदान कर रहे हैं। बच्चों को भी ज्ञान देने के लिए गीतों एवं कहानियों का प्रयोग आदिकाल से करते आ रहे हैं। हमारे पूर्वजों का गीत, कहानी एवं बुझुवल आदि बताने का क्या कारण रहा होगा? पूर्वजों के कहानी को सुनकर एवं पढ़ कर मुझे लगता है कि वे हमें जीवन जीना, संस्कृति, नाच–गान, सवंग, डर–भय आदि का ज्ञान प्रदान कर रहे थे।

कहा जाता है कि किसी भी जाति को मिटाना है तो उसकी भाषा और संस्कृति को मिटा दो, वह जाति स्वतः मिट जाएगी। इससे यह पता चलता है कि अपनी मातृभाषा और संस्कृति, समाज के लिए कितना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कोई भी जाति कितनी समृद्ध है, सुसंस्कृत है, सभ्य है, स्वावलम्बी है एवं स्वाभिमानी है, उसका आशय होता है, उसका भाषा एवं संस्कृति मजबूत है। हम देखते है कि जिस जाति की अपनी भाषा एवं संस्कृति मजबूत है, उसका इतिहास गौरवपूर्ण, प्रेरणास्पद, अन्य जातियों के लिए उदाहरणीय, अनुकरणीय तथा सम्माननीय है। यदि इन बातों को ध्यान में रखकर उराँव जाति पर विचार करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि निश्चित ही उराँव लोगों की भाषागत एवं सांस्कृतिक स्थिति गौरवमयी तथा अन्य जनजातियों से सर्वाधिक चर्मोत्कर्ष पर है। अतः उराँव जनजाति वर्ष में अलग–अलग त्योहार मनाते हैं।

लोक साहित्य लोक की चेतना का वाहक होता है और लोक चेतना सदा समाज की परम्परा और परिस्थितियों पर आधारित होती है। यही नहीं, उसकी सर्जना और उपयोगिता भी कला की अपेक्षा सामाजिक दायित्व पर निर्भर करती है। वस्तुतः लोक साहित्य रचा नहीं जाता है। वह बादलों की तरह झरता और घास की तरह उगता है। वह अपने क्षेत्र की मिट्‌टी, पानी में ठीक उसी रूप में उगता और फलता–फूलता है, जिस रूप में वह समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। इस लिए न वह मानसिक ऐय्यासी है और न उद्दीप्त क्षणों की काल्पनिक सृष्टि। वह तो जीवन की श्रमशील परिस्थितियों, समाज के सक्रिय संघर्षो, विषमतओं और प्रकृति जन्य बाधाओं के बीच लोक कंठों में स्वतः फूट पड़ता है।

2.1 लोकसाहित्य की परिभाषा

'लोक साहित्य' शब्द 'फोक लिटरेचर' का अनुवाद है। यह अंग्रेजी के अनुकरण पर बना है। 'फोक' का पर्याय 'लोक' और 'लिटरेचर' का 'साहित्य' है। और इसी 'लोकसाहित्य' की व्याख्या अनेक प्रकार से कई विद्वानों ने की है।

डॉ0 इग्नासिया टोप्पो (कुल्लू) (ख.लो.गी.प.13) ने लोक साहित्य को खड़िया जाति की विशेष धरोहर बताया है। न जाने कब, किसने इनका निर्माण किया, जिन्हें मौखिक परम्परा के प्रवाह ने आज हम तक पहुँचाया है। इनका मूल रूप कैसा रहा होगा, यह कल्पना और चिन्तन का विषय हो सकता है। प्राकृतिक परिवेश में पलने वाले इस समुदाय ने, अपनी प्राकृत भावनाओं की अभिव्यक्ति, अपने सहज शब्दों में लोकगीत के माध्यम से की है।

''वास्तव में लोकसाहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है, जो भले ही किसी व्यक्ति ने न गढ़ी हो, पर आज जिसे सामान्य लोकसमूह अपना मानता है।'' इसी परिभाषा के क्रम में डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय (लो.सा.भू.16) द्वारा दी गई परिभाषा भी उद्धृत की जाती है–''सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली, अपनी सहज अवस्था में वर्तमान में जो निरक्षर जनता है उसकी आशा–निराशा, हर्ष–विषाद, जीवन–मरन, लाभ–हानि, सुख–दुःख की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है, उसे लोकसाहित्य कहते हैं।''

इसी प्रकार डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना.लो.सा.11) के शब्दों में ''लोकसाहित्य, लोक समूह द्वारा स्वीकृत व्यक्ति की परम्परागत मौखिक क्रम में पायी वह वाणी, जिसमें लोकमानस संगृहित रहता है। आदिम मानव के मस्तिष्क की सीधी तथा सच्ची अभिव्यक्ति ही लोक–वार्ता तथा लोक–साहित्य है।'' इस प्रकार हम देखते है कि लोकसाहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। प्राचीन से अर्वाचीन तक लोक मानस की समस्त क्रिया–प्रक्रियाओं का इतिहास इसी में समाया हुआ है।

इस प्रकार देखा जाय तो लोक–साहित्य चाहे वह कविता हो, चाहे नाटक–नाटिक हो, दृश्यमय हो या केवल भावनामय, एक बात सुनिश्चित है कि उस पर धार्मिक प्रवृतियों और सामाजिक विचारों का गहनतम प्रभाव बना ही रहता है क्योंकि भारत और उसके ग्राम, धर्म और संयुक्त संस्कृति के प्रबल सर्मथक है। इस कारण कवि इन सीमाओं से अधिक स्वतन्त्र होकर उड़ान नहीं कर पाता। ऐसा नहीं कि उसके काव्य में पिपासा नहीं, वासना नहीं या भावों का उद्रेक नहीं, यह सब कुछ अवश्य है, पर वह धर्म और समाज के अंकुश से पूर्णतः निर्देशित भी है।[3]

---

[3] लोक और लोकसाहित्य के संबंध में कई विद्वानों एवं लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। इस लिए मैं और अधिक इस विषय पर नहीं कहना चाहता हूँ। इससे संबंधित कुछ किताबों का नाम लेना चाहता हूँ। श्याम परमार का मालवी लोकसाहित्य, डॉ0 श्रीराम शर्मा का लोकसाहित्य सिद्धान्त और और प्रयोग, सरोजनी रोहतगी का अवधी लोकसाहित्य, डॉ0 सत्येन्द्र का लोकसाहित्य विज्ञान, डॉ0 सुरेश, डॉ0 वीणा

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों के विचारों को अध्ययन से पता चलता है कि भारत गाँवों का देश है। यहाँ की अधिकतर आबादी गाँवों में निवास करती है। परन्तु गाँव एवं नगरों को दो भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक गाँव एवं नगर से दोनों का अटूट संबंध है। कुछ ग्रामीण जनसंख्या नगरों में निवास करती है, जो आज भी अपनी परम्परा एवं रीति–रिवाज को निर्वाह करते आ रही है। अर्थात हम कह सकते हैं कि जो गाँव एवं शहरों में निवास करती है तथा आज भी अपनी आदिम परम्परा के अनुसार, उन्हीं पर आस्था एवं लोकविश्वास को मानते आ रहे हैं। उन्हें ''लोक'' कहा जा सकता है। जो लोक जीवन में ही क्रियाशील रहता है। इसका प्रमुख उदाहरण है, हमारे पूर्वोजों अर्थात मृत आत्मा में विश्वास, पूजा अनुष्ठान में बलि देना, सरहुल, करम पूजा एवं उपवास आदि। जो लोक के यर्थात रूप को प्रकट करता है।

उपर्युक्त परिभाषा के संदर्भ में भी लोकसाहित्य मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। जो सभ्यता एवं आधुनिकता के प्रभाव से दूर, उनकी रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, पहनावा, ओढ़ावा, नाच–गान की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है, उसे ही लोकसाहित्य कहा जाता है।

2.2 उराँव लोकसाहित्य की विशेषता

लोकसाहित्य वस्तुतः हमारी आदि संस्कृति का प्रतीक है। यही कारण है कि पूर्व मानव की सामाजिक व्यवस्था का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता रहा है। यदि हम पचास वर्ष पूर्व के अपने भारतीय जीवन की तत्कालिन लोक–साहित्य से तुलना करें तो निःसंकोच भाव से यह कह सकेगें कि लोक–साहित्य और सामाजिक जीवन एक दूसरे के पूरक रहे हैं। उसका एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि भारतीय संस्कृति नगरों से ग्राम की ओर नहीं गई, अपितु ग्रामों से ही वह नगरों की ओर अग्रसर हुई है।

लोकसाहित्य की विशेषता बताते हुए सरोजनी रोहतगी (अ.लो.सा.10) ने कहा कि ''वह अधिकतर लिपिबद्ध नहीं हुआ है। उसको मौखिक रूप ही प्रदान किया जाता रहा है। इस कारण स्वाभाविक था कि वह निरन्तर रूपान्तरित होता रहे, अपभ्रंश हो और उसका रूप परिवर्तित हो। लेकिन ऐसा नहीं है कि वह स्थायी न रहा हो। लोकसाहित्य जैसा कि पूर्व में कहा गया, लोक–मानस की अभिव्यक्ति है और लोक–मानस अपनी मूल प्रेरणाओं के साथ आदि काल से

का भारतीय लोक साहित्य कोष, कृष्ण देव उपाध्याय, लोकसाहित्य की भूमिका, डॉ0 भुनेश्वर अनुज, नागपुरी लोकसाहित्य। इस तरह से लोकसाहित्य के बारे में साहित्य भरा पड़ा है। इसलिए सभी विद्वानों का परिभाषा को संग्रहित नहीं कर रहा हूँ। इसी तरह से लोकसाहित्य के विशेषता एवं वर्गीकरण में भी इन्हीं साहित्य में विस्तार से देखा जा सकता है। इसलिए कुछ ही साहित्यकारों के विशेषता एवं वर्गीकरण को मैंने लिया है।

लेकर आज तक सत्त गतिशील है। साथ ही अपनी उन सभी प्रवृतियों को अपने में सहेजे हुए हैं, इसलिए इस कथन में अतिशयोक्ति न होगी कि लोक साहित्य आज की वस्तु न होकर युगों–युगों की वस्तु है, जिसका आज भी उतना ही मूल्य है, जितना उसके रचना काल के समय रहा होगा।

लोकसाहित्य अलिखित रहता है और मौखिक परम्परा के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी आगे बढ़ता रहता है। जो लोक मानस की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। इसमें रचियता का नाम अज्ञात रहता है।

लोक–साहित्य का आवश्यकता इस लिए जान पड़ता है कि उसके आधार पर लोक–साहित्य को जाना–पहचाना जा सकता है। लोक–साहित्य की विशेषताओं के आधार पर भी उसे जाना जा सकता है। लोक–साहित्य का प्राथमिक परिचय देने के लिए भी उसकी विशेषताओं के संबंध में कुछ विद्वानों के मत उद्धृत करना उचित होगा। सर्वप्रथम डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर (हि.भ.सा.लो.5) के द्वारा बतायी गई विशेषताएँ उन्हीं के शब्दों में –''लोक–साहित्य लोकमानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह बहुदा अलिखित रहता है और अपनी मौखिक परम्परा के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है, इस साहित्य का रचयिता का नाम प्रायः अज्ञात रहता है। लोक का वाणी जो कुछ कहता, सुनता है, उसे समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुल मिलकर ही रहता है। सम्भवतः लोक–साहित्य लोक–संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिम्ब भी होता है। अभिजात, परिष्कृत या लिखित साहित्य के प्रतिकूल, लोक–साहित्य परिमार्जित भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त होता है। लोक भाषा के माध्यम से लोक–चिन्ता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक–साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है।''

डॉ0 सन्तराम अनिल (क.लो.सा.28) ने लोकसाहित्य को लोक वार्ता का एक प्रधान अंग बताया है। अतः लोकवार्ताकारों ने लोक वार्ता की जिन विशेषताओं एवं महत्व की चर्चा की है, प्रायः वे सारी विशेषताएँ लोकसाहित्य पर भी घटित होती है। दूसरी ओर लोक–गीत और लोक–साहित्य की प्रबल धाराएँ हैं, अतः उनके संबंध में भी जो व्यक्त किया गया है, उसका भी लोक–साहित्य पर घटित होना स्वाभाविक ही है। लोक–साहित्य की विशेषताओं और उसका महत्व का विश्लेषण करते समय ऐसी सामग्री का भी उपयोग किया जाना सर्वथा संगत ही है। लोकसाहित्य की अनेकानेक विशेषताएँ होती हैं।

तालिका 2 डॉ0 सन्ताराम के अनुसार विशेषता

1. लोक–साहित्य श्रुति–परम्परा पर आधारित है।
2. लोक–साहित्य में प्रामाणिक मूल पाठ का अभाव रहता है।
3. अज्ञात रचयिता तथा रचना में उसके व्यक्तित्व का अभाव।
4. अलंकृत शैली का प्रभाव

5. कोरे उपदेशों का अभाव
6. लोक–साहित्य लोक–संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है।

इस प्रकार से विभिन्न विद्वानों के विशेषताओं के अध्ययन से स्पष्ट है कि उराँव लोकसाहित्य आदि संस्कृति का वाहक है और सम्पूर्ण समाज का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। जो लोगों की सहज अभिव्यक्ति को कंठो से उद्धृत, मौखिक परम्परा के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी हस्तांतरित होते चली आ रही है। यह कब उद्धृत हुआ, किसने उद्धृत किया ये सभी अज्ञात है अर्थात यह अज्ञात रचनाकार है। परन्तु लोगों में अपनी परम्परा के प्रति उतना ही विश्वास कायम है, जितना की पूर्वज करते थे।

2.3 लोकसाहित्य का वर्गीकरण

लोक–साहित्य पर दृष्टि डालने पर स्पष्ट होता है कि मनुष्य जीवन में शिशु अवस्था से लेकर प्रौढ़ अवस्था तक (जीवन के मध्य) लोक साहित्य निरंन्तर विकासशील है। नारी और पुरूषों के क्रियाकलाप सामाजिक जीवन में विविध रूपों में व्याप्त है। लोक जीवन में इन क्रियाकलापों की अभिव्यक्ति स्वाभाविक और प्रभावशील ढंग से स्वतः निःसृत है। आयु तक की सीमा में बंधा हुआ जीवन जिन कार्यकलापों की सृष्टि करता है, वह सब हमारे जीवन का ही तो दर्शन है। अपितु, लोकसाहित्य का ही मूल जीवन की इन्हीं विविध सारणियों की परिचय सूची बनाकर हमारे सामने आता है।

तालिका 3 डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना.लो.सा.14) के अनुसार वर्गीकरण

1. लोकगीत – (क) सामान्य गीत (ख) प्रकृति वर्णन गीत (ग) आनुष्ठानिक गीत (पूजा, व्रत–त्योहार, संस्कार गीत आदि (घ) अन्य गीत।
2. लोककथा (व्रत कथा अनुष्ठानिक कथा)
3. लोकगाथा
4. लोक कहानियाँ
5. पहेलियाँ
6. मुहावरे
7. कहावतें
8. मंत्र

शिष्ट साहित्य को जिस प्रकार गद्य और पद्य, इन दो भागों में वर्गीकृत किया गया जाता है, ठीक उसी प्रकार लोक साहित्य को भी दो भागों–गद्य और

पद्य में वर्गीकृत किया जाता है। किन्तु थोड़ा अन्तर इस रूप में है कि लोकसाहित्य में शिष्ट साहित्य की भाँति अनेक विधाएँ मिलती ही नहीं। उदाहरण के तौर पर, शिष्ट साहित्य में उपल्बध उपन्यास, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, आदि गद्य विधाएँ नहीं मिलती। लोकसाहित्य में तो गद्य के नाम पर या तो लोक कथाओं को मान सकते हैं अथवा प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत आने वाले मुहावरों को। इनके अतिरिक्त अधिकांश वाङ्मय पद्यबद्ध होते हैं। शिष्ट साहित्य में काव्य के जितने भेद (प्रबंध, मुक्तक) होते हैं, उतने भेद लोक साहित्य में भी प्राप्त होते हैं। अन्तर इतना ही है कि लोक साहित्य में इसके पृथक–पृथक नामों अर्थात लोक गाथा (प्रबंध के लिए) और लोक गीत (मुक्तक के लिए) से पुकारा जाता है। एक विशेष बात यह भी है कि परिनिष्ठत साहित्य में प्राप्त 'नाटक' गद्य रूप में ही होते हैं, जबकि लोकसाहित्य के अन्तर्गत प्राप्त 'नाट्यरूप' भी पद्यबद्ध होते हैं। शिष्ट साहित्य के अन्तर्गत लघु आकारीय काव्य रूपों के लिए पृथक विद्या निर्धारित नहीं है और इसी प्रकार लोकोक्ति और मुहावरे जैसे साहित्य रूप भी परिनिष्ठत साहित्य में नहीं मिलते। विधाओं–विषयक लोक और परिनिष्ठत साहित्य के संबंध में इस प्रकार पार्थक्य–भेदक विश्लेषण के उपारान्त लोक साहित्य की विधाओं का परिचय निम्न रूप में दिया जाता है

तालिका 4 श्रीराम शर्मा (लो.सा.सि.प्र.40) के अनुसार वर्गीकरण

1. लोकगाथा
2. लोकगीत
3. लोकनाट्य
4. प्रकीर्ण साहित्य

लोकसाहित्य के अन्तर्गत जनता के हृदय का समस्त उद्गार समाहित रहता है। सर्व–साधारण की सोच, अनुभूति, मनबहाव के अन्य साधन, कहानी, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का प्रकाशन लोक साहित्य में पाया जाता है।

तालिका 5 डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय (लो.सा.भू.52) के अनुसार वर्गीकरण

1. लोक गीत
2. लोक गाथा
3. लोक कथा
4. लोक नाट्य
5. लोक सुभाषित

डॉ0 उपाध्याय ने भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य का गम्भीर मन्न एवं अनुशरण करने के उपारान्त ही यह वर्गीकरण सुनिश्चित किया है। उनका यह

दृढ़ विश्वास है कि यह वर्गीकरण अधिक वैज्ञानिक एवं उपरोक्त आधार पर किया जा सकता है।

इस प्रकार देख जाए तो लोक साहित्य को विभिन्न विद्वानो ने अपने–अपने दृष्टि से वर्गीकरण करने का प्रयास किया है। सचमुच में देखा जाय तो इसका क्षेत्र बहुत ही व्यापक है, जिसे सही वर्गीकरण कर पाना सम्भव नहीं है, परन्तु अध्ययन की सुविधा की दृष्टिकोण से उराँव़ लोकसाहित्य को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण करने का प्रयास किया गया है–

तालिका 6 उराँव लोकसाहित्य का वर्गीकरण।

1. लोक गीत
2. लोक कथा
3. लोक गाथा
4. लोकोक्ति
5. मुहावरा
6. पहेलियाँ
7. मंत्र

उपर्युक्त वर्गीकरण में से कुछ का अगले अध्याय में विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया है।

2.4 लोकसाहित्य का महत्व

लोकसाहित्य अमूल्य ज्ञान का भण्डार है। इसके अध्ययन से कई महत्वपूर्ण तथ्य हमारे सामने उभर कर आते हैं। जिससे समाज के कई पहलुओं को जाना और समझा जा सकता है। उराँव लोकसाहित्य के महत्व को निम्नलिखित भागों में बांटकर समझ सकते है।

2.4.1 ऐतिहासिक महत्व – लोकसाहित्य में इतिहास की प्रचुर सामग्री भरी पड़ी है। जिनके सम्यक् अध्ययन तथा अनुसंधान से हमारा ऐतिहासिक भण्डार को भरा जा सकता है। लोकगीत तथा लोकगाथाओं में इतिहास का पुट बड़ा गहरा है। जिसके उद्घाटन से हमारा विलुप्त तथा विस्मृत इतिहास पर पूर्ण प्रकाश पड़ सकता है तथा बिखरी हुई इतिहास की अनेक कड़ियाँ जोड़ी जा सकती है।

2.4.2 भौगोलिक महत्व – लोकसाहित्य से भूगोल संबंधी अनेक सामग्री भरी पड़ी है। लोकगीतों में मिलने वाली वादियों, नगरों और स्थानों के उल्लेख से वहाँ की स्थिति, प्राकृतिक बनावट का आसानी से अनुमान लगाया

जा सकता है। रोहतासगढ़, नवरत्नगढ़, खुखरा परगना आदि कई स्थानों एवं द्वीपों की जानकारी लोककथाओं एवं गीतों में मिलते हैं। कई ऐसे स्थान हैं, जो आजतक प्रकाश में नहीं आ पाये हैं। परन्तु इनका महत्व यदि भौगोलिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो बहुत अधिक है।

2.4.3 **राजनैतिक महत्व** – राजनीतिक दृष्टिकोण से भी लोकसाहित्य के अध्ययन का महत्व अत्यधिक है। किसी काल में वहाँ के समाज में राजनीतिक उथल–पुथल, किसी देश की आक्रमण नीति तथा दूसरे देश की सुरक्षात्मक कार्यवाहियों को करने में किस नीति का पालन करना पड़ता है, इसका सही चित्रण वहाँ के साहित्यकारों की लेखनी द्वारा ही होता है।

2.4.4 **धार्मिक महत्व** – लोक जीवन और धर्म का चोली दामन का साथ रहा है। लोकजीवन का कोई भी कार्य धर्म के प्रतिकूल नहीं होता है। यह धर्म भी सामाजिक धर्म बहुत कठोर और असीमित होता है। लोकधर्म की परिधि में आचार–विचार, शिष्टाचार और नीति संबंधी सभी विधान आ जाते हैं। देवी–देवताओं की पूजा अराधना का किन–किन विधानों से किया जाना चाहिए, ये नियम लोकगीतों एवं लोककथाओं में मिलते हैं। धर्म के अनेक गुढ़ रहस्य लोक विधानों तथा व्रतों में मिलता है।

2.4.5 **समाजिक महत्व** – लोकसाहित्य जन–जीवन का दर्पण है। समाज का सच्चा और स्वाभाविक चित्र लोकसाहित्य में दिखाई देता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। सच तो यह है कि यदि किसी समाज का वास्तविक चित्र देखना है तो उनके लोकसाहित्य का अध्ययन करना चाहिए। परिवारिक, सामाजिक और धार्मिक बन्ध नहीं, मनुष्य का उसके प्रत्येक संबंधियों से संबंध का उत्कृष्टतम रूप भी लोक गीतों एवं लोककथाओं में ही परिलक्षित होता है। इसका कारण यह होता है कि लोककवि जैसा देखता है, उसका आदर्श ही उपस्थित करना नहीं चाहता है, अपितुयर्थाथ रूप भी अपनी आंखों से अंकित करना चाहता है।

2.4.6 **आदर–सत्कार महत्व** – शिष्टाचार एवं आचार–विचार से पूरा लोकसाहित्य भरा पड़ा है। समाज ने विधवाओं का दशा, सतियों का अस्तित्व और पतिव्रत स्त्रीयों का पति परायणता सभी जगह मिलता है। सास–ससुर, जेठ का व्यवहार और लगाव की मनोवैज्ञानिक दशाओं का जैसा स्पष्ट रूप लोकसाहित्य के लोकगीत एवं लोककथाओं में मिलता है। अतः लोकसाहित्य में मिलने वाले आचरिक महत्व को हम नहीं भुला सकते हैं।

2.4.7 **आर्थिक महत्व** – अर्थ व्यवस्था के दोनों पक्ष सम्पन्नता एवं बिपन्नता का सच्चा स्वरूप लोक गीतों एवं लोककथाओं में देखने को मिलता है। लोकगीतों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि अतीत में भारतीय समाज कि आर्थिक दशा बहुत ही संतोषजनक रही होगी। उस व्यवस्था में सभी

वर्गों के लोग सुखी रहे होगें।

2.4.8 **नैतिक महत्व** – समाज के नैतिक स्तर का पता लोकसाहित्य में आसानी से लगाया जा सकता है। मुगल काल में मुगलों द्वारा हिन्दु स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट करने तथा नारियों द्वारा अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों का त्याग की हजारों घटनाएं मिलती है। उराँव समाज में जितनी लोकगीतों एवं लोककथाओं में कई विरागनाएं अपने समाज के लिए लड़ाई लड़ी। इस प्रकार लोकसाहित्य में स्त्रियों के सतीत्व का जितना उँचा आर्दश मिलता है, उतना और साहित्य में नहीं मिलता है।

2.4.9 **शिक्षा विषयक महत्व** – इस दृष्टिकोण से लोकसाहित्य का अत्यधिक महत्व है। ग्रामों में साधनों की बहुत कमी होती है, परन्तु ऐसा नहीं है कि ग्रामीण बच्चे शिक्षा एवं नीति संबंधी बातों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। शिष्ट समाज में जहाँ साधन सम्पन्नता के कारण बच्चे किताबी ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, वहाँ ग्रामीण बच्चे अपनी माँ, दादी, नानी और अन्य बुजुर्गों से लोक कथा और नीति गर्भित कहानियाँ सुनते हैं।

2.4.10 **भाषा शास्त्रीय महत्व** – लोकसाहित्य भाषा शास्त्रियों के लिए अमुल्य निधि है। लोकसाहित्य में व्यवहृत शब्दों की उत्पति का पता लगाने से अनेक भाषा संबंधी गुत्थियाँ सुलझायी जा सकती है। लोकसाहित्य में ऐसे भी शब्दों का प्रचलन मिलता है जिनके विकास परम्परा के इतिहास को देखने से ऐसा अनुमान होता है कि कदाचित इन शब्दों कि उत्पति वैदिक संस्कृत से नहीं हुई होगी। डॉ0 नारायण भगत (मोराबादी राँची) ने बाताया कि कुडुख़ भाषा संस्कृति की जननी रही होगी। जैसे कि कुडुख भाषा में जामुन को ''जम्बु'' कहते हैं। उसकी को संस्कृत में जम्बुका। सियार का कुडुख़ में ''चिगला'' कहते हैं, उसी तरह संस्कृत में श्रीगाला। इससे स्पष्ट पता चलता है कि उराँव भाषा ही संस्कृत ही जननी रही होगी। ऐसा हो सकता है कि उराँव भाषा को जानने वालों ने कभी भी लिखने का प्रयास नहीं किया। इसी लिए कुडुख़ भाषा लोगों के सामने नहीं आया तथा लोगों के कंठो तक ही सीमित रहा। परन्तु संस्कृत को लेखकों ने लिखकर समाज में लाया इसलिए अधिक प्रचलित हुआ।

2.4.11 **सांस्कृतिक महत्व** – विश्व की संस्कृति एवं सभ्यता के क्रमिक विकास का ज्ञान लोगसाहित्य के अध्ययन से अधिक होता है। लोकसाहित्य के सभी पहलुओं पर यदि प्रकाश डाला जाय तो संस्कृतियों में होने वाले उलटफेर परिवर्त्तन का अच्छा प्रमाण मिलता है। अतीत कालीन समाज के रहन–सहन, खान–पान, वैभव, आदि कि बहुल्यता तथा लोक प्राणियों के पारस्परिक संबंधों का यर्थात रूप लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा और लोकोक्तियों में मिलता है।

लोकसाहित्य के सांस्कृतिक पक्ष पर महात्मा गांधी ने कहा था कि हाँ लोकगीतों की प्रशंसा अवश्य करूंगा। क्योंकि मैं मानता हूँ कि लोकगीत, समूची संस्कृति के पहरेदार होते हैं। काका कलेलकर ने भी लोकसाहित्य के सांस्कृतिक पक्ष के विषय में कहा था कि लोक साहित्य के अध्ययन से उद्धार से हम कृत्रिमता का कवच तोड़ सकेगें और स्वाभाविकता की शुद्ध हवा में डोलने–फिरने की शक्ति प्राप्त कर सकेगें। उपर्युक्त कथनों के आधार पर लोक साहित्य के सांस्कृतिक आचारिक, नैतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक आदि के महत्व की बात आसानी से स्पष्ट हो जाती है। अतः लोकसाहित्य की सर्वांगीन महत्व की बात निश्चय ही सर्वजनिक, सर्वदेशीय और शाश्वत है।

तृतीय अध्याय
3 उराँव लोकगीत

लोकगीत आदिवासियों के सामाजिक प्रक्रिया का आधार स्तम्भ होता है। तभी तो उराँवों के लोकगीत, लोकजीवन का सशक्त माध्यम माना जाता है। लेकिन भारत में लोकगीतों पर लोगों की अपेक्षाकृत कम ध्यान रहा है। यदि हम उराँव़ लोकगीतों का विश्लेषण करेगें तो इनका सारा जीवन एक दर्पण की तरह उभर कर सामने आता है। इनका सारा चीज गीतों में ही निहित है। इस लिए उराँव लोकगीतों का संग्रह ''लील ख़ो–र'आ खे़–ख़ेल'' किताब को उराँवों का ''कत्थपण्डी'' कहा गया है। जिसमें बारह माह के सभी मौसम के गीतों को संग्रह किया गया है। इसमें लोगों का हंसना, रोना, काम करना, सुख–दुःख, दुलार–प्यार, रीति–रिवाज सभी उदाहरण, गीतों में पाया जाता है।

उराँव़ लोकगीत को आदिकाल से गाते आ रहे हैं। इन गीतों में श्रृंगार–पतार से लेकर सभी मधुर रसों से भरा हुआ, पीढ़ी दर पीढ़ी आ रही है। परन्तु क्षेत्र अनुसार गीत के राग, ताल एवं नृत्य में अन्तर दिखाई देता है। उराँव गीत आदिकाल से अपनी समृद्धि की ओर अग्रसर है।

उराँव लोकगीत में एक कहावत है– ''ए–कना दिम तो–कना, कत्था दिम डण्डी'' अर्थात उराँव लोगों का इस धरती में पैर रखना ही नाचना और बोलना ही गीत है। महेश भगत (कु.क.कु.प.37) ने इसे और अधिक विस्तार से विशलेषण करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार सचमुच में उराँव़ गीत दर्पण जैसा स्पष्ट होता है कि उराँव़ गीत, उराँव लोगों का सिरजन–विरजन से ही दिलो दिमाग में रसा–बसा है। जरूरत है, इसे संग्रह कर मोरा (पोटली) बांधने की।

महेश भगत (कु.भा.सं.63) ने लोकगीत के बारे में लिखे है कि ''इनकी सभ्यता या संस्कृति पुराने जमाने की सभ्य जातियों तथा तत्कालीन अन्य जातियों की सभ्यता और संस्कृति से अंश मात्र भी निम्न श्रेणी की नहीं है। उन्होंने एक गीत से उराँव लोगों का जनजीवन के एक पहलु को उजागर करने का प्रयास किया है।

01	नैनी–गोतनी समिल र'अके	नैनी गोतनी मिल के रहना
	कोरंजो–मदगी ए उल्ला र'ओ।	करंज–महुवा कितना दिन रहेगा
	पइरी–पुतबीरी समिल र'अके,	सुबह–शाम मिल के रहना
	कोरंजो–मदगी ए उल्ला र'ओ।।	करंज–महुवा कितना दिन रहेगा

इस गीत में नैनी–गोतनी घर के दोनों भाई के पत्नियों को कहा गया है। दोनों दूसरे घर से विवाह होकर आते हैं और घर में सभी से मिलजुल कर रहने की सलाह दिया गया है। क्योंकि करंज का फल बहुत की तीता और मदगी अर्थात महुवा का फल मीठा होता है। तो हमें इस तरह के बुराई को त्यागने के लिए कहा है।

उन्होंने कहा है कि इस गीत का उद्‌गम कहाँ था, कहाँ से निकला ये उद्‌गार और फिर वह चिन्तक, वह दार्शनिक, दूरदर्शी और युगद्रष्ट आखिर कौन? कब, कहाँ और किससे प्रभावित हुआ। यह जटिल प्रश्न किसी भी संवेदनशील के मस्तिक को हथौड़े की चोट–सा कचोटता है, मन–मंदिर को झँकझोर डालता है। सुप्त विचारों को भी आन्दोलित कर देता है। हाँ, मात्र प्राणी का नहीं, बल्कि उस प्राणी को भी जिनके विवेक हो, जिसमें एक स्वाभाविक जिज्ञासा हो। एक विचारवान की लालसा और मन में एक ललक, निष्ठुर, निष्क्रिय भाव और चिन्तन विहीन का या फिर अपनी मौलिकता से विमुख और उदासीन को यह कैसे भाता है।

लोकगीत हमारे विकास की अमूल्य निधि है। जातीय–हृदय की उथल–पुथल, सुख–दुःख, संयोग–वियोग आदि की भावनाएँ भिन्न–भिन्न प्रथाओं के गीतों के रूप में व्यक्त हुई है। इस अमूल्य रत्न–राशि को एकत्र न कर सके तो आगामी वर्षों में इसका स्वरूप विकृत हो जाएगा। देश का सच्चा इतिहास, उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन गीतों में ऐसा सुरक्षित है कि इनका नाश हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी। इस प्रकार लोकगीतों के द्वारा हमें जन जीवन के समस्त पक्षों के दर्शन होते हैं। जीवन की प्रत्येक अवस्था से, जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त लोकगीत समयानकूल भावनाओं को अभिव्यक्त किया करते हैं। विभिन्न ऋतुओं एवं उत्सवों पर गाये जाने वाले गीत मानव के सामूहिक श्रम, उल्लास तथा संघर्ष की कथाएँ ही हैं। प्रायः विभिन्न ऋतुओं में सामाजिक स्तर–भेद को लोकगीत ही मिटाते हैं।

3.1 लोकगीत की परिभाषा

मानव चाहे सभ्य हो या असभ्य, उसमें अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करने की इच्छा और क्षमता अवश्य होती है। आदिम मानव भी स्वानुभूति से प्रेरित होकर जब कभी सुख अथवा दुःख की संवेदना से आन्दोलित हुआ होगा, तभी लोकगीत की स्वरधारा उसके कण्ठ पर लहर उठी होगी। जब स्वर धारा लयबद्ध होकर निकलती है, तभी गीत का स्वरूप धारण कर लेती है। लोकगीत किसी व्यक्ति द्वारा रचित नहीं होते, न ही जनमानस की अज्ञात सृष्टि है।

इस प्रकार विभिन्न विद्ववानों के परिभाषाओं को अध्ययन कर उराँव़ लोकगीत को भी परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। ''कुड़ुख़ लोकगीत वह रागात्मक अभिवव्यक्ति है, जिसमें अपने जीवन से संबंधित सभी पहुलुओं पर लयपूर्ण ढंग से अभिव्यक्ति प्रकट करता है।'' लोकगीत कहा जाता है। जो आदि काल से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी स्थान्तरित होती चली आ रही है। जिसमें अपने समाज के सभी सांस्कृतियों का समावेश है तथा ये लोकगीत मानव को नितप्रति–दिन प्रेरणा दे जाती है। जो कि सदियों से आज तक उराँव समाज में देखने के लिए मिलती है। जिसमें अपने समाज की संस्कृति झलकती है। स्वभाव में सरलता, स्पष्टता के कारण, कहीं भी लोकगीत को गाते देखा जा सकता है।

3.2 उराँव लोकगीतों का वर्गीकरण

उराँव लोकगीतों में भी जीवन से संबंधित सभी घटनाओं का समावेश होता है। मानव जीवन से संबंधित जैसे–जन्म, नामकरण, विवाह, मृत्यु, पर्व–त्योहार, पूजा–पाठ या जीवन के सुख–दुःख, कुड़ुख़ लोकगीतों में समावेश पाया जाता है। उराँव जाति आदि काल से अपने संस्कृति एवं परम्पराओं को गीतों में ही संजोकर रखा है। इन्हें वर्गीकरण के द्वारा ही लोक गीतों के गहराई तक पहुंचा सकता है।

लोकगीतों में मानवीय भावों, विचारों तथा परिस्थितियों का समावेश पाया जाता है। ये सभी गीत प्रकृति एवं धरती से जुड़ा है। इसलिए इसका अस्तित्व धरती से अलग नहीं है। इन गीतों में अनेक ऐसे संकेत मिलते है, जिससे हम उनका संबंध पश्चात्य संस्कृति से जोड़ सकते हैं। कुड़ुख़ लोकगीतों में कोमल–कठोर, स्थूल–सूक्ष्म, लौकिक–परलौकिक, सभी प्रकार के भावों के गीतों की माला के रूप में बहुत ही सुन्दर ठंग से पिरोया गया है। जिसमें जीवन का कोई भी भाव या पक्ष इन गीतों से अलग नहीं है। उराँव लोकगीत को अंग्रेज विद्वान डब्लयु जी आर्चर (B.G,20) ने भी नाच के आधार पर वर्गीकरण किये।

तालिका 7 : नाच के आधार पर वर्गीकरण

1. "Festival" dances for the following festicals.
   (a) Phagua and Sarhul.
   (b) Karam
2. "Jatra" dances at the meetings of groups of villages.
   (a) Jatra (Khariah).
   (b) Jatra Lujhri (Jhumair).
   (c) Chirdi (Jeth Jatra).
3. "Transitional" social dances which ara danced between the periods of the "festival" dances or as subsititutes for them.

(a) Matha
(b) Judura — between *Karam* and *Sarhul.*
(c) Domkach

(d) Dhuruya
(e) Angani — between *Sarhul* and the *Jeth Jatra*

4. Marriage dances which include:
   (a) The blessing dance.
   (b) The marriage *domkach*

उन्होंने उपर्युक्त वर्गीकरण के बारे में बताया है कि इन चारो समूहों के बीच कोई विशेष अन्तर नहीं होता है और तथ्य यह है कि धार्मिक नृत्य कई त्योहारों के गीत में मिला–जुला रहता है और यह सुझाव देता है कि यह कोई धार्मिक अर्थ नहीं है। इसमें नृत्य का चक्र चलता रहता है और त्योहारों में सभी कोई एक साथ नृत्य करते हैं। कहा जाता है कि ''तीन कोस में पानी बदले नौ कोस में वाणी''। इसी कहावत को सचमुच में उराँव लोकगीत में देखा जा सकता है। क्षेत्र विशेष में भी गीत के राग, ताल एवं नृत्य में अन्तर दिखाई देता है। परन्तु गीत का बोल वही रहता है। जिसे आर्चर जी अपने किताब में क्षेत्र विशेष पर भी वर्गीकरण (B.G.25) इस प्रकार किये हैं।

तालिका 8 : क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण

English Month	Uraon Month	Areas		
		1 Mandar	2 Gumla	3 Jaspur
January-February	Magh	Jadura	Sarhul	Domkach
February-March	Phagun	Jadura, Marriage	Sarhul Marriage	Sarhul Domkach Marriage
March-April	Chait	Marriage	Sarhul Marriage	Sarhul Domkach Marriage
April-May	Baisakh	——	Sarhul	Sarhul Dhuriya
May-June	Jeth	Jatra	Sarhul Jatra	Sarhul Dhuriya Jatra
June-July	Asar	Dhuriya	Dhuriya	Karam
July-August	Sawan	Karam	Dhuruya	Karam Angani
August-September	Bhado	karam	Karam	Karam Angani
September-October	Asin	jatra Jatra lujhri (Jhumair)	Karam Karam Jatra(chirdi)	Karam Jatra
October-November	Kartik	Jatra jatra lujhri	Karam jatra (chirdi) Matha	karam Jatra
November-December	Aghan	Matha Angani	Judura	------
December-January	Pus	Matha, Jadura	Jadura	-------

उपर्युक्त वर्गीकरण में उराँव आदिवासी समाज में डमकच और अंगनई नृत्य का जिक्र किया गया है। परन्तु यह नृत्य उराँव समाज में नहीं है। हो सकता है सदानों के बीच रहते–रहते यह कभी–कभार गीत एवं नृत्य में शामिल

किया होगा। जैसा कि विवाह के नृत्य में देखा गया है कि नृत्य करने के दौरान कुछ सदान लोग भी हैं और नाचने के क्रम में कभी डमकच और अंगनई नृत्य भी कर लेते हैं। हो सकता है, उन्हें भी न लगे हमें नृत्य से दूर कर रहे हैं। वैसे तो उराँव लोगों के पर्व–त्योहार में सदान लोगों को भी देखा जा सकता है।

तालिका 9 : उराँव लोगगीत का वर्गीकरण :–

1. ऋतु संबंधी गीत (i) जेठवारी गीत (ii) आसारी गीत (iii) जतरा गीत (iv) अगहनिया गीत
2. पर्व–त्योहार गीत (i) फग्गु (फाल्गुन) गीत, (ii) सरहुल गीत, (iii) बुढ़ी करम गीत, (iv) करम गीत।
3. खेती बारी के गीत (i) हल चलाने के गीत, (ii) रोपा गीत, (iii) धान कटनी के गीत, (iv) मिसनी के गीत आदि।
4. संस्कार गीत (i) जन्म के गीत,(ii) विवाह गीत, (iii) मृत्यु संस्कार गीत।
5. राग के आधार पर (i) सुर्रा या धुड़िया (ii) चिरदी (iii) डोल (iv) भोटांगिया (v) छेछाड़ी (vi) बरोया आदि
6. धार्मिक गीत
7. खेल गीत
8. बाल गीत
9. लोरी गीत
10. भजन गीत
11. अन्य गीत

इसी वर्गीकरण के आधार पर उराँव लोकगीतों का विस्तृत अध्ययन किया गया है :–

3.2.1 ऋतु संबंधी गीत

उराँव समाज में सभी ऋतु में अलग–अलग गीत गाये जाते हैं। समय के अनुसार उसी गीत को गाते हैं, जो उस ऋतु से संबंधित हो। यदि करम गीत या जेठवारी गीत को हम सरहुल में गायगें तो यह गीत सुनने में अच्छा नहीं लगता है। वह अटपटांग लगता है और शरीर में खसरा होता है, ऐसा पूर्वजों का मानना है। अधिकतर उराँव़ गीतों में पहला पद प्रश्न होता है और दूसरा पद उसका उत्तर होता है। जैसे :–

02 प्रश्न– एका जों–ख़स कड़रू ख़ापदस ।
कुल्ला नू बकिला टइंया।।
उत्तर– चेड़ा जों–ख़स कड़रू ख़ापदस ।
कुल्ला नू बकिला टइंया।।

इस गीत में पहला पद, जिसमें कड़रू अर्थात भैंस का बच्चा कौन चरा रहा है, कहा गया है। उसी का उत्तर दूसरे पद में चेड़ा अर्थात जवान लड़का भैस का बच्चा चरा रहा है, ऐसा कहा गया है। अखड़ा में नाचने के समय जब महिलाएँ गीत गाती हैं, उस समय पुरूष मान्दर के साथ ताल देते हैं और गीत खत्म होने पर उसी गीत को पुरूषों द्वारा दोहराया जाता है। ऐसा करने से जो गीत नहीं जानते हैं उन्हें भी याद हो जाता है और नाचने में भी आनन्द आता है। यही कारण है कि लोगों के जुबान पर हर पल रहता है। जो सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है।

उराँव गीत में यह भी नहीं है कि सभी गीत उराँव़ भाषा में ही है। हमारे उराँव़ भाषा के अलावे अधिकतर गीत सादरी (नागपुरी) भाषा में भी पाया जाता है। उराँव़ गीत में लगभग 40–50 प्रतिशत गीत ऐसे है जो नागपुरी भाषा में है। इस लिए उराँव़ गीतों में सादरी गीतों का समावेश भी आया है। तो उसमें किसी को अपत्ति नहीं होना चाहिए। जहाँ पर नागपुरी गीत शामिल है उस स्थान पर ''ना'' के द्वारा इंगित किया जा रहा है। परन्तु वह उराँव गीत है। जिसे उराँव लोगों के पर्व त्योहार के अवसर पर गााते हैं। जैसे :–

03 (ना) के रे भइया होरी खेलय ।	कौन भाई होरी खेल रहा है।
सरागे धुरा उड़ाल जाला ।।	आकाश में धूल उड़ रहा है।
बबु भइया होरी खेलय।	बबु भाई होरी खेल रहा है।
सरागे धुरा उड़ाल जाला।।	आकाश में धूल उड़ रहा है।

इस गीत में कौन भाई होरी खेल रहा है और आकाश में बालु उड़ रहा है। इसका उत्तर बबु भाई होरी खेल रहा है वह आकाश में धूल उड़ रहा है। यह गीत नागपुरी भाषा से लिखा गया है। उराँव लोकगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जिस व्यक्ति एक भी नागपुरी भाषा बोलने नहीं जानता है, जो नागपुरी भाषा के गीत को आसानी से गा लेता है। उसी प्रकार जिसे कुड़ुख़ बोलने एक भी नहीं आता है, वह भी उराँव़ गीतों को बड़ी ही आसानी से गा लेता है।

इस संबंध में महली लिविन्स तिर्की का मत है कि कुड़ुख़ भाषा में सादरी (नागपुरी) शब्द का अधिक प्रयोग मिलता है। इन्होंने (करम.7) ने बताया कि उराँव मुण्डा का आर्यो के साथ टकराव गंगा यमुना तराई के बीच–बीच में होती रही, इसमें कोई दो राय नहीं। जब एक ताकतवार जाति दुर्बल जाति पर हावी होने की चेष्टा करती है तो विरोध तो होता ही है। इसी तरह से जगदीश त्रिगुनायत

ने भी (उ.भा.सा.115) ने भी डॉ0 गुहा के कथन की स्थापना करके, यदि कोई जाति अपने से अधिक उन्नत और संस्कृत जाति के सम्पर्क में आती है, तो वह अपनी भाषा भूलकर उन्नत जाति की भाषा को अपना लेती है। उराँव या वैसी ही अन्य जातियों की द्राविड़ भाषा का रहस्योद्घाटन कर दिया है। इन आदिवासियों का सम्पर्क आर्यो से हुआ। संभावित है जिस भाषा में मुड़ा–उराँव आर्यों से कुछ अंश तक बात चीत कर सकते थे। यह भाषा सादरी भाषा ही हो सकती थी। जो बाजार हाट या अन्य कार्यों में आर्यों के साथ सम्पर्क में काम आती थी। आज तक आदिवासी, गैर आदिवासियों से (जमीनदार, व्यापारी से) सादरी भाषा ही बोलते हैं। यही कारण होगा कि सरहुल और करम गीतों में सादरी भाषा आयी है। यह भी संभव है कि ताकतवार आर्यों के नियंत्रण और दबाव में आ गये, कुछ मुण्डा, उराँव और अन्य पेशेवर जाति के लोगों ने आर्य भाषा से निकली सादरी भाषा को अपनाने के साथ संपर्क सिंधु घाटी से ही होता आया है। गंगा यमुना दोआब में मुण्डा और उराँव निश्चय ही रहे और उस समय की संभवतः सादरी भाषा आदिवासियों (मुण्डा और उराँव) की संस्कृति और गीतों में प्रभाव डालने लगी थी। तभी उराँव गीतों में सादरी का प्रभाव पड़ा होगा। परन्तु इसमें कोई सक नहीं है कि अन्य जातियों ने अपने सम्पर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल किया होगा। तभी अन्य जाति के लोग भी उराँव भाषा बोलते हैं। इसी तरह से लील ख़ो–र'आ खे़–खे़ल किताब के गीत संख्या 114 में एक गीत है। जिसमें सादरी भाषा का भी समावेश है।

04	हुदी कोय भौंरो पेल्लो।	लेते जाओ भौंरो लड़की
	बलि कों–ड़ा नु बल्लु र'ई।।–2	दरवाजा कोना में बलुवा है
	जनी शिकार कादी होल।	महिला शिकार जाती है तो
	बलि कों–ड़ा नु बल्लु र'ई।।–2	दरवाजा कोना में बलुवा है।

उपर्युक्त गीत उराँव जाति के बारह वर्ष में आयोजित होने वाले जनी शिकार के बारे में बताया गया है। इस गीत में ''जनी शिकार'' सादरी भाषा का शब्द है। जिसका कुडुख़ भाषा में ''मुक्का सेन्दरा'' होता है। जिसमें महिलायें पुरूष की वेश में शिकार खेलने के लिए जाती है। यह आयोजन किसी जंगल में नहीं, बल्कि उराँव आदिवासियों के अगुवा सिनगी दई, कैली दई और चम्पू दई के यादों को ताजा करने के लिए किसी गांव में जाते हैं और वहां गाँव वाले जिस पालतु जानवर को मारने कहेगें, उसी का वे शिकार करते हैं। इस तरह देखा जाय तो कुडुख़ गीतों में भी सादरी का प्रभाव देखा जा सकता है। आज भी हम अपनी भाषा को शुद्ध नहीं बोलते हैं। हमें अपनी भाषा को विलुप्त हाने से बचाने के लिए अपनी भाषा तो बोलना ही होगा, साथ ही शुद्ध भाषा का प्रयोग करना पड़ेगा। तभी हम अपनी भाषा को उन्नत शिखर तक पहुँचा सकते हैं।

इस संबंध में डॉ0 नारायण उराँव (स.स.5:1991) लिखते हैं कि दिकुओं

(बाहरी लोगों) की घुसपैट से कुँडुख़ भाषा एवं संस्कृति का जितना अवमूल्यन हुआ है, उतना किसी दूसरे भाषा–संस्कृति का नहीं। ऐतिहासिक एवं भागोलिक पृष्ट भूमि पर गौर करने पर यह पता चलता है कि रोहतास के पतन के बाद कुँडुख़ भाषी लोग जहाँ–जहाँ गये, वहाँ–वहाँ उन्हें किसी दूसरे राजा–महाराजा अथवा जमींदारों की बेगारी करनी पड़ी या फिर उनका दासत्व स्वीकारना पड़ा। इस जद्दोजहद में कहीं–कहीं तो कुँडुख़ भाषा बोलने पर ही मनाही थी। जैसे–जशपुर राजा, बिरू राजा आदि के राज्यों में कुँडुख़ भाषा बोलते हुए पकड़े जाने पर कोड़े की मार सहनी पड़ती थी। निश्चित रूप से लोगों में भयवश भाषा न सीखने एवं सिखाने की प्रवृति जगी होगी। साथ ही कुँडुख़ बहुल क्षेत्रों (राँची, लोहरदगा, गुमला, पलामु, जशपुर, सिमडेगा आदि) में सवर्ण राजाओं अथवा जमींदारों का बोलबाला रहा है। इस प्रकार कुछ लोगों ने भयवश अपनी भाषा–संस्कृति को छोड़ा और कुछ लोगों ने उनकी संगति में आकर स्वयं को निम्न (छोटा) समझकर नकल की।

3.2.1.1 जेठवारी गीत

जेठवारी गीत जेठ के महीना अर्थात मई–जून महीना में गाया जाता है। इस महीना में तेज गर्मी पड़ती है। लोग गर्मी से परेशान रहते हैं। लोगों को खास कर पानी की बहुत अधिक मात्रा में दिक्कत होता है। थोड़ा सा धूप में निकलने पर प्यास के मारे जी–जान तड़पता रहता है। गोहरा उराँव के अनुसार एक गीत इस प्रकार है।

05	परेता धिमिर कोय पेल्लो	जंगल गर्म है लड़की
	जिया काना बेसे	प्राण निकलने जैसा
	अम्म ओनका लग्गी	प्यास लगता है
	कंक्क पण्डीन हेबेड़य कोय पेल्लो	लकड़ी गठरी को फेको लड़की
	जिया काना बेसे	प्राण निकलने जैसा
	अम्म ओनका लग्गी	प्यास लगता है

3.2.1.2 आसारी गीत

आसारी (जून–जुलाई) गीत गर्मी का मौसम बीत जाने के बाद गाया जाता है। उस समय सभी खेती–बारी करने में लग जाते है। चारों तरफ हरियाली छायी रहती है। मौसम सुहावन रहता है। मानो यह धरती भूखी, प्यासी, मुरझायी, अब सजने सवरने लगी है। साग, घाँस–पात, धान चारों ओर लहलाहाने लगते हैं। उसी समय का गीत है :–

06	आसारी जोत बरा लगी।	आसाड़ महीना, जोतने का समय आ रहा है
	गोला अड्डो नेलेचा लगी।	लाल बैल डर रहा है।
	चौंरा सिन खेद'ओन,	चौंरा बैल को हांकुँगा
	भौंरा सिन बिसोन।	भौंरा बैल को बेचुँगा
	तीना डेब्बा नम्बारो कालो।।	दहिना बांया छूट जायेगा
	नम्बय नेलचय गोला आडो।	मत डरो बैल
	धीरे–धीरे हेवा नानोन	धीरे–धीरे हेवा करूँगा
	रासे–रासे हेवा नानोन।।	रासे–रासे हेवा करूँगा
07 (ना)	छोट भईया धान बुने अयो।	छोटा भाई धान लगाया माँ
	बढ़ी गेला छती रे समाने	बढ़ गया सीना के समान
	हसुंवा कटल धान अयो।	हंसिया काटा धान माँ
	गरू मिसल पोरा रे	बैल मिसा पुवाल रे
	मोरा बन्धल डोरा टुईट गेला।	मोरा बांधा हुआ रस्सी टूट गया।

आसारी गीत में अधिकतर खेती बारी से संबंधित ही गीत गाया जाता है। क्योंकि आसार महीना में खेती बारी का ही काम चलता है। निम्न गीत हल जोतने से संबंधित है, जो इस प्रकार है।

08	अम्म हो'अके मण्डी हो'अके	पानी लेते जाना खाना लेते जाना
	उइया कादन पतेड़ा टोंका	जोतने जा रहा हूँ जंगल टांड़
	पईरी बीरी अम्म हो'अके,	सुबह में पानी लेते जाना
	मण्डी हो'अके	खाना लेते जाना
	उईया कादन पतेड़ा टोंका	जोतने जा रहा हूँ जंगल टांड़
09	गड्डी ख़ल्लन	गडढ़ा दोन
	उईया कादय ददा	जातने जाते हो ददा
	रूनियाँ चीं–ख़ा लगी	रूनियां पक्षी रो रही है
	अम्बय चीं–खय रूनियाँ –2	मत रो रूनिया पक्षी
	गोला अड्डो नेलेचा लगी	लाल बैल डर रहा है
	बछा अड्डो नेलेचा लगी	बण्डा बैल डर रहा है

पसोन बाचकन दरा	मारूँगा सोचकर
ठेला दरा धरचकन	ढेला को पकड़ा
सूँई बाचा सरागे केरा	सुँई बोला आकाश में उड़ गया

गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, 20 नवेम्बर 2014) के अनुसार कुछ गीत है जो आसारी तो है परन्तु वह लुझकी में राग में भी गाया जाता है। जिस गीत में राग, ताल, नाच सभी बदल जाता है। इस गीत में जेठ के महीना खेत में धान लगाने को दर्शाया गया है। हमारे पूर्वज धान को जेठ महीना में ही खेत में डालते थे। वह धान गर्मी में धूप खाकर वर्षा होने पर इतना अच्छा से लहलहाता है कि वह देखने जैसा रहता है और वह धान भी बहुत अच्छा होता है। धान का बाली भी बरसात में बोते हैं उससे बड़ा होता है। उस जमाने में खाने के लिए धान एक वर्ष नहीं होता था। इस लिए जैसे ही वर्षा प्रारम्भ होता है, वैसे ही ''गोन्दली'' को बोते थे, गोन्दली जल्दी पकता था और वह खाने के लिए हो जाता था। पर जो चावल का भात बनता है वैसा गोन्दली का भात छरहर नहीं होता है और चावल जैसा खाने के लिए भी नहीं लगता है। परन्तु पेट भरने के लिए खाना पड़ता था। इसके बाद गोड़ा धान को करम बीतने के बाद काट कर गुजारा करते थे। आज अनेक प्रकार के हाईब्रीड धान आने से खाने के लिए कोई भूखा नहीं रहता होगा जो थोड़ा सा मेहनत करता हो। यह गीत उसी को दर्शता है।

10 (ना)	जेठ में बुनालो मोंय कोड़ालो	मई महीना में लगाये कोड़े
	बुनालो मोय चरकी गोन्दलिया	लगाया मैं सफेद गोन्दली
	लिहोर लोहोर	लिहारे लोहोर
	अछा साग बड़ा बढ़ाला गोन्दलिया	अच्छा साग बहुत बढ़ा गोन्दली
	लिहोर लोहोर	लिहोर–लोहोर
	गोन्दली का भात दइया	गोन्दली का खाना दइया
	ढ़ेम्बा–ढ़ेम्बा हइरे	लड्डु लड्डु हइरे
	देवारा के मना भईर गेला हइरे	देवर का मन भर गया हयरे

गोहरा उराँव के अनुसार उपर्युक्त गीत में खेती बारी से संबंधित बताया गया है जो हमारे लोग किस प्रकार से खेती करते हैं और वह फसल उनका मेहनत को प्रदर्शित करता है। हमारे लोग आज भी बहुत ही मेहनती हैं।

3.2.1.3 जतरा गीत

जतरा हर क्षेत्र में अलग–अलग दिन में मनाया जाता है। जैसे हमारे गांव पुगु में अगहन जतरा कातिक पूर्णिमा को मनाया जाता है। हमारे पुर्वजों ने जतरा किस लिए लगाये और ये अलग–अलग दिनों में किस लिए होता है। इसका हमारे पुर्वजों ने बहुत ही बड़ा नमूना हमारे पास जतरा के माध्यम से पेश किया है। ताकि हमारी अस्तित्व के साथ भाषा–संस्कृति बचा रहे। सोमनाथ उराँव के अनुसार (पुगु करम डीपा, गुमला, 22/06/2017) ''प्रकृतिवादी आदिवासी समाज जतरा का विशेष महत्व है। जतरा कहने का अर्थ ''जनतंत्र'' से है। जतरा को हमारे पुर्वजो ने सुरक्षा कवच के रूप में अपनाये। जिस समय हमारा आदिवासी समाज गुलामी के जंजीर से बंधा हुआ था, अंग्रेजों एवं राजा जमीनदारों ने दमन शोषण कर रहे थे, आदिवासियों के पूजा स्थाल में फूट डाल दिया गया, क्योंकि वे माँ सरना और धर्मेश को अराधना करते हुए बता रहे थे और समाज के रक्षा के लिए नेग नियम बना रहे थे।'' कहने का तात्पर्य यह है कि आदिवासी समाज पूजा स्थल में गोलबंद हो रहे थे। आदिवासियों को गोलबन्द होने से रोका गया, जो कि आजकल के तारीख में संविधान की धारा 144 कहा गया हैं। इसी से बचने के लिए पुरखा लोग डेगे डे–ग जतरा के माध्यम से एकत्रित होने लगे। महिला–पुरूष धर्मेश का स्तुति करते हुए समाज को बचाने के लिए, संगठन को मजबूती प्रदान कर रहे थे। नृत्य और गीत के माध्यम से धर्मेश को अपने बीच बुला रहे थे कि ''हे धर्मे तुम हमारे बीच आओ और इस संकट से पार होने के लिए हमें रास्ता बताओ।'' इस प्रकार देखा जाय तो जतरा लगाना हमारा एक जुटता को दिखाता है कि हम भी किसी से कम नहीं हैं। परन्तु इतनी सुन्दर व्यवस्था को अभी भी कुछ लोगों ने तोड़ने का भरपूर प्रयास किया है। ताकि हम आदिवासी एक जुट न हो सके और हम विखरे के बिखरे रह जाएं। अतः आज हमें जागने और जगाने की सक्त जरूरत है। इसी लिए किसी विद्वान ने कहा है ''हे आदिवासी जगो, चिड़िया चहक रही है, भौंरे गुनगुना रही है। आखिर तुम कब तक सोये रहोगे।'' अर्थात अब हमें जागने की आवश्यकता है। जैसे ही अगहन खत्म होता है, वैसे ही जतरा राग शुरू हो जाता है। जो फागुन महीना के पहले तक जाता है। जिसमें राग एवं ताल बदल जाता है। इस समय उराँव समाज में विवाह भी प्रारम्भ हो जाता हैं। जो कि विवाह के अवसर पर ही अधिक मात्रा में गाया जाता है। इसका राग सरहुल से भिन्न होता है। कुछ गीत :–

11	कम'आ लगी कम'आ लगी हरो	बना रही है बना रही है
	बेरेनी धी हंसली कम'आ लगी।	घांस की हंसली बना रही है
	सुन्दाइर पेलो।	सुन्दर लड़की

जों–खा सिन रिझाब'आ गे।	लड़कों को खुश करने के लिए
बेरेनी धी हंसली कम'आ लगी।	घांस ही हंसली बना रही है
सुन्दाइर पेलो।	सुन्दर लड़की

इस गीत में बताया गया है कि नाचने–गाने के समय लोग अपने को दिखाने के लिए श्रृंगार–पतार करते है। जिनके पास धन दौलत होता है वे तो घुघुर, चाँवर विड़ियो आदि का प्रयोग करते हैं। परन्तु जिनके पास नहीं है वे किसी प्रकार का घाँस–फूस या अन्य लकड़ियों का बना हुआ श्रृंगार पहनती है। ताकि उन्हें भी लगे कि मैं भी किसी से कम नहीं दिख रही हूँ। परन्तु कुछ लोग हैं जो इस तरह का पहना हुआ देख पसंद नहीं कर रहे हैं। हो सकता है उनके पास पैसा है उन्हें लकड़ी वैग्यरह का बना हुआ श्रृंगार पसन्द न आये। परन्तु एक गरीब के लिए हीरे ज्वाहरात से कम नहीं है। जो कि इस गीत से पता चलता है। देखने के लिए बूढ़ि है परन्तु अपनी बेटी का लकड़ी को पसन्द नही ंकर रही है। उसकी बेटी रो रही है पर भी पसन्द नहीं कर रही है।

12	एरागे पच्चो मुक्का	देखने में बूढ़ी औरत
	तंगदा धी कंक्कन दुस'आ लगी।	अपनी ही बेटी का लकड़ी को पसन्द नहीं कर रही है।
	तंगेदा गा चींखा लगी	अपनी बेटी तो रो रही है
	तंगदा धी कंक्कन दुस'आ लगी।	अपनी बेटी के लकड़ी को पसन्द नही ंकर रही है।

कुछ गीत सरहुल राग में है, जिसे सरहुल के अवसर पर गाया जाता है, जब तक जेठ नहीं पहुँच जाता, परन्तु ध्यान देने की बात यह है कि उराँव गीत में कुछ गीत ऐसे हैं जिन्हें कोई भी मौसम में गाया जाय तो भी उसमें कोई फर्क नहीं पड़ता है। गीत के सिर्फ राग एवं मान्दर ताल में परिवर्तन होता है। ऐसा ही कुछ गीत हैः–

13	दया गहि पूँपद मया तुरू पुंइदा	प्यार का फूल, प्यार से फूला
	अम्बके तोक्खा होरोमर एरोर।	मत तोड़ना सब कोई देखेगें
	डाड़ी नू र'ओ होले होरोमर एरोर	डाली में रहेगा तो सब देखेगें
	अम्बके तोक्खा होरोमर एरोर।	मत तोड़ना सब कोई देखेगें।

इस गीत में कहा गया है कि जिस तरह से एक फूल, डाली में खिलता है और शोभा बढ़ता है। जिसे सारी दुनियां देखती है, निहारती है और उसे देख

आनन्दित होते हैं। अर्थात यह सिर्फ मानव के लिए ही नहीं, परन्तु प्रकृति में पाये जाने वाले सभी जीव जन्तुओं के लिए शोभा बढ़ता है। सभी उस फूल की तरह मुस्कुराना सीखते हैं। यदि हम उसे अपने घर की शोभा के लिए लाते हैं तो वह सिर्फ और सिर्फ अपने घर तक ही सीमित रह जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि कोई व्यक्ति फलफूल रहा है, तरक्की कर रहा है तो उसे उस मंजिल तक पहुँचने दो ताकि वह सदा खिलता रहे। यदि हम जलन से किसी प्रकार का हानि पहुँचाते हैं तो वह हमारे लिए ही हानि है। परन्तु हमारे समाज में ऐसा कुरीति समा गई है, वह है जलन। जो कि समाज को गिराने या पीछे ढकेलने में किसी से कम नहीं है। अतः इस आधुनिकता के जमाने में इस विचार धारा से उपर उठने की जरूरत है, ताकि हम आगे बढ़ सके।

जतरा आज के जमाने में नहीं लगाना चाहिए। जिस समय हमरा पूर्वज जतरा लगाना प्रारम्भ किया होगा, उस समय का बात अलग रहा होगा और आज अलग है। यदि लगाना भी है तो उसमें किसी तरह का पुरूस्कार नहीं होना चाहिए। अपनी भाषा, संस्कृति को बचाना है तो जतरा में निस्वर्थ भाव से आयें और अपना रीझ–रंग कर अपने घर चले जायें। आज जतरा लगाने के कारण एक वर्ष में करोड़ो रूपया सेठ–साहुकारों के हाथ में चला जाता है, वह भी हमारे हाथों से, और हम सभी जतरा में जाने के लिए घर का रखा धान को बेच डालते हैं और वही पैसा को मिठाई खरीदने में खर्च कर देते हैं। उस जतरा में आदिवासी का एक भी दुकान नहीं रहता है।

जतरा के संबंध में राजी देवान बाबा भिखराम भगत (रा.प.17) का कहना है कि ''मैं इस बात को इन्कार नहीं करता कि किसी दिन जतरा लगना–लगाना समाज के हित में अच्छी थी। पर वर्तमान में जतरा लगना या लगाना आदिवासी समाज के लिए एक भारी अभिशाप ही है। जिस प्रकार एक ही दिन में आदिवासी क्षेत्रों में सैकड़ो बाजार लगती है, उसी प्रकार एक ही दिन में आदिवासी क्षेत्रों में हजारो जतरा लगातार लगते हैं। फिर नये भी लगाये जाते हैं, जिससे हमारे समाज को आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक आदि हानि के आलावे, लाभ नाम मात्र को भी नहीं है। अगर लाभ है तो हानि के तुलना में काफी कम है। इस गीत से भी आप जतरा से क्या हानि–लाभ है, स्पष्ट हो जायेगा।

14	जतेरा अम्बा कला हीरा बहिन जतेरा नू खतेरा र'ई	जतरा मत जाओ हीरा बहिन जतरा में खतरा है
	नलख गा केरा, ढ़ीबा हूँ केरा धरम नम्हय काला लगी बहिन	काम भी गया, पैसा भी गया धर्म हमारा जा रहा है बहिन
	खद्दमाखों मुक्का गे कतई रीझ लग्गी	बच्चे माँ को कितना रीझ लगता

बो–लो खद्द चिपारा लगी बहिन	छोटा बच्चा चिपा रहा है बहिन
आंवगेगा ब'अदन जतेरन बन्द नना	इसीलिए कहते, जतरा बन्द करो
होले नम्हय खोंड़हा परदो	तभी हमारा समाज बढ़ेगा
होले भइरो परदोत्त की र'ओत	तभी भाई बढ़कर रहेगें।

3.2.1.4 अगहनिया गीत

अगहनिया गीत अलग–अलग क्षेत्रों में, अलग–अलग समय में, जदुरा, मठा गीत गाया जाता है। परन्तु पुगु गाँव में अगहन महीना में मनाया जाता है। जिस समय खेत खलिहान भी भरा रहता है। कुछ अगहनिया गीत जदिरा राग में इस प्रकार है।

15 (ना)	के रे भईया पंजा बोहाय	कौन भाई धान ढो रहा है
	लझरी लझरी पंजा बोहाय।।	लझरी–लझरी धान ढो रहा है
	बबु रे भईया पंजा बोहाय	बाबु भाई धान ढो रहा है
	लझरी लझरी पंजा बोहाय।।	लझरी–लझरी धान ढो रहा है

इस गीत के माध्यम से कहा गया है कि अगहन के महीने में पूरे खेतीहर किसान खेत में धान काटने एवं उसे बोहने में लगे हुए रहते हैं। उनका उस समय पूरा दिन काम करने में ही लगा रहता है। किसान खेत के धान को देखकर मन ही मन बहुत खुश होता है और क्यों नहीं होगा। उसका मेहनत का फल भी तो है। इसी धान के बाली को देख कर किसी कवि ने उक्त प्रकार का गीत गाय है। कौन भाई धान ढो रहा है, उसका बाली लम्बा–लम्बा है। उसका उत्तर बबु भईया धान ढो रहा है। उसका बाली लम्बा–लम्बा है।

जब खेत खलिहान का सारा कार्य खत्म हो जाता है। कटनी–मिसनी खत्म करके खुशी से कहीं जतरा का आयोजन होता है। जो कि अपनी भाषा संस्कृति को बचाये एवं संजो कर रखने का अच्छा माध्यम है। जिससे अपनी संस्कृति एवं नाच–गान से लोगों को आकर्षित भी करते हैं। जिससे यह पता चलता है कि कोई गाँव में जतरा लगा हुआ है और उसमें शामिल होने के लिए वे जा रहे हैं। इससे खास बात यह दिखाई देता है कि हम सब एक हैं अर्थात हमारी एकता को दर्शाती है। जिसमें सभी बच्चे–बूढ़े शामिल होते हैं। सभी अपने आवश्यकताओं की समान जतरा में की खरीदते थे। उस दृष्टि में भी जतरा बहुत ही महत्वपूर्ण है। जो इस गीत से पता चलता है।

16 (ना) कुबुड़ कुबुड़ बुढ़िया	कुबड़ी बुढ़िया
पुछे लगल जतेरा	पूछ रही है जतरा
कहिया बबु लगी जतरा	कब लगेगा जतरा
अईज हीके एका दसी	आज है एकादशी
कईल हीके दुया दसी	कल है द्वादशी
चौठा के लगी जतरा	चौठा को लगेगा जतरा

इसी लिए एक बहुत ही बूढ़ी औरत जतरा के बारे में पूछ रही कि कब लगेगा जतरा। तो उसका उत्तर बताया गया है कि आज है एका दशी, कल दुया दशी चौठा को जतरा लगेगा।

3.2.2 पर्व–त्योहार के गीत

प्रकृति के प्रति श्रद्धा, भक्ति, विश्वास, आदर प्रेम की भावना आदिवासियों को विरासत में मिली है। आज भी आदिवासी समाज प्रकृति से ही जुड़ा रहना पसन्द करता है और इनके विभिन्न रूपों की पूजा, आराधना करता हैं। सरहुल और करम, इनका प्रमुख प्रकृति पर्व है। झारखण्ड के आदिवासी आदिकाल से ही प्रकृति के गोद में ही पलते आये हैं। उनके पास नये मौसम में आने के स्वागत के लिए जुबान पर कई तरह के गीत समाये हुए हैं।

उराँव़ समाज मुख्य रूप से दो पर्व, बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। वह है सरहुल (ख़द्दी) और करम। इसके अलावा कई ऐसे पर्व–त्योहार हैं जो इनके प्रमुख त्योहारों में एक है। जिसे गाँव के लोग अपनी सुविधा के अनुसार मनाते हैं। उन्हें भी बड़ी उत्साह के साथ मनाता है। जैसे–फागुन पूजा, बुढ़ी करम, अगहन जतरा, जेठ जतरा, कातिक जतरा, सोहराय जतरा, नया खानी। जिनका अपना महत्व एवं विशेषताएँ है। उराँव जाति में मुख्य रूप से तीन पूजा बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। सबसे पहले ''फागुन पूजा'', जिसे हिन्दुओं एवं अन्य जातियों ने ''होली'' का नाम दिया। दूसरा ''नया खानी'' और तीसरा ''सोहराई'' जिसे उराँव लोग ''कातिक पूजा'', ''गोहार पूजा'' आदि के नाम से भी जानते हैं। जिसे अन्य जाति के लोग ''दिपावली'' के रूप में मनाते हैं। इस त्योहार में भी उराँव जाति का अलग महत्व एवं विशेषता है। जो किसी भी रूप में हिन्दुओं से नहीं मिलती है।

3.2.2.1 ख़द्दी

ख़द्दी (सरहुल) पर्व उराँव जनजाति का सबसे प्रमुख पर्व है। इस पर्व में चाला पच्चो (सरना माता) का सरना टाड़ में पूजा की जाती है। इस पूजा में धरती रूपी पहानिन और सूर्य रूपी पहान का विवाह की जाती है। इसे उराँव़ में ''ख़े–ख़ेल बेंज्जा'' भी कहते है। इसे मुण्डा एवं हो में ''बा'' पर्व, खड़िया में ''जांकोर'' और संताल में ''बाहा'' पर्व के नाम से जाना जाता है। शाल वृक्ष के पुष्प को प्रतीक मानकर गांव का पहान ग्रामवासियों के साथ मिलकर इस पर्व का आयोजन करते हैं। मूल रूप से यह आदिवासियों का पर्व है। वसंन्त ऋतु के अगमन के साथ ही इसकी तैयारी शुरू हो जाती है। उराँव जनजाति में सरहुल कब से प्रचलन में आया, यह बताना असम्भव लगता है परन्तु हमारी मूल शब्द ''ख़द्दी'' ही है। हो सकता है सदानों के सम्पर्क में आने से यह शब्द आया होगा। कुछ लोगों का कहना है ''सरना'' जहाँ सखुआ के पेड़ होते हैं, ''चाला पच्चो'' या ''सरना माँ'' का पूजा स्थल होता है। चैत शुक्ल तृतीय को धरती और सूर्य का विवाह किया जाता है। इस लिए सरहुल पूजा को प्रकृति का महापर्व कहा गया है। देखा गया है कि ख़द्दी पर्व उराँव जाति का महापर्व है और ''चाला टोंका'' अर्थात ''सरना टांड़'' में ख़द्दी पूजा होता है, वहाँ अधिकतर गाँव में पीपल का ही पेड़ है। इस लिए ये जरूरी नहीं है कि जहाँ ख़द्दी पूजा होता है वहाँ सखुआ का ही पेड़ हो। कहीं पीपल के अलावे अन्य कोई पेड़ भी हो सकता है। ऐसे कई गाँव हैं जहाँ पीपल का पेड़ है। यदि ऐसा होता तो सभी ''चाला टोंका'' में सखआ का ही पेड़ होता। देखा गया है कि जहाँ जंगल का भरमार है, सखुआ पेड़ की बहुलता है, उस गाँव के चाला टोंका में भी पीपल का ही पेड़ है। साथ में अन्य पेड़ है तो उसका भी पूजा करते हैं। हाँ सखुआ पेड़ की महत्ता अधिक है। उस दिन सखुआ फूल को चाला टोंका में लाकर पूजा करते हैं, चढ़ाते है एवं खुशी से सिर में खोंसाते हैं।

उराँव जाति में अलग–अलग त्योहारों में, जैसे बुढ़िया करम में गुलाईची फूल को लोर (तोड़) कर लाते हैं, जहाँ गुलाईची फूल का महत्व है। करम त्योहार में जटंगी फूल (सुरगुजा), लेण्डा फूल और जावां फूल का महत्व है। उसी प्रकार ख़द्दी त्योहार में भी सखुआ फूल का महत्व है। इसी लिए सखुआ फूल को जंगल से तोड़ कर लाते हैं और पूजा में चढ़ाया करते हैं।

आदिवासियों का महापर्व सरहुल का अर्थ इस भी प्रकार बताया है। सरहुल–''सर +हुल = साल + शुरू होना'' (परम्परा + प्रजनन) सरना पूजा या सरहुल (ख़द्दी) आदिवासियों, सरना धर्मावलम्बियों का सबसे बड़ा पवित्र प्राकृतिक त्योहार है। इसे ख़ेख़ल बेंज्जा (धरती विवाह) कहते हैं। इस पर्व में मुख्य रूप से धरती रूपी ''माँ'' और सूर्य रूपी ''पिता'' का बंधन बांधा जाता है। इस कारण सरहुल पूजा के पहले कोई भी नया फल–फूल नहीं खाते हैं। सरहुल पूजा में ही धरती ''सरना माँ'' और सूर्य ''धर्मे'' के साथ पुरखों के नाम से भी चढ़ावा चढ़ाया

जाता है। परम्परा के अनुसार वैवाहिक संस्कार की रस्म पूरी होने के पश्चात ही प्रजनन क्रिया होती है। उसी प्रकार धरती माता, जो सभी जीव धारियों की जननी है, इसका हर वर्ष रस्म के अनुसार वैवाहिक संस्कार किया जाता है। यह संस्कार है ''सरहुल पूजा''। इसके बाद ही वंश बढ़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि धरती में नये बीज लगते हैं, इसके बाद ही नये फल–फूल, साग–पत्ते का सेवन किया जाता है। यह विचार हमारे आदिवासी पुरखों का था, जो आज भी मौजूद है। यह काल चक्र सदियों से चला आ रहा है। इससे पता चलता है कि सीधे–साधे हमारे पूर्वज कितने बड़े सृष्टि के ज्ञाणी थे। (बक्कहुही.31:2016)

सरहुल दो शब्दों से मिलकर बना है ''सर और हुल''। सर का अर्थ फूल और हुल का अर्थ क्रांति। अर्थात फूलों की क्रांति। इस समय नौर (सखुवा) फूल जंगल में चारो तरफ सफेद दिखाई देता है। मानो सारा जंगल सफेद चादर से सुशोभित हो रही है। सरना का अर्थ रक्षा करने वाला, शरण देने वाला या तो किसी भी प्रकार के विषम परिस्थिति में हमारी रक्षा करना ही सरना है। आज भी देखा जाय तो किसी भी परिस्थिति में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से माँ सरना की ही पूजा अर्चना की जाती है। जो कि हर दृष्टिकोण से हमारी रक्षा या संरक्षण देने में हमेशा तत्पर रहती है।

एक बात बार–बार मन में उभर कर आती है कि सरना धर्म का नाम पूजा स्थल के नाम पर क्यों और सरना धर्म का अर्थ क्या है? सरना शब्द के बारे में श्री गजेन्द्र उराँव अपने लेख में और अधिक विस्तार से समझाने का प्रयास किया है। उराँव़ भाषा में नलख सरना क्रिया शब्द का अर्थ विध्न बाधाओं के बीच किसी कार्य का नियत समय से सम्पन्न होना होता है। इस चराचर जगत में सिर्फ प्रकृति ही निरंतर अपनी गति में गतिमान है। प्रकृति का अपनी गति में गतिमान होना ही अलौकिकता है। प्रकृति का परम तत्व जिसे पंच्च तत्व भी कहा जाता है अर्थात ख़े–ख़ेल, मेरख़ा, ता–का, चिच्च, अम्म (धरती, आकाश, हवा, आग, पानी) के सम्मिलन से पूरी सृष्टि की रचना होती है। यह अलौकिक प्राकृतिक सत्य है। हमारे पुरखे इन्हीं तथ्यों को समझकर अपने पूजा–अनुष्ठान में इस अलौकिकता के बने रहने अथवा चलते रहने के लिए ईश्वर एवं ईश्वरीय शक्तियों (धर्मे अरा धर्मी सवंग) से प्रार्थना करते हैं। सरना स्थल में गाँव के पहान द्वारा गाँव सीमा के अन्दर मनुष्य, जानवर, कीड़ा, पतिंगा, पेड़–पौधे आदि सभी जीव–जन्तुओं के सत्त जीवन चलते रहने के लिए ईश्वर एवं ईश्वरीय शक्तियों से प्रार्थना करता है। इस तरह ''सरना'' एक जीवन पद्धति है और इसी जीवन पद्धति के नाम पर धर्म का नाम होना भी एक अलौकिकता है। इसे आत्मसात करना, आध्यात्मिक जीवन पद्धति को सरना पूजा स्थल पर हो रहे पूजा–अनुष्ठान को देख–समझकर ही समझा जा सकता है। इसे दूसरे समुदाय की व्यवस्था से तुलना करके समझा नहीं जा सकता है। सरना शब्द को **स+र+न+आ** की तरह अलग–अलग करके उस रहस्य तक पहुँचा जा सकता है,

जिसकी व्याख्या इस प्रकार है। ''सिरजन रम्फ ननु आ–लोन सारना (to feel & realised आत्मसात करना, महसूस करना) दिम सरना मलता सरन्न सा–रना दिम सारना बि'ई।'' ''सारना'' का अर्थ महसूस करना या आत्मसात करना या धारण करना होता है। इस तरह सम्पूर्ण सृष्टि को प्रकाशित एवं संचालित करने वाले इस धर्मे अरा धरमी सवंग (ईश्वर एवं ईश्वरीय शक्तियाँ) को महसूस कर आत्मसात करना ही, ''सरना धर्म'' की महागाथा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से पूरी तरह संतुष्ट नहीं कहा जा सकता है। इस पर और खोज करने की आवश्यकता है। इसे एक दूसरे के प्रश्न एवं उनके जबाब से ही इसकी सही निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। सुखदेव उराँव (स.द.06) ने सरना धर्म को ''शून्य बिन्दु का उपासक'' कहा है। किन्तु उसके भीतर और बाहर कोई अदृश्य बिन्दु है, जिसको अब तक न ज्ञात किया गया, न ही जाना गया। सिर्फ ''शून्य बिन्दु'' उपासक कह कर टाला गया।

सरहुल शब्द की उत्पति उराँव भाषा से हुआ (रघुनाथ, स.स.ड.5) है। सरहुल शब्द एक उराँव भाषा का पर्यावाची शब्द है। कोई भी शब्द का 'उत्पति के पीछे कोई न कोई रहस्य जरूर रहता है। ऐतिहासिक, भौगोलिक, भाषा, गुण–अवगुण, रूप–रेखा के अनुसार कोई भी शब्द का उत्पति होता है। उराँव के पूर्वज उराँव भाषा बोलते थे तो उराँव भाषा में सरहुल को ''सर्रहूल्लो'' बोला था। लेकिन समय अन्तराल ''सर्रहुल्लो'' शब्द ''सरहुल'' शब्द बना। अब सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि हमारे पूर्वज सर्रहुल्लो क्यों कहा था, इस शब्द के पीछे क्या रहस्य है, उराँव में 'सर्र' का अर्थ ''शीघ्र' और 'हुल्लो' का अर्थ ''सृष्टि का शुरूवात'' अर्थात आदिकाल का शुरूवात तो सरहुल में और सरना स्थान पर उस शक्ति का पूजा हम करते थे, जो शक्ति इस संसार को सृष्टि करके शुरूवात किया तो हमारे पूर्वजों का विश्वास था कि ईश्वर माता ''चाला'' और ईश्वर पिता ''धर्मे'' इस संसार का सृष्टिकर्त्ता है और ईश्वर ही पालनकर्त्ता है। जब हमारे पूर्वज ईश्वर पर विश्वास किया था तो सर्रहुल्लो शब्द से हमारे पूर्वज ईश्वर को इस तरह से परिभाषित किया। ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है, इस संसार को माता ''चाला माँ'' और पिता ''धर्मे बाबा'' संसार को शीघ्र सृष्टि करने तथा विनाश करने एवं संसार को तुरन्त पुर्नउत्थान करने का शक्ति ईश्वर को है। सरहुल शब्द से हमें यह बताया गया कि ईश्वर ही संसार का सृष्टिकर्त्ता है और ईश्वर का ओहमा विनती करना चाहिए।

आदिवासी समाज में ''सरना धर्म'' बहुत अधिक प्रचलित होता जा रहा है और होना भी चाहिए। परन्तु पूर्व धर्म अगुवा लोगों ने ''आदि धर्म'' का अधिक प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार किये हैं। सरना धर्म का प्रचलन कब से बढ़ा, ये बताना सम्भव नहीं है। परन्तु हमारे आदिवासी समाज के मसीहा, महापुरूष उपनाम से प्रसिद्ध स्व0 कार्तिक उराँव (बी.व.क.रा.1) ने भी अपने पुस्तक के मुख्य पृष्ट में ही बताये हैं ''अगर आदिवासियों को जीवित रखना है, तो उनकी संस्कृति, सभ्यता, परम्परा एवं आदि धर्म को जीवित रखना होगा।'' उन्होंने अपने पुस्तक में

अनुसूचित जनजाति को इस प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है। ''अनुसूचित जनजाति समुदायों के कुछ भाग अथवा गिरोह'' अनुसूचित जनजातियों के संबंध में जनजातियों का धर्म 1931 ई0 जनगणना के आधार पर ''आदि धर्म'' ही माना गया और जो भारत के स्वीकृत किसी धर्म के अन्दर नहीं आता है। अतः 342 धारा के अन्तर्गत आदि धर्म का उल्लेख करना आवश्यक नहीं समझा गया। जनजाति शब्द से ही ''आदि धर्म'' का बोध होता है।

उराँव जनजाति समाज के और एक धर्म अगुवा, जिन्हें धर्म बंगस से नाम से प्रसिद्ध देवचरण भगत (अ.ने.ध.) ने भी अपने किताब के ए–ड़ कत्था में आदि धर्म का ही उल्लेख किया है। उनके अनुसार ''जब कुक्कोस या कुके जोंख–पेल्लो मन्नर खने आर गहि जूड़ि पांति नन्ना ही ने–ग धर्म (संस्कार) नन्तर'ई। इदिन कुक्कोस या कुके ही बेंज्जा ब'अनर। बेंज्जा अगम ने–गचार ती नन्तार'ई। ईद पद्दा ता पंच्च ती मनी। कुँड़खर बम्हनर ती मल नन्त'अनर। एन्देरना कि ईर हिन्दु धर्म मनउर मलिनर। ईर गहि जुदेम ''आदि धरम'' र'ई अवंगे एक'अम नेग धरम ही नेगचार तामिम नन्नर।'' (उन्होंने बताया है कि जब लड़का–लड़की जावान हो जाते हैं तो उन्हें विवाह करने के लिए संस्कार किया जाता है। इसे लड़का और लडकी का विवाह कहते हैं। विवाह बहुत ने–ग–चार से किया जाता है। इसे गांव के पंच ही करते हैं। कुड़ख़ लोग पंडित बाम्हन से नहीं कराते हैं क्योंकि वे हिन्दु धर्म मानने वाले नहीं हैं।) इनका धर्म ''आदि धर्म'' है। इसी लिए कोई भी नेगचार स्वयं ही करते हैं। अर्थात देवचरण भगत ने भी आदि धर्म को हिन्दुओं से अलग धर्म बताया है और वे हिन्दु धर्म मानने वाले नहीं हैं। इस लिए कोई भी संस्कार का सभी नेगचार स्वयं की करते हैं।

पूर्व राजी पड़हा देवान भिखराम भगत (रा.प.अ.क.3) ने भी ''आदि धर्म'' या ''कुडुख़ धर्म'' को मूल एवं सबसे पुराना धर्म बताया है। यह किसी इंसान के द्वारा बताया हुआ नहीं है। यह बनावटी धर्म नहीं है। इसे कुडुख़ जाति हुल्लो–परिया अर्थात आदि काल से मानते आ रही है। जिसको महायदेव और पारबत्ती, दोनों मिलकर खांटी कुडुख़ भाषा में बताये। अदि धरम का मूल आधार डण्डा–कट्टना (पालकांसना, भेलवाफारी) को स्वयं महायदेव–पारबत्ती ने कुडुख़ जाति के प्रथम मानव पुत्रों, भईया–बहिन को बताये हैं। उन्होंने इस धर्म को सीधा–साधा बताया है। इसमें किसी प्रकार की लोभी–लालची, ताम–झाम नहीं है।

आदि धर्म के बारे में और अधिक गहराई से उराँव समाज के एक प्रसिद्ध गीत से भी हम जाने सकते हैं कि यह धर्म कितना पुराना है। इस गीत को लोगों के जुबान पर समयानुसार गाते पाया गया है।

17	सिरासिता नाले नू भईया–बहिन रहचर। गुचा हरो बेद्दा गे कालोत, बरा हरो बेद्दा गे कालोत।।	सिरासिता दोन में भाई–बहन रहते थे चलो खोजने जाते हैं आओ खोजने जाते हैं

ककड़ो ही लाता,	केकड़ा का बिल
गंगला ही खाईड़ रहचा हरो भईरो।	गंगला का झुण्ड था भाई
गुचा हरो बेद्दा गे कालोत,	चलो खोजने जाते हैं
बरा हरो बेद्दा गे कालोत।।	आओ खोजने जाते हैं
आर गुसन भईरो	उनलोगों के पास भाई
आदि धरम रहचा,	आदि धर्म था,
सादा धरम रहचा।	सादा धर्म था
गुचा हरो बेद्दा गे कालोत,	चलो खोजने जाते हैं
बरा हरो बेद्दा गे कालोत।।	आओ खोजने जाते
आर हरो भईरो	वे भाई
धर्मेश गहि नामे ती	भगवान के नाम से
डण्डा खण्डा लगियर।	भेलवा फारी करते थे
सोझे सोझे धर्मेस ही,	सीधे–सीधे भगवान को
पूजा नना लगियर।।	पूजा कर रहे थे
गुचा हरो बेद्दागे कालोत,	चलो खोजने जाते हैं
बरा हरो ए–रा गे कालोत।।	आओ खोजने जाते हैं
आर हरो भईरो	वे भाई
निशा अम्मे मला ओना लगियर।	नशा पान नहीं पी रहे थे
मला ओना लगियर।।	नहीं पी रहे थे
गुचा हरो बेद्दागे कालोत,	चलो खोजने जाते हैं
बरा हरो ए–रा गे कालोत।।	आओ खोजने जाते हैं
आर हरो भईरा	वे भाई
महादेवस पारबत्ती–2	महादेव और पारवती
हे दे र'आ लगियर –2	सामने–सामने रहते थे

उपर्युक्त गीत में हमारे पूर्वजों की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है। कि सिरासिता नाले में हमारे पूर्वज भइया बहिन रहते थे, उसे खोजने के लिए जायेगें। वहाँ केकड़ा का बिल है, गंगला, एक प्रकार का घाँस है, वहीं पर हमारे पूर्वज लोग रहते हैं। उनके पास आदि धर्म था, सादा धर्म था और वे भगवान के नाम

पर डण्डा कट्टना समय पर करते थे।[4] साथ ही नशा पान बिलकुल ही नहीं करते थे। वे ही हमारे सृष्टि कर्त्ता और जन्म दाता, महायदेव और पारबत्ती हैं।

इस गीत स्पष्ट पता चलता है कि आदिवासियों का धर्म ''आदि धर्म'' ही रहा होगा। इसे शिक्षाविद्व, साहित्यकार स्व0 रामदयाल मुण्डा ने भी आदि धर्म के बारे में जिक्र किया है। उन्होंने आदि धर्म ही हमारा असल धर्म बताया।[5] उन्होने यह भी कहा कि आदि धर्म भारतीय संविधान ने देश के करीब 10 करोड़ आदिवासियों को अनुसूचित जनजाति के रूप में एक सामाजिक आर्थिक पहचान दी है किन्तु जनगणना प्रक्रिया में आदिवासी आस्थाओं को प्रतिबिम्बित करने वाली किसी निश्चित कोड़ के अभाव में इस आबादी के बहुलांश को ''हिन्दु जैसा'' मानकर हिन्दु घोषित कर दिया गया है। एक निश्चित कोड जरूरी है ''अन्य'' किन्तु भूले–भटकों के इस विकल्प में कोई जान बूझकर सम्मिलित होना नहीं चाहता। इसी लिए ''आदि धर्म'' या कोई भी धर्म कोड होना बहुत ही जरूरी है। तभी हम आदिवासियों को बचा सकते हैं।

इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि आदिवासियों का मूल धर्म 'आदि धर्म' ही है। परन्तु समय की या युवाओं की माँग है। ''सरना धर्म'' आदिवासी समाज में बहुत अधिक प्रचलित होते जा रही है। लोग सरना धर्म में अधिक आस्था एवं विश्वास करने लगे हैं। परन्तु सरना शब्द कहाँ से आया कैसे आया, कुछ विद्वानों ने पूर्व में ही अपना विचार रखने का प्रयास किया हैं। इस बात से स्पष्ट पता चलता है कि 'सरना धर्म'' का प्रयोग वर्ष 1968 ई0 में छोटानागपुर में हुए सर्वेक्षण के दौरान तत्कालीन सरकार ने आदिवासियों के पूजा स्थल को ''सरना'' के रूप में चिन्हित उसके संरक्षण की योजना को शुरूआत किया। यह सरना स्थन के साथ आदिवासियों परम्पराओं को बचाने का महति प्रयास किया गया है। उसी समय से यह और अधिक प्रचलित होता गया (दैनिक भास्कर सरहुल खास,11:06 अप्रैल 2011)। 2011 ई0 के जनगणना के आधार पर अन्य धर्म लिखने वाले 79,57,467 हैं। जिनमें सरना धर्म लिखने वालों की कुल जनसंख्या 49,57,467 है, जबकि आदि धर्म की 82,255 है।

जुलियस तिग्गा (कु.भा.नृ.क.सं.12) ने और एक विशेषता को हमारे सामने लाने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा है कि भगवान के लिए पुलिंग रूप का प्रयोग नहीं किया जाता है। भगवान शब्द का मिशनरियों ने ''धर्मेश'' शब्द कुडूख़ में अनुवाद किया और पुलिंग व्यवहार किया। कुडुख़ में भगवान के लिए असल शब्द है ''धर्मे'' जो नपुंसक लिंग में है। ''धर्मे'' के साथ ''स'' जोड़कर पुलिंग रूप

---

[4] डण्डा कट्टना यह आदिवासियों का बहुत ही महत्वपूर्ण कथा है। जिस प्रकार से हिन्दुओं में समय–समय पर सत नारायण की कथा सुनते हैं। उसी तरह आदिवासियों में डण्डा कट्टना का कथा सुनाते हैं। यह कोई भी नया कार्य करते हैं, जैसे खेती बारी के समय, धान मिसनी के समय, या नहीं तो अपने हिसाब से वर्ष में दो या तीन बार प्रत्येक घर में करते हैं। इसमें पंच को ही पंच परमेश्वर माना गया है। इस लिए किसी खास पंडित की आवश्यकता नहीं होता है। स्वयं पंच लोग ही करते हैं, जो जानते हैं।

[5] https://www.pustak.org/books/bookdetails/9244

मिशनरियों ने दिया है। धर्मेस से व्यक्तित्व का बोध होता है। ''धर्मे'' से मतलब है ''आदि शक्ति'' साधारणतः पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने में 'ओ' (ो) या 'ई' (ी) संज्ञा के अन्त में जोड़ दिया जाता है। जैसे कुक्कोस (लड़का) से कुकोय (लड़की), पचगी से पच्चो, आलस से आली, और बेलस से बीड़ी।

दरअसल सरहुल प्रकृति की उपासना है। इसे शक्ति दर्शन का एक अंग मान सकते हैं। शक्ति दर्शन के अनुसार प्रकृति ही सर्वोच्च सत्ता है। इसे ही हम सर्वोच्च शक्ति के रूप में आदृश्य होते देखते हैं। चूंकि आदिवासी मूर्ति पूजा नहीं करते, इसलिए वे साल पुष्प को प्रतीक मानकर उपासना करते हैं। इसी तरह करमा में करम की डाली और जितिया में पीपल डाली को पूजा की जाती है। सरहुल, करम आदि प्रकृति के आदिम रूपों की उपासना है। फिलहाल लोग पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से विशेष महत्व दे रहे हैं। प्रकृति हमारे लिए जीवन ऊर्जा का विशेष स्त्रोत है। इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इस लिए सरहुल का संदेश यह है कि ''हम प्रकृति का आदर करें, उसकी रक्षा करें और उसके विकास का प्रयत्न करें (डॉ0 बी0 पी केशरी, लेखक वरिष्ट साहित्यकार व भाषाविद्, प्रभात खबर मार्च 2012,06)। आदिवासी सदियों से प्राकृतिक का सबसे बड़ा पुजारी है। जिसे हम देख सकते हैं, छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं। प्रकृति ही दुनियाँ की सबसे बड़ी सच्चाई है। आज बड़े–बड़े वैज्ञानिक कहते हैं ''दुनियाँ में अगर कोई शक्तिशाली चीज है तो वह है ''कुदरत''। कुदरत से बड़ा शक्तिशाली इस सृष्टि में कोई नहीं है।आज करोड़ो आदिवासियों के लिए प्राकृतिक एक आस्था, विश्वास और भरोसा हैं। वास्तव में कहें तो हम प्राकृतिक के असली पुजारी हैं।

सरहुल पर्व का एक विशेष महत्व है। आदिवासी मानते हैं कि संसार के सभी धर्म के देवताओं का सृजन भी सूर्य और धरती जैसी शक्तियों के प्रतिफल के रूप में हुआ है। इनमें सारे थलचर, जलचर, नभचर व उभयचर प्राणी हों या वनस्पति जगत के पेड़–पौधे। वनस्पतियों के कुछ ऐसे ही आराधय देव वृक्ष भी हैं, जो स्वयं सत्य, सुन्दर और सृष्टि के संरक्षक भी हैं। देखा जाय तो पेड़–पौधे उन्हीं मानव समुदाय के बीच आराध्य एवं पूज्य हैं जो इस भौतिक वादी दुनियाँ में पिछड़े हैं। सरहुल से जुड़ी कुछ नेग नियम इस प्रकार से है

3.2.2.1.1 पहान का चुनाव

कई गाँव ऐसे हैं, जहाँ आदिकाल में ही पहान का चुनाव किये हैं, वही आज तक पहान का कार्य कर रहे हैं। बुजुर्गों के द्वारा बताया गया कि जिस गाँव में पहान नहीं हैं, उस गाँव के लिए मुण्डा जाति को बुलाकर, बसाया गया और उनके लिए जमीन भी दिया गया है। उराँव जाति से पहले छोटानागपुर में मुण्डा जाति का निवास था, इसीलिए पहनाई कार्य करने के लिए ''मुण्डा'' जाति को बसाया। परन्तु कई ऐसे गाँव हैं, जहाँ प्रत्येक तीन वर्ष में पहान का चुनाव

किया जाता है। (सरहुल स्मरिका,1983) साथ ही इनके सहायकों महतो, पुजार, कोटवार आदि का भी चुनाव किया जाता है। चुनाव के लिए एक व्यक्ति के आंख पर पट्टी बांध दी जाती है। तदन्तर वह व्यक्ति उस स्थान से धीरे–धीरे आगे बढ़ता जाता है और जिस किसी के घर में प्रवेश कर जाता है। उसी घर का प्रमुख व्यक्ति पहान निर्वाचित होता है।

3.2.2.1.2 ठडुपास

सरहुल के एक दिन पहले वाले दिन को ''ठडुपास'' (गुमला क्षेत्र) कहते हैं। उसे ही विशुनपुर क्षेत्र में ''ने–म'' कहा जाता है। (संध्या कुमारी, विशुनपूर, 23 फरवरी 2019) इस दिन धरती में किसी तरह का कार्य नहीं करते हैं। जैसे हल चलाना, खेत कोड़ना या अन्य। सभी कार्य वर्जित रहता है, सिर्फ उसका सिंगार का कार्य कर सकते हैं, जैसे झण्डा गाड़ना।

3.2.2.1.3 सोतरा

सरहुल पूजनोत्सव के पूर्व तक आदिवासी इस धरती को अविवाहित कन्या की तरह देखते हैं। धरती से उत्पन फल–फूलों का सेवन वर्जित है। इस नियम को कठोरता से पालन किया जाता है और सरहुल के पहले नए फल–फूलो का सेवन करता है, उसे अछुत समझा जाता है। इसके लिए ''सोतरा'' शब्द प्रचलित है। ''सोतरा'' व्यक्ति का सरहुल तक बाहिष्कार होता है। इस लिए हमारे पूर्वज किसी व्यक्ति को सरहुल से पहले कहीं बाहर काम करने नहीं जाने देते थे। क्योंकि बाहर में यदि किसी प्रकार का गलती से नये फल–फूल खा गया तो उसे सरहुल से पहले घर के अन्दर नहीं करते हैं। सरहुल के बाद ही वह घर अन्दर जा सकता है। जो इस गीत में बताया गया हैं :–

18	कुल्ली अम्बा कला भइया,	कुल्ली मत जाओ भाई
	कुल्ली नयगस सोतरा मंज्जस।	कुल्ली का पहान अशुद्ध हो गया
	ख़द्दी पइरी अम्बा कला भइया,	सरहुल के सुबह में
	कुल्ली नयगस सोतरा मंज्जस।	कुल्ली का पहान अशुद्ध हो गया।

इसके बाद ही खेती–बारी के कार्य में लग जाते है। जैसे खेतों में खाद डालना, ढेला पासना आदि। फागुन के बाद लडके लड़कियों का मन सरहुल नाचने के लिए तरसता है और नया फल–फूलों को खाने के लिए मन लगा रहता है। सभी अपनी मदहोशी में गीत गुनगुनाने लगते हैं। कहीं पहाड़ पर्वत गये हैं, इसी मदहोसी में एक प्रेमी जंगल घूमने गया है। पहाड़–पर्वत के बीच घूमते हुए

कई तरह के पशु–पक्षी, जंगली जानवर को देख रहा है। जिधर देखता है उधर ही अपनी ही प्रेमिका दिखाई देती है। अकेले देख जंगल के पशु–पक्षी और जंगली जानवर भी हंस रहे हैं, इस तरह का उन्हें लगता है। तब प्रेमी गीत के माध्यम से अपने प्रेमिका को बुला रहे हैं। जो इस गीत से पता चलता है।

19	परता मइंय्या पाड़इकन जूड़ी, ख़ेख़ेल किय्या मेन्दरा का मला।।	पहाड़ के ऊपर गीत गया प्रेमी धरती में सुनाया या नहीं
	मेना गा मेंज्जकन जूड़ी, ने हिके ने मला ब'अदन।।	सुनने को तो सुना प्रेमी कौन है कौन नहीं कहता हूँ

डॉ0 नारायण भगत (ख़द्दी.1) के अनुसार सरहुल पर्व को (ख़द्दी) उराँव जनजातियों में निम्नलिखित आधार पर सम्पन करावा है।

तालिका 10 : ख़द्दी पर्व मनाने का उद्देश्य

1. सूर्य के संग धरती का विवाह।
2. प्रकृति पूजा, पेड़ पौधों का पूजा।
3. ख़द्दी (जन्मोत्सव)

उन्हीं के अनुसार सूर्य के संग धरती का विवाह सम्पन्न होता है। इस तथ्य के पीछे बड़ा दर्शन छुपा हुआ है। उराँव जनजातियों का मानना है कि सूर्य सर्वशाक्तिमान देवता है और धरती (पृथ्वी) सर्वशाक्तिमान देवी। इन्हीं देवता (पुरूष) वर्ग और देवी माँ (स्त्री) के संबंध से ही संसार में सृष्टि कायम हुई है। अगर सूर्य की रोशनी पृथ्वी पर नहीं पड़े तो पृथ्वी पर कोई भी जीव–जन्तु जीवित नहीं रहेगें। इन्ही कल्पनाओं के तहत हम पेड़–पौधों का उगना मानते है। आज भी महादेव और पारवती जैसी देवी–देवताओं को ही सृष्टि का आधार मानते हैं।

3.2.2.1.4 चिगली बाकना

सरहुल के तीन दिन पहले भण्डारी गांव में हंकवा कर देते हैं कि फलना दिन कोसना (हड़िया) उठाया जाएगा। इसलिए एक बेला काम नहीं करना है और न खेत को जोतना है। इसके लिए पहानिन सुबह नहा–धोकर अरवा चावल का ''जागु या कोसना'' करती है। इसी को ''चिगली बाकना'' नेग कहते हैं। गोहरा उराँव के अनुसार अरवा चावल का कोसना कर हड़िया उठाकर पहान चुवां में नहाने जाता है, चुवां को साफ करता है। जब तक पहान नहा–धोकर लौटता है तब तक में हड़िया पक जाता है और उसी को पहान तपावन भी चुवाता है।

3.2.2.1.5 चाला टोंक्का में पानी चढ़ाना

सरहुल के एक दिन पहले पुजार (पनभरा) दो नया घड़ा को भारजोर बनाकर तूसा (डांड़ी) जाता है। उस डांड़ी में नहा–धोकर दोनों घड़ा में पानी भरकर तूसा में नौर पूंप (सखुवा का फूल) डालता है। भीखु तिर्की (उ.स.ध.सं. 236) के अनुसार जिस समय पहान स्नान कर रहा है, उस समय पहान को नहीं छूना है। यदि गलती से कोई छू दिया तो अधिक मच्छर होता है। उस समय कहते हैं कि हे चाला अयो, हे आदि शक्ति आज ख़द्दी पूजा कर रहे हैं। आज जिस तरह नया घड़ा में पानी भरकर ले रहा हूँ, उसी तरह से अच्छी तरह से वर्षा देना, हमलोग खेती बारी करने वाले हैं। साथ ही घर–द्वार को भी ठीक–ठाक रखना... ।'' इसके बाद पानी लेकर चाला टोंका आता है, वहाँ पानी के दोनों घड़ा को रखता है, उस घड़ा को अन्य व्यक्ति को स्पर्श नहीं करना है।

वही डॉ0 नारायण भगत (छो.उ.री.74) का मानना है कि यदि दोनों घड़ा का जल घटने या फूटने पर कोई अप्रिये घटना होने की संभवना रहती है। घड़े का पानी नहीं घटता है तो लोगों का पूरा विश्वास है कि इस वर्ष, अच्छी वर्षा होगी, घर में धन–दौलत और बरकत आयेगा। (यही कथन सरहुल स्मरिका में भी है) उन्हीं का कहना है कि सरना स्थल पर शाम को शुद्धिकरण के लिए आग जलाई जाती है, ताकि सरना स्थल की पवित्रता बनी रहे और अनिष्टकारी देव–भूत वहाँ से भाग जाय। इस क्रिया को ''नाद खेदना'' कहते हैं अर्थात शैतान के सब प्रकार के हरकतों को घर से खदेड़ देना।

3.2.2.1.6 केकड़ा पकड़ना

सरहुल के दिन लड़के सुबह में दोन या नदी तरफ जाकर ककड़ो (केकड़ा) जिन्दा पकड़कर लाते हैं और चुल्हा के ऊपर टांग देते है। टांगने का तात्पर्य है कि घर में समृद्धि या साईस बराकईत बनी रहे। इसी को जब बीज निकालते हैं उस समय बीज में मिला कर खेत में डालते है। ऐसा विश्वास है कि जिस तरह केकड़ा का बंक्का या गुच्छा है उसी तरह धान, उरद या अन्य किसी का भी गुच्छा, इसी तरह से अधिक हो। भीखु तिर्की (उ.स.ध.सं.235) ने भी बताया है कि धान या उरद या कोई भी बीज, बोने से पहले उस बीज को तांबा–तुलसी और गोबर पानी से धोते हैं और केकड़ा का कुछ अंश को मसल कर बीज में मिला देते हैं, ताकि पैदावार अच्छी हो। उनका यह भी कहना है कि धान बुनी में उरद दाल में मुनगे का साग मिलाकर खाना खेती के लिए शुभ मानते हैं।

3.2.2.1.7 खीर भात पकाना

ग्वालिन महिला अपने घर से दूध लेकर चाला टांड़ जाती है। वहां पूजा पाठ होने के बाद चुका में अरवा चावल का खीर ग्वालिन महिला ही पकाती है। उसमें भी वर्षा का सगुन देखते हैं। जब खीर भात बनाते समय दूध खौलता है,

तब कहा जाता है कि वर्षा इस बार अधिक होगा और कम खौलता है तो कम होगा। इसी तरह से जब खौलते हुए दूध बाहर निकलता है और जिस ओर गिरता है, इसे भी देखकर कहते हैं कि इस बार, इस ओर से वर्षा अधिक होगी।

3.2.2.1.9 सुड़ी भात पकाना

पूजा हो जाने के बाद बलि दी गई चियम (मुर्गी का बच्चा) को बना कर उसना चावल के साथ ''सुड़ी मण्डी'' अर्थात खिचड़ी भात पकाते है। पकने के बाद सखुआ पत्ता में थोड़ा सा लेकर भगवान धर्मे और चाला आयो के लिए भोग गिराते है और कहते हैं – ''हे चाला अयो, हे धर्मे बबा! हे दे आज आपको सुड़ी भात पकाकर भोग दे रहे हैं, उसी तरह से हमें भी खाने–पीने के लिए भी पूरा करना।''

3.2.2.1.10 चाला टोंका में पूजा करना

विवाह होने के पश्चात चाला टोंका की ओर प्रस्थान करते हैं उस समय पहान और पहानिन को घोड़ा करके लेते हैं। घोड़ा कर लेने के बारे में डॉ0 नारायण भगत (ख़द्दी,19) के अनुसार ''कैइला और बंकी बीड़ी जब बुढ़ा–बुढ़ी हो गये तो डोली पालकी में पूजा करने जाते थे। उसी के स्मरण में घोड़ा करके चाला टोंका लेते हैं।''

3.2.2.1.11 मुर्गी का बलि देना

कइला बंक्की के लिए बाग–बगीचा घेर लिया था और सखुआ मुगरा या केऊंद मुगरा से हिरण, खरहा, चिड़िया, मारकर वहीं जमा रखता था। उसी बगीचे के शिकार से बंक्की खाना बनाती थी। इसी की यादगार में सरना पूजा के दिन छोटा शिकार के रूप में मुर्गी, चेंगना (चुजा) पकड़ा जाता है। इसी अवसर पर मछली और केकड़ा पकड़ने का रिवाज है। मुर्गी का बली देने की प्रथा कब से प्रारम्भ हुआ होगा। यह तो कहा नहीं जा सकता। कथा के अनुसार देखा जाय तो जंगल के जितने भी जंगली पशु थे, वे बंक्की बीड़ी के दुःख को देखकर सहायता किये थे। उनके हर सुख–दुःख में साथ रहे थे। जब वह नन्हा सा बालक को जन्म दी, तब वही जंगली जानवर खाने के लिए फल, फूल, मधु वैग्यरह लाकर देते थे। उसी से वह अपना जीवन गुजर–बसर कर रही थी।

हमारे पूर्वज सरना टांड़ अर्थात चाला टोंक्का में सभी मिलकर एक साथ पूजा–अर्चना करने जाया करते थे। सभी मिलकर धर्मे और चाला माँ का आराधना किया करते थे। सभी अपने बाल–बच्चे, परिवार एवं इस पृथ्वी पर जीवन यापन करने वाले सभी जीव–जन्तुओं की सुख–समृधि के लिए विनती कर रहे थे, हमारे कुड़ख़रों का जीवन बहुत ही सुखमय था, किसी प्रकार का दुःख–तकलीप नहीं था। वे धर्मे और चाला माँ का आराधना करते हुए, अपने मेहनत के बल पर सुखी–सम्पन्न जीवन–यापन कर रहे थे। यही दुश्मनों को बाज नहीं आयी होगी।

इसे ही देखकर दुश्मन लोग जलने लगे। उन्हें लगा कि यदि इनकी एकता एवं भगवान की कृपा दृष्टि बनी रही तो हम इनके सामने टिक नहीं पायेगें, इन्हें किसी प्रकार से रोकना होगा। अर्थात उन्होंने हमारी एकता तो तोड़ने के लिए कई तरह के जुल्म करने लगे। तब हमारे पूर्वजों ने सोचा होगा कि इनसे कैसा बचा जाय एवं चाला टोंक्को को कैसे बचाया जाय। इस तरह से हमारे पूर्वजों ने कई तरह से जुल्म का सहन करते हुए हमारे धार्मिक स्थल ''चाला टोंक्का'' की रक्षा किये।

कइला और बंकी उसी स्थान पर भगवान की पूजा–सेवा के लिए जाया करते थे। उसी यादगार घटना स्वरूप को आगे बढ़ाने के लिए बूढ़ा–बुढ़िया की पूजा–सेवा करते हैं अर्थात ''चाला पच्चो'' सरना माँ की पूजा करते हैं।

आदिकाल से ही उराँव जाति में देव–भूतों के लिए कोई स्थान नहीं है। हाँ कुछ लोग अपने को धनवान बनाने के लिए देव–भूतों को पूजा गया है। परन्तु सरना स्थल में देव–भूतों को उराँव जाति पूजा करते हैं, यह सरासर गलत है। मिखाईल कुजूर (उ.सं.117) ने बताया है कि आदिवासी उराँवों में देव–भूतों की पूजा होती है। अधिकांश लोगों का विश्वास है कि सरना में देव–भूतों का निवास होता है। फलतः लोग वहाँ जाने के लिए डरते हैं। यही कारण है कि वहाँ के लकड़ी, पत्ते आदि का उपयोग नहीं किया जाता था। वैसा करने पर भूत पकड़ लेगा। परन्तु वैसा कुछ भी नहीं है और न किसी प्रकार का देव–भूत होता है। हम वहाँ पर देव–भूतों को भगाने के लिए मशाल शाम में जलाते हैं। वहां माँ सरना का निवास होता है और उराँव जाति सिर्फ सरना माँ की ही पूजा करते हैं। वहाँ किसी प्रकार को हानि नहीं होती है। इस लिए इस भ्रम से लोगों को दूर रहना चाहिए।

3.2.2.1.9 पहान और पहानिन का विवाह

सरहूल के दूसरे दिन सुबह पहान ''सूरज'' के रूप में एवं पहानिन ''धरती'' के रूप में नहा–धोकर आँगन में नया चटाई बिछा कर बैठ जाते है। ढ़ोल नगाड़ा बजना शुरू हो जाता है। गाँव के सभी अपने–अपने घर से तेल लेकर आते हैं और विवाह का सारा नेग दस्तुर करते है और गीत गाते है। इसे ''खे़–खे़ल बेंज्जा'' भी कहते हैं (चौठी, कु.क.क.91,93 एवं स.स.12:2003)।

20	चानुम चानुम नयगायो बे–लर लेख'आ बेंज्जेर'आ लगदय।	प्रत्येक वर्ष पहान राजा की तरह स्नान कर रहे हो
	ख़द्दी पइरी नयगायो, बे–लर लेख'आ बेंज्जेर'आ लगदय।	सरहुल के दिन पहान राजा की तरह स्नान कर रहे हो

इस तरह का नेग हर साल होता है। राजा महाराजाओं की तरह विवाह

भी होता है। इसीलिए ''बे–लर लेखा बेंज्जर'आ लगदय'' (राजा महाराजा की तरह) कहते है और यह सारा नेग–जोग सुबह की मधुर बेला में सम्पन्न किया जाता है इसी लिए सरहुल के सुबह कहा गया है। इसके बाद पहान प्रत्येक घर मे फूल खोंसने के लिए जाता है।

3.2.2.1.12 पूंप ख़ेर्रना (फूल खोंसी)

सरहुल पूजा के दूसरे दिन पहान प्रत्येक घर में जाकर पवित्र पानी या आशिष बांटते हैं। इसे ''पूंप ख़ेर्रना'' कहते हैं। पहान सरना स्थल पर चढ़ाये गये पवित्र जल और सखुआ फूल को सभी घरों में जाकर कर बांटता है। यह कार्य उसके सहयोगी पूजार द्वारा सम्पन्न होता है। फूल खोंसी या फूल बांटने का मुख्य अर्थ ख़द्दी या सरहुल की खुशियाली को सभी घर–परिवार में बांटना है। फूल को बांटने के समय नैगस, पुजार के साथ गाँव के लोग भी रहते हैं, जिससे नये वर्ष में धरती पर अच्छी वर्षा हो और गाँव के सभी परिवार धन–दौलत से परिपूर्ण हो। साथ ही साथ सभी घरों का जीवन मंगलमय हो, किसी तरह की बीमारी, रोग, पाप का प्रभाव गाँव में न पड़े। इन्हीं आशाओं के साथ घर की माताएं बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ फूल और पवित्र जल ग्रहण करती हैं। इस पवित्र जल को घर के भीतर–बाहर और आंगन में छिड़कती और फूल को छत की अगुवानी में खोंसती हैं। इस दिन गांव के सभी बच्चे, माता–पिता और युवक–युवतियाँ एक दूसरे के घर आते–जाते और खुशियाँ मनाते। इसमें सबसे पहले पहान का पैर धोया जाता है। इसके बाद बचे हुए पानी से पहान को नहलाते हैं। इससे उनका विश्वास है कि अच्छी वर्षा होगी और खेती बारी अच्छी तरह करेंगे।

3.2.2.1.13 केंतेर ओकताना (सूप बैठाना)

पहान फूलखोंसी होने के बाद दूसरे दिन सुबह में स्नान कर ''केंतेंर ओकताना'' अर्थात ''सूप बैठाने'' का कार्य करता है। उसे ऐसे स्थान में बैठाता है ताकि भूल वश भी उस पर पैर न लगे। उस समय भी गोहराता है। ''हे चाला अयो, हे आदि शक्ति, हे धर्मे बाबा। किसी तरह समाजमा करके आपको खाने–पीने के लिए दे रहे हैं। हे दे आज किसी तरह का गलती होगा तो हमें छमा करना और किसी प्रकार का दुःख तकलीप, भाख–नजईर नहीं लगने देना और जिस तरह से एक वर्ष हमें सुख पूर्वक रखे, उसी तरह हमें आने वाले साल तक ठीक–ठाक रखना और आने वाला साल इसी तरह और आपको सेवा करेगें।''

3.2.2.1.14 सरहुल पूजा की महत्ता

आदिवासी समाज में सरहुल अर्थात ख़द्दी मनाने के पीछे बहुत बड़ा दर्शन छुपा हुआ है। जो कि आज सिर्फ आदिवासी समाज ही, नहीं बल्कि पूरे समाज में जीवन रक्षा का संदेश देता है, जिसे आज हम खोते जा रहे हैं। सरहुल में

''साल'' या ''मक्का मन्न'' का पूजा होता है। हमारे पूर्वज जिस किसी मकशद से मनाना प्रारम्भ किया परन्तु इसके पीछे बहुत बड़ा गुण देखने के लिए मिलता है, जिसे आज वैज्ञानिक भी मानते हैं। सरहुल के पीछे कई महत्व बताये गये हैं।

14.1— वर्षा को आकर्षित करना—जिस क्षेत्र में अधिक मात्रा में साल वृक्ष पाया जाता हैं, उस क्षेत्र में अधिक वर्षा होती है। इसके अलावे और कई विशेषता है।

14.2—दतवन—मनुष्य का पहला अहार दतवन हैं और दतवन के रूप में मक्का (सखुवा) मन्न का ही प्रयोग करते हैं। इसका दतवन करने से मसूड़ा मजबूत होता है, पैरिया जैसे बिमारी दूर होती है। दंतली का भी सिकायत नहीं रहता है।

14.3—पत्ता—आदिवासी समाज ही नहीं बल्कि पूरे जाति समुदाय के लोग, सभी प्रकार के नेग दस्तुर में इसका उपयोग करते हैं। इसके पत्ता को सबसे पवित्र माना गया है। जिसे सोना का थाली भी पूर्वज कहते थे। और हर तरह के कुटुम में खाना खाने के लिए पत्तल के रूप में आज भी प्रयोग किया जाता है। आज भी वैज्ञानिक मानते हैं कि प्लास्टी या स्टील के समान में खाने से रोग या बिमारी फैलती है। पर सखुआ का पत्ता में किसी प्रकार का रोग या बिमारी नहीं फैलती है।

14.4—धूवन—इसके गद्ध से धुवन बनाया जाता है, जो कि प्रदूषण रहित रहता है। इसलिए धूप या अगरबत्ती न जलाकर आदिवासी समाज में धुवन का ही प्रयोग अधिक किया जाता है।

14.5—बीज—इसके बीज को अहार के रूप में भी हमारे पूर्वज खाया करते थे। इसके बीज को महुवा से भांफ कर खाने से पेट का सभी प्रकार की बिमारी दूर हो जाता है। जैसे—गैस्टिक, सुगर आदि—आदि। साथ ही इसी से आज वनस्पति तेल भी बनाया जा रहा है। इसके तेल का सेवन से भी पेट का किसी प्रकार की बिमारी नहीं होती है जो कि अन्य खाद्य तेल सामग्री में पाया जाता है। पाचन तंत्र को ठीक रखता है। चैनपुर बेन्दोरा के बबलु तिर्की (2015) के अनुसार यदि कोई व्यक्ति वर्ष में एक बार, साल के बीज को भांफ कर खा लेता है तो उसे पेट का किसी प्रकार की बिमारी नहीं होगी।

14.6—बकला—बकला अर्थात इसके छाल को सुखा कर, उसका चूर्ण बनाकर घाव में लगाने से घाव जल्दी ठीक होता है और घाव भी जल्दी भरता है।

सरहुल मनाने के पीछे और एक महत्व श्री सोमनाथ लकड़ा इस गीत के माध्यम से बताते हैं। —

21	एन्देर पूँपन मेंझरकी पेलो भग जोगनी लेखा लवकारकी बर'आ लगी –2	क्या फूल को खोंसायी हो तारों की तरह चमक रहा है
	नौर पूँपन मेंझरकी पेलो भग जोगनी लेखा लवकारकी बरआ लगी –2	सखुवा फूल को खोंसायी हो तारों की तरह चमक रहा है

इस समय प्रकृति अपना सारा पुराना पत्ता गिरा देती है और नया पत्ता धारण करती है। चारों ओर नये–नये कोमल फूल एवं पत्तों से लदे दिखाई देती है। प्रकृति ऐसी दिखाई देती है कि सचमुच में एक दुल्हन की तरह सजधज कर विवाह के लिए तैयार हुई है। चांदनी रात में तो इसकी खुबसूरती का नजारा और ही सुन्दर दिखाई देती है। भगजुगनी उसे देखकर सामने टिमटिमा रहा है। ऐसा लगता है जैसे हमारे सामने कोई परी खड़ी है। मानो यह प्रकृति हमें सचमुच एक नया संदेश दे रही है। उनका कहना है कि जिस तरह प्रकृति अपने सारे पुराने पत्तों को गिरा कर नये पत्ते धारण करती है उसी तरह हमारे अन्दर की सभी प्रकार के बुराई को त्याग कर नये सीरे से जीवन जीने की सीख देती है।

सरना धर्म संसार में सर्व श्रेष्ट धर्मो में एक बहुमूल्य स्थान रखता है, जिसकी मिशाल बेजोड़ है। सरना धर्म स्वच्छ जल की तरह निर्मल है। यह दया, दान, समता और प्रज्ञा द्वारा पवित्र जीवन मार्ग का ज्ञान कराता है। मनुष्य अपने आपको इस धर्मामृत के सेवन से अलग न रखे, क्योंकि सच्चा मार्ग व सत्य धर्म ज्ञान ही मनुष्य को सही मार्ग पर प्रशस्त कराता है। मनुष्य अपने उत्थान और विकास के साथ–साथ धार्मिक सहिष्णुता के द्वारा अपनत्व भाव का संचार धर्म के द्वारा प्राप्त कर सत्य का सही अवलोकन एवं अपने दिल दिमाग एवं आँखों द्वारा परखने का सुअवसर प्राप्त करता है। इस तरह अन्ध विश्वासियों के शिकंजे से निकलने में सक्षम होकर अपनत्व ज्ञान की प्राप्ति होती है और उसके द्वारा धार्मिक अन्धविश्वास का नाश कर सकता है। इस तरह से अपने कर्म के द्वारा संसारिक मुक्ति प्राप्त करने में मनुष्य क्षमता प्राप्त करता है।

इस प्रकार सरहुल अर्थात ख़द्दी हमारे जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार है। जो प्रकृति से लगाव एवं एक पेड़ की तरह जीवन जीने के लिए सिखाती है। जिस प्रकार एक पेड़ ऊँच–नीच का हर भेदभाव को भुलाकर सबों को छाया देती है। उसी प्रकार हमें भी हर प्रकार के ऊँच–नीच के भेदभव को भुला कर सबों से मेल प्रेम से रहने की संदेश देती है।

3.2.2.2 बुढ़ी करम

पच्चो (बुढ़ी) करम के दूसरे दिन हमारे यहाँ रोग भगाने जाते हैं। यह करम जेठ (मई–जून) के महीने में होता है। जिसे ''रोगे करम'' भी कहते हैं। बुढ़ी करम, गुमला क्षेत्र के अलावा अन्यत्र नहीं के बराबर देखने के लिए मिलता है। परन्तु गुमला क्षेत्र में यह बड़े ही धूम–धाम से मनाया जाता है। इस त्योहार में बूढ़ी माताएँ उपवास करती है और उसका सेवा करती है। परन्तु यह नहीं है कि सिर्फ बूढ़ा–बूढ़ी ही नाचते गाते है, इसमें सभी बच्चे, जवान मिल कर नाचते गाते हैं। परन्तु बुढ़ी करम क्यों और किस लिए मनाना प्रारम्भ किया यह तो नहीं पता चलता है। परन्तु कहते हैं कि यह ''रोग'' करम है और गांव में जो भी रोग–बयार अधिकतर मई–जून अर्थात बरसात आने के पहले से ही प्रारम्भ हो जाता है। जैसे गाय, बैल, बकरी के रोग, अठंवा, चमकई, खुरहा आदि होता है, मुर्गी में भी माय–मात, मरने या झुपने लगता है। ऐसा होने से पहले, उसे गांव से निकालने के लिए करम पूजा के दूसरे दिन अर्थात करम विसर्जन के दिन सुबह में स्नान कर सबसे पहले चुल्हा और सभी दरवाजा के सामने गोबर से लिपाई करते हैं तथा नूड़ा (जिससे लिपा गया था) को दरवाजा के बगल में रखते हैं। फिर खपरा में आग लेकर धूप–धुवन जलाते हैं। धूप–धुवन जलाते समय अपने पूर्वजों को याद करते हुए अपने गांव, घर एवं बाल–बच्चों की सुरक्षा, आशिर्वाद के लिए चाला पच्चो, धर्मे बाबा से अर्जी विनती करते हैं। उसके बाद घर का बना हुआ धोकड़ी लड्डू या चावल का रोटी, नूड़ा (खपरा जिसमें धूप–धुवन जलायी थी) को लेकर करम विसर्जन के लिए चले जाते हैं।

इसके पहले गांव के सभी माता अखड़ा में जमा होते हैं और सभी मिल कर नाचते गाते हुए, अपना सीमान से उस पार विधि–विधान के साथ करम डाली से आशिर्वाद मांगते हुए विदा करते हैं कि ''हे धर्मे हमसे जो भी जाने–अनजाने गलती हुआ, उसे छमा करते हुए सभी रोग को बाहर कर देना और गाँव में किसी प्रकार का रोग प्रवेश करने नहीं देना।'' गोहरा उराँव के अनुसार (11 मई 2020) सीमान में जाकर सबसे पहले गोबर से लिपाई करते हैं। इसके बाद सबसे पहले गाँव के पहान, पुजार, महतो, ओहदार, भण्डारी, सभी को बारी–बारी से पूजा करने के लिए महतो द्वारा बुलाया जाता है और सभी बारी–बारी पूजा करते हैं। वहीं करम काटने या पकड़ने या ले जाने के समय भी सिर्फ लकड़ा, बाड़ा और तिर्की, ये तीनो गोत्र के लोग ही करम पकड़ सकते हैं। इसी लिए उस गोत्र के घर के लोगों को किन्ही एक सदस्य को जाना ही पड़ता है। वहीं पर धोकड़ी लड्डु[6] और रोटी को मिल बांट कर खाते हैं और फिर नाचते

---

[6] धोकड़ी लड्डू, जिसे पत्ता में टीप कर बनाया जाता है। इसके लिए सबसे पहले पत्ता को मोड़कर चोंगा अर्थात टोपी जैसा बनाते हैं। फिर उसमें चावल का गूंड़ी डालकर ऊपर फिर से बन्द कर देते हैं। लड्डू बनाने के लिए पत्ता का जो सांचा तैयार किया जाता है, उसे ही धोकड़ी कहते हैं।

गाते अपने–अपने लौट घर जाते हैं। बुढ़ी करम में खासकर धोकड़ी लड्डु बनाया जाता है और लड़की करम में छिलका रोटी। जिसे गीत के माध्यम से एक टुकड़ा खाने नहीं आये कहा गया है। इसी से संबंधित कुछ गीत निम्नलिखित हैं –

22	पच्चो पचगीर पच्चो करम मनचर, बरे बेटी से मला बाचर।।	बूढ़ा–बूढ़ी बुढ़िया करम मनाये आओ बेटी नहीं बोले
	ओन्द खंड़ा असमा गे ओन्द ख़े–ता झरा गे बरे बेटी से मला बाचर ।।	एक टुकड़ा रोटी के लिए एक दोना हड़िया के लिए आओ बेटी नहीं बोले
	पेल्लो करम गे झिरका बईरका, पच्चो करम धोकड़ी लड्डू।।	लड़की करम में छिलका बारा बूढ़िया करम में धोकड़ी लड्डू
23 (ना)	कहाँ सिरिजाल रे मनवा, कहाँ तोरा जनमा पवे भला –2	कहाँ सिरजन हुआ मानव कहाँ तुम्हारा जन्म हुआ
	बबा कोरा सिरिजाल से मनवा अयो कोरा जनमा तो पवे भला –2	बाबा कोरा से सिरजन हुआ माँ कोरा से जन्म हुआ
24 (ना)	नखे नखे धनी अयो हूँ नखे बबा हूँ नखे।। अयो बबा अवत होबँय धनी कोयलो मा छेकँय धनी शंखो मा छेकँय।।	नहीं हैं धनी माँ भी नहीं हैं पिताजी भी नहीं हैं माँ और पिताजी आ रहे होगें कोईल नदी रोक दिया धनी संख नदी रोक दिया
25	बड़ा ए–ख़ नू अयो बड़ा चैन लग्गी, अयो कुलुर का बेसे लग्गी, बबा कुलुर का बेसे लग्गी	बड़ छांव में मां बहुत अच्छा लगता है माँ की छाया जैसा लगता है पिताजी के छाया जैसा लगता है
	नयो केच्चा बली मुच्चरा, ए–ख़ इज'आ अड्डा हूँ मल्ला	माँ मर गई, दरवाजा बन्द हुआ छाया होने के लिए स्थान नहीं है

उपर्यक्त गीत में हमारा सिरजन कहाँ हुआ और जन्म कहाँ हुआ, उसे बताया गया है। कि हमारा सिरजन बाप से हुआ और माता के कोख से हमारा जन्म हुआ। साथ ही माता–पिता के नहीं रहने से जीवन बड़ा ही दुःखदायी होता

है। जिनके जीवन में माता पिता का साया नहीं है वही जानते हैं कि माता–पिता का साया क्या होता है। माता–पिता के रहने से संसार के किसी भी कोने में रहिए, माता–पिता का आशिर्वाद बरगद पेड़ की छांव की तरह लगता है। माता–पिता के नहीं रहने से वही पेड़ धूप देने लगता है।

3.2.2.3 करम पर्व

करम पर्व आदिवासियों का दूसरा प्रमुख त्योहार है। जिसमें करम देव की पूजा की जाती है। यह त्योहार भादो एकादशी के दिन पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है, जहाँ–जहाँ आदिवासी समाज का निवास है। जिसे हम राजी करम से संबोधित करते हैं। कहीं–कहीं यह पर्व अलग–अलग दिनों में मनाया जाता है। जैसे :– इन्द करम, जितिया करम, दसई करम, कातिक करम परन्तु मनाने का मकसद एक ही तथा पूजा पाठ भी एक होता है, सिर्फ गीत के राग में, दसई करम के बाद परिवर्तन होता है। इस करम त्योहार में लड़कियाँ उपवास करती है।

करम पर्व भाई–बहन के बीच गहरे रिस्ते को भी दर्शाता है। इस दिन बहन उपवास रखती है और दिन भर उपवास कर शाम में करम डाली अर्थात करम देव को लाने जाती है। बहने भाइयों को करम डाल लाने के लिए बुलाती है और साथ मिलकर करम देव का लाने, नाचते–गाते जाते हैं और करम की डाल को परिक्षते हुए लाते हैं। शाम में करम देव की पूजा की जाती है। इसमें सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार की मंगलकामना के लिए करम देवता से विनती करती है।

कहीं–कहीं तो अब लड़कों ने भी उपवास करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके लिए एक महिना पहले से ही तैयारी में लग जाते हैं। करम पहुंचने के पहले कांसी (पोण्डरा) खेतों में फुल कर चारो तरफ सफेद दिखाई देता है। सभी पेड़ पौधा करम के स्वागत की तैयारी में लगी हुई है। नदी–नाला भी कल–कल करती हुई वो भी तैयारी कर रही है। इस तरह का दृश्य देखकर ही नवजवान लड़का–लड़के करम के पूर्व ही श्रृंगार–पतार करने लग जाते हैं। सभी कोई अपने आपको अधिक ही दिखाने के लिए श्रृंगार करती है। इसी तरह एक लड़का अपने छाता को बगुला के पंख से सिंगराया हुआ है और एक युवती, उसे देखते ही उनके जुबान से स्वतः गीत की धारा निकलती है।

26	एका जों–खस कडरू खापदस,	कौन लड़का कडरू चरा रहा है
	कुल्ला मईंय्या बइकला टंइयाँ।	छाता ऊपर बगुला पंख
	चेड़ा जों–खस कड़रू खापदस	जवान लड़का कडरू चरा रहा है
	कुल्ला मईंय्या बइकला टइयाँ।	छाता ऊपर बगुला पंख
	चि'ओस बाच–बाच हेद्दे मनदन,	देगा बोलकर सामने होते हैं
	धीरजा ननय पेल्लो ब'अदस।।	धीरज रखो बोलता है

3.2.2.3.1 जावां उठाना

करम पूजा के लिए करम के सात दिन पहले जावां उगाया जाता हैं। उस

दिन उपवास करने वाले नदी से बालू लाते हैं तथा स्नान कर जावां उठाते है। जिसमें सात किस्म का बीज लगाया जाता है और उपवास करने वाले प्रत्येक दिन दतवन कर सुबह हल्दी पानी छिड़कते हैं ताकि किसी प्रकार का रोग या अन्य चीज न लगे। अर्थात जावां की सेवा करती है। इससे संबंधित कुछ गीत है।

27	एका पेल्लो जावां जगा बाचा –2	कौन लड़की जावां उगायी
	बलका अम्म ओन्ता बाचा –2	हल्दी पानी पिलायी
	चेड़ा पेल्लो जावां जगा बाचा –2	जवान लड़की जावां उगायी
	बलका अम्म ओन्ता बाचा –2	हल्दी पानी पिलायी
28	जावां जावां ब'अदी पेल्लो कोय	जावां जावां कहती हो लड़की
	जावां निंग्हय पोटोरो र'ई –2	जावां तुम्हरा पोटरो है
	जावां निंग्हयन सेवा ननय पेल्लो	जावां तुम्हारा को सेवा करो
	जावां निंग्हय पोटोरो र'ई –2	जावां तुम्हारा पोटरो है

भादो एकादशी के दिन गाँव के सभी बच्चे बच्चियाँ करम लाने के लिए जाती है उस समय भी अखड़ा से लेकर करम काट कर लाने तक नाचते गाते जाते हैं। उपासाल पार्वती लोग लड़कों को करम काटने के लिए बुलाती हैं और गीत के माध्यम से उन्हे कहती है। साथ ही करम के दिन में पानी नहीं आये और सभी मिल कर करम का सेवा करने जाते हैं और कहते हैं कि इतना दिन तो पेड़ के डाली का शोभा बढ़या परन्तु आज हमारे गांव के अखड़ा का शोभा बढ़ाना।–

29 (ना)	काहे रे हीरो छोड़ा	काहे रे हीरो लड़का
	खुरी खुरी हाँक देवे	गली गली में चिल्लाये
	करम का दिना पहुइच आवे हो	करम का दिन आ गया
	चल तो रे हीरो छोड़ा	चलो तो रे हीरो लडका
	करम काटे जाब रे	करम काटने जायेगें
	करम का दिना पहुइच आवे हो	करम का दिन आ गया
30 (ना)	करम का दिना पानी न बरिसे	करम के दिन पानी नहीं आये
	चला जाब करम का सेवा –2	चलो जायेगें करम काटने

	दयाँ हाथे लोटा	दहिना हाथ में लोटा
	बायाँ हाथे डालिया	बांया हाथ में डलिया
	चला जाब करम का सेवा –2	चलो जायेगें करम सेवा
31 (ना)	एतई दिना करम डारी में रहाले	इतना दिन करम डाली में थे
	आईज करम अखड़ा में शोभे –2	आज करम अखड़ा में शोभे
	आईज करम अखड़ा में शोभाले	आज करम अखड़ा में शोभे
	काईल करम गंगा नहाने –2	कल करम गंगा नहाने

3.2.2.3.2 करम काटने जाना

32	पूंप तोक्खा केरकन यो	फूल तोड़ने गयी माँ
	नीदी डउड़ा किर्रा लगेन।।	खाली डलिया लौट रही हूँ
	ची तो बेटी पूँपन ब'ओर होले	दो तो बेटी फूल कहेगें तो
	अयो नेन्दरन चि'ओन ।।	माँ क्या दूँगी
33	पूँप तोक्खा केरन अयो	फूल तोड़ने गई माँ
	बला नदी छेकेरन केरन।।–2	बाला नदी छेका गयी
	पूँप तोक्खा केरन अयो	फूल तोड़ने गई माँ
	झरिया झरिया केरन।।–2	झरिया–झरिया गई
34 (ना)	फुला लोरे गेले गे धंगरीन	फूल लोड़ने गई धंगरीन
	फला तोरा कुमलाय गेला	फूल तेरा मुरझा गया
	फुला तोरइया के	फूल तोड़ने वालों को
	भेलंय आधा राईत रे	हुआ आधा रात रे
	करम कटइया के	करम काटने वालों को
	भेलंय भिनसारा	हुआ भिनसारा

इस गीत में लडकी अपनी माँ से कहती है कि मैं फूल तोड़ने गई जहाँ फूल मिलता है पर नदी पार करने नहीं सकी। खाली डलिया लौट रही हूँ और कोई फूल मांगे तो मैं क्या दूँगी। फूल तोड़ने के पहले नदी में पार करने नहीं सकी और फूल तोड़ते–तोड़ते ही आधी रात हो गई, अब तो करम काटते सुबह हो जाएगी।

3.2.2.3.3 करम काटना –

अरवा धागा, अरवा चावल, सिन्दुर, एक लोटा सादा पानी। पहले तीन कुँवार लड़कों को साथ लेकर करम काटने के लिए जाते हैं। वे तीनों अलग–अलग गोत्र के होते हैं। पहले करम पेड़ को पानी से नहलाते हैं, कपड़ा अर्थात धागा तीन चक्कर पहना कर सिन्दर टीका लगाते हैं फिर अरवा चावल हाँथ में लेकर गोहराते हैं –''हे करम देव, आज आपका तीन डाली काट रहे हैं और यही डाली में तुम सहाय रहना। हे करम देव उतना दिन आप बारह–बाहर रहे, डाली का शोभा बढ़ाया, पूरे संसार का शोभा बढ़ाया, हे करम देव आज हम सब लोग मिलकर अखड़ा में लाये हैं। ''हे दे आज जाने अनजाने किसी प्रकार का गलती होता है तो हमें छमा करना और सबके ऊपर सहाय रहना और किसी प्रकार का दुःख तकलीप नहीं होने देना। साथ ही घर–द्वार, पर–परिवार सभी को सुखी पूर्वक रखना। यही तुमसे अरजी विनती करते हैं।'' यहां जितना भी पूजा विधि और गोहरना लिखा गया है वह सभी पुगु बड़का टोली के करम पूजा से लिया गया है। रास्ते में आते समय (रायमनी उराँव, ग्राम, सुपली, गुमला।)

35	बीड़ी पुतिया करम अड़सिया	सूरज डूबा करम पहुँचा
	ची अयो पापा पापा –2	दो माँ रोटी रोटी
	छिरकन मला मो–ख़ोन	छिलका नहीं खाउँगा
	बारिकन मला मो–ख़ोन	छाना नहीं खाउँगा
	लाल पऊवन मो–ख़ोन।।–2	लाल पउवा खाउँगा

3.2.2.3.4 करम पहान के घर लाना

इस गीत में करम उपवास करने वाले करम काटकर आ गये हैं। मैं सुबह से भूखे प्यासे हूँ। माँ मुझे खाने के लिए रोटी दो। खास बात यह है कि रोटी में नमक डालते हैं और वह जबतक पूजा नहीं किये हैं, खाने नहीं बनेगा। इस लिए उसकी बेटी तेल का बना हुआ रोटी मांग रही है। जिसमें नमक नहीं डाला हुआ है। जो खाने के लिए बनेगा। जिनके यहाँ सुबह पूजा होता है, वे शाम में बिना नमक वाला रोटी खाते हैं। आदिवासियों के घर में करम त्योहार या अन्य किसी प्रकार का त्योहार हो, चावल का बना हुआ छिलका रोटी ही मिलता है।[7] इसी से संबंधित उपर्युक्त गीत है। इसके बाद करम काटकर करम को नाचवाते पहान के घर लाते हैं उस समय का गीत :–

---

[7] उराँव जाति के खान–पान की अलग ही विशेषता रही है। प्रत्येक पर्व त्योहार में अलग तरह का पाकवान बनाया जाता है। जैसे कि करम में छिलका रोटी, नया खानी में चिवड़ा, कातिक में कोहरी, जतरा में लड्डु, माघ में पीठा लड्डु, खपरा रोटी, फागुन (होली) में छाना–बरा, सरहुल में फिर हिलका रोटी, बुढ़ी करम में धोकड़ी लड्डु। और ये मौसम के आधार पर बनाया गया है। जिससे पेट भी खराब न हो। इसी तरह से विवाह में भी मुतरी लड्डु बनता है।

36 (ना)	केकरा आंगेना	किसके आंगन में
	करम डाइर आवे	करम डाली आवे
	करम डाइर लईसा ते आवे	करम डाली डोलते आये
	भईया का आंगेना	भाई का आगन में
	करम डाइर आवे	करम डाली आये
	करम डाईर लइसा ते आवे	करम डाली डोलते आये
37 (ना)	कहाँ गेला हो घरनी मोरा	कहाँ चले गये घर मालकिन
	लनी देबा हो लोटा का पानी.	ला देना लोटा का पानी
	भलेर...भलेर	भालेर भालेर
38 (ना)	नैगनी नैगनी तेला सिन्दुर –2	पहानिन पहानिन तेल सिन्दुर
	करम राजा जाथे गंगा नहान	करम जा रहा है गगा स्नान
	गंगाड़ो ती रे भला	गंगाड़ो ती रे भला
	गंगा राजा जमुना पाइन मारे	गंगा राजा जमुना नाला मारे
	गंगाड़ो ती	गंगाड़ो ती
	एको से मारे दुयो से मारे भला	एक से मारे दो से मारे भला
	गंगा राजा जमुना पाइन मारे	गंगा राजा जमुना नाला मारे
	गंगाड़ो ती रे –2	गंगाड़ो ती रे
	गंगाड़ो ती रे –2 रे भला	गंगाड़ो ती रे भला
	गंगा राजा जमुना पाइन मारे	गंगा राजा जमुना नाला मारे
39 (ना)	पानी मंगाय दे करम	पानी मांग दो करम
	पानी मंगाय दे –2	पानी मांग दो
	तोर लगिन तेल सिन्दुर	आपके लिए तेल सिन्दुरमोके देबय
	पानी करम पानी	हमें देगें पानी करम पानी
40 (ना)	जल्दी जल्दी बिदा करू रे	जल्दी जल्दी बिदा करो
	पारबत्ती उपासाल जाए	पारबत्ती उपवास किये
	भालेर भालेर	भालेर भालेर
41	गुण्डा नुम गुण्डा,	आटा में ही आटा
	गुण्डा लिन्डिया –2	आटा गूंथा

	तान तान मेक्खी मोखी फलना[8] तंग्गियो कोय फलना तंग्गियो	स्वयं बनायी खायी फलना की माँ कोय फलना की माँ
42 (ना)	देविस होले दे महतो नहीं होले धोती के छोर।। भालेर भालेर	देते हो तो दे महतो नही ंतो धोती को खोलो
43	चोतोर बारी बरेदन, खेड्‌डन नोड़ोय मेन्दी का मला।। भलेर भलेर	कीचड़ समय आ रही हूँ पैर धोयीगी सुनती है या नहीं
	पईरी बीरी बरेदन, खेड्‌ड़न नोड़ोय मेन्दी का मला।। भलेर भलेर	सुबह में आयी हूँ पैर धोयीगी सुनती है या नहीं
44 (ना)	तेल दे गे अयो सिन्दुर दे गे करम कर बिदा कईर देले गे अयो	तेल दो माँ सिन्दुर दो करम को बिदा कर दी माँ
45 (ना)	ई करम ई करम का मांगेला –2 कोना बटे हाड़ी अहे डलिया में रोटी अहे सेके जुनू मांगेला ला करम मांगेला	ये करम क्या मांगता है कोना में हड़िया है दौरा में रोटी है उसी को मांगता है
46	महयतो मना गे सेवा लगिया। ओन्टे झरा गे पोलेदन ब'अदन।। हय फलना महयतो, भालेर भलेर	महतो होने के लिए सेवा है एक हड़िया के लिए नहीं सकेगें बोलता है हय फलना महतो, भलेर भलेर

[8] गीत में फलना जोडने का मतलब यह है कि जिसके घर करम देव को घुमाने के लिए गये हैं, उस घर के किसी भी सदस्य का नाम लेते हैं, जिनको मजाक करने या हँसने बनता है। जैसी की गीत में सं0 34 में गुण्डा नूम गुण्डा, गुण्डा लिन्डिया, तान–तान मेक्खी मो–खी, ''रूपेश'' तंग्गियो कहा जाता है। इस गीत में गुण्डा अर्थात चावल का गूंड़ी, जिसे पानी में मिलाकर छिलका रोटी बनाई और खुद बनायी और खुद ही खा रही है, रूपेश की माँ। ध्यान रहे कि फलना यदि कहीं आता है तो समय और स्थान के आधार पर गांव का भी नाम लिया गया है। जैसा कि फलना गाँव में करम देव को लाये और सेवा कर रहे हैं। परिस्थिति के अनुसार फलना के स्थान पर नाम, गोत्र भी हो सकता है।

47	कीमाड़ो–कीमाड़ो[9] लाल किमाड़ो पेल्लयन–जोंखयन संग्गे नना गे लाल कीमाड़ो कोय कोय लाल किमाड़ो।	कोयनार साग लाल कोयनार लड़की लड़के को साथ करने लाल कोयनार साग कोय

उपर्युक्त गीत में कहा गया है कि करम देव भाई के आंगन में बहुत ही सुन्दर से नाचते गाते आ रहा है। इस गीत में कहा गया है, आप सभी कहाँ चले गये हैं, घर में करम देव को न कोई परिक्षने के लिए हैं और ना पैर धोने के लिए, इसके पश्चात नैगनी (पहानीन) पहले करम देव को धोती है और साथ में जितने भी करम देव को लाने जाते हैं उन सबका पैर धोती है, फूल अछत छिटती है, सिन्दुर टिका देती है और धूप धूवन दिखाती है। उपर्युक्त सभी गीत इसी नेग–दस्तुर से संबंधित है। इसके पश्चात करम देव को अपने हाँथ में लेकर घर के छत में रखती है। सबों को बैठाकर रोटी हड़िया देती है, जिसे सभी अपने इच्छा से प्रसाद के रूप में लेकर अपने–अपने घर चले जाते हैं फिर करम पूजा करने लिए आने की तैयारी करते हैं।

3.2.2.3.5 अखड़ा में करम गाड़ना

इधर पहान करम को लेकर अखड़ा में आते है। जहाँ करम गाड़ते हैं, उस स्थान को गोबर से लीप कर पवित्र करते हैं फिर विधि विधान के साथ करम देव को अखड़ा में गाड़ता हैं, पुजार ही करम देव को गाड़ने के लिए गडढा खोदता है और करम गाड़ता है। वहीं पर नैगनी (पहानीन) करम डाली के नीचे दोना में दीया जलाती है। वही दीया बहुत ही सुन्दर ढंग से चमक रहा है। उस समय भी नैगस (पहान) करम राजा से गोहराते है कि –''हे करम देव, आज आपको बहुत दूर से लाये और फलना गांव के अखड़ा में स्थापित किये हैं। आज गांव के पूर्वजों को भी याद करते हुए हमसे किसी प्रकार का गलती–सलती होगा तो हमें छमा करना और सहाय होना, आज बाल–बच्चा, घर–द्वार, सबको अच्छा से देखना किसी प्रकार का दुःख–तकलीप नहीं होने देना, सभी अपना–अपना सोच–विचार कर तुमको सेवा करने आये हैं। उनका मनोकामना को पूरा करना और सबके ऊपर सहाय रहना।'' उस समय का गीत –

---

[9] कीमाड़ो लाल रंग का पौधा होता है जो अक्सर खेत, नदी या दलदल स्थानों के मेढ़ों मे हुआ करता है। ये प्रसुति बीमारियों के लिए अचूक दवा हैं। इनके गर्म पानी से स्नान करने और सुबह–शाम पीने से औरतों की प्रसूती बीमारी ठीक हो जाती हैं। इसीलिए वे किमाड़ो से आग्रह करती है कि कुछ लड़कियाँ उल्टी और दस्त की बीमारियों से तबाह हैं और कुछ लड़कियाँ गर्भवती हैं, इस लिए हमलोग तुम्हें उखाड़ कर करम गोसाई के पास आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु ले जा रहे हैं। तुम्हारे सेवन से वे बिलकुल ठीक हो जायेगीं। नाचते–गाते समय युवक को लाल किमाड़ो के समान सुखी और खुशहाली जीवन हमें देना।

48 (ना) के कोड़ला नौरा पोखाईर –2   कौन कोड़ा नया तलाब
के नहाला नौरा पोखइर –2   कौन नहाया नया तलाब

पुजार कोड़ाला नौरा पोखाईर –2   पुजार कोड़ा नया तलाब
पुजारिन नहाला नौरा पोखाइर ।।–2   पुजारिन नहायी ना तलाब

49 (ना) करम का बुदा तरे का दिया बरे   करम का बुदा में क्या दीया जले
करम का बुदा तरे का जिगोंर   करम का बुदा में क्या बिलचे

नैगनी दिया बरे से   पहानिन दीया जलाये वो
जिंगोर जोगोर   जिंगोर जोंगोर
नैगनी दिया बरे से   पहानिन दीया जलाये वो
झका मका   झकामका

इस गीत में करम के पास दीया जलाया गया है, जो बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा है। जिसे पहानिन ने करम गाड़ने के बाद जलायी है। ये सभी कार्य करने के लिए पहान और पहानिन को उपवास एवं स्नान करना पड़ता है। इसके बाद पहान सभी उपवास किये हुए पार्वतीन के साथ गाँव के सभी लोगो को बुलाता है। –''अखड़ा में करम देव विराजमान हो गए हैं आप सभी करम की सेवा के लिए चले आयें।''

3.2.2.3.4 पूजा करना

इसके बाद पूरे विधि विधान के साथ पूजा होता है। गाँव पुगु बड़का टोली में जिस तरह का पुजा होता है, उसे मैं उसी से प्रारम्भ कर रहा हूँ। जब करम अखड़ा में गाड़ा जाता है। इसके पश्चात उपवास करने वाले आते हैं। जैसे आते हैं, वैसा ही अपना करम ''डउड़ा'' (डलिया) को लड़की है तो तीन और लड़का है तो पाँच बार करम को चक्कर लगाते है, फिर स्थान लेकर बैठ जाते है। जो नया उपवास किये हैं उन्हें कोरा कर लडकी को तीन और लड़का को पाँच चक्कर लगाते हैं, साथ ही इनके साथ पीछे से कोई भी लोटा में पानी और ''उसंगी'' (फाल) पकड़कर जहाँ पानी गिराती है, वहाँ उसंगी से छोपते है। इसके पश्चात सभी कोई अपने–अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। नया उपवास करने वालों को तीन चक्कर लगाते हैं उसी का गीत –

50 बैरांगी हकुड़ बली गुसन बरचा   दुश्मन घोड़ा दरवाजी के पास आया
उला कोरोन ब'अदन   अन्दर जाउँगी कहती हूँ
मेन्दी का मला –2   सुनती हो कि नहीं

पइरी बीरी बली गुसन बरचा	सुबह समय दरवाजा के पास आया
उला कोरोन ब'अदन	अन्दर जाऊँगी कहती हूँ
मेन्दी का मला –2	सुनती हो कि नहीं

उपर्युक्त गीत उस समय गाया गया है, जब दुश्मन (करम कथा के अनुसार) हमारे लोगों को दौड़ा रहे थे, वे भागते हुए एक पेड़ के खोढ़र में शरण लेते हैं। वहीं पर पहानिन एक बच्चा को जन्म देती है। उसी समय दुश्मन का घोड़ा इंगित कर रहा था कि लोग यहाँ पर छिपे हैं। घोड़ा उस पेड़ को तीन बार चक्कर लगाता है और पेशाब करता है और पैर से खोतरता है। परन्तु दुश्मन उस घोड़े का इंगित करना नहीं समझ पाते हैं और वापस हो जाते हैं। इसीलिए जो नया उपवास करते हैं उन्हें घोड़ा करके तीन चक्कर लगाते हैं और पानी ढ़ालते हैं तथा फाल से कोड़ते हैं।

जो पुजा कराते हैं वे नैगस से सबसे पहले पूजा कराते है ताकि हमसे अर्थात पूजा कराने वाले, बच्चों और गांव वाले से जो कुछ जाने अनजाने गलती हो जाता है तो हमे क्षमा करें और हमारे ऊपर सहाय रहें।

3.2.2.3.4.1 तीन चक्कर लगाना

इसके पश्चात जितने भी उपवास करने वाले, वे अपने–अपने करम डउड़ा को सिर में ढोकर करम देव को तीन चक्कर लगाते है। इसके पश्चात सभी अपने हाथ में फुल अछत लेकर गोहराते है– ''हे करम देव, गांव के सभी मिलकर उपवास कर सेवा करने आये हैं, आज सबसे पहले हमसे किसी प्रकार का देने लेने में भूलचूक से गलती होती है तो हमें छमा करना और जिस तरह से आपको तीन चक्कर लगाये उसी तरह हमें सभी दुःख तकलीप से बचाकर रखना और सहाय रहना।'' फिर फूल अछत छिटते है। कोई भी नेग के बाद फूल अछत छिटा जाता है।

2.2.3.4.1 नहलाना

इसके बाद सभी उपवास किये हुए परवती करम देव को अपने–अपने स्थान से आकर नहलाते हैं और फूल अछत छिटते हैं। इसके पश्चात हाँथ में फूल अछत ले कर करम देव को गोहराते हैं–''आज आपको धोये–नहलाये, उसी तरह से हमारे ऊपर किसी प्रकार का हिंसगा–पंटगा, दोषी, लोभी–लालची, सभी प्रकार के गलती को धोकर ले जाना और हमारे शरीर के मन को पवित्र करना''

3.2.2.3.4.2 कपड़ा पहनाना

सफेद धागा को सभी मिलकर तीन घुमर कर करम देव को लपेट देते हैं। इसके पश्चात हाँथ में फूल अछत ले कर करम देव से गोहराते हैं–''आज आपको किसी प्रकार सराजमा करके कपड़ा पहना रहे हैं, उसी तरह हमें भी

अपने श्रृंगार–पतार, कपड़ा लता में कभी भी कमी होने नहीं देना और आपका दिया हुआ श्रृंगार को कभी मैला होने नहीं होने देना।''

3.2.2.3.4.3 सिन्दुर–टिका देना

सभी करम देव को अपने–अपने स्थान से उठकर सिन्दुर टिका तीन बार देते हैं। इसके पश्चात हाँथ में फूल अछत लेकर करम देव को गोहराते हैं–''हे करम देव, आज आपको सिन्दुर देकर समाज में लोगों के पंक्ति में लाये, वैसा ही हमें भी समाज में जीवन जीने लाईक बनाना, हमारा नाव को जीवन भर चलने लाईक बनाना और अच्छा रास्ता दिखाने का प्रयास करना।''

3.2.2.3.4.4 धूप–धुवन देखाना

सभी अपने–अपने स्थान से करम देव को धूप–धूवन दिखाते हैं। इसके पश्चात हाँथ में फूल अछत ले कर करम देव से गोहराते हैं–''आज आपको धूप–धुवन दिखाये, उसी तरह हे करम देव, किसी भी प्रकार का रोग–पाप हमारे ऊपर है, उसे धुवां की तरह उड़ा कर ले जाना और हमारे शरीर को पवित्र करना।''

3.2.2.3.4.5 रोटी–चिवड़ा चढ़ाना

घर से पूजा के लिए प्रसाद अर्थात रोटी–चिवड़ा लाते हैं उसे चढ़ाते हैं। इसके पश्चात हाँथ में फूल अछत ले कर करम देव को गोहराते हैं–''हे करम देव किसी प्रकार से सरा–जमा कर आपको खाने–पीने दे रहे हैं। जैसे रोटी, चिवड़ा, गुड़ आदि उसी प्रकार हमें भी किसी प्रकार का खाने पीने के लिए कमी होने नहीं देना और मेरे दरवाजा में कोई भी आयेगें, खाली हाथ न लौटे, इतना हमें देना और खेती बारी करने वाले हम हैं इसलिए वर्षा भी अच्छा से देना।''

3.2.2.3.4.6 खीरा मलता बबु चढ़ाना

करम देव को खीरा अर्थात बबु चढ़ाते हैं। इसके पश्चात हाँथ में फूल अछत लेकर करम देव को गोहराते हैं–''हे करम देव, आज जिस तरह से खीरा, बबु के रूप में दे रहे हैं, उसी तरह हमारे जीवन में भी समय से शादी विवाह कराना और समय से इसी तरह बाल–बच्चा भी देना और वैवाहिक जीवन में किसी प्रकार का कांटा चुभने नहीं देना।''

3.2.2.3.4.7 जावां फूल चढ़ाना

जावां फूल चढ़ाने के पश्चात हाँथ में फूल अछत ले कर करम देव से गोहराते हैं–''हे करम देव, आज बहुत ही सुन्दर जावां फूल आपको दे रहे हैं, इसे कितना सुन्दर से सात दिन पहले उठा कर, दतवन करने पश्चात, रोज हल्दी पानी देकर पवित्र करते थे ताकि किसी प्रकार का बुरा चीज नहीं लगे, उसी

तरह से हमारे शरीर के, मन के पाप को धो कर पवित्र करना और अच्छा ज्ञान, विद्या प्रदान करना।

सभी फूल प्रसाद करम देव को चढ़ाने के बाद फिर और एक बार करम देव से गोहराते हैं–''हे करम देव, आज सभी मिलकर सभी उपवास कर आये हुए हैं। आज हमसे किसी प्रकार का आपको देने में जाने–अनजाने छुट गया होगा तो हमें छमा करें, और जिस तरह से एक वर्ष हमारे शरीर, घर परिवार, गांव को अच्छी तरह से रखा, उसके लिए धन्यावाद और आने वाले वर्ष तक इसी तरह से रखना ताकि आने वाले वर्ष भी आपको इसी तरह से सेवा करेगें यही आपसे अर्जी–विनती करते हैं। ....''

3.2.2.3.4.8 फूल बांटना

इसके पश्चात पारवत्ती लोग अपने के अलावे औरों के लिए आशिर्वाद मांगने के लिए सुरगुजा फूल को बांटते हैं।

इसके पश्चात करम कथा पुजा कराने वाला सुनाता है, कि करम को क्यों मनाया जाता है और सेवा करने से क्या लाभ और हानि है। करम कथा क्या संदेश देता है। करम कथा में ही एक गीत में उराँव लोगों के रोहतासगढ़ या उससे पहले हड़प्पा, मोहनजोदड़ो के शासन में शान्ति एवं सुख साम्राज्य था, उसे दर्शाता है। उस समय तुड़कर सैनिकों ने राज्य पर आधिपत्य जमाने का प्रयास किया, दुश्मन उनकी नींद हराम करते थे, उन्हें अमन चैन रहने नहीं देते थे। जिसकी पुष्टि इस गीतों में होती है (भगत,छो.उ.री.97)।

51	बरगी–बरगी भईया आवे,	दुश्मन दुश्मन भाई आये
	हरे आयो निंदा कैसे आवय,	हरे आयो नींद कैसे आवे
	हरे बाबा निंदा कैसे आवय।	हरे बाबा नींद कैसे आवे

इसके बाद बरिसो अर्थात करम देव को फूल चढ़ाते हैं। करम कथा लोककथा के अध्याय में देख सकते हैं। इसके बाद विनती किया जाता है।

3.2.2.3.4.9 विनती

52	अना आदि मुंज्जरना मलका	कभी नहीं खत्म होने वाला
	नीनिम धर्मे र'अदय बंगायो –2	तुम ही भगवान हो, पिता
	उरूमी नुम ए–रा लगदय	सबको देख रहे हो
	उरूमी गेम जोड़गर र'अदय	सबके लिए सहायक हो
	कों–ड़ा कों–ड़ा र'अदय –2	कोना–कोना में हो

जनम करम चिच्चकय धर्मे	जन्म करम दिये भगवान
पोस'आ परेदा लगेदय बंगायो –2	पालकर बड़ा कर रहे हो पिता
आशिष चि'दय उरूमी गेम	आशिष देते सबके लिए
दया नन्नदय उरूमी नुम	दया करते हो सबके ऊपर
धर्मे डहरेन ए–द'आ बंगायो	धर्म रास्ता दिखाओ पिता
सत डहरेन ए–द'आ	सत्य रास्ता दिखाओ
तंग'आ जिया लेखा धर्मे	अपने दिल जैसे भगवान
होरोमर ही जियन बंग्गे	सबके ही दिल जैसे पिता
ए–रना लूरन चि'आ बंगायो	देखने जैसा ज्ञान दीजिए पिता
सिखरना लूरन चि'आ	सीखने जैसे ज्ञान दीजिए
दोषी[10] गा र'अदम पहें	दोषी तो हैं फिर भी
नीनिम धर्मे तांड़ोय बंगायो –2	तुम्ही भगवान इसे दूर करोगे
अना आदि मुंज्जरना मलका	
नीनिम धर्मे र'अदय बंगायो –2	

3.2.2.3.4.10 नृत्य संगीत कार्यक्रम

इसके बाद परसाद वितरण करते है। परसाद वितरण के बाद उपवास करने वाले के माता या जो भी घर का सदस्य, करम डउड़ा को उठा लेते हैं और नाच–गान प्रारम्भ हो जाता है। जो करम विसर्जन तक चलता है।

करम पूजा खत्म होते ही पूजा को हटाने के लिए कहा जाता है। नहीं हटाने पर सभी पूजा समान इधर–उधर हो जाएगा, नाचने वाले गाजे–बाजे के साथ अखड़ा में प्रवेश कर रहे हैं। इधर करम देव को सातो गोतनी एवं सातो भाई मिल कर बड़े ही धूम–धाम से सेवा करते है। इसमें सभी भाई एवं गोतनियों को अपना कार्य बांट दिया गया है और सभी अपने कार्य को बखूबी निभाते हैं। उसी से संबंधित कुछ गीत निम्नलिखित है (गोहरा उराँव, पुगु बड़का टोली, गुमला)।

---

[10] हम सभी जानते हैं कि कोई भी गलती जान–बूझ कर करना ''पाप'' कहलाता है और अनजाने में हुआ गलती ''दोष''। महादेव उराँव, मोराबादी, राँची ने बताया कि हमलोग कभी भी जान–बूझकर गलती नहीं करते हैं, होता भी है तो अन्जाने में। जैसे कि वो मेरी जेठ सास है। हमें पता है कि उन्हें नहीं स्पर्श नहीं करना है। फिर भी यदि किसी प्रकार से स्पर्श हो जाता है तो वह पाप नहीं कहलयेगा। इसीलिए हमारी प्रार्थना में दोष के लिए छमा मांगते हैं, पाप करने के लिए नहीं। यदि पाप करते हैं तो लोगों को पता है कि उन्हें भगवान भी छमा नहीं करेगें। इसीलिए जानबूझ कर पाप करना नहीं चाहता। जो अभी भी देखा जा सकता है। उसी का फायदा दूसरे लोग उठा रहे हैं। और उन्हीं का देखा–देखी आज लोग पाप कार्य भी कर रहे हैं। अन्यथा पहले ऐसा नहीं था।

53	डउड़ा निंग्हयन गुछा ब'अय कोय मला होले छेरे पेटे मनो।।	डलिया तुम्हारा हटाओ लड़की नहीं तो छितिर–बितिर होगा
	पइरी बीरी गुछा ब'अय कोय, मला होले छेरे पेटे मनो।।	सुबह में हटाओ लड़की नहीं तो छितिर–बितिर होगा
54 (ना)	सातो भइया सातो करम गाडय –2 सातो गोतोनी सेवा करे ।। –2	सातो भाई सातो करम गाड़े सातो गोतनी सेवा करे
	बड़की बहिन उपासाल छोटकी बहिन पियासाल –2 मझली बहिन करमा का सेवा।।	बड़ी बहन उपासल छोटी बहन पियासल मझली बहन करम का सेवा

जब करम देव को विर्सजन के लिए ले जाते है तब दुःख तो होता है। क्योंकि साल भर करम का इंतिजार करते हैं और जैसे करम आता है बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ स्वागत के लिए तैयारी करते हैं। जब एक महीना का तैयारी एक दिन में ही चला जाता है तो लोगों को बड़ा ही दुःख होता है। करम पूजा से संबंधित समाग्री है जैसे हल्दी रंगा हुआ कपड़ा, जावां, सिन्दुर, दोना, अरवा चावल, को नदी में विसर्जन किया जाता है।

3.2.2.3.4.11 करम विसर्जन

हमारे गाँव पुगु बड़का टोली में सुबह ही करम विसर्जन के लिए जाते हैं। इसके लिए प्रत्येक घर से अखड़ा में आकर तेल, सिन्दुर और पानी देते हैं। साथ में विदाई स्वरूप रोटी और कुछ पैसा। यह संस्कार आज भी उराँव समाज में देखा जा सकता है। विदाई के समय मेहमानों को कुछ न कुछ देकर ही विदा करते हैं। जो करम विदाई में स्पष्ट देखा जा सकता है। करम विर्सजन के लिए जाते समय का गीत निम्न प्रकार के हैं –

56	इवन्दा उल्ला रहचकी करम पेल्लो जोंखारिन रिझा बाचकी अक्कु गा करम कादी पेल्ला जोंखारिन टुवर नन्जकी	इतना दिन थी करम लड़की लड़का को रिझायी अब तो करम जाती हो लड़की लड़का को अकेले की
57	एम्हय करम चली केरा रे भोरे भोरे नू केरा।।–2 ए–रा हूँ पोल्लकन बे–चा हूँ पोल्लकन भोरे भोर नू केरा।।	हमारा करम चल गया रे ऐसा ही में चला गया देखने भी नहीं सका नाचने भी नहीं सका ऐसा ही चला गया

करम लेकर नदी किनारे पहुँचते हैं। वहाँ पर भी थोड़ी देर नाच–गान करते हैं। इसके बाद सबों के लिए अरवा चावल और फूल देकर करम देव से ''अना आदि'' विनती करते हैं कि ''हे करम देव हम से जाने अन्जाने कुछ भी गलती सलती होता है तो हमें छमा करना और हमें सुख–शान्ति से रखना।'' ये कर करम देव को नदी में गाड़ते हैं और बलुवा से छोपकर बहा देते हैं। इसके पश्चात रोटी को प्रसाद स्वरूप सबों को देते हैं। और जो पैसा होता है, कुछ खरीद कर, सभी मिल बांट कर खाते हैं और सभी घर चले आते हैं।

3.2.2.3.4.12 बबु बांटना

करम के तेवासी दिन बबु बांटना होता है। जिसमें उपवास करने वालों के खीरा को काटते हैं। उसके साथ चिवड़ा भी रहता है। बबु को कम–से–कम तीन घर लेना होता है। इससे अधिक भी कर सकते हैं परन्तु जोड़ा घर नहीं होना चाहिए। नाना, नानी या जिनके लिए बेटा–बेटी रिस्ता में न लगे, उनके लिए खीरा और चिवड़ा दोनों देते हैं तथा जिनके लिए बेटा–बेटी लगते हैं, उनके लिए सिर्फ चिवड़ा। करम डौड़ा को जिनके यहाँ आखरी होता है, उनके यहाँ छोड़ते हैं।

छोड़ने वाले अपने हिसाब से करम डौड़ा को लाने के लिए निमांत्रण देते हैं। लेने वाले करम डौड़ा में एकात पैला चावल डाल कर साईस बराकईत के रूप में लेते हैं। पहुँचने पर बैठाकर उनका मान–सम्मान के साथ पैर धोते हैं और खाना–पीना खिलाकर बिदाई कर देते हैं।

3.2.2.3.4 जितिया करम

जितिया करम इन्द करम के 9 दिन बाद होता है। इस करम में जितिया डाली की पूजा की जाती है। इस लिए जितिया करम कहलाया। परन्तु बहुत ऐसे गांव हैं जहाँ करम की डाली को ही पूजा करते हैं। जो जितिया करते हैं वही जितिया डाली की पूजा करते हैं। अभी आदिवासी समाज के कुछ लोग जितिया करम मना रहे हैं। पर जानकारी के अनुसार जितिया करम (जिसमें जितिया डाली की पूजा की जाती है) आदिवासियों का नहीं है। अभी तक सही जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। अभी तक जो कहानी मिली है वह हिन्दु संस्कृति से जुड़ी हुई है। आदिवासियों ने क्यों और किस लिए जितिया करम अर्थाज जितिया डाली की पूजा करते हैं, यह नहीं मिल पाया है। वहीं मंगरा कुजूर (करम,13) ने जितिया करम के बारे में एक कथा बताये हैं। उनके अनुसार ''आदिकाल में एक राक्षस था जिसे रोज उसके भोजन के लिए एक आदमी को जाना होता था। तब एक दिन जितवहन का पाली आया और वह राक्षस को मार गिराया। उसी के यादगार में जितिया करम मनाना प्रारम्भ किया।

परन्तु इस प्रकार की कथा तो उराँव लोगों की उत्पति कथा से मिलती जुलती है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि उराँव लोग हिन्दुओं के सम्पर्क में आने से जितिया करम मनाना प्रारंभ किया होगा। क्योंकि हिन्दु लोग ही जिनका बाल–बच्चा नहीं हो रहा है, वे ही लोग जितिया करम (जितिया डाली) की पूजा करते हैं। अन्यथा सभी गांव में करम डाली की ही पूजा की जाती है।

3.2.2.3.5 दसई करम

दसई करम दशहरा के बाद मनाया जाता है। यह करम अपने–अपने गाँव के सुविधा अनुसार अलग–अलग दिनों में मनाया जाता है। इसमें पूजा पाठ सभी एक जैसा होता है। दशहरा के बाद होने के कारण इस करम का नाम ''दसई करम'' हुआ होगा। आदिकाल में दसई अर्थात दशहरा के बाद भी भारी वर्षा होती थी। जो कि निम्न गीत में बताया गया है। दसई टांड में हरा दीया जल रह है और उसी दीया के रोशनी सभी नाचने में मशहूल हैं कि कब दीया बुझ गया वह पता ही नहीं चला। उस समय वर्षा से खेलने के स्थान पर भारी कीचड़ हो गया है, वैसे में हम कैसे जतरा खेलेगें। परन्तु उस समय का रीझ–रंग अलग ही थी। पूरी रात नाचते गाते सुबह कर देते थे। जो अभी कुछ कम हुआ है, पूरी रात नहीं बिताते हैं। इसमें सिर्फ सुर्रा गीत के राग एवं मांदर के ताल में अन्तर पाया जाता है। जैसे :–

58 (ना)	नेसो का दसाई डाड़े	इस साल का दसई टांड़ में
	हरियरा दीया बारे –2	हरा दीया जलता
	छोड़ा छोड़ी खेले समातुल रे	लड़का लड़की नाचने में मसगूल
	दीया बारल नीझि गेला – 2	दीया जला हुआ बुत गया

59 (ना) नेसो का दसई डाड़े	इस साल का दसई टांड़ में
झमा कि झमाईक कादो पानी –2	झमझम कादो पानी
कैसे खेलब अयो कैसे खेलब बबा	कैसे नाचेगें आयो कैसे नाचेगें
झमा कि झमाईक कादो पानी	झमझम कादो पानी

3.2.2.3.6 कातिक करम

कातिक करम को भूताहा करम से भी कहीं–कहीं संबोधित करते हैं। यह करम कातिक के एक या दो दिन पहले या तो कातिक दिन भी मनाया जाता है। इस करम में भी राजी करम, इन्द करम या अन्य करम की भांति पूजा पाठ से लेकर नाच गान एक ही रहता है। करम मनाने का उद्देश्य भी एक ही रहता है। परन्तु क्षेत्र विशेष पर नाच गान एव वादन में अन्तर पाया जाता है।

3.2.2.3.7 करम पेड़ की महत्ता

करम वृक्ष आदिवासी समाज में ही नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए ही बहुत ही महत्व रखता है। परन्तु देखा जाय तो आदिवासी समाज ही इसका पूजा सदियों से करता आ रहा है। हमारे पूर्वज जानते थे कि यह वृक्ष हमारे लिए क्या महत्व रखता है। यह वृक्ष हमारे वातावरण को स्वच्छ रखने में अहम भूमिका निभाता है। खोपा टोली के ठुंगरू उराँव के अनुसार करम वृक्ष 24 घंटा ऑक्सीजन वायु हमें प्रदान करता है। साथ ही अपने से लगभग 100 मीटर तक वायु को शुद्ध रखता है। पर्यावरण को संतुलित बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाता है। गर्मी में भी इसके पेड़ के नीचे रहने पर ओंस की बूंद गिरने जैसा अनुभव किया जा सकता है और शरीर को ठंढक अनुभव होता है।

वहीं खबर मंत्र करम पृष्ठ (11:सितंबर 9, 2019) में कहा गया है कि वैज्ञानिक हिसाब से देखा जाये तो ऑक्सीजन के लिए पेड़ होना जरूरी है, यही हमें जीवन देता है। अतः कहा जाता है कि एक पेड़ को प्रतीक मानकर जरूर पूजा की गयी लेकिन सभी पेड़ों की महत्ता है। वैसे कहा जाता है कि ऑक्सीजन देने में करम पेड़े सबसे आगे है और रोग–व्याधि को दूर करता है।

वहीं उराँव आदिवासियों में टाना भगत समाज आज भी करम की डाली को पूजा नहीं करता है। (11:सितंबर 9, 2019) वे करम पूजा करते तो हैं परन्तु करम डाली की नहीं, वे पेड़ की ही पूजा करते हैं। उनका मानना है कि करम डाली को पूजा करने से पर्यवरण को नुकसान होगा। जब हम करम पेड़ को आराध्य पेड़ मानते हैं तो हम क्यों उनको नुकसान पहुंचाये। वे करम डाली को काटना बड़ा अपराध मानते हैं। इसे भी हिंसा से कम नहीं मानते हैं। परन्तु पाण्डो उराँव (आंरगी काचापारा) ने बतायी कि करम डाली की ही पूजा की जाती है। सारा नेग–दस्तुर औरों की तरह ही होता है।

3.2.3 खेती के गीत

उराँव लोकगीत में खेती से संबंधित भी गीत पाये जाते है। हल चलाने से लेकर धान मिसनी तक के गीत है। जिसमें किसान वही गीत को गाता है जो गीत उस कार्य या खेती से संबंधित हो। इन सब गीतों के साथ किसान कितने देर तक काम करता है परन्तु वह थकावट महसूस नहीं करता है। जिससे कितना समय हुआ वह भी नहीं पता चलता है और काम भी अधिक होता है। खेती से संबंधित गीत इस प्रकार है।

3..2.3.1 हल जोतने के गीत

कहते हैं कि उराँव लोगों के नाक में ही गीत टंगाया हुआ है। अर्थात हरदम उनके जुबां पर गीत झरना की तरह निकलते रहती है। इसी लिए हर समय गीत उनके जुबां पर आते रहती है। इसी तरह से हल चलाने के समय भी गीत गाते रहते है, ताकि एक तो समय का पता नहीं चलता है और थकान भी महसूस नहीं होता है। मन में भी खुशी एवं उमंग रहता है। कहीं–कहीं हल को खड़ा कर ''तम्बाकु'' खाने के लिए भी दूसरे व्यक्ति के पास चला जाता है, अपने पास रहते हुए भी। इससे यह होता है कि बैल भी कुछ देरी के लिए आराम कर लेता है।

इसी के संदर्भ में यह गीत, जो किसान से संबंधित है, जिसमें किसान हल जोतने जाता है और उसकी पत्नी उसके लिए खाना पहुँचाती है। –

60	अम्म हो'अके मण्डी हो'अके उइय्या कादन पतेड़ा टोंका	पानी और भात पहुँचा देना जोतने जा रहा हूँ, जंगल दोन
	पइरी बीरी मण्ड़ी हो'अके उइय्या कादन पतेड़ा टोंका।।	सुबह में पहुँचा देना जोतने जा रहा हूँ, जंगल दोन
61	नेखय बण्डा मनेख़ा चोतोर बारी पटा चुगी।	किसका बण्डा काड़ा कीचड़ में पाटा मार रहा है।
	भइयोस ही बण्ड़ा मनेख़ा चोतोर बारी पटा चुगी।।	भाई का काड़ा कीचड़ में पाटा मार रहा है।

3.2.3.2 ढेला पासने के गीत

एक गीत ढेला पासने के समय का है। इसमें जब किसान खेत का ढेला पासने जाता है तब खेत में रहने वाला रूनिया पक्षी किसान को, हो सकता है अपने भाषा में गाली देता होगा। पर किसान अपने शब्दों में एक गीत गाया है।

62	ढेला पस'आ केरकन यो रूनिया चिड़िगा लगी।	ढेला पासने गई माँ रूनिया चिढ़ा रही है
	पस'ओन बाचकन ढेला धरचकन सुईं बाचा सरागे केरा।।	मारूंगा कहकर ढेला पकड़ी सुंई बोला आकाश उड़ गया
63	गड्डी ख़ल्लन उइया कादन रूनिया चींख़ा लगी।	गडढ़ा दोन जोतने जाते हो रूनिया रो रही है
	अम्बय चींख़य रूनिया, अम्बय चिड़िगय रूनिया गोला अड्डो नेलेचा लगी।।	मत रो रूनिया मत चिढ़ाओ रूनिया लाल बैल डर रहा है
	पस'ओन बाचकन दरा ढेला दरा धरचकन सुईं बाचा सरागे केरा।।	मारूंगा बोलकर ढेला पकड़ी सूंई बोला आकाश उड़ गया

धान बोने के समय का गीत, जो खेती से संबंधित है जो फसल की पैदावार को भी दिखाता है। श्रीमती मंगरी देवी (इर्रो फअकपुर, अप्रैल 2015) के अनुसार खेत को जोतकर धूप खाने के लिए छोड़ देते हैं और जैसे ही सरहुल खत्म होता है, इसी के साथ खेतों में भी बीज डालना शुरू हो जाता है। उस समय धान लगाने से वे उग जायेगा और पूरा जेठ का महीना धूप खाता है और जैसे ही आसार महीना में पानी गिरता है, वैसे ही धान लहलहा के उठता है। जो आज के हाईब्रीड धान के कम नहीं है। परन्तु धान जल्दी नहीं पकता था जिससे खाने के लिए चावल बरसात में खत्म हो जाता था। इस लिए खाने के लिए गोन्दली लगाते हैं, वह जल्दी पकता है और खाने के लिए हो जाता हैं। गोन्दली का भात गीला, लड्डु जैसा होता है और भात चावल की तरह नहीं लगता है। इसी से संबंधित लुझकी राग में गीत है।

64	(ना)जेठ में बुनालो मोय कोड़लो चरकी गुन्दुलिया लिहोर लोहोर अछा साग बड़ा बढाला गोन्दुलिया	जेठ में बीजा डाल मैं कोड़ा सफेद गोन्दली लिहोर लोहोर साग बड़ा बढ़ा गोन्दली

	लिहोर लोहोर।	लिहोर लोहोर
	गोन्दली का भात दईया	गोन्दली का भात दईया
	ढेम्बा ढेम्बा हइरे	लड्डु लड्डु हयरे
	देवरा के मना भाइर गेला।।	देवर का मन भर गया
65 (ना)	रोपे के तो रोपालो सिकसारी धान	रोपने को तो रोपा सिकसरी धान
	एसो कर बरख़ा बड़ी दगा देला।	इस साल का वर्षा धोका दिया
	सावन भादो धुरा उड़ी गेला,	सावन भादो धूल उड़े
	एसो का बरखा बड़ी दगा देला।।	इस साल का वर्षा धोका दिया

3.2.3.3 रोपा गीत –

अब खेत में बिचड़ा डाला दिया गया है, खेत रोपने के लिए तैयार हो गया हैं। सबों को बुलाकर रोपा भी रोपा जा रहा है। रोपा रोपने के समय खेत में भरपूर कादो अर्थात कीचड़ होता है। उसमें नई दुल्हन रोपा रोपने गई है। परन्तु रोपा रोपने नहीं जानने के कारण वह रोपा खेत से भाग जाती है। उसे देखकर यह गीत गाया गया है।

66 (ना)	लसा लसा बीड़ा	लस्सा लस्सा बीड़ा
	दही लेखा कादो	दही जैसा कीचड़
	रोपू से रोपनी,	रोपो से रोपनी
	मना सौखी रोपा रोपाय।	मन से रोपा रोपे
	सोने का हरावा	सोने का हल
	रूपे का जुवइठ	रूपे का जुवाईठ
	जोतू से हरावा,	रोपो से रोपनी
	मना सौखी रोपा रोपाय।।	मन से रोपा रोपे
67	कोंको लोको पेल्लो	टेड़ही मेड़ही लड़की
	रोपा इद'आ केरा	रोपा रोपने गई
	बकुली लेखा लोयो कोयो मनी	बगुला जैसा टेड़हा मेड़हा होती
	चेड़ा पेल्लो रोपा इद'आ केरा	जवान लड़की रोपा रोपने गई
	बकुली लेखा लोयो कोयो मनी।	बगुला जैसा टेड़हा मेड़हा होती

3.2.3.4 धान काटने के गीत

धान काटने के समय का गीत श्रीमती गोहारी उराँव (पुगु बड़का टोली, गुमला, 20 नवेम्बर 2014) के अनुसार गीत में कहा गया है कि खेत का धान छोटे भाई ने लगाया है और वह छाती के समान बढ़ गया है। जिसे हसुवा से काटते हैं और बैल से मीसते हैं। उसी का पुवाल से धान को मोरा बांधते है। मोरा का धान को किसी प्रकार का रोग या सुरही नहीं खाता है।

68 (ना) छोट भइया धान बुने	छोटा भाई धान लगाये
बढ़ी गेला छाती रे समान।	बढ़ गया छाती के जैसा
हसुवा कटल धान नयो	हसिया काटा धान आयो
गरू मिसल पोरा रे	बैल मिसा पुवाल रे
मोरा बन्धल डोरा टुइट गेला।।	मोरा बांधा रस्सी टूट गया

पहले जामने में पुवाल का ही बीन्द बनाकर कर, धान को ''मोरा'' बांधते थे। मोरा को बांधने के लिए पुवाल का ही रस्सी बांधते थे। जिस ''बज्जा'' कहते हैं। बज्जा निकालने के लिए मिसनी के समय शुरू में दौंरी को उटकते समय, पुवाल का सीधा वाला को निकालते हैं, जिसे ही रस्सी बांटते हैं। जिनका अधिक धान होता था, जिसे ''छटका'' में रखते थे। छटका बांस का बना हुआ खोली के जैसा होता था। एक ही छटका में कई ओड़िया धान समा जाता था। इस लिए जिनका भी अधिक धान होता था, वे छटका ही गाड़ते थे। सिर्फ बीज रखने के लिए मोरा बांधते थे। परन्तु आज छटका का भी जमाना चला गया और आज बोरा का जमाना आ गया है। धान रखने के लिए बड़ा बोरा का ही प्रयोग करते हैं। यह प्रत्येक घर में मिल ही जाता है। जो ससता भी होता है। आज ''मोरा'' और ''छटका'' आज बिलुप्त होने के कगार पर है। ऐसा लगता है, आने वाले दिन में यह सिर्फ इतिहास के पन्नों में रह जायेगा।

3.2.4 संस्कार गीत

संस्कार गीत, मनुष्य जीवन में होने वाले संस्कार से है। जो जन्म से लेकर मृत्यु तक होता है। हिन्दु वर्ग में जन्म से मरण तक में 16 संस्कार होते हैं। (टोपनो, छो.आ.178) इनमें जन्म और उसका संस्कार विशेष विचारणीय है। यह रीति, धर्म, परम्परा, जातीय प्रथा और त्योहार के आधार पर मनायी जाती है। वहीं उराँव जाति में सिर्फ तीन ही संस्कार पाये जाते हैं। जन्म संस्कार, विवाह संस्कार और मृत्यु संस्कार। सभी संस्कार में गीत गाया जाता है। जिनका अपनी अलग महत्व एवं विशेषताएँ हैं।

3.2.4.1 जन्म संस्कार

पुत्र या पुत्री जन्म के समय भी उराँव समाज में गीत गाया जाता है। जन्म संस्कार में जन्म के बाद नामकरण अर्थात छटठी में, जब सभी ओर से मेहमान इकठा होते है, सभी मिल कर जिस मौसम में यह संस्कार हो रहा है, उसी मौसम के गीत गाये जाते हैं और उत्साह के साथ अपने पारम्पारिक तरीके से नाच गान करते हैं।

3.2.4.1.1 प्रतीक चिन्ह रखना

आज की तरह पहले सुविधाओं का अभाव था। लोग प्रसव घरों में ही करते थे। जब बच्चा पैदा हो जाता है तब लड़का या लड़की हुआ, उसके लिए घर के दरवाजा पर प्रतीक चिन्ह रख दिया जाता है। उसे देखकर समझा जा सकता है कि लड़का या लड़की हुआ है। गोहरा उराँव के अनुसार यदि लड़की हुआ है तो दरवाजे के पास हल को रख देगें और लडकी हुआ तो टोकरी को, जो इसका संकेत है।

जब बच्चा पैदा हो जाता है तब बच्चे को 'काँजी पानी' से नहलाते हैं। उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि ऐसा करने से रंगबाज की बीमारी नहीं होती है और अगर गर्भ से ही यह बीमारी है तो वह ठीक हो जाता है (तिर्की,उ. स.ध.सं.67.)। उन्होंने यह भी बताया है कि कभी–कभार किन्हीं–किन्हीं परिवार के लोग जन्म लेते ही बच्चे को गोबर गड्ढे में फेक कर तुरंथ उठा लेते हैं। परन्तु उनका अस्पताल में प्रसुति होने के कारण उपर्युक्त संस्कार नहीं हो रहा है। वहीं शरदचन्द्र राय (OR&C.119) ने बताया है कि नवजात बच्चे को कांजी पानी से नहलाया जाता है जिससे बच्चा का शरीर मजबूत होता है।

वहीं गोहरा उराँव (मार्च,29,2020) के अनुसार वैसे बच्चों को ''गोबर गडढा'' में फेंकते है, जिस महिला का प्रथम और दूसरा बच्चा बिमारी से या बिना कोई कारण से मर जाते हैं। जब तीसरा बच्चा होता है तब कुसराईन या कोई महिला बच्चा को गन्दुर गड्ढा में फेक कर लौट जाती है और कोई दूसरी महिला

उस बच्चा को उठाकर ले आती है। उनका विश्वास है कि इसके बाद बच्चा को कोई बिमारी नहीं पकड़ेगा और न ही उनका मृत्यु होगा। उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी।

वहीं मुण्डा जाति में यदि किसी माता–पिता के बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हैं तब नवजात शिशु के गले में चमड़े का एक टुकड़ा (चामठोक) छट्ठे दिन बाँध दिया जाता है और प्रत्येक वर्ष सोहराई के दिन इस चामठोक को बदल दिया जाता है। ऐसा तब तक होता रहता है, जबतक बच्चा युवा होकर विवाह न कर लेता हो (बीरोत्तम,झा.इ.सं.457)।

3.2.4.1.2 गर्भावस्था के दौरान सावधानी

आदि काल में गर्वावती महिलाओं की अधिक मात्रा में मृत्यु हो जाती थी। लोग प्रसव के लिए भी डरते थे। कभी–कभी बच्चा अपने आंत में फंस जाता है। जिससे प्रसव के समय परेशानी होती है। जिससे मृत्यु तक भी हो जाती है। एक महिला के लिए क्या–क्या परेशानी होती है वह तो एक महिला ही समझ सकती है। श्रीमति गोहरा उराँव के अनुसार एक गर्वावती महिला को बकरी या बैल का जोरी को किसी भी हालत में पार नहीं करना है। मासिक के समय भी पार नहीं होना है। इसमें कहा जाता है कि पेट का बच्चा आंत से फंस जाता है, जिससे प्रसव के समय परेशानी होती है।

उसी तरह से खेतों या टांड़ में भी हल जोतने के लिए शुरू आंतर (चास) चढ़ाते हैं, उसे भी पार नहीं करना है। ऐसे में बच्चा को सांस लेने में परेशानी होता है। बच्चा जन्म लेने के बाद से ही रोते–रोते सांस अटकने जैसा हो जाता है और जिस तरह से हल चालाने के समय एक चक्कर लगाने के लिए शुरू में जा रहा है वैसा ही बच्चा का सांस अटकने जैसा होगा और जब हल चलाकर लौटेगा, वैसा ही बच्चा का सांस लौटेगा। यदि किन्हीं बच्चा को सांस लेने में ऐसी परेशानी हो रहा है तो बच्चे की माँ अपने बच्चा को बेतरा कर हल चलाने वालों को जोहते रहती है कि कौन हल जोतने किधर जा रहा है। वे उनके पीछे–पीछे जायेगी और बैल को जोड़–नार कर शुरू हल जोतते जायेगें, उसी को उसी समय उस आंतर को पार कर ग्रह काटेगी और चुपचाप वापस लौट जाना है। इसमें किसी को टोक–टाक नहीं करना है। इसके बाद कुँआ के पास, मेढ़ कर रखा हुआ रस्सी को भी पार नहीं करना है और न ही गरदन में टंगाना है। ऐसा करने पर नारपुरान में बच्चा वैसा में टंगा जाता है।

इस अवस्था में खान–पान में भी किसी प्रकार की पाबंधी नहीं हैं। गर्भावती महिला को थोड़ा खट्टा खाने में परहेज करना चाहिए। यदि खाने का इच्छा किया तो खा सकती है परन्तु अधिक मात्रा में नहीं। गर्भावती महिला को जो खाने की इच्छा हो रही है, उसे खिलाना चाहिए। परन्तु उनकी मात्रा का भी ध्यान रखना चाहिए। किसी चीज को भी मुट्ठी बन्द कर भी नहीं खाना है। यदि रास्ते चलते भी कोई अन्य व्यक्ति कुछ खा रहे हैं, उसी दौरान गर्वावती महिला

खाने की इच्छा जाहिर की तो उन्हें देने में इन्कार नहीं करना चाहिए। या तो वहाँ पहुंच गई तो लो इसे थोड़ा–सा खा लो, कहकर देना चाहिए। कभी भी उनके लिए मुट्ठी बन्द नहीं करना चाहिए। कभी भी चुरा कर या छिपा कर कोई भी वस्तु नहीं खाना चाहिए। ऐसा करने पर भी प्रसुति के दौरान परेशानी होती है। ऐसे में दर्द अधिक तो कभी कम होगा और जबतक दर्द नहीं होगा बच्चा पैदा नहीं होगा, बच्चा बाहर नही आयेगा। और वहीं किसी का आशा–दोषी नहीं रहने पर प्रसुति में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। इनमें जो कंजूस हैं या क्या हैं, उसे प्रसुति के दौरान ही भगवान दिखा देता है। और लोग कहते हैं कि ये लोगों का करगुणी किया हुआ है। ऐसा कुछ नहीं होता है, वह अपने कर्मों का फल होता है, ऐसा लोगों का विश्वास है।

गाड़ी वैग्यरह में भी अधिक सफर नहीं करना चाहिए। सबसे अधिक तो प्रसव का समय नजदीक आने पर और सवधानी बरतनी चाहिए। गोहरा उराँव के अनुसार घी खिलाने पर जल्दी बच्चा पैदा हो सकता है। घीं खाने से उसका तेल बच्चा का सिर में थोड़ा–थोड़ा कर बैठता है, जो प्रसव के समय फिसलने का कार्य करता है। जिसे ''जामहड़'' कहते हैं। जिस बच्चा में जामहड़ नहीं होता है, उन्हें जन्म लेने में परेशानी होती है। मांड़ पीने से भी जामहड़ होता है। अधिक मात्रा में फल भी नहीं खाना चाहिए, जिससे पेट में बच्चा मोटा हो जाता है और प्रसव में परेशानी होती है। नारियल या डफ पानी पीना, बच्चा के लिए अच्छा होता है। प्रसव के पूर्व मीठा खाने से भी प्रसव में परेशानी नहीं होती है। पहले तो मीठा के स्थान पर गुड़ खिला रहे थे।

यदि गर्भावती महिला किसी के यहां घुमते हुए भी चली गई है और कुछ पकाने के लिए चुल्हा में चढ़ाये हैं तो भी उन्हें छूने के लिए कहा जाता है। ऐसा करने से कहा जाता है कि पेट का बच्चा किसी चीज के लिए नहीं तरसेगा। कुछ भी है तो उन्हें देते थे, वह खाना चाहेगी, खायेगी, फेकना चाहेगी, फेकेगी।

3.2.3.1.3 प्रसुति के बाद खान–पान

उराँव जाति के लोगों के लिए एक वरदान स्वारूप मिला है कि प्रसुति के बाद वह कुछ भी खाना–पीना कर सकती है। उन्हें किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। जैसे उरद दाल, चावल या अन्य कोई चीज। इससे बच्चे के लिए दूध होता है। वहीं हिन्दुओं में जब तक प्रसुति का शुद्धिकरण नहीं किये हैं, जैसे–तैसे खाना–पीना वर्जित रहता है। वे उस समय तक सोंठ और हल्दी केवल खा सकती है। जब तक उनका पेट साफ न हो जाय, तब तक भोजन नहीं देते हैं। परन्तु उराँव जाति में ऐसा नहीं है।

गोहरा उराँव (पुगु गुमला, मार्च ,29,2020) के अनुसार बहुत पहले की बात है। एक महिला गर्भावस्था में थी और उसका समय भी नजदीक पहुंच चुका था। एक भैंस रोज खेत की ओर चरने–खाने जाया करती थी। और रोज की तरह चर कर घर वापस आ जाया करती थी। एक दिन की बात है। वह

चरते–चरते, घोड़ा घांस को खाते हुए एक दलदल वाले जूभी में चली गयी और उसी में फंस गई। भैंस तो पानी स्थान को की देखता है। वह धीरे–धीरे दलदल में दबते जा रही थी। वह जैसे निकलने के लिए हिलती, वैसा ही और नीचे दबते जाती थी।

जब भैंस हिलती थी तो ढप–ढप आवाज सुनाई दे रहा था। तो एक ग्वालिन महिला गई। तो देखी की भैंस दलदल में दबते जा रहा है। तो भैंस ने आवाज दी–

''आईये न मुझे इस दलदल से निकाल दीजिए?'' और अपना दुखड़ा सुनाई।

''मैं इतना सुन्दर सफेद–सफेद साड़ी पहनी हूँ, तो मैं तुम्हें जूभी में घुंस कर निकालने जाउँगी।'' ग्वालिन महिला बोली और नहीं निकाली।

दूसरी बार में और एक राजपुतिन महिला गई। उसे भी देखकर भैंस वही प्रश्न की तो वो महिला बोली–

''मैं जात का राजपुतिन हूँ सो मैं तुम्हें जुभी में घुंसकर निकालने जाउँगी'' और वह भी नहीं निकाली और वहां से चली गई।

उसी दौरान एक उराँव महिला, जो गर्भवती थी उधर ही साग तोड़ने गई थी। जब प्यास लगा तो बगल के डोभा में पानी पी रही थी। उसी समय भैंस देखी और आवाज दी।

''आईये न मुझे इस दलदल से निकाल दीजिए। मैं इस दलदल में डूबते जा रही हूँ थोड़ा सा सहारा देना, तो मैं निकल लूंगी''

तभी ''हरियो कब तुम आयी हो और फंस गयी हो!'' वो उराँव महिला बोली

''क्या करूं पेट के लिए कुछ नहीं मिल रहा है तो, चरते–चरते इधर आयी, मैं चरने में देखने ही नहीं सकी और इस दलदल में डूब गई।''

तब वो दोनों कान को पकड़कर सेंस न पोटोर खींच कर निकाल दी। और भैस को नहला भी दी। उसी समय भैंस ने कही कि ''जाइये आपने भरा पेट बच्चा लेकर मुझे इस दलदल से निकाली, जब तुम बच्चा देगी, बच्चा धरती में पांव रखेगा, उस समय कुछ भी खयेगी–पीयगी, उरद दाल, मांस–मछली या कुछ भी खायेगी, तुम्हारा पेट नहीं पकेगा और न किसी प्रकार का रोग पकड़ेगा। अर्थात भैंस ने हमें आशिर्वाद दी है और उन्हें बोली कि जब तक इन्हें सूंठ हल्दी छः दिन नहीं खायेगें पकड़–पकड़ कर नहीं निकालेगें तभी इनका दुःख दूर होगा। इसी लिए सदान लोग छः दिन तक भात नहीं देते और सोंठ हल्दी खाते हैं, वे सब खाये और पेट पक जायेगा। हम उस समय भी खायेगें तो कुछ नहीं होगा। इसी लिए उराँव जाति में सभी खाने–पीने के लिए बनता है। केवल ऑपरेशन वालों को सावधानी बरतनी होती है।

3.2.4.1.4 प्रसव के पूर्व तैयारी

पहले खपरा से ही प्रसुति का नाल काटा करते थे। खपरा का टुकड़ा जिसे कुडुख़ में ''ख़ोल्ला'' भी कहा जाता है। उसे ही सदान में ''छूरा'' कहा

जाता है। आज की तरह पहले ब्लेड नहीं था तो इसी से पुरूष अपना दाढ़ी भी बनाते थे। जिसकी धार तेज, एक छोटा पत्थर से करते थे। उस जमाने में किन्ही लोग के पास ब्लेड वैग्यरह नहीं होता था तो लोग नउवा ठाकुर के पास तुरी बाल (जन्म बाल) उतारने ले जाते थे, जो इस गीत से पता चलता है। गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, गुमला, मार्च ,29,2020) के अनुसार ही –

69 (ना) ना मिले छूरी टंगआ	नहीं मिले चाकू टांगी
ना मिले बैंईठ रे	नहीं मिले बैंईट (चाकु जैसा)
झिटकी मा नाभी कटल जाएला।।	झिटकी में नाभी काटे
न मिले लोहरा न मिले उराँव	नहीं मिले लोहरा, उराँव
नउवा ठाकुर घर में	नउवा ठाकुर घर में
छठी बढ़ही होवे।।	छठी–बढ़ही होता

उस जमाने में किसी प्रकार का टेटनस बिमारी नहीं पकड़ता था। आज की तरह सारी सुविधा नहीं था। आज सिक्का पैसा और नयी ब्लेड से नाल काटा जाता है और नाखुन भी बड़ा नहीं होना चाहिए। कुसराईन लोग यदि किन्हीं के प्रसव में परेशानी हो रही है तो भी पेट को मालिस कर सीधा कर देते थे या तो उपर से भी मालिस कर सीधा करने से भी जल्दी बच्चा होता है और किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती है। कुछ ऐसी भी होते हैं, जिन्हें हाँथ डालकर भी सीधा किया गया है। जिससे भी किसी प्रकार की परेशानी नहीं हुई है। उन्हीं के अनुसार जिनका ब्लड प्रेशर बढ़ गया है उन्हें परेशानी हो सकती है, उन्हें दर्द का अनुभव नहीं होगा और जब तक दर्द का एहसास नहीं होगा, प्रसव में परेशानी होगी। कहा जाता है कि पहले बहुत ही ''मलदव'' होते थे, जिसे ''चुरिल'' कहते हैं। हमारे उराँव जाति में खींस के समय ही ''चुरिल'' कहते हैं। कहने का तात्पर्य कि जिनका जच्चा और बच्चा दोनों की मृत्यु हो जाती है। उन्हें मसड़ा में नहीं दफनाते हैं। उन्हीं कहीं भी गडढ़ा में लेकर जैसे–तैसे गाड़ कर लौट जाते थे, जिन्हें ''चुरिल गडढ़ा'' कहा जाता है। और उस क्षेत्र में दिन के दोपहर और रात के बारह बजे के आस–पास समय में वह पकड़ती है और इधर–उधर घुमाती है, ऐसा कहा जाता है। इस लिए पहला बच्चा होने के समय लोग अधिक डरते थे। परन्तु आज वैसी स्थिति नहीं है, स्वस्थ्य सुविधा के कारण वैसी स्थिति नहीं के बराबर होती है।

3.2.4.1.5 मुड़हा बच्चा

साधारणतः बच्चे जन्म लेने के समय सिर की ओर से जन्म लेते हैं। परन्तु मुड़हा बच्चा, जिनकी माँ मासिक नही देखी है और बच्चा रूक जाता है, उसे ''मुड़हा बच्चा'' कहते हैं। इनमें खास बात यह है कि जिनका भी शरीर का

नश वैग्यरह या कहीं दर्द कर रहा है तो वे थोड़ा सा भी मालिस कर देगें, उसी से उनका दर्द ठीक हो जाएगा। यह भी बताया गया कि ऐसे बच्चों के नजदीक अधिक बज्रपात भी होता है। (गोहरा उराँव, पुगु बड़का टोली)। और जो पैर के तरफ से पैदा होते हैं, जिन्हें ''जेरका बच्चा'' कहते हैं।

3.2.4.1.6 प्रसव के बाद शुद्धीकरण

उराँव जाति में तीन दिन के बाद भी प्रसुति महिला का शुद्धिकरण कर सकते हैं और छः दिन में भी। गोहरा उराँव के अनुसार पहले बच्चा जन्म के बाद तीन दिन में ही शुद्धिकरण करते थे और वह घर का सभी कार्य कर सकती है। उसे किसी प्रकार का परेशानी नहीं होती है। परन्तु आज अधिकतर छः दिन में कर रहे हैं। शरद चन्द्र राय (O.R&C,123) के अनुसार भी पहले तीन दिन में ही प्रसुति का शुद्धिकरण करते थे। उनके अनुसार बच्चा जन्म होने के बाद घर को अपवित्र समझते हैं। इस दौरान प्रसुति महिला को रसोई और पूजा पाठ घर में नहीं जाना होता है। इसी लिए उराँव जाति में तीन दिन में ही प्रसुति को स्नान कराते थे। नहलाने के लिए सिन्दवार, डहु बकला, सिन्दरिया आम का बकला, रंगोनी कांटा[11] आदि। इन सभी को मिलकार पानी से भांफते हैं और ठंढा होने पर नहलाते है। इससे रंगबाज रोग, फोड़े फुंसी नहीं होता हैं। उन्हें हल्दी पानी से भी नहलाया जाता है। इसके बाद धूप धूवन कर बारहो–बिहरी से निवछ कर फेंकते है। इसके बाद पीसा हुआ हल्दी का पानी पिलाया जाता है। इसे दगरीन भी पीती है और यदि पंच लोग भी हैं तो उन्हें भी थोड़ा–थोड़ा देते हैं, वहीं सबसे पवित्र होता है। उसके बाद ही वह घर के अन्दर–बाहर हो सकती है। यदि तीन दिन में ही प्रसुति को नहला रहे हैं तो बच्चा का भी बाल उतारना होता है। यदि सिर का पूरा बाल नहीं उतार रहें तो बेलगड़ा का बाल थोड़ा सा उतार कर सारा नेग–चार करते हैं। एक दोना में बाल और एक दोना में उरद और एक दोना में धान रहेगा।

गोहरा उराँव के अनुसार सदान लोग छः दिन में छठी और बारह दिन में बड़ही करते है। भगवान ने हमारे लिए सबकुछ दिया है इसी लिए तीन दिन में भी ठीक होता है। परन्तु आज अधिकतर छः दिन में छठी कर रहे हैं। इसके लिए लक्ष्मी अर्थात भैंस ने हमें आशिर्वाद दिया है कि तुम किसी प्रकार का भी खाओ पीयो, किसी प्रकार का दिक्कत नहीं होगा। और आज भी मां का दूध होने के लिए जन्म के बाद ही उरद दाल और पपीता पका कर खिलाते हैं। साथ मे बुदु मछली, जिसमें सिर्फ नमक डालकर आग में पत्ता के साथ टीप कर पकाते हैं और उन्हें देते हैं। प्रसुति को भी कुसराईन रोज सुबह शाम सरसो तेल से

---

[11] यह नीला फूल होता है और भिजरी बैगन की तरह फल होता है आज नहीं मिलता है इस लिए भुखुल कांटा को लगाते हैं।

मालिस करती है। जब तक उनका शुद्धिकरण न हो जाय।

3.2.4.1.7 छट्ठी शब्द का नामकरण

नामकरण संस्कार को कुँडुख़ भाषा में ''छटठी'' कहते हैं। परन्तु छट्ठी शब्द कहाँ से आया? हम एक या दो साल के बाद भी बच्चे का नामकरण अर्थात छटठी करते हैं। कहने का तात्पर्य यह रहा कि हमारे जितने भी संस्कार या पर्व त्योहार या नेग दस्तुर है, उन सभी में कुछ न कुछ दर्शन छुपा हुआ है। इसे हमें जानने की अति आवश्यकता है। तभी हम अपने भाषा संस्कृति को बचा सकते हैं। मनेश्वर उराँव के अनुसार छट्ठी करने का तात्पर्य यह है कि भगवान ने सबसे पहले आकाश, पताल और पृथ्वी को बनाया। तब भगवान ने सोचा कि इस धरती पर मेरे जैसे और मानव जाति को उत्पन करते हैं। तब भगवान ने मिट्ठी का लोथा बना कर मूर्ति बनाया और रखा। तभी उसका घोड़ा आया और लात मारकर बिगाड़ दिया। घोड़ा सोच रहा था कि आज भगवान अकेले है तो मुझे इतना परेशान करता है, और मनुष्य बनायेगा तो कितना परेशान करेगा। यह सोचकर वह बिगाड़ रहा था। भगवान हर समय बनाता और घोड़ा बिगाड़ देता था। तब भगवान ने कुत्ता बनाया, उसे जीवित किया और मिट्टी की मूर्ति को पहरा करने के लिए रखा। आज कुत्ता को उराँव़ भाषा में ''अल्ला'' कहते हैं। कहने का अर्थ कि ''अल्ला दिकिम आलर गहि रक्षा नंज्जा।'' अर्थात कुत्ता ने ही मानव का रक्षा किया। इसके बाद भगवान ने मिट्टी का लोधा बनाया और पांच दिन में मूर्ति बनाकर पूर्ण किया, छः दिन में आधा पका और आधा कच्चा मूर्ति बनाकर उसमें प्राण डाला। छः दिन होने के कारण ही आज ''छट्ठी'' शब्द का प्रयोग करते हैं। जब तक वह बालक हमारा नहीं होता जबतक उनका छट्ठी न कर दें। नामकरण के पश्चात ही बालक हमारे परिवार का हो जाता है। इसी लिए बालक का छट्ठी के पहले यदि मृत्यु हो जाती है तो उसका कब्र स्थल भी अलग रहता है।

वहीं गोहरा उराँव के अनुसार जिन बालक का कान छिद्र नहीं किया गया है या लगभग एक वर्ष के आस–पास का है तो उस बालक को बच्चा मसड़ा में ही लिया जाता है। उनके लिए दूध, पानी, पीने के लिए देंगे। वहीं जिन बालक का मृत्यु कोरा में ही हो गया है, उनके लिए दूध, पानी नहीं देते हैं। क्योंकि उस बच्चा को जन्म के बाद पानी वैग्यरह नहीं पिलाया गया था। उसके लिए पानी के स्थान पर बरगद पेड़ का डाली को तोड़कर, उसका गद्ध को बच्चा का मुंह में चुवाते हैं। इसी लिए अधिकतर बच्चा मसड़ा में बरगद का पेड़ मिलता है।

3.2.3.1.8 चुन्दी रखना

मनेश्वर उराँव (अरांगी,घाघरा, गुमला, दिसम्बर 2014) के अनुसार चुन्दी रखने का अर्थ हम दो अर्थो में ले सकते हैं। एक तो यदि चुन्दी सिर के बीच में रखे तो वह बच्चा लड़की के सुसराल में जन्म हुआ है, यदि बेलगड़ा के पास तो

नहियर में और यदि मांग हुआ है तो माता–पिता जिस दिन खिलाने–पिलाने सकते हैं, उसी दिन बाल उतारते हैं।

3.2.4.1.9 नाम पकड़ना

देवचरण भगत (अद्दियर गहि.2) लिखते हैं कि महायदेव और पारवती ने ही हमें नाम पकड़ने के लिए बताये हैं। जब महायदेव ने दो बच्चे, भाई और बहन को खोजकर लाये। उन्हीं के चौदह बच्चे हुए, सात लड़का और सात लड़की। सातो बच्चों को किसी भी समय बुलाने के लिए परेशानी होने लगी। क्योंकि बड़ा–छोटा, मइझला–सइझला आदि नामों से सभी का नाम समझ में नहीं आ रहा था। तब वे महायदेव और पारवती को बुलाये और अपनी परेशानी को बताये। तब उन्होंने नाम पकड़ने की विधि बताये और वे दो दोना बनवाये। एक में पानी और एक में धान को रखवाये। इसके बाद धान का छिलका को निकालकर एक महायदेव और एक पारवती के नाम से दोना में चावल गिराये। उनके माता–पिता को बोले कि जिसका भी नाम रखना चाहते हो, उनका किसी भी जीव–जन्तु, पेड़–पौधा का नाम लेकर पानी में गिराना। यदि अन्न महायदेव या पारवती के चावल में जाकर मिलता है तो वही उसका नाम होगा। उसी दिन से आज तक इसी तरह का नामकरण किया जाता है। लड़कियों का नामकरण नहीं किया गया क्योंकि वे उनकी ही पत्नी बनी। इस तरह से सबों का नाम इसी तरह से पकड़े।

इसी तरह से गोहरा उराँव के अनुसार सबसे पहले सखुआ पत्ता का एक दोना में सादा पानी रखते हैं और धान का भूसा अर्थात छिलका निकाल कर पहले भगवान के नाम पर गोहराते हैं और उसे पानी में धीरे से रखते हैं। फिर दूसरा वाला बच्चा के नाम पर धीरे से रखते हैं। यदि वह चावल पहले वाला में मिल जाता है तो समझा जाता है कि नाम भगवान को पसन्द है। यदि नहीं मिला तो समझा जाता है कि वह नाम भगवान को पसन्द नहीं। इसके बाद और दूसरा नाम लेकर चावल गिराते हैं। चावल गिराने के समय गोहराना मनेश्वर उराँव के अनुसार–''हे दे महायदेव पारबत्ती आपके बताये अनुसार फलना दिन का जन्मा, फलना गोत्र का बच्चा को आपके किताब में लिख रहे हैं। हे भगवान इन्हें अच्छी तरह से देख–भाल करना और किसी प्रकार का दुःख तकलीप नहीं होने देना।'' पहले बच्चों का नाम अपने पूर्वोजों के नाम को ही रखते थे या तो किसी घटना के नाम पर। ताकि पूर्वोजों का नाम पूजा या अन्य किसी प्रकार का कार्य के समय नाम न छूटे। परन्तु आज अपने मन से आधुनिक नाम रखा जाता है जो सुनने में अच्छा लगे।

3.2.4.1.10 नाभी गाड़ना

मनेश्वर उराँव के अनुसार जब बच्चा का नाभी गिरता (कुडडा) है, तब उसे घर के दरवाजे के अन्दर तरफ से कोना में, लड़की है तो बांया और लड़का है तो दहिना तरफ गाड़ते हैं। दरवाजा के किसी कोने में गाड़ने का अर्थ कि

उसमें पैर न लगे और घर के किसी कोने में गाड़ने पर लात लग सकता है परन्तु दरवाजा कोना में लगने की संभवना नहीं रहती है। यदि किसी कारण से लग जाता है तो बच्चा का नाभी बड़ा हो जाता है। वहीं गोहरा उराँव का कहना है कि बच्चे का कुड्डा को दरवाजा के बीच में गाड़ा जाता है। गडढ़ा खोदने के लिए भी पतला नुकीला वस्तु होना चाहिए। कहा जाता है कि दरवाजा के किनारे गाड़ने पर उसका दांत तिरछा निकलेगा और गडढ़ा खोदने के समय बड़ा समान जैसे खुरपी का प्रयोग किये हैं तो उनका दांत भी खुरपी जैसा ही होता है। इसी लिए कभी भी बड़ा वस्तु का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

3.2.4.1.11 बाल नदी में बहाना

बाल को उतार कर दोना में उरद के साथ रखा जाता है, जब बाल सुख जाता है तब उसे नदी में ले जाकर विर्सजन किया जाता है। जिसका अर्थ यह हआ कि वह तुम्हारा बाल था, उसे हमने दे दिया और इसमें नया बाल दीजिएगा। कहीं–कहीं बांस के खोह में रखते हैं। जिसका तात्पर्य है कि उसका बाल बांस के खोह की तरह घना उगेगा। परन्तु लडकी के बाल को नदी में ही बहाना चाहिए, ताकि उनका बाल लम्बा हो। यदि बाल को कहीं चूहा चुराकर ले गया तो चूहा का बाल जैसा ही होता है। यह बिलकुल सत्य है।

3.2.4.1.12 धान और उरद

हम धान और उरद को रखे रहते हैं और उसे एक निश्चित समय अर्थात बुआई का समय आने पर खेत के किसी कोने में बोते हैं। समय पर वह उगता और बढ़ता है। वही फसल को देख कर साइस–बराइकत पता लगाते हैं कि इनका भविष्य क्या है? इनके भाग्य में क्या लिखा हुआ है?

2.2.4.1.13 गर्भ में लिंग पता करना

उराँव समाज में आज भी गर्भ में पल रहा बच्चा, लड़का है या लड़की, इसके लिए कभी भी किसी डॉक्टर के पास नहीं जाते हैं। महिला के चाल–ढ़ाल को ही देखकर अन्दाजा लगा लेते हैं कि लड़का होगा या लड़की। परन्तु पहले से आभास होने पर भी गर्भ में पल रहे बच्चे को नहीं मारते या गर्भपात नहीं कराते। कुछ लोग गर्भवती स्त्री को देखकर ही उसके होने वाले बच्चे के संबंध में भविष्यवानी करते हैं जो लगभग सही हो जाता है।

शरदचन्द्र राय (O.R&C.119) ने एक लेख में यह बतलाया है कि जिस स्त्री की आंख धंसी हुई हो अथवा शरीर दुबली पतली दिखे, पेट का दहिना भाग अधिक बड़ा होना एवं गर्भवती स्त्री का दहिना भाग में अधिक भार महसूस हो तो लोग यह अनुमान लगाते हैं कि लड़का होने वाला है। इसके विपरीत लड़की जन्म में बांया भाग सामान्य रूप से अधिक एवं गर्भवती स्त्री का शरीर अपेक्षाकृत बढ़ा हुआ दिखाई देता है एवं आंख धंसी हुई नहीं रहता है। चूंकि आंख का

धंसना, दुबली–पतली दिखाई देना एवं अधिक वजन लगना, लड़का होने का लक्षण मानते हैं। यदि गर्भ में लड़का रहे तो गर्भवती स्त्री का 50 प्रतिशत गर्भ का पोषक अन्दर का बच्चा ग्रहण करता है। साधारणतः हम देखते हैं कि शारीरिक दृष्टिकोण से लड़की की अपेक्षा लड़का अधिक मजबूत एवं क्षमता वाला होता है।

डॉ0 नारायण भगत (छो.उ.री.157) के अनुसार कुछ लोगों का अनुमान है कि पहले बच्चे के नाभी में जितनी गांठ हो, आगे उतने ही बच्चे पैदा होने की संभावना रहती है। नाभी नाल में काला अथवा सफेद लकीरें बच्चों की संख्या को बताती है। सफेद गांठ लड़का का और काली गांठ लड़की का प्रतीक माना गया है।

इसके आलावे गोहरा उराँव के अनुसार यदि लडका गर्भ में है तो दहिना पैर अधिक लेसेरता है और कमर का चौड़ाई भी कम होगा। लड़का (उसका होने वाला पिताजी) भी पतला होते जाता है। साथ ही उसका चेहरा, हाथ–पैर बाप की तरह होने वाला है तो भी वह सूखते जाता है। जन्म के बाद बच्चा का जैसे–जैसे शरीर बनेगा वैसा ही बाप का शरीर लौटेगा। वहीं लड़की गर्भ में है तो बांया पैर अधिक लेसेरता है और कमर की चौड़ाई बढ़ जाएगी।

3.2.4.1.14 परसौंती रोग

परसौंती[12] रोग प्रसुति के बाद किन्ही–किन्ही को होता है। परन्तु दवा स्वरूप सभी प्रसुति महिला को कुर्थी, परसौंती, ख़ोप्प जम्बु (छोटा जामुन, जिनका बुदा में ही फल लगता है।) इसे पानी में भांफकर प्रसुति महिला को पिला दीजिये। किसी प्रकार का रोग नहीं होगा। गोहरा उराँव के अनुसार बच्चा को भी उसी को पिला दीजिए। उसे भी किसी प्रकार का रोग नहीं होगा। जैसे रंगबाज रोग।

3.2.4.1.15 दूध का दांत

दूध का दांत लगभग छ वर्ष के बाद टूटना शुरू हो जाता है। जिसके कुडुख़ भाषा में ''दंतना'' भी कहते हैं। जब भी दांत टूटता है, उसे रास्ते में बकरी के पैर के चाम में मेरा ऐसा ही दांत देना कहकर गाड़ते हैं। उसी तरह कोई छात में भी दांत को गोबर में कर ''हे दे आज आपको नया दांत दे रहा हूँ, मेरे लिए बकरी के दांत जैसा देना।'' कहते हुए छत में फेंक देते हैं। यह भी कहा जाता है कि बैल के पैर का चिन्ह में गाड़ने पर दांत, बैल के दांत जैसा उगता है। गोहरा उराँव (23 मार्च 2020) के अनुसार ''कुड्डा'' (नाभी) गाड़ने पर ही दांत उगने में अन्तर होता है। उनके अनुसार कुड्डा गाड़ने के समय भी उसे गाड़ने के लिए खुरपी से गडढ़ा खोदते हैं तो भी आगे का दांत बड़ा–बड़ा होता है। इसी लिए अधिकतर सूंई या धार हंसुवा का प्रयोग करते हैं।

---

[12] परसौंती यह एक प्रकार का पौधा होता है, जो अधिकतर नदी या जहाँ पानी का स्थान हो, वहाँ अधिकतर मिलता है। जिसे ही प्रसुति महिला के लिए दवा बनाया जाता है।

3.2.4.1.16 कान बिधवाना

बच्चा जन्म के बाद कान बिधवाना होता हैं। लड़की बच्ची को कान के साथ नाक को और लड़का को सिर्फ कान को बिधवाते हैं। जिनका कान नहीं बिधवाया गया है उन्हें कोई भी घोड़ा नहीं कर सकते हैं और न वैसा बच्चा बाद में छत चढ़ सकता है। इसी लिए बच्चा जन्म के कुछ ही दिन बाद कान को बिधवाते हैं। पूर्वजों का धारणा है कि बच्चा नहीं जोगाता है अर्थात उनके पास साइस बराकईत नहीं होता है। जिन बच्चा का यदि किसी कारण से दो–तीन महीना में मृत्यु हो जाता है तो उन्हें मसड़ा में लेकर कान बेधी करते हैं, उसके बाद ही उसका क्रिया क्रम करते हैं।

3.2.4.1.17 सीखा बैठाना या गोदना गोदवाना

लड़का बच्चा होने पर उनके दोनों हाथों में ''सीखा'' बैठाया जाता है और लड़की होने पर दोनों कनपट्टियों और ललाट में गोदना गुदवाते हैं। सीखा बैठाने के लिए हल्की लकड़ी में आग लगाकर हाथ के ऊपरी भाग में रख दिया जाता है। कभी–कभी चिथड़े में आग लगाकर हाथों में हल्के चिन्ह बना दिये जाते हैं। सीखा बैठाने वाली हल्की लकड़ी को ''बोड़जो'' (सनई) कहते हैं (तिर्की, उ.स.ध.सं.66)।

वहीं गोहरा उराँव के अनुसार ''तिलक'' बैठाया जाता हैं। तिलक बैठाने के दिन उनके माता–पिता तिलक देने वाले के आने के पहले, नहा–धोकर तैयार रहते हैं, इसके बाद उसके बांह में किसी चीज से खोदक कर भेलवा तेल को डालते हैं। उसी दिन से जबतक बच्चा का तिलक घाव नहीं ठीक हुआ है तब तक स्नान नहीं करना हैं। बच्चा को भी नहीं नहलाना है। ऐसे समय में बहुत ही परेशानी होता था। तिलक ठीक होने पर ही स्नान कर सकते हैं और घर में धूप–धूवन कर अर्थात पूजा पाठ कर दो सिमना में उसे फेंक देते थे, जो बिमारी का टीका ही था। आज जन्म के बाद विभिन्न बिमारी से बचने के लिए बच्चों को कई तरह का समय–समय पर टीका दिलवाते हैं।

इसमें उराँव लोगों का विश्वास है कि हाथों में जितने सीखे होते हैं वे उतने ही तीरनदाज होते हैं। दूसरी धारणा यह है कि जिनके शरीर में सीखे और गोदना होते हैं उनको मृत पूर्वज सहज में पहचान लेते हैं। लोग इसे आदिवासी होने का चिन्ह भी मानते हैं।

गोदना बच्चियों के कनपट्टियों और ललाट में तीन चिन्ह बनाते हैं। ये चिन्ह रोहतासगढ़ किले पर औरतों द्वारा पुरूष भेष में आक्रमणकारी शत्रुओं को तीन बार मार भगाने या पराजित करने के लिए वीरत का प्रतीक चिन्ह के रूप में गुदवाते हैं। गोदना उराँव जाति के आलावे खड़िया जाति के महिलाओं में भी देखा जा सकता है। परन्तु लोग जैसे–जैसे शिक्षित होते जा रहे हैं सीखा बैठाना और गोदना गोदवाने की प्रथा समाप्त होते जा रही है।

3.2.4.1.18 चाम बैठाना

चाम बैठाना वैसे बच्चों का करते हैं, जो हमेशा ही बीमार रहते हैं। कुछ दिन ठीक रहेगा और फिर बीमार होगा। उनके ऊपर अधिक मात्रा में नजईर भाख लग रहा है, उन्हें ही चाम बांधा जाता है। जिनका भी चाम बांधा गया है, उनका चाम विवाह के कुछ ही दिन पहले उतारते हैं। उसके लिए छोटा सा धान का मोरा और नधा–सिकड़ी (हल जोतने के समय लगने वाले समान), कांसा थाली, एक डौड़ा (डलिया) चावल, उनका पहना हुआ सभी कपड़ा को स्नान कर उतारना होता है और उन्हें पहनने के लिए नया कपड़ा दिया जाता है। चाम उतारने वाले के लिए भी नया कपड़ा देना होता है।

किन्ही–किन्ही को बीरी भी देते हैं। बीरी अर्थात चुड़ी ही समझ सकते हैं, जिसे हाथ में पहने हुए रहेगें। इसी लिए किन्ही–किन्ही का नाम बीरी भी रखते हैं। उसके लिए लोहे का बीरी बनवाया जाता है। उसे हर समय पहन कर ही रहना है। यदि किन्ही का विवाह के पहले चाम या बीरी उतारना भूल गये हैं तो बाल बच्चा होने में परेशानी होती है। कहा जाता है कि बाल–बच्चा ही पैदा नहीं होगें। इस लिए यदि भूल से विवाह के समय चाम या बीरी नहीं उतरवाये हैं तो विवाह के बाद उतरवाना होता है। उस समय वही नेग दस्तुर का समान लगेगा। नहीं तो बाल बच्चा होंगे ही नहीं। कहीं भी भगत के पास जाईयेगा, वही कहलाता है। यदि चाम बांधने वाला व्यक्ति की मृत्यु हो गई है तो कोई दूसरा व्यक्ति, परन्तु उसी घर का उनका बेटा या नाती को ही चाम उतारना होता है। साथ ही उनका देवना–पौना को भी देना पड़ता है।

3.2.4.1.19 तेतइर बेटा (इमली बच्चा)

कहा जाता है कि इमली बच्चा बहुत अधिक जिद्दी होता है। कोई भी चीज बोल दिया तो उसे लिए बिना नहीं छोड़ता है। यह भी कहा जाता है कि या तो बहुत ही अच्छा व्यक्ति बनेगा, या तो बहुत ही खराब। इनके जीवन के बारे में कहा नहीं जा सकता कि क्या करेगें। पर जहाँ तक मेरा मानना है जिस तरह का संस्कार बच्चा को मिलेगा, वैसा ही उसका जीवन–यापन होगा।

इमली बच्चा उस बालक को कहते हैं जिनका तीन लड़की के बाद चौथा बच्चा लड़का हुआ हो। और लड़की के मामले में तीन लड़का के बाद चौथी लड़की हुई हो। गोहरा उराँव ने बताया कि यदि किसी के यहाँ इमली बच्चा जन्म लिया और तुरन्त इमली पेड़ को जाकर टांगी से छोपते हुआ तीन चक्कर लगाना है। ऐसा करने पर उनका ग्रह कट जायेगा और आगे चलकर जिद्दी नहीं होगा। ऐसा नहीं करने पर बहुत ही जिद्दी हो जाएगा।

यदि बचपन के समय ग्रह नहीं काटा गया है तो लोग ग्रह काटने के लिए ताबिज वैग्यरह बनवाते हैं, जिससे वे शान्त रहते हैं और कोई हरकत नहीं करते हैं। अन्यथा विवाह के दिन इनका ग्रह उतारते हैं। इन्हें गुस्सा भी जल्दी आता है और पिताजी से भी छोटी से छोटी बातों को लेकर भी मार–पीट की

नौबत तक चली आती है। इस लिए ग्रह भी उतारना बहुत जरूरी होता है।

3.2.4.1.20 बाला पहनाना

बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही बच्चे को लाह का बना हुआ बाला (चूड़ी), दोनों हाथ और दोनों पैर में पहनाया जाता है। इसके अलावा कमर में काला धागा भी पहनाया जाता है। साथ ही उसके कपाल में काला टिका भी लगाया जाता है। इससे उनका विश्वास है कि यदि किसी प्रकार का नजर–भाख लगने पर, वही बाला रोकता है। काला टीका नजर नहीं लगने देता है। लोगों का ये भी मानना है कि कुछ करगुणी होने पर हाथ या पैर का बाला टेड़हा हो जाता है।

3.2.4.1.21 वर्जनाएं

जिस समय औरत गर्भधारण करती हैं, उसी समय से वह उराँव नियम धर्म एवं रीति–रिवाजों का पालन करती है। (तिर्की,उ.स.ध.सं.66) उनको सूर्य ग्रहण देखना मना है, वह श्मशान नहीं जा सकती है, मुर्दे को छू नहीं सकती है। साड़ी से आँख–मुँह और चेहरे को छिपाकर रखती है। वह चमकती बिजली और उनके गर्जन से बचकर रहती है। इस अवस्था में दवा का व्यवहार नहीं करती है।

आज भी उराँव जाति में एक गर्भवती महिला को इधर–उधर घूमना, उकडु बैठना, कठिन आसन करना, हमेशा चित होकर सोना, एकान्त में विचरण करना, ऊंचे–नीचे स्थान में जाना और यात्रा करना मना ही रहता है। कुछ ऐसे भी खाने की वस्तु, जिससे गर्भ नष्ट होता है, वैसे वस्तुओं का भी सेवन करना मना रहता है। जैसे शराब का सेवन, खट्टा, पपीता आदि।

आज भी गांव देहातों में प्रसव के लिए अस्पताल नहीं ले जाते हैं। गांव में ही सुरक्षित प्रसव हो जाता है। इसके लिए कुसराईन लोगों को पता होता है कि कब प्रसव होगा और उसके लिए क्या तैयारी करना होगा। और कुसराईन के बताये अनुसार सुरक्षित प्रसव भी हो जाता है। ऑपरेशन करने की नौबत नहीं के बराबर आती है। चिमनी उराँव (पुगु बड़का टोली, गुमला, सितम्बर 15, 2010) के अनुसार यदि किसी के प्रसव में दिक्कत हो रही है, तो उसे आसानी से देहाती नुक्से के द्वारा किया जाता है। फिर भी यदि नहीं हो रहा है तो कुछ अनहोनी होने की आशंका रहती है।

3.2.4.2 विवाह संस्कार

विवाह संस्कार मनुष्य जीवन का दूसरा प्रमुख संस्कार है। उराँव समाज का मानना है कि वंश एवं परम्परा को जारी रखने के लिए विवाह कर सन्तानोत्पादन करें। वंश वृद्धि में पति–पत्नी को होना आवश्यक है। विवाह के पूर्व सन्तानोत्पादन करना वर्जित है। यदि किन्ही का विवाह के पूर्व सन्तानोत्पति होती है तो उसे कुडुख़ में ''चोल्ला ख़द्द'' (पिछवारी बच्चा) कहते हैं। इसी लिए उराँव जाति में सजीव के साथ–साथ निर्जीव जाति का भी विवाह करते हैं। जैसे कि पेड़ लगाये हैं तो विवाह करने के बाद ही उनका फल खायेगें। उसी तरह नया कुँआ, नया तालाब, नया पोखर बनाये हैं तो उनका पानी भी विवाह के पश्चात ही पीयेगें। साथ ही नया घर भी बनाये हैं तो विवाह के पश्चात ही उस घर में प्रवेश करेगें। विवाह करने के बाद उन सबकी औपचारिक रूप से उसे विवाहित मान लेते हैं। इस लिए विवाह के बाद ही बच्चे को समाज में मान्यता प्राप्त है और सन्तानोत्पादन, विवाह के लिए विवाह संस्कार सर्व श्रेष्ठ माना गया है। एक माता–पिता अपने बेटे–बटियों का विवाह कराना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। वे अपने बाल–बच्चों का शादी करना, अपने पाप का उद्धर समझते हैं।

वहीं (भगत, छो.उ.री.162) उराँव समाज में अविवाहित स्त्री या पुरूष को यौन सुख भोगने का हक नहीं है। कुँवारा लड़का या लड़की द्वारा यौन सुख भोगने पर इसे पाप एवं सामाजिक अशुद्धता समझा जाता है। केवल विवाह संस्कार द्वारा पति–पत्नी को यौन सुख भोगने का हक समाज ने दिया है।

प्रत्येक समुदाय में विवाह संस्कार होता है। लड़की देखने जाते समय से ही गीत शुरू हो जाता है। अगुवा कहीं भी बात चलाता है, उसी समय से गीत शुरू हो जाता है। उराँव़ समाज में एक विशेषता है कि जब भी किसी के यहाँ लड़की देखने जाते है तो घर जाकर हम लड़की देखने आये है, नहीं कहा जाता है। वहाँ घुमा फिरा कर बात को रखा जाता है। अगुवा बोलता है–''हम आप के छत में बढ़िया पका हुआ कोंहड़ा देखे है, जो एकदम बेचने जैसा है। हम उसे खरीदने आये है।'' लड़की के घर वाले बात को काटते हुए –''अभी वह नहीं तैयार हुआ है, हम इसे सिरजन के समय से ही कितना मुश्किल से पाला–पोसा है। हम उसे नहीं देगें।'' कुछ इसी तरह का बात चीत होता है। यदि बात बन जाता है तो घर देखने के लिए लड़का का घर बुलाया जाता है। लोग अगुवा को ही भगवान का रूप मानते हैं। यदि अगुवा ठीक तो उसका जीवन साथी भी ठीक रहेगा और नहीं है तो उनका जीवन साथी भी ठीक नहीं रहेगा। इसी लिए एक लड़की अगुवा से विनती करती है कि मुझे जिनके पास किसी चीज की कमी न हो और देखने में भी सुन्दर और वो हर दृष्टि से गुणवान हो। नहीं तो जीवन नरक बन जायेगा। जो इस गीत के माध्यम से बताया गया है: –

70	हैरे अगुवा हैरे अगुवा नेखय गुसन बीसोय अगुवा।	हयरे अगुवा हयरे अगुवा किसके पास बेचना अगुवा
	चिरो चिपली पोकोल किचरी आसिम गुसन बिसोय अगुवा	श्रृंगार पतार सुन्दर कपड़ा उसी के पास बेचना अगुवा

भिंसरी देवी (गुमला, मार्च 10, 2016) के अनुसार हो सकता है कभी–कभी माता–पिता, लड़की को पसन्द नहीं करते हैं। परन्तु लड़का लड़की को पसन्द करता है। जब लडका का पिताजी लड़की देखने गये और उन्हें लड़की पसन्द नहीं आया होगा। तब उनके पिताजी गीत के माध्यम से कहते हैं कि हम सोनी चांदी को तो बदल सकते हैं परन्तु लड़की को नहीं और लड़की कोई गाय–बैल नहीं, जब चाहे बदल लें। जो इस गीत के माध्यम से बताया गया है :–

71 (ना)	दुरू पुरू कनियाँ दुरू पुरू कनियाँ दुरू पुरू कनियाँ कैसे बदलब	कमजोर दुल्हन कमजोर दुल्हन कैसे बदलेगें
	सोना हूँ बदालब, रूपा हूँ बदालब दुरू पुरू कनियाँ कैसे बदालब	सोना रूपा बदलेगें कमजोर दुल्हन कैसे बदलेगें

इसी प्रकार लड़का तरफ वाले लड़की देख कर चले आते हैं। उसके बाद लड़की के तरफ से भी लड़का के घर जाते हैं और वे भी जाने के समय शगुन–अपशगुन देखते जाते हैं। रास्ते में यदि कोई मरा हुआ छुछ्छू, बिल्ली दिख जाए तो समझेगें कि यह अच्छा नहीं होगा। इनका जीवन सुखमय नहीं बीतेगा। और यदि रास्ते में जोड़ा मयना, कबूतर या मुर्दा दिख जाए तो कहा जाता है कि इनका जीवन बहुत ही सफल रहेगा, खुशमय रहेगा।

यदि रास्ते में चलते–चलते कहीं छुच्छु, चूहा मरा हुआ मिल गया तो कहते हैं कि दोनों में से किन्ही एक की जल्दी मृत्यु होगी, ऐसे में बात नहीं बनता है। परन्तु चलते समय रास्ते में ढिचुवा पक्षी का रोना सुनाई दिया तो कहते हैं कि इनका जीवन बहुत ही अच्छा होगा। इनका जीवन सीधा–साधा, डिडगर, बहुत ही दुलार–प्यार होगा। इसी तरह कहीं लाश जलाते दिख गया तो भी कहते हैं कि इनका जीवन और ही अच्छा होगा। इन दोनों लड़का–लड़की का नया जन्म हो रहा है और बूढ़ा–बूढ़ी होने तक जुड़ी–पांति के रूप में रहेगें (पी.लकड़ा, कु.क.प.75)। इस तरह से हमारे पूर्वज जानते थे कि जिनका हम जीवन बनाने जा रहें हैं, उनका भविष्य कैसा होगा, आज की तरह पंडित या कुण्डली बनवाने की जरूरत नहीं समझते थे। मड़वा का दिन भी वे चाँद के अनुसार करते थे। आज भी गाँव देहात में मड़वा का दिन शुक्लपक्ष में ही निश्चित करते हैं। परन्तु आज शहर में कृष्णा पक्ष में भी मड़वा करना देखा जा सकता है। आज भी गांव

देहातो में की शुभ मुहूर्त के लिए पतरा दिखाने नहीं जाते हैं। वे बस रास्ते में आये–गये, उसी से समझ जाते है। जो आज भी आदिवासी समाज में देखने के लिए मिलता है।

गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, 20 नवेम्बर 2014) के अनुसार आदिवासी समाज में पहली बार लड़की या लड़का देखने जाते हैं तो किसी प्रकार का खटटा चीज नहीं खाना चाहिए, साथ ही दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर के भूल से भी नहीं बैठना चाहिए। यह अच्छा संकेत नहीं है। वहीं बुद्देव उराँव के अनुसार जब विवाह के लिए लकड़ी फाड़ा जाता है तो लकड़ी नहीं फट रहा है तो इसे भी अच्छा संकेत मानते है। पत्तल बनाने के लिए पत्ता तोड़ते हैं और डण्टल नहीं टूटने पर भी समझा जाता है कि इनका जीवन सुखमय होगा।

आदिवासी कुडुख़ समाज में विवाह का जितना भी नेग दस्तुर होता है, वह विधवा नहीं कर सकती है। यदि कोई औरत दूसरी शादी की है और पहला पति जीवित है तो वह विवाह का सभी नेग–दस्तुर कर सकती है। नहीं तो कुछ अनहोनी होने की संम्भावना रहती है। इस लिए भूल से भी वैसा व्यक्ति को नहीं करना चाहिए।

3.2.4.2.1 लडका का घर देखने जाना

विवाह में सबसे पहले तो लडके वाले लड़की देखने जाते हैं। जब लड़की के तरफ से बात पक्की हो जाती है तब लड़की पक्ष वाले को घर देखने बुलाते हैं। जिसमें लड़की के निकट सगे–संबंधी केवल होते हैं। और वर के लिए धोती कपड़ा आदि लेते जाते हैं। सभी मेहमान को घर के आंगन में बैठाया जाता है। इसी क्रम में गीत भी चलता है (गोहरा उराँव)।

72 (ना) हरे घरा देखु हरे घरा देखु	हरे घर देखो
छबल–मुंदल लिपल–पोतल	छबल–लिपा हुआ
हरे घर देखु।	हरे घर देखो
हरे दमाद देखु, हरे दामाद देखु	हरे दमाद देखो
मुड़े पगरी, पगरी ऊपरे पाइख	सिर में पगड़ी पगरी ऊपर पंख
हरे दमाद देखु	हरे दमाद देखो

इस गीत में मुख्य रूप से लड़की के माता–पिता को कहा गया है कि लड़का और उनका घर को देखिए। घर इनका अच्छा से श्रृंगार किया हुआ है या नहीं? लिपाई–पोताई ठीक है या नहीं? साथ ही लड़का को भी देखिए, ये अपने बेटी को ठीक से पालन–पोषण करने सकेगें या नहीं? पसन्द आने पर लड़का को पगड़ी बांधते हैं। लड़का सबों को पंक्ति से प्राणाम करता है। इसके बाद मेहमानों को खिला–पिला कर बिदाई कर देते हैं।

3.2.4.2.2 हड़िया लेना

विवाह में हड़िया लेने का रिवाज कब से शुरू हुआ, यह तो पता नहीं चलता है, परन्तु इसे हमारा पुर्वज सहयोग के तौर पर लेते थे। परन्तु अब ऐसा देखने के लिए नहीं मिलता है। देखा गया है कि विवाह, गमी या अन्य किसी दुःख समय का हड़िया लेने का ढंग अलग ही होता है। विवाह का हड़िया लेकर जाते समय हड़िया घड़ा का मुँह को सखुआ पतरी से ढ़क कर लिया जाता था। परन्तु गमी के समय का सिर्फ पुवाल से ढका जाता है और लेने समय हलका तिरछा रखकर लिया जाता है। अन्य समय का अधिकतर सीधा रहता है। मुनेश्वर उराँव (आंरगी, जनवरी 6, 2015) के अनुसार यदि हड़िया लेकर दूसरे गाँव जा रहे हैं तो थोड़ा सा हड़िया का ''मे–रा'' (घड़ा में चावल का बना हुआ) सखुआ पत्ता में निकाल लिया जाता है और सीमा पार करने पर दोनों सीमा के देवी देवता को गोहराते हैं –'हे दे आज फलना गांव नेवता जा रहे हैं। आज रास्ते में हमें नहीं बेड़वाना और अच्छा ले लेना और घर लाना।'' कह कर भगवान, चाला अयो, धर्मे बाबा को देते हैं, फिर चले जाते हैं।

3.2.4.2.3 करम डौड़ा हो'अना (करम डलिया लेना)

आज करम डौड़ा का प्रचलन कम होता दिख रहा है और कहीं–कहीं लेते भी हैं तो पहले की तरह सार्वजनिक नहीं होता है। पहले और आज के जमाने में बहुत ही फर्क हैं। आज ''चट मंगनी पट विवाह'' को प्रचलन बढ़ता जा रहा है। बहुत ही कम मिलेंगे जिनका विवाह का बात बहुत पहले से चल रहा हो। बात लगने के बाद दो से तीन महीना के अन्दर विवाह हो ही जाता है। लम्बा समय होने पर विवाह उनसे होगा या नहीं, इसका कोई निश्चित नहीं है।

पहले जमाने में जिनका एक वर्ष पहले या उससे भी पहले, विवाह का बात चल गया है, तो जब–जब करम त्योहार आयेगा, तब–तब लड़की के लिए करम डौड़ा लिया जाता है। जिसमें उसका करम डौड़ा के साथ करम पूजा का सारा समान, साड़ी, ब्लौज, पेटीकोट आदि। जिनके यहाँ करम डौड़ा लाये हैं, उनके यहाँ करम काटकर सभी लड़के और लड़कियाँ आयेगें और करम कपड़ा लाये हैं, उसे लड़का–लड़की ही पहन कर करम खेलने चले जाते हैं।

इस तरह से उस वर्ष, जिनके भी घर में करम डौड़ा लाये हैं, उन सभी के घर जाते हैं और पहन कर निकलते हैं। जिसे लड़का लोग धोती या पगड़ी पहने हुए हैं और ब्लौज को तो एक हाथ में लगाये हुए नाचते हैं। इसे देखकर गांव के बूढ़े माता–पिता पूछते भी हैं कि किनका करम डौड़ा लाये हैं। तो बताते हैं कि फलनी–फलनी का करम डौड़ा लाये हैं। लड़की होने वाले सुसराल का करम डौड़ा और पूजा का समाज लेकर, करम पूजा करने जाती है। गोहरा उराँव के अनुसार हो सकता है कि किन्ही का बात पहले से चल रहा है और विवाह में देरी कर रहे हैं तो जब तक विवाह नहीं हुआ है, तब तक प्रत्येक वर्ष करम डौड़ा लेना होता है और प्रत्येक वर्ष उनके नाम से थोड़ा सा भी कंड़सा धान रखते हैं।

इसी से संबंधित एक गीत :–

73	इदना ता करम किचरी मकेरा जली बेसे र'ई	इस साल का करम कपड़ा मकड़ी जाली जैसा है
	ससराईर ती करम किचरी बरचा मल कूरोन ददा मला ब'अके चि'के	ससुराल से करम कपड़ा आया नहीं पहनूँगी ददा, नहीं बोल देना

इसके आलावे करम के दिन ही शाम में यदि किन्हीं लड़की का, विवाह का बात चला है, तो उनके यहाँ करम डौड़ा (डलिया) लाते हैं। इस संबंध में शिवनन्दन उराँव ने एक गीत के माध्यम से बताने का प्रयास किया है:–

74	डौड़ा बर'ओ ब'अदी नयो, किचरी बर'ओ ब'अदी जौन खद्दिस नेक बेसे र'अदस	डलिया आयेगा कहती माँ कपड़ा आयेगा कहती दमाद किस तरह का है
	नेक बेसे र'ओस, नेक बेसे मला रे भइया बहिन बेसे र'अदस	किनके जैसा रहेगा किनके जैसा नहीं भाई बहन जैसा है

अर्थात ''डलिया आयेगा कहती माँ, कपड़ा आयेगा कहती, दमाद किसके जैसा हैं'' | उसी का उत्तर ''किसके जैसा हैं, किसके जैसा नहीं, भाई–बहन जैसा है।'' कहने का तात्पर्य यह है कि जिस किसी घर में करम डौड़ा आना रहता है उस घर में गांव के सभी लड़का–लड़की एवं रिस्ता में लड़की का नानी या दादी लगने वाली लोग जमा हुए रहते हैं। लड़की के ससुराल से आने वाले डौड़ा का इंतीजार करने लगते हैं। इतने में किन्हीं–किन्हीं के मन में यह भ्रम पैदा होता है कि हमलोग की बहन या नाती के जैसा लड़का का जोड़ी लगेगा या नहीं। तब इस भ्रम को वे लोग लड़की के मां–बाप से साझा करते हैं। लड़की के मां–बाप द्वारा उन लोगों को अपनी बातों से संतुष्ट किया जाता है कि लड़का–लड़की का जोड़ी ठीक भाई बहन के समान लगेगी। चूंकि आदिवासी समाज में यह प्रचलन है कि कोई भी घटना–परिघटना को या प्रश्न–उत्तर को, गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

3.2.4.2.4 जुब्बी ए–रना (जुब्बी देखना)

पहले घर देखने के लिए भी घर के अपने माता–पिता के आलावे लगभग तीन से पांच लोग ही होते थे। पहले के हिसाब से देखा जाय तो विवाह का

बात लगने के बाद कई बार आना जाना होता है। आज की तरह एक या दो बार गये है, ऐसा नहीं था। जैसे ''जुब्बी देखना'', इसके लिए घर के आजा–आजी, नाना–नानी, काका–काकी, बड़ा–बड़ी लगने वाले मेहमान आते हैं। उसी तरह से तम्बकु चुन्ना (तम्बाकु चूना) इसमें लड़की के दीदी–भाटु, ताची–ममु अर्थात एकदम दोनों में नजदीकी मेहमान ही आते हैं। बड़ा मेहमान भी प्रत्येक घर से एक और किन्ही–किन्ही घर से दो सदस्य होते है। आज तो लगभग गांव के माता–पिता के साथ बाल–बच्चे भी मेहमान जाते हैं। जो मेरे दृष्टि से नहीं होना चाहिए।

3.2.4.2.5 सूत बंधौनी

जब दोनों तरफ से बात पक्की हो जाती है। तब लड़की पक्ष के बुलाये अनुसार, कुछ लोग सूत बंधौनी के लिए आते हैं। वहां पर आकर लड़की को कपड़ा ढक देते हैं। उसके बाद लड़की सबों को पंक्ति से प्रणाम करते हुए चली जाती है। इसके बाद लड़की बंधा गयी समझा जाता है। अब उसे इधर–उधर से देखने नहीं आ सकते हैं और आ भी गये तो बात नहीं देगें।

सुत बंधौनी में लड़के पक्ष वाले कपड़ा पहनाते हैं। यह कुछ ही दिनों से रीति बनकर चली आ रही है। इस विषय पर श्री बिहारी लकड़ा (भा.सं.आ.13,14) ने कहा है कि कुछ वर्षो से इस परम्परा की शुरूआत हुई। कहीं–कहीं कपड़ा पहनाने का संस्कार है, उसे ही ''सूत बंधौनी'' कहते हैं। कपड़ा पहनाने अथवा सूत बंधौनी करने के बाद शादी लगभग तय समझी जाती है। वहीं सूत बंधौनी के बाद उस लड़की को कोई दूसरा लड़का विवाह नहीं कर सकता। सूत बंधौनी ''ने–ग'' को छेका करना अथवा आरक्षण करना भी समझा जाता है। इतना सबकुछ होने के बाद वर पक्ष वाले अपने घर लौट जाते हैं।

3.2.4.2.6 लकड़ी फाड़ना या दोना पकड़ना

दोनों तरफ से जब बात बन जाता है तो किसी निश्चित दिन में लकड़ी फाड़ते हैं। दोनों तरफ में से जो पहले फाड़ते हैं। इसके लिए पहले समधी लोगों को सूचित किया जाता है। उसमें से स्वयं के साथ, दो–चार पंच भी आते हैं। वहीं पर लकड़ी फाड़ने वाले लड़के कुछ लकड़ी लेकर आते हैं और तीन लकड़ी घर के छत में रखते हैं और तीन लकड़ी को कुम्बा बनाकर जलाते है। इसके तुरन्त बाद सबसे पहले जो हड़िया लगाया जाता है। उसे दोनों तरफ के समधी मिलकर धर्मे और चाला अयो के साथ पूर्वजों के नाम से तपावन देते हैं, उसके बाद ही खाना पीना होता है। इसी को ''दोना पकड़ना'' कहा जाता है। दोना पकड़ने वाले व्यक्ति दोनों तरफ के उपवास किये हुए रहते हैं।

आधुनिकता और भाग दौड़ के जीवन में आज जिस दिन लड़के की ओर लकड़ी फाड़ते हैं, उसी दिन विवाह का दिन (चावल रंगना) भी ठीक करते हैं। गोहरा उराँव के अनुसार उराँव जाति में विवाह चाँद के अनुसार शुक्ल पक्ष में ही करते हैं। इसके लिए दोनों पक्ष से अरवा चावल लेकर आते हैं। दोनों पक्ष

वाले एक चटाई में बैठकर दिन निश्चित करते हैं। जन्म दिन में विवाह नहीं करते हैं परन्तु मड़वा गाड़ सकते हैं। मड़वा का दिन चांद दिखाकर एक, तीन, पांच, सात क्रमशः करते हैं। दिन ठीक होने पर दोनों तरफ वाले चावल को कांसा थाली में मिलाकर हल्दी से रंगते हैं। रंगने के बाद लड़की तरफ से तीन बार पस्ती में लेकर चूमकर लड़का पक्ष वाले के थाली में रख देते हैं और वही क्रिया लड़का वाले भी करते हैं, पर उन्हें तीन बार ही देना होता हैं। फिर हड़िया भगवान और पूर्वजों के नाम से तापावन चुवाते है।

इसके बाद दोनों तरफ वाले पंचों को बताते हैं कि अमुख तिथि को बड़ा मेहमान आयेंगे, अमुख तिथि को मड़वा, विवाह, बारात–सारात, पनबरती, बहुरता आदि बताते हैं। इसके बाद पचों को भी नेवता के रूप में वही चावल को देते हैं। बचे चावल को पोटली बनाकर अपने घर ले जाते हैं और उसे ही निमांत्रण के रूप में बांटते हैं। रंगा हुआ चावल को ही शुभ और पवित्र मानते हैं। परन्तु आधुनिकता के जमाने में अब निमांत्रण कार्ड का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। उस दिन लड़की वालों को कितना खण्डा कपड़ा देना है, कितना पैसा लगभग लगेगा। बारात सरात भी कब आना है, विवाह का समय, ऐसे सभी चीजों को पूछा जाता हैं, ताकि किसी प्रकार का विवाह के समय परेशानी न हो।

3.2.4.2.7 छोटा मेहमानी

छोटा मेहमानी लड़की तरफ होता है। इसमें लडका पक्ष से कुछ लोग ही आते हैं। सबसे पहले तो मेहमान के आने पर उनका ''पैर धोते'' हैं। पैर धोने के लिए एक डौड़ा, उसमें थोड़ा धान और टट्ठी में सरसो तेल। इसमें दो महिलाएँ, एक पानी देती है और दूसरी मेहमानों के पैर में तेल लगाकर पैर को रगड़ती है। पैर धोवाने के बाद सभी बैठ जाते हैं। पैर धोना मेहमान आने पर लड़के तरफ भी होता है। इसके बाद पनप्यास के लिए एक हड़िया लगाते हैं। पानी वैग्यरह पीने के बाद दुल्हन को गोड़ लगने (प्राणाम) करने के लिए निकालते हैं। लड़की के साथ और लोग भी रहते हैं। लड़की दहिने तरफ से गोड़ लगते हुए आगे बढ़ती है। उसी समय जिन्हें जो पसन्द या जो इच्छा मुंह देखाउनी के नाम पर सभी मेहमान कुछ न कुछ देते हैं। खाने पीने में भी मीट नहीं है तो भी काम चल जाता था परन्तु आज वैसी परिस्थिति नहीं है। मीट होना अनिवार्य समझते हैं।

परन्तु आज परिस्थिति बदल गई है। अब लड़की तरफ भी मेहमानी होता है और उसी समय ''पन बरती'' भी करते हैं। उस समय लड़की को आंगन में चटाई बिछा कर बैठाते हैं और वहीं पर मेहमान के तरफ से जो इच्छा कुछ न कुछ देते हैं। पहले हरियर मड़वा के बीच में ही पान बरती करते थे। गोहरा उराँव के अनुसार पन बरती के बाद लड़की को कुछ अपशगुन होने का अधिक डर रहता है। लड़की कहीं इधर–उधर आना–जाना नहीं कर सकती है। पनबरती के बारे में आगे इसी अध्याय में बताया गया है।

3.2.4.2.8 बड़ा मेहमान

आज हम इलेक्ट्रोनिक मिडिया के युग में जीवन–यापन कर रहे हैं। हम इलेक्ट्रोनिक मिडिया से घिरे हुए हैं और न ही कभी दूर रह सकते हैं। आज कहीं भी एक सेकेन्ड में बात हो जाती है। कहीं भी पहुंचना हो कुछ घंटो में पहुँचा जा सकता है। परन्तु उस जमाने को सोचिए, क्या जमाना रहा होगा। कोई भी बात पहुंचाने के लिए कितना परेशानी आयी होगी। और रही बात विवाह की तो बिना ''अगुवा'' का कोई कार्य ही नहीं होगा। विवाह के हर कार्य में अगुवा का होना अति आवश्यक था।

उसे जमाने में बड़ा मेहमान लाने के लिए अगुवा भेजा जाता था। वह सबेरे जल्दी उठ कर लड़की के गांव के लिए निकल जाता था और गांव वाले भी अगुवा का ही प्रतीक्षा करते थे कि कब अगुवा आयेगा और हम यहाँ से निकेलगें। अगुवा पहुंचने पर उसके पैर धोकर सबसे पहले अगुवा के नाम से एक हड़िया लगाया जाता है। जिसे ''अगुवा झरा'' कहा जाता है। वहीं शरदचन्द्र राय (O.R&C.147) ने ''जुडूब खित्तु बोड़ए'' कहा है। हड़िया और खाना खाकर वे लड़के के घर के लिए प्रस्थान करते हैं। पहले आज की तरह गाड़ी नहीं था। इसलिए सुबह की खाना खाकर रास्ते में गीत गाते हुए निकल जाते थे। रास्ता कैसे बीतता था, पता ही नहीं चलता था।

75 (ना)	हरे डहर बेंड़ालो हरे डहर बेंड़ालो जोताला खेते डाहर बेंड़लो	हरे रास्ता भूल गये जोतल खेत में रास्ता भूल गये
	बतय दे गे आयो, बतय दे हो बबा जोताला खेते डहर बेड़ालो।।	बता दो माँ बता दो पिता जोतल खेत में रास्ता भूल गये
76 (ना)	गुड्ड गुड़िया राजी बेटी मोंय दियालो सतो जोरी जुता खीहय गेला।	रूगड़ी देश बेटी मैं दिया सात जोड़ी जुता घिस गया
	दे तो गे आयो बेटी लानल पानी गोड़े धोवाबु मुंहे कुला कराबु।।	दो तो माँ बेटी लाया पानी पैर धोउँगा मुंह कुला करूँगा

इस गीत में सभी मिलकर लड़का के यहाँ आ रहे हैं और रास्ता भूल गये हैं, इस लिए जो रास्ता में मिल रहे हैं, उसने रास्ता पूछ रहे हैं कि हम जोता हुआ खेत में रास्ता भूल गये हैं, हमें रास्ता बता दीजिये। साथ ही आज की तरह गाड़ी नहीं रहने और पैदल ही आना–जाना होता था। इस लिए कई चप्पल–जूता घिस जाता था। इसी लिए आते–जाते सात जोड़ी जूता घिस गया है, कहा गया है। हम बहुत थके मांदे आ रहे हैं माँ, हमें बेटी का लाया हुआ पानी दीजिए, हाथ–पैर धोयेंगे।

लडके के घर पहुंचने पर सबसे पहले मेहमानों का पैर धोते हैं और बैठने के लिए पुवाल बिछा देते हैं। जब सभी बैठ जाते हैं तब वे बहुत ही दूर से प्यासे आ रहे हैं, ये सोचकर वहाँ एक जोड़ा हड़िया मेहमानों के लिए लगाया जाता है। जो इस गीत से पता चलता है।–

77 (ना)	पानी दे गे आयो, पानी दे गे बाबा बड़े दूखे पियासे आवे –2	पानी दो माँ, पानी दो बाबा बहुत दुःखे प्यासे आ रहे हैं।
	दे तो गे आयो बेटी लानल पानी गोड़े धोवाबु मुंहे कुला कराबु	दो तो माँ, बेटी लाया पानी पैर धोऊंगा, मुंह कुला करूंगा

इसके बाद घर वाले सभी मिलकर गोड़लगी करने निकलते हैं और सभी पंक्ति वध मेहमानों को गोड़ लगते हुए बाहर निकलते हैं।

3.2.4.2.9 समधी या बांही जोड़ना

पानी पी लेने के बाद वहाँ फिर दोना पकड़ना होता है। जिस तरह से लकड़ी फाड़ने के समय दोना पकड़ा गया था। ठीक वैसा ही करते एवं गोहराते हैं। इसके बाद दोनों तरफ वाले चटाई में बैठकर समधी जोड़ते हैं। समधी जोड़ना भी एक नेग है। जिसमें दोनों तरफ से पंच एक चटाई में बैठते हैं और समधी जोड़ने का नेग करते हैं। समधी जोड़ना के बारे में सभा बैठना में किस तरह से किया जाता है, वैसा ही होता है। ये सभी होने के बाद पान–कसैली के लिए लड़का को तैयार कर घोड़ा करके निकालते हैं। सबसे पहले वे अपने घर वाले लेकर अपने कोरा में बैठाते थे और वे पान–कसैली लड़का को खिलाते थे। लडका को कुछ सम्मान स्वरूप कुछ रूपया और धोती वैग्यरह देते थे। इसके बाद दूसरे के यहाँ जाते थे।

आज लोगों में समझदारी आया और पहले की तरह एक–एक कर नये दुल्हा को घुमा–घुमा कर बैठाना ठीक नहीं लगने लगा। इस लिए दुल्हा को घर के आंगन में एक चटाई बैठा दिया जाता है। जिसमें सबसे पहले लड़का के घर वाले परीक्षते हैं, इसके बाद लड़की के घर वाले। इसमें लड़की के घर वाले लड़का को देखउनी के रूप में अपने इच्छा अनुसार कुछ न कुछ देते हैं। इसके बाद अन्य लोगों का बारी आती हैं। कौन क्या दे रहा है उसे लिखने के लिए रखा जाता है। पहले ऐसा नहीं था।

बड़ा मेहमान के समय लड़का को धोती, पगरी बांधकर पूरे श्रृंगार के साथ आंगन में बैठाते हैं। गोहरा उराँव के अनुसार लड़के पक्ष के लोग गीत गाते हैं :–

78 (ना)	चिमटी का धाईर आयो बकइली का पांइख रे	चींटी का पंक्ति माँ बगुला का पंख रे

चिन्तो गे आयो मोरा	पहचानो तो माँ मेरी
कोन हिके तोरा दामेदा	कौन है तेरा दामाद
चिन्तो गे बाबा मोरा	पहचानो तो बाबा मेरा
कोन हिके तोरा दामेदा	कौन है तेरा दामाद

इस गीत के माध्यम से कहते हैं कि आयो अभी आपके दामाद को श्रृंगार कर आंगन में बैठाये हैं। इसे पहचानिये की सही में आप ही का दामाद है। नहीं तो अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, यदि नहीं है तो अपने मेहमान को वापस ले सकती है। तब उसका उत्तर लड़की की माँ इस गीत के माध्यम से देती है :–

79 (ना) बेटा नू पारे फेटा	बेटा ऊपर पगड़ी
फेटा नू पारे टाइयां	पगड़ी ऊपर पंख
टाइयां नू पारे छतर	पंख ऊपर छाता
छतर नू पारे बेनेवा	छाता ऊपर बेनवा
बेनेवा डोलात होबयं	बेनवां डोल रहा है
ओहे हिके गे आयो हमारो दामेदा	वो ही है माँ हमारा दमाद
ओहे हिके गे बाबा हमारो दमेदा	वो ही है माँ हमारा दमाद

एक माँ उनको जबाब देते हुए कहती है कि मेरा दामाद वो है जिनका सिर में पगड़ी है, उसके ऊपर टाईयां अर्थात बकइला का पंख, उसके ऊपर छाता है, छाता के ऊपर बेनवा है और बेनवा को कोई डुला रहा है, वही मेरा दामाद है, वही मेरा बेटा है जो भीड़ के बीच भी सबसे अलग दिखाई दे रहा है।

सबसे पहले आम पत्ता से लड़का को पानी से परिक्षते हैं, फिर आरवा चावल से, फिर धूप–धवन कर नया दमाद को भी पान–कसैली खिलाते हैं। इसके बाद उन्हे दिखाउनी के रूप में कुछ मूल्य देते हैं। लड़का भी आने वालों को पान–कसैली देते हुए प्रणाम भी करते हैं। परन्तु आज पान–कसैली का स्थान बुंदिया ले लिया है।

बड़ा मेहमान में खंसी मीट होना अति आवश्यक समझा जाता है। परन्तु कहीं–कहीं बिना मांस के ही कार्य सम्पन हुआ है। मांस को चखना के रूप में लड़का को पान कसैली के लिए बैठाये हैं, उसी समय दिया जाता है और नहीं खाने वालों के लिए सादा। इसी के साथ हड़िया भी परोसते हैं। क्योंकि लोग नेग–दस्तुर होने को देखकर इधर–उधर नहीं होते हैं। इसके साथ डुण्डे का भी होना अतिआवश्यक होता है। डुण्डे खंसी का एक पैर को बचाकर रखते हैं। जब मेहमान बिदा हो रहे हैं तब घर वाले को देते हैं। जो मेहमान नहीं आने सके, उनके लिए होता है परन्तु सभी मिलकर ही खाते हैं।

3.2.4.2.10 विदाई

जब सभी मेहमान खाना खा लेते हैं। उसके बाद मेहमानों को बिदाई करने की बारी आती है। इसके लिए एक व्यक्ति डुण्डे[13] पकड़ता है, एक लोटा में हल्दी पानी, जिसमें हल्का चूना मिलाया जाता है और एक व्यक्ति थोड़ा सा पुवाल और माचिस।

सभी मांदर नगाड़ा के साथ नाचते गाते हुए गांव से निकलकर कुछ दूर जाते हैं। वहाँ पहुंचने पर डुण्डे को घर के समधी या अगुवा को देते हैं। वहीं हल्दी पानी को पहचान के रूप सबों को देते हैं, इसके बाद पूवाल को लम्बा बिछाकर आग लगा दी जाती है। जिसे सभी मेहमानों को डेगकर तीन बार पार होना होता है। इसके बाद सबों को प्रणाम करते हुए विदा हो जाते हैं। यह दोनों ओर मेहमानी में होता है।

3.2.4.2.11 पत्ता तोड़ने जाना

पत्ता तोड़ने के लिए गाँव की कुछ महिलाएँ जंगल जाती है। जब वे पत्ता तोड़ने जाती है तो कभी पानी पत्ता या गुंगू पत्ता नहीं बताती है। उस समय सिहईर पत्ता कहती है। कहा जाता है कि गुंगू पत्ता बाघ का क्रिया है। उसका नाम लेने पर कुछ न कुछ अनहोनी होने की संभावना बढ़ जाती हैं। जंगल पहुंचने पर सबसे पहले तीन पत्ता तोड़ती है और जंगल के नाम से देते हैं (गोहरा उराँव,20 नवेम्बर,2014)। ये कहते हुए कि :–''हे धरमे, हे जंगल का पेड़–पौधा, जंगल का जंगली जानवर, हे दे आज फलना का पत्ता तोड़ने आये हैं। आज किसी प्रकार का गलती होने नहीं देना, सभी जंगली जानवर से हमारी रक्षा करना।'' बोलकर जमीन में रखते हैं इसके बाद ही पत्ता तोड़ना शुरू करते हैं। पत्ता तोड़ कर घर लोटते हैं तो उनके पत्ता को रखते हैं और उनका पैर घर वाले धोते हैं और कई तरह का हंसी मजाक भी होता है। वहीं (बन्दी,रूपनी,चुगलू, गुमला जुलाई 22, 2017) बताते हैं कि आज फलनी जंगल पत्ता तोड़ने गई और जंगल में ही शर्म से बात भी नहीं कर रही है। शर्म से ही लोगों के साथ चलना नहीं चाहती है। उसी समय उनका होने वाला पति का नाम लेकर कहती है कि जल्दी से दौड़कर आईये और अपने होने वाली पत्नि को लेकर जाईये। तो लड़की फिर शर्म से छिप चलती है, भाग चलती है। पत्ता तोड़ते समय यदि पत्ता का नहीं टूटता है तो भी कहा जाता है कि ये दोनों बड़े प्रेम से रहेगें और अपने जीवन बीतायेगें। उसी समय का गीत है।

80 (ना)	पतई तोरे गेले फलनी बईनी	पत्ता तोड़ने गई फलनी लड़की
	बना मा भेले झिका झोरी	जंगल में इधर–उधर होती

[13] खंसी का दहिना पैर को मेहमानों के लिए बचाकर रखते हैं, उसे ही डुण्डे कहा जाता है।

दउड़ू दउड़ू फलना भईया	दौडो दौड़ो फलना भाई
खड़ा लेले दउड़ू, तिरा लेले दउड़ू	तलवार–तीर लेकर दौड़ो
बना मा भेले झिका झोरी	जंगल में इधर–उधर होती

3.2.4.2.12 मड़वा गाड़ना

गाँव के कुछ लड़के जाकर मक्का/साल वृक्ष का नवतुन डाली को मड़वा के लिए काट कर लाते हैं। जंगल में ही वे साल के वृक्षों को मड़वा के लिए चुनाव करते हैं। चुनाव करते समय अनेक सगुणों का भी ध्यान रखा जाता है। कहते हैं कि जो मड़वा टेढ़ा, कुबड़ा होगा, वह देखने में अच्छा नहीं लगेगा, साथ ही साथ शादी होने वाले लड़का–लड़की का भविष्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। इस लिए जो साल वृक्ष देखने में सीधा, लम्बा हो और पेड़ झबरीला या अधिक पत्ते वाला हो, उसे ही चुनाव कर पांच या सात पीस काटकर मड़वा के लिए लाते हैं (भगत,छो.उ.री.173)। एक अलग से कनियारी मड़वा, महेदोजाट, सिद्धु, ढुड़ही, लेकर आते हैं। उसे घर के आंगन में गाड़ते हैं। साल वृक्ष गाड़ने का अर्थ मिखाइल कुजूर (उ.सं.54) के अनुसार ''सखुआ पेड़ को कुड़ख़र अपना पैगम्बर मानते हैं जो कि भगवान का संदेश अपनों तक पहुँचाता है। यह पेड़ उनके लिए मंदिर के समान है। इसीलिए सखुआ का ही मड़वा गाड़ा जाता है।'' वहीं डॉ0 नारायण भगत के अनुसार ''इसके आलावे महुवा की डाली, बांस की टहनियाँ, खिजूर पत्ता, भेलवा की डाली का होना अनिवार्य है।'' उन्हीं के अनुसार पूर्वजों का कहना है कि गृह–सुख, सन्तानोत्पति, लम्बे जीवन की प्राप्ति, जीवन की रक्षा आदि का प्रतीक है। साथ ही मड़वा मजबूती से गाड़ा जाता है। जिससे की आंधी–तुफान या वर्षा से गिरे नहीं। मड़वा का गिरना अशुभ माना जाता हैं।

3.2.4.2.13 नेग–बरी

नेग–बरी लड़की तरफ, मड़वा के एक दिन पहले बनाया जाता है और लड़का के तरफ मड़वा के दिन ही बनाया जाता है। ऐसा इसलिए कि नेग बरी को बनाने के बाद छत में रखा जाता है। उसे तीन दिन के बाद ही उतारना है। अर्थात लड़की तरफ जिस दिन बारात आयेगें, उस दिन।

नेग बरी के लिए दुब/दुबला घांस (लड़की के तरफ 3 और लड़का के तरफ 5), मिर्चा सीधा वाला (लड़की के तरफ 3 और लड़का के तरफ 5), बिदगी, उरद को भिंगाकर पीसा जाता है, (लड़की के तरफ 3 और लड़का के तरफ 5), अरवा चावल, सिन्दुर, सरसो तेल, एक दोना में हड़िया, एक कांसा कटोरी में सादा पानी, एक हड़िया जिसमें पानी लबालब भरा होना चाहिए, एक चंगरी।

सबसे पहले उपवास करने के लिए कहा जाता है कि किसे उपवास करना है, लड़की के तरफ 3 और लड़का के तरफ 5, उपवास किये महिला ही विदगी पीसती है। इसके पश्चात विदगी को सरसो तेल, पानी से मिलाया जाता है। इसके पश्चात चंगरी के नीचे तीन लकड़ी रखा जाता है। सबसे पहले भगवान

धर्मेश, चाला अयो और पुर्वजों से गोहराते हैं कि ''हे चाला अयो हे आदि शक्ति अरा पुरखा लोग आज (कैसे आये गये हैं उसे भी गोहराते हैं।) हरियर मड़वा गाड़ रहे हैं और फलना फलना गोत्र से जूड़ि–पांति कर रहे हैं। हे दे माता–पिता आपसभी देख रहे हैं, हम तो अंधा है और ये सब नेग नियम आपलोगों का ही दिया हुआ है। जिस तरह का हरियर मड़वा गाड़े हैं वैसा ही इनका जीवन को हरियर रखना और किसी प्रकार का दुःख तकलीप नहीं होने देना...... । फिर बरी (लड़की के तरफ 3 और लड़का के तरफ 5) बनाया जाता है। उसमें दूब/दुबला घाँस, मिर्चा गाड़ा जाता है लड़का तरफ पाँच बार और लड़की तरफ तीन बार अरवा चावल से परिक्षा और गोहराया जाता है। फिर हड़िया तपावन दिया जाता है। इसके पश्चात चंगरी को छत में रखते हैं। बचा हुआ बिदगी को रोटी पकाते हैं। हडिया और बिदगी रोटी को प्रसाद के रूप में सबों को दिया जाता है। बिदगी को गाल में खुशहाली के रूप में लगाते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं कहीं कोई अपशगुन न हो इसके लिए गाल में नहीं, पैर या हाँथ में लेते हैं।

यहां पर ''चंगरी'' धरती का प्रतीक, लाल मिर्चा किसी प्रकार के रोग को रोकने के लिए, उसी समय से नाच गान, गीत गोविन्द शुरू हो जाता है। इससे संबंधित कुछ गीत हैं।

81 (ना) का सुनी अईले हरिना	क्या सुन आया हिरण
का बुझी अईले हरिना –2	क्या समझ आया हिरण
अयो जे बरी परे	माँ बारी बनाये
बबा जे मड़वा गाडे	पिताजी मड़वा गाड़े
से सुनी अईले हरिना	इसे सुनकर आया हिरण
से बुझी अईले हरिना –2	इसे समझ आया हिरण

उपर्युक्त गीत में नेग बरी बनाने के समय गाते हैं कि क्या सुनकर तुम यहाँ आयी है, किस लिए आयी है? तो कहते हैं कि मैं ऐसे ही नहीं आयी हूँ। मुझे इसके लिए माता–पिता नेवता अर्थात हल्दी रंग चावल दिये हैं, तभी मैं आयी हूँ। विवाह के लिए या नेग बरी के दिन गांव के सभी लोगों को नेवता देकर बुलाया जाता है। विवाह के लिए आसपास में किसी जाति के हो सबको नेवता देते हैं।

3.2.4.2.14 कनियारी गड़ना

कनियारी गाड़ने के लिए लड़की के माता–पिता दिनभर उपवास करते हैं और पंच की सहायता से कनियारी गाड़ते हैं। कनियारी गाड़ने के लिए मक्का (सखुआ) का छोटा डाली, बाँस, कइसलगो (महेदो जट), सिन्दुर, अरवा चावल, एक

लोटा पानी, धूप–धुवन, आम डाली, सवा रूपया पैसा, एक दोना हड़िया पानी आदि लगता है।

सबसे पहले फाल से दरवाजा के दहिना तरफ गड्ढ़ा खोदा जाता है। फिर उसे गोबर से लिपा जाता है। इसमें दोनों माता–पिता के आंचल का कोना का आंचल को बांध देते हैं और कनियारी को पकड़कर पुर्वजों को गोहराते है, फिर दोनों माता–पिता पकड़ कर गड्ढ़ा में डालते हैं। जिसमें सखुआ डाली, महेदो जाट, बांस पत्ता, सिधु, ढुड़ही, आम डाली रहता है। फिर अछत, के बाद सिन्दुर दिया जाता है। धुवन जलाकर पुरखों को गोहराया जाता है। हड़िया तपान देकर भी पुर्वजों को गोहराया जाता है। इसके पश्चात मां ही गड्ढ़ा में मिटटी भरकर लिपाई करती है। फिर पूजा कर गोड़ अर्थात प्रणाम करके उठ जाते है और सबों को प्रणाम करते हुए घर घुसते है। इसमें बड़े को माता–पिता प्रणाम करते हैं और छोटे को वे ही माता–पिता को प्रणाम करते हैं। घर घुसने के बाद पुनः वे अपने पुर्वजों को जैसे पहले गोहराये थे उसी प्रकार गोहराते हैं। फिर हड़िया को तपान देते है और दोनों पंक्ति में बैठ कर आपस में बात–चीत करते हैं। इसके बाद भोजन कर सकते हैं। जिसमें चाला अयो, धर्मे बाबा और पुरखों का नाम लिया जाता है। उन्हीं से उनकी मंगल कामना की जाती है कि ''हे दे आज हरियर मड़वा गाड़ रहा हूँ, आज मंगलवार का दिन है। हे धर्मे हे चाला अयो और ऊपर भगवान, नीचे पुरखा और बीच में पंच, आज रोहतासगढ़ पटना हरदी नगर, पीपरी पाठ होते..... फलना स्थान में आकर जी खा रहे हैं। हे दे आज फलना फलना गोत्र के साथ जूड़ि पांति कर रहे हैं। (अपना गोत्र और उनका गोत्र का नाम लिया जाता है) आज किसी प्रकार का नेग–दस्तुर करने में जान रहे हैं, नहीं जान रहे हैं, आप तो सब जानते हैं। आज किसी के लिए हुआ या नहीं हुआ, सभी को छमा करना और जिस तरह से हरियर मड़वा गड़ा हुआ है उसी तरह बाल–बच्चे को हरियर रखना। इनका जीवन में किसी प्रकार का दुःख तकलीप नहीं होने देना और जब तक सूरज चांद, ये पृथ्वी रहेगा तब तक इनका वैवाहिक जीवन को सुरक्षित एवं सुखमय रखना।''

इसमें चढ़ाने वाले सभी समान का कुछ न कुछ विशेषता होता है। जैसे–मक्का डाड़ी अर्थात सरई डाली कनियारी या लड़की का प्रतीक।

3.2.4.2.14.1 महेदो जाट–कृष्णा उराँव (22 जुलाई 2017) के अनुसार किसी भी प्रकार का रोग पाप न लगे अर्थात किसी प्रकार का डाईन लोग कोई करगुणी न कर दे। यह जनम से जिस तरह हमें देखता, समेट कर रखता है। ताकि सारी उम्र नई खुशी के साथ जीवन जीये। उन्हीं के अनुसार महेदो जाट जब भी जाट बांधता है तो दहिना तरफ से बांधता है। वही हमारा आदिवासी उराँव समाज एक जट की तरह मेंडरा कर बंधा रहे।

3.2.4.2.14.2 ढुड़ही – यह एक भगवान का फूल है। जो रोग–पाप आये उसी को रोकने के लिए देते हैं।

3.2.4.2.14.3 सिद्धु – यह एक भगवान का ही फूल है। जो कि रोग–पाप आये उसे को रोकने के लिए देते हैं। साथ ही सच्चाई का प्रतीक है।

3.2.4.2.14.4 अरवा चावल – बीनको (तारों) का प्रतीक।

3.2.4.2.14.5 एक लोटा पानी – पवित्र करने के लिए।

3.2.4.2.14.6 सिन्दुर – उगते सूर्य का प्रतीक। जैसा की सूरज की लालिमा की तरह उनका जीवन सदा खिलते रहे।

3.2.4.2.14.7 धुवन – रोग पाप भगाने के लिए।

3.2.4.2.14.8 दुबला घाँस – राधिका उराँव (15 जुलाई 2017) के अनुसार जेठ में दुबला घाँस मर जाता है परन्तु उसका जड़ से थोड़ा ऊपर का भाग खूंटी, वह कभी नहीं मरता है। पुरखा लोग ये सोचकर चढ़ाते हैं कि आने वाला पीढ़ी भी इसी तरह चलते रहे अर्थात उनका वंश न मिटे।

3.2.4.2.14.9 सुपाड़ी या कसैली–ग्रह काटना।

3.2.4.2.14.10 बांस डाली – जीवन का प्रतीक। बाँस का डाली कितना ही हवा पानी आता है परन्तु टूटता नहीं है। साथ ही उनका वंश बढ़ता रहे। उसी तरह एक दूसरे का जीवन बांस की तरह खड़ा रहे एवं वंश कभी ने मिटे।

3.2.4.2.14.11 आम डाली–पवित्र जीवन के लिए।

3.2.4.2.14.12 तांबा पैसा – ग्रह काटना।

गोहरा उराँव (18 नवेम्बर 2014) के अनुसार इसमें ढुड़ही, सिधु, बांस पत्ता, आम डाली को पूर्वजों द्वारा भगवान का फुल माना गया है। जो कि जंगलो में ही पाया जाता है। जिस प्रकार हम करम में गुलाइची या गेन्दा फूल न चढ़ा कर जांवां और सुरगुजा फूल चढ़ाते हैं उसी प्रकार वे भी हैं। साथ ही हल्दी और तांबा पैसा ये दोनों ग्रह काटने के लिए दिया जाता है।

3.2.4.2.15 बेंज्जा लड्डू (विवाह लड्डू)

उराँव जाति में कनियारी मड़वा गाड़ने के बाद लड़का के यहाँ लड़का को पांच और लड़की के यहाँ लड़की को तीन यह बार नेग करना पड़ता है। इसमें सबसे पहले लड़की को पूरब की ओर मुंह करके चुकुमुकु बैठाया जाता है। फिर घर वाले उसके आगे तरफ सूप में अरवा चावल रखते हैं और एक कुँवार लड़की, जो रिस्ता में बहन लगती हो, लडकी की ओर से तीन होना चाहिए। उनमें से एक पीछे की ओर चावल को अचरा में झोकने के लिए खड़ी रहती हैं। लड़का के लिए भी, रिस्ता में बहन लगने वाली पांच होना चाहिए।

इसमें एक लड़की, जो लडकी विवाह हो रही है, उनका पस्ती (हंथेली) में एक पस्ती अरवा चावल को देगी। उस समय प्रश्न करेगी

''किसका चावल झोक रही हो?''
तो लड़की पहली बार में अपना नाम लेगी।
''मैं (...)[14] के लिए ले रही हूँ''

बोलकर लड़की उस चावल को अपने पस्ती में लेगी और उसे पीछे ही ओर फेकती हैं। उसी चावल को दूसरी लड़की अपनी आंचल में झोकती है। दूसरी बार में फिर चावल देने के पहले वही लडकी प्रश्न करती है –
''किसका चावल झोक रही है?''

तो वो दूसरी बार में अपने पति का नाम लेकर कहती है –
''मैं (...) का ले रही हूँ।''

इसके बाद वो चावल देती है और होने वाली दुल्हन भी उस चावल को अपने पस्ती में लेकर धीरे से पीछे की और फेंक देती है। जिसे दूसरी लड़की आंचल में झोकती है। इसके बाद उस चावल को उसी सूप में रख देती है। यही नेग पाली–पाली से तीनों लड़की करती है। इसी चावल को गूंड़ी कूटने के लिए भींगाया जाता है। जिसे लड्डू बनाया जाता है। गोहरा उराँव के बताये अनुसार कहा जाता है ऐसा नहीं करने पर सभी बराकईत सुसराल चली आती है।

इसी तरह से लड़का तरफ भी करते हैं। परन्तु चावल पीछे नहीं फेकता है। इसमें लड़का को नहलाने के पहले पीढ़हा में पूरब मुंह करते बैठाते हैं। बहन उसके पस्ती में चावल रखती है और नीचे से धरती, घुठना, बांध, सिर में करके चावल को छिंटती है। जिसे भी आंचल में झोकती है। इस तरह पांच बार होने के बाद पांच बार लोरहा से भी करती है और उतारती है। जिसे ''कांच कुवांर उतारना'' भी कहते हैं।

उराँव जाति में विवाह के अवसर पर गुड़ी कूटना, यह आदिवासी समाज का एक महत्व पूर्ण नेग है। इसी गूंड़ी से लड्डू बनाया जाता है। जिसे ही ''बेंज्जा लड्डू'' कहते हैं। इस लड्डू में मीठा के लिए न चीनी और न ही नमक डालते हैं। इसे और न तेल से छानते हैं और न अन्य लड्डू ती तरह भांफते हैं। बेंज्जा लड्डु को गर्म पानी में डुबो कर पकने पर निकालते हैं। कंड़सा बनाने के समय इसी लड्डु को एक टोकी में भर कर देते हैं। इसके बाद में उस लड्डु को सबों को बांटते हैं।

वही नारायण भगत (छो.उ.री.176) ने लिखा है कि तीन या पांच पत्तल होते हैं और सभी में पांच–पांच लड्डू रखते हैं। उसमें से एक को कंड़सा टोकरी में भरा जाता है और अन्य पत्तलों को विभिन्न उपस्थित व्यक्ति–समूहों के बीच बाँटते हैं। खास कर एक पत्तल को देवी देवताओं के नाम पर रखे जाते हैं। इसी तरह बयनाला–बयनाली, जोंख लड्डु और पंच–गैरही के नाम से लड्डू दिये जाते हैं।

---

[14] (...) यहाँ पर लड़की है तो वह अपना नाम स्वयं लेगी, इसके बाद अपने होने वाले पति का। और जब लडका का बारी आयेगा तो पहले लड़का अपना नाम लेगा और बाद में होने वाली अपनी पत्नी का।

बेंज्जा लड्डू भांफने के लिए मड़वा के दिन जब लड़की को कनियारी मड़वा गाड़ने के बाद तीन लड़कियाँ चावल को पस्ती में देती हैं।[15] वही चावल से ही लड्डु बनाने के लिए भिंगाते हैं। उसमें और चावल मिला कर लड्डू पकाने के लिए कुटते हैं। कुटते–कुटते ही गीत गाते हैं।

82 (ना)	के कुटाला हादड़–हुदुड़ फलना भइया कुटे हादड़ हुदुड़	कौन कूट रहा है हादउ़ हुदुड़ फलना भाई कूटे हादड़ हुदुड़
	के पछरे फटर फेटेर फलनी बहिन पछरे फटर फेटेर	कौन पछरे फटर फेटेर फलनी बहन पछरे फटर फेटेर

उपर्युक्त गीत में कौन ढेकी कूट रहा है, जो हादड़–हुदुड़ बज रहा है। विवाह होने वाला लड़का का नाम लेकर कहा गया है कि फलना ढेकी कूट रहा है वह बज रहा है। इसी में कौन पछर रही है जो फटर–फटेर बज रहा है। उसमें विवाह होने वाली लड़की का नाम लिया जाता है।

3.2.4.2.16 कड़सा गांथना

कड़सा गाथने के लिए चटाई में धान को बाली सहित रखते है। जिसे गरम पानी से भिंगाया जाता है। जिसे लड़की के तरफ तीन और लड़कों के तरफ पाँच लड़कों को धान की बाली को चुनवाया जाता है, जिसमें धान की बाली और पुवाल को अलग कर चुनते हैं। चुन्ने के बाद सूप में अरवा चावल, कसैली, सिन्दुर, अरवा धागा, सफेद कपड़ा, जंटगी तेल (सुरगुजा तेल) कुछ उरद, भण्डा (घड़ा) टट्ठी (दीया), नाचु, टोकी, तांबा पैसा, हसुआ और तपावन के लिए एक हड़िया लगाया जाता है। सबसे पहले हड़िया को धर्मेश एवं पुरखों के नाम से तपावन देते हैं और उनके अच्छे जीवन के लिए मंगल कामना भगवान से की जाती है। फिर कड़सा गांथा जाता है। यहाँ लड़का का प्रतीक उसी पुवाल का एक आदमी बनाया जाता है। उसे नाचु में रखा जाता है। कड़सा में ही सगुन अपसगुन रहता है। कहा जाता है कि दीया को जलाने के बाद सुबह तक नहीं बुझना चाहिए। यदि वह बुझता है तो कुछ अपसगुन होने का डर रहता है। सूरज उगने तक जलने पर अच्छा समझा जाता है।

कंड़सा गाथने का अर्थ कि हम लड़का–लड़की को एक दूसरे के मद्द से जीवन चलाने के लिए तैयार कर रहे हैं। उसमे दीया का बत्ती को मेरने का अर्थ, दोनों गोत्र को एक कर रहे हैं और पांच दीया जलाने के अर्थ हम पांच तत्वो को जगा रहे हैं, जिससे हमारा शरीर का निर्माण हआ है। कंड़सा नचाने

[15] प्रथम कुडुख़ सम्मेलन, कुडुख़ भाषा,साहित्य और संस्कृति, कुडुख़ लिट्रेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 2012।

का अर्थ, पांचो तत्वों को हम खुश कर रहे हैं। बच्चा बनाने का अर्थ, सृष्टि के विकास के लिए इस तरह का समय पर आवश्यक है।

डॉ0 नारायण भगत (वही,177) का मानना है कंड़सा घर की सम्पन्नता का प्रतीक है। कंड़सा मुख पर तेल जलने वाला बत्ती का अर्थ घर परिवार में सदा जीवन की ज्योति जलती रहे। यह सूर्य भगवान का प्रतीक है। सूर्य के प्रकाश से ही सृष्टि सम्भव हो सका और इन्हीं के प्रकाश से हम सदा जीवन यापन कर रहे हैं। जिस प्रकार चुक्का में आनाज भरा हुआ है, उसी प्रकार घर, धन दौलत से भरा हुआ हो। कंड़सा नचवाते समय एक व्यक्ति हंसुवा या हँसिया में तेल लगा हुआ चिथड़ा लपेट कर बत्ती जलाते हैं। यह बत्ती अंधकार में प्रकाश करने के लिए जलाया जाता है और दूसरी बात यह है कि यह बुरी आत्माओं और बुरी नजरों से रक्षा करती है।

इसी समय कहा गया है कि छोटा से जवान होने तक हम साथ में रहे और हमारा दोस्ती बहुत ही अच्छा था परन्तु किनका नजर लगा या कौन हमारा दुश्मन है जो इनता सुन्दर रिस्ता को जूड़ि–पांति लगा कर तोड़ रहा है। परन्तु इसी में कहा गया कि तोड़ने वालों को तोड़ने दीजिए, उन लोगों का भला ही होगा। अर्थात उनलोग हमें विवाह बंधन में बांध रहे है, उनका भी भला हो। जो इस गीत में बताया गया है।

83 (ना)	जोरी जोरी अयो रहालो संगा जोरी अयो रहालो कोन मुदय अयो संगा तोरी देलय।। –2	जोड़ी जोड़ी माँ थे साथ जोड़ी माँ थे कौन दुश्मन माँ साथ तोड़ दिया
	तोरइया के तोरे दे भंगाईया के भंगे दे जोरी तोरइया के कतई भला कराबे।। –2	तोड़ने वालों को तोड़ने दो भांगने वालों को भांगने दो जोड़ी तोड़ने वालों को कितना भला करोगे

3.2.4.2.17 कंड़सा नाच

जब कड़सा बनकर तैयार हो जाता है तब तीन महिलाएँ कड़सा बनाने वाले को सिन्दुर टिका देकर परिछ कर कड़सा उठाती है, गाजे–बाजे के साथ अखड़ा में जाकर नाचते गाते हैं। नाचते समय गन्दा गीत गाते हैं। गन्दे शब्द के स्थान पर ..... किया गया है। कुछ गीत इस प्रकार के हैं। :–

84 (ना)	लाल लाल मुर्गा छाइन चढ़ेला डेना पसराय पसाराय.....।।–2	लाल मुर्गी छत चढ़ता है पंख पसराकर.......

85 (ना)	अम्बा फरे झोते झोता तेताइर फरे बंक्का।।–2 का जनम लेले रे फलना आगे बटे बंक्का।।–2	आम फले गुच्छा गुच्छा इमली फले बंक्का क्या जन्म लिया फलना आगे तरफ बंक्का
86 (ना)	अम्बा फरे झोते झोता तेताइर फरे बंक्का।।–2 का जनम लेले रे फलनी आगे बटे बंक्का।।–2	आम फले गुच्छा गुच्छा इमली फले बंक्का क्या जन्म ली फलनी आगे तरफ बंक्का
87	छिपिर अम्में नू पड़की लाता खोता।।–2 चींख़ा ची कोय मंगरी खद्द नना गे।।–1	छिपिर (थोड़ा) पानी में पंड़की लाता घोंसला रोने दो लड़की मंगरी बच्चा करने के लिए
88 (ना)	आलू रोपाले खोबा नहीं देले खबे खबे रे मंगरा, तोरे ..... झोर।।–2	आलू रोपे कोड़ा नहीं किये खाना रे मंगरा तेरा ..झोर
89	बरतिया पेल्ला रिन मघा खोया हो'आ।।–2	बरात आये लड़कियों को सुरगुजा काटने ले जाओ
	मघा मला खोया कालोर होले धर'आ धर'आ परता तरा हो'आ	सुरगुजा नहीं काटेगें तो पकड़कर जंगल तरफ ले जाओ

3.2.4.2.18 नहलाना

लड़का या लड़की दोनों तरफ से ढुढ़वा अर्थात चुक्का लाया जाता है। जिसे सखुआ पत्ता से बांधा जाता है। ढुढ़वा में थोड़ा सरसो तेल, सवा रूपया, नगड़ा मिट्‌टी, हल्दी, अपटन, साबून आदि रहता है। उसी से लड़का को नहलाते हैं। नहलाने के बाद किसी प्रकार का नजर न लगे इसके लिए आग में मिर्चा, सरसो, नमक, और झोला अर्थात घर में मकड़ी घर जैसा बनाता है और जिसमें धुवाँ बैठ जाता है, जलाया जाता हैं। यही जूठा नेग लड़की के तरफ भी जाता है। जैसे उनलोग सखुआ पत्ता में बांध कर भेजे थे उसी प्रकार बना कर भेजते हैं, जिससे लड़की को भी नहलाते हैं।

मुनेश्वर उराँव (आंरगी, 6 जनवरी 2015) के अनुसार ढुढ़वा में नगड़ा मिट्‌ठी लाना अर्थात मानव सृजन के समय भी नगड़ा मिटठी से ही बनाया था। विवाह के समय भी उसका कदम नया जीवन जीने की ओर बढ़ रहा है। यही सोचकर पुर्वजों ने नगड़ा मिट्‌ठी को लाया। उससे नहलाने अर्थात पवित्र करना

होता है। जो इस गीत से पता चलता है। गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, 25 मार्च 2020) के अनुसार :–

90 (ना) एतई दिने रहाले बहिन मईले रहाले	इतना दिन थी बहन गन्दी थी
आइजे तो बहिन मईले छोंड़ाले बहिन मईले छोंड़ाले	आज तो बहन गन्दा हटायी बहन गन्दा हटायी
आयो का कोरा में रहाले बहिन मईले रहाले –2	माँ का कोरा में थी बहन गन्दी थी
आईजे तो बहिन सांया का कोरा में गेले बहिन मईले छोंड़ाले –2	आज तो बहन लड़का का कोरा में गयी बहन गन्दा छोड़यी

इस गीत में कहा गया है कि जब तक तुम माता–पिता के घर में थी, गन्दी ही रहती थी, किसी प्रकार का स्नान–ध्यान नहीं करती थी। हम तुम्हें सारा समान पूरा नहीं कर पाते थे। परन्तु आज तुम विवाह कर अपने पति के यहाँ जा रही हो। वहाँ तमको सब कुछ मिलेगा और बड़े ही सुन्दर से साफ–सुधरा रहना। इसी तरह लड़का के लिए भी गीत गया जाता है, जो इस प्रकार है (डॉ0 भगत,छो. उ.री.174):–

91 (ना) जोड़ी रे रसिका कतई दिने रहाबे कुँवारे।	जोड़ी रे रिझवार कितना दिन रहना कुँवार
बारह बच्छर आना–जाना तेरह बच्छर खाना–पीना जोड़ी रे रसिका कतई दिना रहाबे कुँवारे।।	बारह वर्ष आना जाना तेरह वर्ष खाना पीना जोड़ी रे रिझवार कितना दिन रहना कुँवार

इस गीत में कहा गया है कि रसिका अब तुम कितने दिनों तक ऐसे ही कुँवारा रहोगे। ऐसा रहना अब अच्छा नहीं लगता है, अब तुम्हें सामाजिक बंधन में बंधना ही पड़ेगा। विवाह के संबंध में बारह वर्ष तक आना–जाना और तेरह वर्ष तक खाना–पीना चला और अब कितने दिनों तक कुँवारा रहोगे? इस लिए हल्दी लगाकर स्नान करो और विवाह के लिए तैयार हो जाओ।

चन्द्रमुनी और रायमुनी (सुपाली, 6 जनवरी 2015) के अनुसार मिर्चा के

साथ घर का झोला को जलाने पर यदि छींक या खों खों किया तो उसके अन्दर जो भी गलत चीज है वह निकल गया। वैसा नहीं करने पर समझा जाता है कि उसके अन्दर का गलत चीज अभी भी समाया हुआ है। कहने का तात्पर्य कि यदि वो पहले से किसी लड़की से प्रेम करता है तो छींक या खों–खों करने वह निकल जाता है और नहीं करने पर वह विवाह किया हुआ लड़की को छोड़ दे सकता है या तो और एक विवाह कर लेगा या कुछ भी हो सकता है।

92	तुसा डहरे नू बिण्डो एंग्हयन बचिकय	कुँआ रास्ता में बिण्डो मेरा लूटा
	चि'आ जुड़ी बिण्डो एंग्हयन बच्चिकय	दो प्रेमी बिण्डो मेरा लूटा
	अक्कु गा जुड़ी हरो हरदी लगिया	अब तो प्रेमी हल्दी लग गया
	चि'आ जुड़ी बिन्डो एंग्हयन बच्चिकय।।	दो प्रेमी बिण्डो मेरा लूटा

उपर्यक्त गीत में बचपन से जवान होने तक बच्चे साथ में खेलते–खेलते बड़े होते हैं। इसी क्रम में उनका विवाह भी होता है। इन्ही में से कुछ ऐसे भी मिलते हैं जिनको अपने गांव के किसी लड़का को पसन्द करने लगते हैं। परन्तु सभी जातने हैं कि दूर का ढोल ही सोहान। इसी लिए गांव में विवाह नहीं करते हैं। जब लड़की ससुराल से नईहर आती है तो पानी लाने रास्ता में उसका बचपन का साथी उनका बिण्डो अर्थात पूवाल का बनाया हुआ गोल सा, को लूट लेता है। तो लड़की कहती है कि अब मेरा विवाह हो गया है, हल्दी लग चुका है, मैं अब बचपन की यादों को याद नहीं करना चाहती हूँ। मेरे से मजाक अब मत किया करो। मैं अपने पति से अच्छी तरह जीवन बीताना चाहती हैं। बचपन के पुरानी यादों को भूल जाईये।

3.2.4.2.18 तलवार पकड़ना

गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, गुमला, 20 नवेम्बर 2014) के अनुसार नहलाने के बाद लड़का विवाह के लिए निकलता है तब उसे तलवार दिया जाता है। वह उसका संवगिया का प्रतीक और दूसरा किसी प्रकार का नजर न लगे, किसी प्रकार का हवा आ रहा है, कोई दुश्मन लोग भेज रहे हैं, किसी समय कभी कुत्ता तो कभी बिल्ली बनाकर डाइन विसाही लोग भेजते हैं। उनलोग देखते हैं कि उतना दिन तो जैसे तैसे, तुरी महली अर्थात जैसे सका वैसा खाया–पीया परन्तु आज हरियर मड़वा गाड़ रहा है, देखते हैं आज हमारा भोजन को खाता है या नहीं। इसी लिए हम नहला कर उसके शरीर को पवित्र कर, उसे तलवार देते हैं। इसके बाद जैसे–तैसे लोगों से भी सटने का प्रयास नहीं करना है, कांटी भी बहुत अच्छा होता है। शादी के बाद वैसे दिक्कत नहीं है।

3.2.4.2.19 पनबरती

आज पनबरती का नेग छोटा मेहमान में करते हैं। परन्तु पहले ऐसी नहीं थी। लोग मड़वा के दिन ही कुछ लोग लड़की के घर पहले आ जाते थे और पनबरती का नेग करते थे। इन्हीं के साथ वर भी साथ में आते थे, परन्तु उसे बाहर ही रखते थे या तो किसी के घर में जनवास दे देते थे। सिर्फ परनबरती करने वाले ही घर आते थे। सभी नेग दस्तुर होने के बाद पुनः उन्हें खिला–पिलाकर बिदाई कर दी जाती थी। इसके बाद वे पुनः लड़का के साथ विवाह करने के लिए आते थे। आज पनबरती का नेग–पहले ही हो जाता है। इसीलिए विवाह करने वाले और बारात सभी एक ही साथ आ जाते हैं।

पन–बरती में एक लड़की, हड़िया घड़ा को सिर में बाहती है और दूसरी लड़की पानी का घड़ा को। उसका भाई या भाई लगने वाले एक तलवार, एक हँसुआ में मसाल जलता हुआ और एक छाता पकड़ कर अपनी बहन या दीदी को छाया करते हैं। इसके बाद लड़का तरफ से आते हैं और प्रश्न करते हैं – ''नीन ई तडरी एन्देर गे धरचका इज्जका र'अदय बबु? ''(तुम इस तलवार को किस लिए पकड़े हो बाबु?

तब उसका भाई बोलता है–

''ए–रा भई रो! पंच्चर ही मझी, एंगड़ीन एन्द्रीम मना ओंग्गी, ब'अर ए–न तडरी धरचका र'अदन। बच्चा बेद्दोर होले इदी तिम पस'ओन।'' (देखो भाई लोग! पंच के बीच मेरी बहन को इतना भींड़ में कुछ भी हो सकता है, कोई उठाकर भगा भी सकता है। इसलिए में तलवार पकड़कर खड़ा हूँ। लूटना चाहेगें तो इसी से मारूंगा।)

हसिया वाले को भी इसी तरह प्रश्न करते हैं, वे भी जबाब देते हैं –

''हे दे पंचा रो! इन्ना इंगड़ी लंगड़ी र'ई का ठुठी र'ई का गुंगी र'ई अदिन दवले ए–रा खो–जा, ख़ोख़ा अम्बके ब'आ का एन्ने–अन्ने र'ई। औंगे ए–न बिल्ली दगचका र'अदन। (हे दे पंच लोग! आज मेरी बहन लंगड़ी है, ठुठी है, कि गूंगी है, उसे अच्छी तरह से देखिये, इसके बाद नहीं बोलना कि फलनी ऐसी वैसी है। इस लिए मैं दीया जलाया हूँ।)

इसके बाद घड़ा और लोटा को उतार कर बिन्डो को लुटते है जो कि कीन्दा अर्थात खजूर के पत्ता का बना होता है, यह एक नेग है। जिसमें बिन्डो का मूल्य मांगा जाता हैं, यहाँ पर मजाक भी होता है। कुछ रूपया देने के बाद ही बिन्डो को छोड़ा जाता है। इसके बाद लड़कों की ओर से लड़की को पूरा श्रृंगार दिया जाता है। साथ ही जितने लोग नेग में शामिल होते हैं उन्हें भी कुछ न कुछ देना होता है। जैसे तलवार पकड़ने वाले ,हँसुवा पकड़ने वाले, छाता पकड़ने वाले, बच्चा खेलाना, बिन्डो लुटने वालों के लिए, सब्जी का, दतवन का, बुढ़ा–बुढ़िया का, पत्ता का, पीनी तम्बाकू, तम्बाकू का, बीड़ी का, साथ छोड़ने वालों का भी पैसा उसी समय या विवाह के समय लेते हैं। बिन्डो को लूट कर लडके अपने हाँथ में पहनते हैं। उपर्युक्त सभी का कुल मिलाकर सवा पांच रूपया

लेते थे और उसे सबों के लिए बांटते थे। वहीं बैजनाथ हांसदा (दैनिक जागरण, पृ02, 17 फरवरी 1914) के अनुसार संथाल समाज में माता–पिता, दादा–दादी और ग्रामीणों के लिए विवाह के समय 13 रूपया ही देते हैं। परन्तु आधुनिकता और समय के अनुसार अब सवा पांच रूपया से बढ़ाकर अधिक लेना प्रारम्भ कर दिया है। वैसा ही उराँव समाज में देखा जा सकता है। इसके बाद ही उस हड़िया में, उसी पानी को डालते हैं और उसी को तपावन भी देते हैं।

पन बरती करने का तात्पर्य उसे अपना अर्थात लडका के घर का बनाने का शुरूआत करते हैं। उस समय लडकी को सफेद टीका देते हैं और विवाह के समय लाल। इसका करण कि सफेद का अर्थ सृष्टि का बनना और लाल का अर्थ उसका चलना। अर्थात सृष्टि को चलाने के लिए तैयार हो रही है और विवाह के बाद तैयार हो जाती है। गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, 20 नवेम्बर 2014) के अनुसार जब पनबरती होता है उस समय भी छाता से लडकी को छाया करते हैं। उस समय भी पंच लोग उस लडका से उसी तरह पूछते हैं कि यह छाता किस लिए पकड़े हो तो वह लड़का भी उसी तरह जबाब देता है कि अभी इतना धूप पड़ रहा है। आपलोग मेरी बहन को देखने आये हो। मेरी बहन का चेहरा हरियर पेड़ की तरह हमेशा हरा ही रहे और फूल की तरह खिलती रहे। कहीं से भी धूप इनपर न पडे। इसी लिए मैं छाता से छाया कर रहा हूँ। इसी समय का यह गीत है। :–

93 (ना)	रीमी झिमी पानी बरिस गेला –2	रिमझिम वर्षा आये
	फलनी कर मांग सिन्दुर	फलनी का मांग सिन्दुर
	भिंजा तारे।। –2	भिंग रहा है
	छाई धरू छातर धरू फलना भइया	छाया करो छाता पकड़ो भाई
	फलनी कर मांग सिन्दुर	फलनी का मांग सिन्दुर
	भिंजा तारे।।–2	भिंग रहा है

2.2.4.2.20 बच्चा खेलाना

पनबरती होने के बाद कुछ महिलायें (लड़की के आजी–नानी लगने वाली) पुवाल का बना हुआ पुलता को पीठ में बेतराकर उसका बाप खोजती है। वहीं कुछ महिलाये सब्जी लेकर बैठ जाती है और ''सब्जी ले लो, सब्जी ले लो।'' कहती है। इस कम में लडके तरफ के कुछ पुरूष आते हैं और सब्जी वालों से पूछते हैं:–

''कितना दाम लगायी हो?''

''पांच रूपया है।''

''हम इसे नहीं खरीदने सकेगें''

''सब्जी ले लो नहीं तो मेरे बच्चे भूखे रह जायेगें।'' (तो सब्जी बेचने वाली रोती

हुई कहती है।)
''कितने बच्चे हैं?''
''मेरे बहुत सारे बच्चे हैं, उसका बाप भी कहीं चला गया है।''

इस तरह से हंसी मजाक होने के बाद सब्जी का कुछ मुल्य दिया जाता हैं। वहीं बच्चा खेलाने वाली महिला गूंगी का रूप धारण कर पुरूषों के पास जाकर उन्हें इशारा करती है कि तुम ही इसका बाप हो। वे नहीं–नहीं बोलते हैं परन्तु बाद में उन्हें भी कुछ मूल्य देकर बच्चा को ले लेते हैं।

3.2.4.2.21 बारात आना

94 (ना)	चला सुकरा चला हो –2	चलो सुकरा चलो
	चला लय बरेता रे ।।–2	चल रहे हैं बरात
	रहा तो रे बरतिया, बीरा के उगे दे	रहो बरतिया, सूरज उगने दो
	बीरा के उगाते टीका सिन्दुर	सूरज उगते ही टीका सिन्दुर
	रहा तो बजनियाँ–2	रहो तो बजाने वाले
	भइयक किय्या सिन्दुर बीसीरा रे	भाई का किया सिन्दुर बेचाया रे
95	बरात गा बरेचर –2	बरात तो आये
	बरा बरी भईया भगेतर बरचर	बराबर भाई भगत आये
	बरा बरी भईया मधुवय बरेचर।	बराबर भाई मधुवा आये
	भगेतर गे छटउवा	भगत के लिए छांटा हुआ
	मधुवर गे पिटउवा	मधुवा के लिए पिटउवा
	पोल्लोय अयो भगेतर गने।	नहीं सकेगें माँ भगतों से

पहले जमाने में जैसे ही सूरज उग रहा है वैसे ही बरात जाने के लिए निकलते थे। कारण था आज की तरह गाड़ी नहीं था। लोग पैदल ही कहीं भी आना–जाना करते थे। परन्तु आज कहीं भी आना–जाना गाड़ी में ही करते हैं। इसलिए सुबह बरात नहीं जाते हैं। पहले बहुत भगत लोग होते थे किसी का पकाया हुआ खाना नहीं खाते थे। भगत लोग खाते भी थे तो कुंवार लड़की का। कुछ ऐसे भी भगत हैं जो सिर्फ अपना ही बनाया हुआ खाना खाते हैं। इस लिए आदिवासी समाज में भगत लोगों के लिए अलग खाना बनाते हैं। मधुवा लोगों के लिए कोई भी बना सकता हैं।

3.2.4.2.22 मिरघीरी

बरात पहुँच जाने पर लड़की पक्ष वाले परिक्षने के लिए जाते हैं। इसके लिए एक महिला लोटा में पानी और उसमें आम की डाली लेकर, सभी बच्चे महिला–पुरूष गाजे–बाजे के साथ नाचते हुए जाते हैं। नाचने वाले अपने को श्रृंगार किये रहते हैं। महिलायें खोपा में फीता, कलिगा, गला में चन्दवा आदि के साथ अपने को श्रृंगार करती है। वही पुरूष हाथ में तलवार, सिर में पगड़ी, बांह में चांवर, कमर में छुनकी और पैर में घुंघरू आदि के साथ अपने आप को श्रृंगार करते हैं। तो कोई बांस का घोड़ा बनाकर नचवाते हैं।

इसी तरह से दोनों पक्ष के लोग आमने–सामने होते हैं कोई अपना पंईक दिखाते हैं, कोई अपना तलवार भांजते हैं और दोनों एक दूसरे को हराने का प्रयास करते हैं। परन्तु रीत अनुसार लड़की पक्ष वालों को हारना ही होता है। इसी समय लोटा के पानी से सभी को परिक्षते हैं। सभी वहाँ एक दूसरे को मोंजरा (प्रणाम) करते हैं।

तम्बाकु–बीड़ी होने के बाद नाचते गाते अखड़ा चले आते हैं। वहाँ भी महिलायें दोनों तरफ के कंड़सा को अखड़ा में नाचते हुए मिलाते हैं। हर जगह कंड़सा को नहीं लिया जाता है। इस लिए लडके वाले बौगी को केवल लेकर आते हैं। अखड़ा में ही दोनों तरफ के कंड़सा को मिलान करते हैं। मिलाने होने के बाद नाचते हुए वे दूसरे पक्ष को घेरकर ठेसने का प्रयास करती है और अन्त में ठेसती है। परन्तु वहाँ भी रीत अनुसार लड़की पक्ष को हारना ही होता है।

इसके बाद अखड़ा में ही लड़कों का पईंक नृत्य होता है। इसमें दोनों तरफ से बारी–बारी से तलवार, तो कोई लाठी भांजता है। तो कोई कुछ और खेल दिखाते हैं। इस तरह के होने के बाद सभी पुनः नाचते हुए मड़वा घर चले आते हैं।

2.2.4.2.23 दरवाजा ढकना

जब लड़का विवाह करने के लिए अपना सुसराल आता है तब मजाक करने वाले, साली, अजी, नानी, वे गीत गाते हुए कहते हैं कि विवाह करने के लिए अकेले आये हैं अपने से पसन्द किया हुआ लडकी को भी न साथ में लेते आते। और आपका साली लोगों को पांच रूपया पैसा दीजिएगा तब ही दरवाजा खोलेगें। गोहरा उराँव के अनुसार दरवाजा ढकने का मतलब कि कोई अनजान व्यक्ति तो नहीं आ रहा है अर्थात वह अपना है या दुश्मन, इसे पता लगाना होता है। जिनसे उनका परिचय और किस लिए आ रहे हैं उसका कारण पूछा जाता है।

96 (ना)	एकेला अले फलना एकला तोर मिलल बझल छोड़ी के लेले जुनू आते रे।।–2	आले रे अकेले आये फलना तेरा प्रेमी लड़की को लेते आता रे

छोट सारी के बड़ सारी के	छोटा साली या बड़ी साली को
पांचे रूपया ढ़िबा देबा रे,	पांच रूपया पैसा देना
होले दुरा खोलब रे ।।	तभी दरवाजा खोलेगें

3.2.4.2.24 विवाह के प्रकार

उराँव आदिवासी समाज में विवाह बहुत बड़ा महत्व रखता है। इसमें कई प्रकार के नेग–दस्तुर के साथ विवाह सम्पन्न किया जाता है।

तालिका 11 देवचरण भगत (अद्दियर,6) के अनुसार विवाह के प्रकार

1. कांच कुंवार विवाह
2. दोवाबर विवाह
3. सगई विवाह
4. प्रेम विवाह (ढुकुढरा विवाह)
5.

1. **कांच–कुंवार विवाह**–उनके अनुसार कांच–कुंवार विवाह, कुंवार लड़का–लडकी के विवाह को कहते हैं। इसके लिए दोनों तरफ मड़वा गाड़ते हैं। बारात जाते हैं और लड़की के घर में विवाह होता है। दोनों तरफ गाजा–बाजा ढांक, ढ़ोल रहता है। अर्थात विवाह का सारा नेग–दस्तुर दोनों तरफ होता है।

2. **दोवाबर विवाह**–यह विवाह पहले विवाह किया हुआ लड़का और कुंवार लड़की का विवाह को कहते हैं। इस विवाह में दोनों तरफ मड़वा गाड़ते हैं। यह विवाह भी कांच–कुंवार विवाह की तरह ही होता हैं।

3. **सगई विवाह**–सगई विवाह भी उराँव आदिवासी समाज में पाया जाता है। जिसे ''विधवा विवाह'' भी कहते हैं। इसमें लड़की का पहले विवाह हो चुका है और किन्ही कारण से पहला विवाह टूट गया। तो वह दूसरे लड़के से विवाह कर सकती है। जिसे ही विधवा विवाह कहते हैं। परन्तु यदि लड़का पहले शादी नहीं किया है और लड़की का पहले शादी हुआ है तो लड़का पहले ''लोटा'' से विवाह करेगा अर्थात लोटा को पहले सिन्दुर देगा और उसी सिन्दुर से लड़की का मांग भरेगा। यदि लड़का पहले विवाहित है और लड़की कुवांरी तो ऐसा नहीं होता है। लड़का सगाई विवाह नहीं करेगा, वह विवाह ही करेगा। इसके लिए एक कहावत पूर्वजों ने कही है ''जों–खस हजार गो जूता अत्ता ओंग्गदस पहें पेल्लो ओन्टा एकला।'' अर्थात लड़का कई बार शादी कर सकता है परन्तु लड़की एक ही बार। यदि दूसरी बार शादी करेगी तो वह सगई विवाह कहलायेगा। वहीं भीखु तिर्की का भी मानना है कि शादी–शुदा लड़का कुँवारी लड़की से विवाह कर सकता है।

परन्तु ब्याही लड़की किसी कुँवारा लड़का से विवाह नहीं कर सकती है। यदि लाचारी है तो लड़के की शादी के पहले लोटे से विवाह कर उसके कुँवारापन को तोड़कर ही वह उस लडकी से विवाह कर सकेगा। श्रीमति गोहरा उराँव के अनुसार यही नेग दस्तुर मृत्यु के समय में लड़का को करवाना होता है। यदि विवाह के बाद या बूढ़ापा में लड़का का मृत्यु हो जाता है तो भी नहला–धोकर जब सिन्दुर दी जाती है ती भी पहले लोटा में, फिर उस मृत व्यक्ति को दिया जाता है। इसमें हल्दी नहीं लगता है, मड़वा भी नहीं गाड़ते हैं। लड़की को लड़के के यहाँ पहुँचा देते हैं। ढांक–ढ़ोल भी नहीं रहता है। लड़की के लिए सिन्दुर केवल देना होता है और दोनों को तेल लगाया जाता है। साथ ही गांव वालों को खिलाना–पिलाना भी पड़ता है।

4. **प्रेम विवाह**–जिसे ढुकु विवाह भी कहते हैं। कुंवार लड़का और लड़की, दोनों पसन्द करते हैं। लड़का बिना विवाह के ही लडकी के कपाल में सिन्दुर देता है या तो बिना सिन्दुर दिये ही अपने घर लेता है और अपना पत्नी बनाता हैं। घर वाले पसन्द नहीं करते हैं। फिर भी बाद में दोनों को कांच–कुंवार विवाह के जैसे ही कर देते हैं।

उपर्युक्त विवाह होने के बावजूद और भी कई तरह के विवाह हमारे उराँव समाज में देखने के लिए मिलता है। जैसे– भगत विवाह, चुपकी विवाह, मधुवा विवाह आदि। भगत और चुपकी विवाह में विवाह कराने वाले कुछ ही लोग रहते हैं। मधुवा विवाह में अपने घर के लोग ही रहते हैं। जिसमें शादी कराने वाले के अलावे दो तीन पंच ही होते हैं। ये सब विवाह बहुत ही जल्दी करते हैं। चुपकी विवाह में अपने सुविधा अनुसार विवाह के कुछ दिन पहले करते हैं। इसके लिए लड़का को लड़की के यहाँ विवाह के लिए जाना होता है। अब उराँव (सरना) समाज में सरना विवाह का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। जिसमें विवाह का सारा नेग–दस्तुर आंगन में ही होता है। जिसे सभी लोग देखते हैं।

3.2.4.2.24.1 विवाह का समान

हल्दी जिसमें खेघना होना चाहिए। लड़की के तरफ तीन डाली, लडका के तरफ पांच। दुब/दुबला घांस, सुपाड़ी, पतरी तीन पत्ता का ये सब लड़की के तरफ तीन और लड़का के तरफ पाँच। अरवा चावल, किया सिन्दुर, डम्भेरा में सरसो तेल, तांबा पैसा सभी पत्तल में। इसके बाद जुवाइठ (पगसी), सिलोट, सबई घाँस, आदि।

ये सभी समान जमा हो जाने के बाद जब वे घर आते हैं तो उन्हें परिघाते हुए घर लाते हैं। वहीं दरवाजा नेग के लिए ढ़का जाता है। कुछ मुल्य देकर घुसते हैं। जब दोनों तरफ का समान जमा हो जाता है। तब विवाह के

लिए निकालते हैं। सिलोट के नीचे सबई घाँस और पकसी रखते है। इसके बाद विवाह करने वाले पूर्वज और भगवान से गोहराते हैं (देवराम भगत, जिंड़गा, 7 मई 2017) – ''हे दे धर्मे, आज फलना दिन में मईयां फलनी तिर्की और बबु फलना लकड़ा का जूड़ि–पांति कर रहे हैं। आज हरियर मड़वा में आपको यहाँ साखी मानकर बुला रहे हैं और चारों तरफ खड़ा हो जाईये। जिनगी के रास्ते में किसी प्रकार का दुःख तकलीप नहीं होने देना धर्मे, नया विवाह होने वालों के लिए आशिर्वाद देना, हे दे आज जाने–अनजाने आज इन्हें शक्ति और भक्ति देना, ये सब आपका ही जूड़ि मिलाया धर्मे, कभी सिकायत नहीं हुआ है धर्मे, यदि सिकायत होता है तो ये आपका ही सिकायत है। हे दे गंगा–जमुना, सिरासिता का पानी से आपको स्वागत कर रहे हैं धर्मे और इनको आशिर्वाद देना धर्मे।'' इसके बाद ही सिलोट को रखते हैं।

3.2.4.2.25 लड़का–लड़की का वर्तालाप

बाद में भी विवाह कराने वाले पंचों के सामने कहते हैं कि ''सुनो सकल पंच लोग और अयो–बबा, भाई–बहिन लोग। आप देख रहे थे कि ये हरियर मड़वा में, आज फलना गांव में विवाह का बहुत ही अच्छा समय हुआ है। यहाँ मईयां फलनी तिर्की और बबु फलना लकड़ा, ये भगवान को गोहरा रहे थे, साथ में धर्मे को बुलाये, चाला आयो को बुलाये और अपने–अपने पूर्वजों को बुलाकर :– ''हे धर्मे आइये हमारा विवाह देखने और हमें आशिर्वाद दीजिए। हमारा जीवन अच्छी तरह से गुजरे। और आपस में बात कर रहे थे कि माता–पिता और पंच लोग भले ही खांसी–बण्डा खा लिए हैं, परन्तु अभी भी हमारा कुछ नहीं बिगड़ा है (देवराम भगत, जिंड़िगा, 07 मई 2017) इसी समय लड़की प्रश्न करती है :–

लड़की –''नीन इसन एन्दरे गे बरचकय, नीन गा बच्चका टूड़का आलय तलदय, अन्नु हूँ बेगर एड़'अम एन्देर गे बरचका र'अदय?'' (तुम यहाँ किस लिए आये हो? तुम तो पढ़े–लिखे हो, फिर भी बिना बुलाये किस लिए आये हो?)

लड़का – ''ए–न आवंदा बोका मइलकन, मानिम बच्चका–टूड़का गा र'अदन, पहें बग्गे होंसियर हूँ मइलकन। पहें ए–न अखदन का एकसन दे कालर की बलिन ठोकठोका ब'अना मनी। ए–न हुकुम होच्चकन, निंग्गयो–निम्बर अरा एंग्गियो–एम्बर जुमरार तीखिल रंगचर। बालका ती और नेवता चिच्चर और बरा फलना उल्ला, साजन–भाजन ही संग्गे बरात बरा अरा निंग्हय ने–ग – चार ती एंग्दन ले हो'आ। तब ए–न बरचका र'अदन। महले मल बर'ओन पहें।'' (मैं उतना बुड़बक नहीं हूँ, सचमुच पढ़ा–लिखा तो हूँ, पर उतना होंसियार भी नहीं हूँ। परन्तु मैं जानता हूँ कि कहीं जाने पर दरवाजा ठकठकाना पड़ता हैं, मैं हुकुम लिया, आपके माता–पिता

और मेरे माता–पिता मिलकर हल्दी चावल रंगे और नेवता दिये कि आइये फलना दिन पूरे साज–श्रृंगार, गाजा–बाजा के साथ में बरात आईये। तभी मैं आया हूँ अन्यथा मैं नहीं आता।)

लड़की–''होले गा कोड़े र'ई, पहें ओन्टा शर्त और र'ई, मेनोय होले निंग्हय पद्दा काओन महले मल काओन'' (तब तो ठीक है, परन्तु एक शर्त है, मानोगे तब ही मैं आपका गांव जाउँगी।)

लडका – ''एन्दरा शर्त र'ई अन्ति?'' (क्या शर्त है ताब?)

लडकी –''भाई! ए–न इ– एड़पा नू एकासे कोर'आ–उरखा लइगकन, अन्नेम एंग्गा गे हुर्मी हक हक्खरना चाही, एन्देर गे का निंग्हय आलर बर'ओर, ममु–फुफु, ताला–कुंजीन लगा ब'ओय की चाईल कालोय होले आर गे लोटा अम्म चि'आ ओंग्गोन, न बीड़ी–तम्बकु, तेकल सिकाईत मनो का एका मधे ख़ईन ओन्दरस हो, नमन गा मेना मल मेना लगी? औंगे इबड़ा हक एंग्गा हक्खरना चाही।'' (भाई! मैं इस घर में जिस तरह से अन्दर–बाहर हो रही थी, उसी तरह वहाँ भी हक मिलना चाहिए। इसलिए कि आपका मेहमान लोग आयेंगे, मामा–मामी, फुफा–फुफु, ताला–कुंजी लगा कर कहीं चले जाओगे तो उनके लिए लोटा–पानी देने नहीं सकूँगी, और न बीड़ी तम्बाकु, इसके बाद सिकाईत करेगें कि कैसी बहु को लाये कि हमें पूछ भी नहीं रही है। इस लिए ये सब अधिकार मिलना चाहिए।)

लड़का – ''एंग्हय एड़पा मल चलर'आ लगी अरा धर्मे एंग्हय कपड़े नू निंग्हय दिम नामे टूड़का रहचस अरा धर्मे एका उल्ला जनम–करम चिच्चस औलम करम–किसमईत हूँ टूड़ियस। औंगे नेखय गने जुड़ी जुमा ब'अना र'ई आर गने दिम जूड़ि मनो। औंगे ए–न निंग्गन हो'आ लगदन।'' (मेरा घर नहीं चल रहा है और धर्मे मेरे कपाल में तुम्हारा ही नाम लिखा है और धर्मे जिस दिन जनम–करम दिया उसी दिन करम–किसमईत भी लिखा। इसी लिए जिसके साथ मिलाना है, उन्हीं से विवाह होगा।)

लड़की – ''तो और ओन्टा कोंहा शर्त र'ई, इदिन गच्छर'ओय होले काओन।'' (तो और एक बड़ा शर्त है, इसे स्वीकर करोगे तो जाउँगी।)

लड़का – ''तो एन्दरा र'ई?'' (तो क्या है?)

लड़की – ''नीन गा कूल की खतरी परदेश चाईल कालोय, बच्छर, ओन्द बच्छर बर'आ मल बर'ओय, एन्ने गा मल मनो का नीन एंग्गन मोधरोय कालोय, इन्नेला गा एंग्हय ती हूँ बग्गे सुन्दराही पेल्लर एत्थेरनर, मना ओंग्गी बिगड़रोय गा मल कालोय? मने नन्ना तरा नजइर गा मल चाइल काव?'' (तुम तो पेट के खातिर परदेश चले जाओगे, साल, एक साल नहीं आओगे, ऐसे तो नहीं होगा कि मुझे भूल जाओगे, आज–कल मेरे से भी अधिक सुन्दर लड़की लोग दिखती है, हो सकता है बिगड़ जाओगे तो नहीं? मने कहीं दूसरे तरफ तो नजर नहीं चला जायेगा?)

लड़का – ''आवंदा होंसियार गा मलिकन और न आवंदा बोका हूँ मलिकन, एंग्गन अयो बबर जनम करम चिच्चर, इवंदा मानिम लूर चिच्चका र'अनर, ओन्टा मुक्का जिया गूटि लोला–चोन्हा, एं–ड़ मुक्का नतगा–नतगी मन्ना अरा मूंद मुक्का जिया हो'अना, औंगे निंग्हय ती दिम उल्ला कट्टना र'ई औंगे धर्मे नमन जुड़ि जुमाबाचा चिच्चा, अक्कु एन्ने नलख मल मनो।'' (उतना होसियार तो नहीं हूँ और न ही उतना बुड़बक हूँ, माता–पिता ने जनम–करम दिये तो इतना तो जरूर बुद्धि दिये हैं कि एक नारी प्राण प्यारी, दो नारी घींचा तानी और तीन नारी जानो मारी, इसी लिए अब तुम्ही से मेरा जीवन बीतेगा। इसी लिए भगवान ने हमें जूड़ि जुमाया है और अब ऐसे कार्य नहीं होगा।)

लड़की – ''होले गा ए–न निंग्हय आली बन'आ के सपड़रका र'अदन।'' (तब मैं आपका होने के लिए तैयार हूँ।)

इसी लिए शुरू में लड़की दहिना तरफ बैठी थी और अब उठकर लडका दहिना तरफ बैठेगा। ऐसा अधिकतर आंगन में विवाह होता है तभी इस तरह का बात–चीत को विवाह कराने वाले बताते हैं। घर के अन्दर जिनका विवाह होता है या बाहर भी, ऐसा नहीं के बराबर कहने वाले मिलते हैं। इस लिए ऐसा नहीं है कि सबों का विवाह में ऐसा मिलेगा परन्तु कहते हैं कि दोनों बैठकर इसी तरह से सोचते हैं।

3.2.4.2.25 कांज–कुंवार उरारना

देवराम भगत (जिंड़गा, 07 माई 2017) के अनुसार इस तरह का होने के बाद दोनों को उसी चटाई में बैठाकर ही कांच–कुंवार उतारते हैं। इसके लिए किया सिन्दुर के आलावे एक छोटा पुड़िया में सिन्दुर रहता है, उससे पहले सिन्दुर टीका दिलवाते हैं। पहले लडकी तीन बार देती है। इसके बाद लड़का लड़की को पांच बार। इसे भी पंचों को नहीं दिखाते हैं। सिर्फ विवाह कराने वाला ही देखता है। इसके लिए चारों ओर से कपड़ा से छेका किया जाता है।

3.2.4.2.26 पट्टा में विवाह

इसके पहले पत्तल में रखे हल्दी, कसैली, पैसा आदि को चुमा कर लोटा में डालते है। इसके बाद ही लड़की को उसके भाई या उसके जीजाजी वैग्रह सिलोट में चढ़ाते हैं। फिर लड़का को भी उसी तरह से दोनों कोरा कर सिलोट में चढ़ाते है। उसी समय लड़का लड़की के पैर के चीनी उंगली को रगड़ते हैं। ये दोनों का एक होना को बताया गया है (पी.लकड़ा.कु.क.प.78)। लड़के का ऐसा करना लड़की का अपना पत्नी बनाने का एक चिन्हा है। और लड़की भी अपने ऐंड़ी को रगड़ने देते है। सबसे पहले लड़का, दाहिने हाँथ की मीनी उंगली से लड़के को पांच बार देती है। परन्तु लड़की सिन्दुर लगाने नहीं देती है जिसे दड़ियाना

भी कहते हैं।[16]

तब उसके लिए कुछ मूल्य दिया जाता है। इसके बाद सिन्दुर देने देती है। इसके बाद लड़की भी वही उंगली से लड़का को तीन बार देता है। इसके बाद माता पिता ही, लोटा में पानी और आम डाली से विवाह के तुरन्त बाद तीन चक्कर पानी छिड़कते हैं। बचा हुआ पानी को एक तो पैर में या सिर में डालते हैं परन्तु अब अधिकतर पैर में ही डाला जाता है। इसके बाद दोनों को बारी–बारी से लड़का को लड़का तरफ वाले और लड़की को लड़की तरफ वाले उतारते हैं। सिन्दुर देते समय जो विवाह नहीं किये हैं उन्हीं नहीं देखने दिया जाता है। कहते हैं कि इनका एक प्रकार से नया जन्म होता है। जैसे जिस समय माता अपने बच्चे को नया जन्म देती है, धरती में पाँव देती है, जिस समय भगवान बनाया, उस समय हमें कोई नहीं देखा, सिर्फ माता–पिता ही देखते हैं। वो अपने कोंख कोरा से छुपा कर रखती है। उसी तरह सिन्दुर देना भी महत्वपूर्ण होता है। हमारा जिस समय जन्म होता है उस समय बिना कपड़ा और बिना सोना चाँदी के आते हैं। तो विवाह के समय भी एक नया जन्म ही हो रहा है, जब हमारी मृत्यु हो जाती है तब भी हम बिना कपड़ा के ही चले जाते है। उसके लिए कफन आता है वह भी सिर्फ गिनती होता है, पहनते नहीं हैं। इसलिए नहीं देखने देते हैं। (गोहरा उराँव, नवेम्बर 20, 2014 के अनुसार) विवाह के बाद जितने भी नेग का समान पटटा में चढ़ाये थे उसे मिलाते हैं। सभी समान मिल गया तो सही है अन्यथा कुछ गड़बड़ होने की संभवना रहती है। यदि नहीं मिला तो तुरन्त कहीं दिखाने के लिए जाते है। कैसे हमारा ऐसा हो गया? तब भगत ग्रह काट देता है।

कृष्णा उराँव के अनुसार (अटरिया, जुलाई 22, 2017) ''जुवाईठ का अर्थ, जिस तरह दोनों बैल को नारते हैं अर्थात उन्हें चलने के लिए सीखाते हैं। उसी प्रकार उनको भी जीवन जीने की कला सीखाया जाता है। सिलोट लोरहा में विवाह कराने का अर्थ कि वह कभी भी नहीं टूटता है। उसी तरह उनका जीवन साथी कभी न छूटे और बड़े ही प्रेम से जीवन यापन करें, उसका प्रतीक है। वहीं गोहरा उराँव के अनुसार जुवाईठ लड़के का काम का प्रतीक है, वहीं सिलोट और लोरहा, लड़की के लिए घर चलाने का प्रतीक के रूप में रखा जाता है।

3.2.4.2.27 भगवान का खाता–बही में नाम लिखना

विवाह के बाद पंच लोग भगवान के खाता–बही में दोनों नव–विवाहित का नाम लिखते हैं। इस संबंध में शरण उराँव (अक्टूबर,18,2020) बताते हैं कि

---

[16] विवाह में जितने भी नेग के समय पैसा लेते हैं। उस मांगने की क्रिया को ही दड़ियाना कहा जाता है। दड़ियाना में अपने अनुसार कुछ भी मांग सकते हैं। जैसे एक सौ रूपया, 500 रू0 आदि। परन्तु दोनों तरफ से मोल भाव कर, जिसमें बात टिकता है, वह पैसा देना पड़ता है। परन्तु सिन्दुर देने के समय लड़की जो बोलती है, उस समय मोलभाव नहीं करते हैं और दे देते हैं। वैसा देखा जाय तो अधिकतर कम ही मूल्य लिया जाता है।

''हे दे नीचे पंच, ऊपर परमेश्वर को साखी रखकर आज खिजुर का चटाई में बैठकर, दो लोगों का जीवन जुड़ि का अटूट प्रेम का रिस्ता को रखे हैं और जोड़ रहे हैं। यह रिस्ता काल–काल युग–युग, युग उलटे–युग पलटे कभी नहीं छूटेगा। और छुटेगा उस दिन जिस दिन लड़का–लड़का का सिंग निकलेगा, चट्टान में दूब घांस उगेगा, पानी में पत्थर उपल जायेगा और गोंयठा डूब जायेगा, उसी दिन यह रिस्ता टूटेगा। अन्त में कहते हैं कि लोहा का जोड़ना टूटेगा तो टूटेगा परन्तु मुंह का जोड़ना कभी नहीं छूटता है।''

इसके लिए दो व्यक्ति (दोनों तरफ से) पढ़ते हैं और दोनों तरफ सखुवा पत्ता में तेल–सिन्दुर लेकर, इसे मिलाते हैं और बांस का चरी से धरती में तीन बार टीका करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे पास कोर्ट–कचहरी नहीं है कि किसी कागज में लिखा–पढ़ी करें। यहाँ पर सभी पंच ही कोर्ट–कचहरी है। यदि किसी प्रकार का दोनों में कुछ होता है तो ये पंच ही फैसला करेगें। इसी लिए इस धरती को ही बही–खाता समझ कर तीन चारी से, तीन बार टीका लगाते हैं अर्थात भगवान के बही खाता में लिख रहे हैं। इसी लिए किसी प्रकार का विवाह का कागज, उराँव समाज में नहीं बनता है।

3.2.4.2.28 कस्सा हड़िया/ए–रा सिन्दरी/तेल–सिन्दुर

कस्सा हड़िया या एड़ा सिन्दरी के समय विवाह होने वाले वर–वधु को मानी पिटरी[17] में बैठाते हैं। यहीं पर वर–वधु एक दूसरे को सिन्दुर लगाते हैं। परन्तु ए–रा सिन्दुर का अर्थ जेठ सास को सिन्दुर दिलवाना होता है। क्योंकि विवाह के बाद उस दिन उनकी जेठ सास उसे छू सकती है, बाद में नहीं। पंचो को सिर्फ तेल और सिन्दुर लड़का और लड़की दोनों तरफ से दिया जाता है। जिसमें शुरूआत लड़की तरफ से की जाती है। वहीं दोनों तरफ से दो–दो हड़िया लगाया जाता है। एक गंठिया अड़ी (सिकरिया घड़ा) होता है और दूसरा कूलो अड़ी (साधारण घड़ा) घड़ा।[18] जिसमें सिन्दुर टिका तीन जगह नीचे से ऊपर की ओर चढ़ाते हुए देते हैं और इसे अपने–अपने तरफ का हड़िया को बनाते है। जब हड़िया बन जाता है, तब दोनों ओर से पुर्वज को तपावन दिया जाता है, दोनों तरफ से हड़िया को दोना में पकड़कर पूर्व की ओर मुँह करके पुर्वजों को पहले की तरह ही गोहराते हैं। गाहराना थोड़ बहुत इधर–उधर हो सकता है। इस लिए सभी नेग–दस्तुर के समय गोहराना को नहीं लिख रहा हूँ।

---

[17] यह नदी में पाया जाने वाला एक प्रकार का घाँस है, जिसे ढुड़ही कहते है। जो अधिकतर नदी या दलदल वाले स्थानों में पाया जाता है। उसी से चाटाई बनायी जाती है। जिसमें नई दुल्हन और दुल्हा को बैठाकर विवाह किया जाता है, उसी को मानी पिटरी कहते हैं।

[18] गोहरा उराँव के अनुसार गंठिया अड़ि अर्थात जिसे सादरी में सिकरिया भी कहते हैं। जिसमें कुम्हार लोग ही बनाते समय घड़ा में तीन चक्कर सिकड़ी जैसा बनाते हैं। जिसे की कुड़ुख़ भाषा में ''गंठिया अड़ि'' कहते हैं। इस तरह का घड़ा विवाह के समय मड़वा गाड़ना, नेग बरी बनाना, चुमावन, कंड़सा, ए–रा सिन्दरी और विवाह के पश्चात घर को पवित्र करने आदि के समय प्रयोग किया जाता है। जो फुटा हुआ नहीं होना चाहिए। बाकी समय किसी तरह का घड़ा दे सकते हैं।

तपावन देने के बाद वर–वधु सबों को प्रणाम करते हुए चले जाते हैं। प्रणाम करवाने का कारण, उनका शर्म भाग जाय और देखा भी गया है कि प्रणाम करने के बाद शर्म भाग जाता है।

परन्तु देवराम भगत और मधुरी मिंज (जिड़ंगा, फरवरी 22, 2015) के अनुसार कस्सा हड़िया में लड़की का फूल देखा जाता है। इनका परिवार कैसे होगा। यदि हड़िया का मुखा से पानी बाहर निकलता है तो उसका फूल अच्छा है, परिवार वाले अच्छे से रहेगें। इसी समय पंच लोग गीत गाते हैं। जन्म देने समय कितना सुन्दर से उनका जनम करम किये। बहुत ही सुन्दर ढंग से उनकी देखभाल की, उनका पालन–पोषन भी खुदी–चुनी जोगाड़ कर की। आर्थात माता पिता आपने बच्चो को बड़े ही प्यार–दुलार से लालन–पालन करती है। बच्चों के जीवन में किसी प्रकार का कमी होने नहीं देती है। उसके लिए माता–पिता दिन–रात मेहनत करते हैं। ये सोचकर कि मेरे बच्चे आने वाले दिन सुख पूर्वक जीवन जीये।

97 (ना)	नयो मोरा जनमाले रे	माँ मेरी जन्म दी
	धरती तरे जनमाले	धरती में जन्म दी
	पिरोती तरे नयो जनमाले	
	पोसले नयो पोसले नयो	पाली माँ पाली माँ
	खुदी मा चुनी मा पोसले,	खुदी चुनी से पाली
	माड़े भाते मा पोसले ।।	माड़ भात से पाली

वहीं सभा सिन्दरी के समय गाये जाने वाले गीत, अधिकतर अपने जीवन के विभिन्न अवसरों पर गाये जाते रहे हैं (Ray.O.R&C.159)।

98	ख़ई ओन्दरका कन्नन	दुल्हन लाया तीर
	हो'आ भईया सेन्दरा टोंका।।	ले जाओ भाई शिकार टांड़
	चितर मांकन लव'आ गे	चितकबरा हिरण को मारने
	हो'आ भइया सेन्दरा टोंका।।	ले जाओ भाई शिकार टांड़

इस गीत के माध्यम से बताया गया है कि यह तीर विदाई के समय लड़की को उसके माता–पिता द्वारा दिया जाता है। जो बहुत ही शुभ सगुन माना जाता है। उराँव समाज में फागुन पूजा में नये दामाद को सुसराल जाना होता है। उस दिन दामाद को सेन्दरा खेलने जंगल ले जाते हैं। इस लिए एक दिन पहले दामाद को सुसराल बुला लेते हैं। और उन्हें भी सेन्दरा खेलने के लिए ले जाते हैं। इसी लिए उस तीर को लाने के लिए कहा गया है, ताकि हम शिकार

खेलने जायेगें तो सगुन अच्छा रहे और खाली हाथ न लौटे।

3.2.4.2.29 ढेला पूजा

ढेला पूजा में दोनों (लड़का और लड़की) ओर से भण्डा (छोटा घड़ा) होता है और एक पंच के लिए भी। प्रत्येक घड़ा में एक–एक संड़सी चुका होता है। साथ में दोनों पक्षो के पास बैराखी (झण्डा) होता है। उसे लेकर वे पूजा स्थान जाते हैं, जहाँ उनके पुर्वज पूजा करते आ रहे हैं। वहाँ पर तीन–तीन ढेला तीन पत्तों में रखते हैं। इसके बाद दोनों पक्षों की ओर से कैसे आये उनके साथ पुर्वजों का नाम लेकर तपान दिया जाता है और पूर्वजों एवं भगवान से उन दोनों के सुन्दर जीवन की मंगल कामना की जाती है। बाद में पंच के नाम से भी उसी विधान से पूजा करते हैं। हड़िया को प्रसाद के रूप में सबों को देते हैं। इसके बाद सभी नाचते–गाते लौटते हैं। ढेला पूजा के समय पानी को तीन बार किन्दारने का अर्थ हुआ कि अब हम उन्हें एक साथ मिला रहे हैं। अब वे दोनों एक हो गये हैं। इसमें लडका–लड़की वाले अपने–अपने तरफ से दोनों को बांधते हैं और पंच सबों को मिला कर बांधते हैं।

3.2.4.2.30 धुकना हड़िया

विवाह के क्रम में ही कई तरह का हंसी मजाक भी होता है। गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली) के अनुसार ढेला पूजा होने के बाद समधी लोगों को बुलाकर कडिरका (दतवन) देते हैं। उस समय भी हड़िया देते हैं। उसे ''कडिरका बोड़'ए (दतवन हड़िया)'' कहते हैं। उसी के कुछ अन्तराल बाद ''समधी बोड़'ए'' और ''बयनाली बोड़'ए'' देते हैं। जिसे कोई भी लोग पी सकते हैं सिर्फ नाम उनका होता है। वैसा कुछ नेग जोग भी नहीं होता है।

इसके बाद धुकना हड़िया लगाते हैं। इसमें में भी लड़के हंसी मजाक करने के लिए घड़ा वैग्यरह में या तो अन्य किसी तरह से, किसी पात्र में आग लगाते हैं, उसमें मिर्चा वैग्यरह डाल कर उसके धुवां को लोगों की ओर फूंकते हैं। जिससे लोग छींकना प्रारम्भ कर देते हैं और इसी क्रम वे हड़िया की मांग करते हैं। हड़िया देने के बाद वे उसे बाहर फेंक देते हैं। इसके बाद उसमें पानी डालकर शुरू हड़िया को धर्मे के नाम पर चुवाते हैं। फिर सभी मिलकर पीते हैं।

3.2.4.2.31 दुल्हा और दुल्हन को खाना देना

नेग बरी को ही सब्जी बनाकर नई दुल्हन और नया दुल्हा को दिया जाता है। जो इनके लिए खास रूप में बनाया जाता है। उसी समय खाना खाने के पहले लड़का, अपनी सास से दड़ियाता है। इसमें छोटा–मोटा कुछ समान या खाने पीने की चीज या आशिर्वाद स्वारूप कुछ मांग करते हैं। कहीं–कहीं तो देखा गया है कि लड़का कुछ भी मांग नहीं करता है और चुपचाप भोजन कर

लेता हैं।[19]

जब लड़की को लड़का के यहाँ लेकर आते हैं तब यहाँ भी यही नेग दस्तुर करते हैं। नेग बरी को छत से उतार कर बरी को ही सब्जी बनाते हैं और नया दुल्हा और नई दुल्हन को देते हैं। परन्तु लड़का के यहाँ लड़की कुछ भी मांग नहीं करती है और चुपचाप भोजन कर लेती है।

3.2.4.2.32 बाईह जोड़ना

जब शादी का बात पक्का हो जाता है, उसी समय से दोनों तरफ आना–जाना लगा रहता है। उस दिन से शादी का महौल कुछ और ही हो जाता है। जब भी कु नेग–दस्तुर होता है, जिसके यहाँ जाते हैं, वे पश्चिम की ओर पूर्व मुंह करके और मेहमान वाले पूर्व की ओर, पश्चिम मुंह करके बैठते हैं। इसी लिए एक गीत भी है।

99 (ना) काने से आवे सोरो रे समधी।	किधर से आये हमारा समधी
काने से आवे भईया मोरा।।	किधर से आये भाई मेरा
पुरूबे से आवे सोरो रे समधी।	पूर्व से आये हमारा समधी
पश्चिमे से आवे भईया मोरा।।	पश्चिम से आये भाई मेरा

वहीं भीखु तिर्की (उ.स.ध.सं.87) का कहना है कि लड़का पक्ष वाले चटाई में पूरब की ओर करके बैठते हैं और लड़की पक्ष वाले पश्चिम की ओर मुँह करके। क्योंकि राँची के आस–पास में लड़के की प्रधानता मानते हैं।

गोहरा उराँव (नवेम्बर 6, 2014) के अनुसार दोनों दोना में हड़िया को कैसे आए गये, पुरखे, धर्मे एवं जिस गोत्र से समधी जोड़ते हैं, उसका नाम लेकर गोहराते हैं और हड़िया को तपान देते हैं। इसके बाद तेल एक दूसरे के उपर लगाते हैं और बड़े प्यार से गले मिलते हैं। इस तरह का मेहमान लड़की के यहाँ भी की जाती है। इस नेग में दोनों तरफ से (लड़का और लड़की) कांसा कटोरी में सरसो तेल, उसमें सवा रूपया, साथ ही दुबा घाँस होता है। दोनों तरफ से पटिया (चटाई) में पंच बैठते हैं। यहाँ पर भी मजाक करने वाले बहुत ही मजाक करते हैं। जैसे –

---

[19] दड़ियाना का मतलब अपनी सास से कुछ मांगना होता है। इसके लिए लड़का भोजन नहीं करता है, जब तक वो जो मांग कर रहा है वह पूरा न हो जाय। दड़ियाना को हम दहेज मांग कर रहे हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि उराँव आदिवासी समाज में दहेज का प्रचलन नहीं है और आज भी नहीं लिया जाता है। चुमावन के समय लोगों ने जो चुमावन के साथ दिये हैं, उसी में से लड़की के घर वाले प्यार से जो देते हैं, उसी को सिर्फ लिया जाता है। अलग से और मांग नहीं की जाती है। इसमें भी लड़की के माता–पिता एवं लड़की पर निर्भर करता है कि वो सभी समान को अपने सुसराल लाये या नहीं।

लड़की की ओर से –''नीन एन्देर बेद्दा बरचका र'अदय? (आप किस लिए आये हो?)

लडका के ओर से – ''ए–न ओन्टा चौंरी भौंरी बछिया इरिकन दरा बरचका र'अदन।'' (मैं एक चौंरी भौंरी बछिया देखकर आया हूँ)

लड़की – एका मधे र'ई? (किस तरह का है?)

लडका – आद पण्डरू अरा एकदम छमकल र'ई।(वह सफेद और बिलकुल छमकल है।)

लडकी – मला नीन ठक'आ लगदय? (नहीं आप ठग रहे हैं?)

लड़का – मला मानिम बरचकी र'ई अरा ई एड़पा नूम कोरचकी र'ई। (नहीं सचमुच में आयी है और इसी घर में घुसी है।)

लड़की – कोर'आ गा कोरचकी र'ई पहें आद ख़ेस्सन मोक्की र'ई दरा पोसका र'अदम अदि गहि हरजाना हूँ भरना मनो, होले अम्बोम। (घुसने को तो घुसा है परन्तु वह धान को खायी है और उसे पाल–पोसकर बड़ा किये हैं, उसका दण्ड भी भरना पड़ेगा, तभी छोड़ेंगे।)

लड़का – ''होले एवन्दा लग्गो?'' (तब कितना लगेगा?)

इस प्रकार दोनों तरफ से बात को मिलकर करी–फटी करने के पश्चात पहले के अनुसार सवा पांच रूपया देते हैं। इसके बाद पंच के सामने ही पहले लड़की तरफ से भी कहते हैं –''हे दे इन्ना फलना गोतर गे इन्ना तंगआ चौरी भौरी बछियन सवा पांच रूपया नू हारचकन।''(हे दे आज फलना गोत्र के लिए अपना चौंरी–भौंरी बछिया को सवा पांच रूपया में हार गया।)[20] इसी तरह लड़का के तरफ से भीः–''हे दे इन्ना फलनस ही बछियन सवा पांच रूपया नू खिन्दकन।''(हे दे आज फलना गा बछिया को सवा पांच रूपया में खरीदा।) इसके बाद लड़का तरफ से लड़की पक्ष वाले को और लड़की वाले लड़का पक्ष वाले को गोहराते हैं। जैसे–''हे दे आज फलना गोत्र के साथ समधी जोड़ रहे हैं, इन्हें अच्छा से रखना'' इसके बाद दुब घाँस को एक दूसरे के कान में खोंसते हैं। फिर पहले की तरह गोहराकर हड़िया का तपान चुवाते हैं। फिर पहले लड़के के तरफ से बाद में लड़की के तरफ तेल मालिस करते हैं, इसके पश्चात आपस में गले मिलते हैं।

इसी प्रकार दोनों तरफ से बात–चीत होता हैं और कन्या मूल्य, जिसे ''डाली ढिबा'' भी कहा जाता है। पहले यह सवा पाँच रूपया था परन्तु आज इसका सीमा नहीं रहा। मूल्य चुकता हो जाने के बाद ''बरका सोपते'' हैं। इसमें

---

[20] आज सवा पांच रूपया का जमाना चला गया। पहले के विवाह में सवा पांच रूपया में ही विवाह का सारा नेग–दस्तुर हो जाता है। आज जमाना बदल गया है और पहले की तरह कोई वस्तु ससती नहीं रही। इस लिए समयानुसार परिवर्तन होता गया और सवा पांच रूपया के स्थान पर कहीं–कहीं विवाह में 2000/– से 5000/– तक रूपया में ले रहे हैं। इसे ही डली ढिबा कहते हैं।

दो बारका, एक मुटिया, मायसारी कपड़ा कपड़ा, एक साड़ी और एक सारा (साला) धोती होता है। परन्तु आधुनिकाता के जमाने में बरका, मयसारी का स्थान आज कम्बल ले लिया है। पर अपनी संस्कृति को बचाने के लिए मयसारी और बरका ही होना चाहिए। इस समय भी गीत गाये जाते हैं। जिसे पंचों द्वारा पहन कर नचवाया है। साथ में विवाह के समय जो जुवाइठ तथा सिलोट उसे भी नचवाते हैं।

कुछ कपड़ा देने का मतलब, जैसे सारा (साला) धोती, मैयसारी, बरका ये सब उसके आजी, नानी, सारा, जेठ सारा, ताची वयैरह को दिया जाता है। जो हम कैसे जाने या पहचाने। परन्तु मनेश्वर उराँव (आंरगी, जनवरी, 06, 2015) के अनुसार तीन, पांच, सात या नौ कपड़ा देने का मतलब कि तीनों संस्कार, पांच तत्व, सात दिन और नौ ग्रह को इंगित करता है। समधी जोड़ने के समय कई तरह के गीत गाये जाते हैं। कहा जाता है कि आज की तरह मोबाईल या टेलीफोन का युग नहीं था। लोग पत्र से ही अपना काम निकालते थे और सभी कोई सुन्दर बहु की ही तलास में रहते थे। इसी लिए लोग देखा हुआ लड़की को ही विवाह करना चाहते थे। ताकि आने वाले दिन में अच्छी तरह से जीवन यापन कर सके। इसी लिए कहा गया कि भाई का जोड़ी मिलाया हुआ कहाँ खोजेगें। नहीं मिलने पर पत्र लिखने को कहा गया है।

100 (ना)राइज राइज बुलालो गे नयो	देश देश घुमे माँ
नहीं मिले गे नयो	नहीं मिले माँ
भइयक जोरल कनियाँ	भाई का जोड़ा दुल्हन
चिटठी लिखु भइया रे	चिटठी लिखो भाई
पतर लिखु रे भइया रे	पत्र लिखो भाई
नहीं मिले गे नयो	नहीं मिले माँ
भइयक जोरल कनियाँ।।	भाई जोड़ा दुल्हन
चिटठी भेजू भइया रे	चिटठी भेजो भाई
पतर भेजू भइया रे	पत्र भेजो भाई
राँची लोहरदगा	राँची लोहरदगा
भइयक जोरल कनियाँ।।	भाई जोड़ा दुल्हन

इस नेग में चटाई को तीन बार उलट–पलट करने और उसके नीचे पैसे रखने का अर्थ कि उसमें किसी प्रकार का रोग पाप है तो वह हट जाय और उसे सही सलामत रखे और पैसा उसके आजी नानी बचपन से खेला कर बड़ा किये हैं, उन्हें सम्मान के लिए रखते हैं। इससे संबंधित कुछ गीत हैं :–

101	(ना) कुलहू काटू तेलनियाँ –2	कुल्हू काटो तेलवाली
	बहेरा गछा केरा	बहरा पेड़ का
	कुल्हू काटू तेलनियाँ	कुल्हू काटो तेलवाली
	तेला पेरू तेलनियाँ –2	तेल निकालो तेल वाली
	राय मला सेरेसो का	राई और सरसो का
	तेला पेरू तेलनियाँ –2	तेल निकालो तेलवाली
	पेरे दे हो तेलनियाँ –2	पेरने दो तेलवाली
	राय मला सेरेसो का	राई और सरसो का
	तेला पेरे तेलनियाँ –2	तेल पेरो तेलवाली
	तेला माखू तेलनियाँ	तेल लगाओ तेलवाली
	राय माला सेरसो का	राई और सरसो का
	तेला माखू तेलनियाँ –2	तेल लगाओ तेलवाली
102	जसपुरिया बेलस	जशपुर राजा
	पाही नना बरचस	मेहमान करने आया
	पाही नन्नुम बेंज्जर'आ लगदस।	मेहमान करते विवाह कर रहा है
	दस्से मन घी घोड़ो	दस मन का घोड़ा
	बीसो मन घी हथी	बीस मन का हाथी
	डहरे नू कुहूड़ चोदनूम बरचा,	रास्ता में धूल उठाते आया
	डहरे नू धूलि चोदनूम बरचा।।	रास्ता में धूल उठाते आया

उपर्युक्त गीत में तेल लगाने से संबंधित गाया गया है और बताया गया है कि पहले कुल्हू से तेल पेर कर निकालते थे और आज भी निकालते हैं। और बहरा पेड़ का कुल्हू अच्छा होता है। उसेमें सरसो बीज को पीस कर तेल निकालते हैं और उसी को अगुवा के हाँथ–पैर में लगाते हैं। साथ ही पहले जमाने में राजा–महाराजा की तरह हाँथी घोड़ा के साथ विवाह करने आते थे। और रास्ते में धूल उड़ते हुए आ रहे थे। इसी क्रम में राजा लोग कहीं देखते थे कि कहीं सुन्दर कन्या तो नहीं है, यदि उस तरह का दिखाई दिये तो राजा–महाराजा लोग उसे उठाकर ले जाते थे और विवाह कर लेते थे। इसी लिए कहा गया है कि विवाह करने आया और खुद विवाह कर रहा है।

3.2.4.2.33 कांड़सा नाच

कांड़सा नचाना सभी नेग दस्तुर के बाद होता है। महादेव उराँव (जन्ना, अप्रैल 18, 2016) कांड़सा नचवाना, हम जितने भी विवाह में हमारे पुर्वजों और

सगे संबंधियों को बुलाये थे उसे हंसी खुशी से विदा करने के लिए नचवाया जाता है। इसके बाद सभी खाना खाकर एवं चुमान देकर अपने–अपने घर चले जाते हैं। यह नचवाना लडका–लडकी दोनों तरफ होता है।

3.2.4.2.34 चुमावन बैठना

चुमावन लड़का–लड़की दोनों को बैठा कर, उन्हें परिछा जाता है। परिक्षने के समय पहले लड़की को वहाँ रखे थाली को तीन बार दहिना तरफ से घुमाते हैं। फिर हाँथ में चावल लेकर पैर, घुठना, कंधा और फिर सिर में लेकर चावल को छिटती है। यह प्रक्रिया लड़की को तीन एवं लड़का को पांच बार किया जाता है। इसके बाद उसके नाम से चुमावन स्वारूप कुछ पैसा या अपने श्रद्धा से कुछ समान देते है। सबसे पहले घर वाले देते है। उनके बाद ही पंचों द्वारा शुरू किया जाता है। चुमान में एक लिखा–पढ़ी करने वाला होता है। जो चुमावन गिराने वालों का नाम, पता और जो कुछ पैसा समान देते हैं, उसे लिखते हैं। एक व्यक्ति नगाड़ा बजाता है और कहता है कि ''बइरसो बइरसो, हे दे फलना उराँव, फलना गाँव, इतना रूपया और एक साड़ी भाई, केकरो साही, पाँच दोना हड़िया मिलना चाहिए। वहीं एक व्यक्ति हड़िया प्रसाद स्वरूप सबों को देता है। जिन्हें सब लेते हैं और जिनका पीना रहता है वे पीते हैं नहीं तो दूसरे को दे देते हैं। अन्त में बचे–खुचे आते रहते हैं या तो चुमावन उठने के पहल कहते हैं। बइरसो बइरसो चलो भाई पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, चइरो कोणा फलना कर घाटा लागल है, केकरो साही भाई।

यहां पर एक सिकिरया कूंड़ा में हड़िया लगाया जाता है। जिसमें बज्जा[21] को डालते हैं और पानी निकालकर परसाद के रूप में चुमावन देने वालों को एक–एक दोना देते जाते हैं। इसी से संबंधित यह गीत है। :–

103 (ना) खड़िया मुण्डा उराँव भइया	खड़िया मुण्डा भाई रे
तीनों भइया रे	तीनों भाई रे
तावा उपारे–2 मेरा जे गुंजारे	तावा ऊपर मेरा गूंजे
चका चकिया भौंरो जे गुजारे	चाक का चक्का मधु जैसे गूंजे
खड़िया मुण्डा उराँव भइया	खड़िया मुण्डा उराँव भाई
तीनों भइया रे	तीनों भाई रे

उन्हीं के अनुसार पहले जमाने में तावा में ही हड़िया उठाते थे। तावा

[21] कूंडा अर्थात बड़ा घड़ा को कहते हैं। जिसमें सिकड़ी जैसे बनाया हुआ रहता है। बज्जा, यह धान का सीधा वाला पुवाल होता है। जिसे शुरू मीसकर उटकते समय ही, जो सीधा रहता है, उसे रखते हैं। घड़ा में डालने के बाद, उसी के बीच से हड़िया को निकालते हैं। परन्तु आज बज्जा देखने के लिए ही नहीं मिलता है। उसी के स्थान पर अब प्लास्टी थैला ले लिया है।

के नीचे पानी रखते थे और उसी तावा में पानी मिलते थे। इसी लिए तावा ऊपर मेरा जे गुंजारे कहा गया है और हम तीन ही भाई, खड़िया मुण्डा और उराँव हैं, जिनके बीच विवाह करने बनता है।

यहाँ पर जितने भी चुमावन देने आते हैं उन्हें तेल और सिन्दुर दिया जाता है। जिनका विवाह हुआ है वे सिन्दुर लेते हैं और जिनका विवाह नहीं हुआ है, वे नहीं लेते हैं। इसे ही सभा सिन्दरी कहा जाता है। इसमें लड़का तरफ वाले चुमावन देने वालों को देते हैं।

104 (ना)	इतई बुड़ा गाँव में	इतना बड़ा गाँव में
	केउव नहीं सभा बइठे	कोई नहीं सभा बैठे
	केउव नहीं सभा बैठे हयरे ||	कोई नहीं सभा बैठे
	डमेरा का तेला	डमरा का तेल
	डमेरा मा रही गेला हैरे	डमरा में ही रह गया
	कीया का सिन्दुर	कीया का सिन्दुर
	कीया में रही गेला।।	कीया में रह गया

अन्त में चुमावन खत्म होने पर उसका हिसाब किताब करते हैं और उसका हिसाब पंचो को भी बताते हैं। और कहते हैं –''हे दे उपर धर्मे, नीचे पुरखा और बीच में पंच लोग। आज फलना का चुमावन बैठे थे। उसका हिसाब दे रहे हैं। इतना रूपया, इतना साड़ी ....। केकरो साही भाई।'' इसके बाद सूप में कुछ रूपया और अरवा चावल देते हैं। उसकी माँ सूप को पेछरते हुए अन्दर बाहर एक बार होती है और गीत गाती है –

105	पीटरिन अट्टोय,	चटाई बिछाओ गी
	बारेकन डबरोय गे अयो	बरका को ढकाओ गी माँ
	बुझुर नुझुर रे अयो चींखोय	सोच सोच कर माँ रोयीगी
	बुझुर नुझुर रे बबा चींखोय	सोच सोच कर बाबा रोयेगा
	डली ढिबन झोकोचकी,	डली पैसा ले ली
	मायसारी डबरकी गे अयो	मायसारी ढकायी माँ
	बुझुर नुझुर रे अयो चींखोय	सोच सोच कर माँ रोयीगी
	बुझुर नुझुर रे बबा चींखोय	सोच सोच कर बाबा रोयेगा

इस गीत में कहा गया है कि एक माता अपनी बेटी को बिदा कर रो रही है कि एक चटाई बिछा दी और एक बारका को ढपायी। डली ढिबा को भी ले ली और मायसारी भी ढकायी। इससे बेटी का बेच दी। ये सोचकर लडकी के

माता पिता रो रहे हैं। इसके बाद उसके माता को सभी चीज सौंप देते हैं। उसकी माँ उन लोगों को मुंसी का कार्य करने के बदले में एक हड़िया देती है,जिसे सभी मिलकर पीते हैं।

3.2.4.2.35 लड़की बिदाई

लड़की बिदाई के समय बारहो बिरही के अलावा हल्दी, कोइला ,अरवा चावल, चुल्हा मिटटी, तांबा पैसा रहता है। ये नहीं रहने पर कहीं–कहीं बालु से भी करते हैं। लड़की को बिदाई देते है तब भी गीत गाया जाता है। विदाई करने के लिए गाँव का सीमा पर लेते हैं। वहाँ पर भी धर्मेश, चाला अयो एवं पुर्वजों से दुआ मांगा जाता है। कि किसी तरह का कांटा–खूंटी नहीं गाड़ने देना और सभ समय बड़ पेड़ की तरह छाईन–छतर करना ..... गोहराते हैं। इस तरह तीन बार गोहराते है और चावल को चारों तरफ फेकते है। फिर उसी चावल को लड़की के आँचल के एक कोना में बांधने को देते है। ताकि किसी प्रकार का दोष न लगे। फिर लड़का या उनके पिता के कोरा में सौप कर वापस आते हैं। (बन्दी देवी और रूपनी देवी, चुगलू, जुलाई 22, 2017) उस समय का गीत–

106(ना)	जनमाले अयो मोरा	जन्म दी माँ मेरी
	जनमाले अयो	जन्म दी माँ
	धरती धईरे धाइर,	धरती पंक्ति पंक्ति
	पेरांती पईते पाईत जनामाले	पंक्ति पंक्ति जन्म दी
	पोसाले अयो मोरा	पाली माँ मेरी
	पो–सले अयो	पाली माँ
	खुदी चुनी माड़े भातेमा पोसले	खुदी चुनी माड़ भात में पाली
	बे–चले अयो मोरा बे–चले अयो	बेची माँ मेरी बेची माँ
	सालोर सुगा लेखे	सालोर तोता जैसे
	पहारे तरे नयो बे–चले।।–2	पहार तरे माँ बेची
107	एंग्हय र'अना गुटी अयो	मेरे रहते माँ
	तुसा डहरेन मला एरेकी।। –2	कुंआ रास्त नहीं देखी
	अक्कु गा अयो एंग्गन बीसोयो	अब तो माँ मुझे बेची
	अयो अडिन धर'ओय चींखोय।।–2	माँ घड़ा पकड़ेगी रोयीगी

बिदा करने के समय लडकी अपने माता–पिता को गीत के माध्यम से कहती है कि आप लोगों ने मेरा जनम–करम कर बहुत ही अच्छी तरह से मेरा लालन–पालन कर आज मुझे बहुत ही सुन्दर ढंग से गाजे–बाजे के साथ बिदा

कर रही है। परन्तु माँ जब मैं आपके घर में थी तो किसी प्रकार का काम करने नहीं दी और घर–द्वार को कितना सुन्दर रखती थी। परन्तु अब मुझे बेच दी, अब आप भात पकाने के समान को पकड़े गी और रोयी गी। घर को साफ करने के समय भी झाडु पकड़ेगी और रोयेगी, जब भी पानी लाने जायेगी उस समय भी घड़ा का मुखा को पकड़ कर रोयीगी। सुसराल पहुँचने पर नई दुल्हन का पैर धोते हैं।

3.2.4.2.36 पानी लाने जाना

सुसराल आने पर सुबह में दोनों, पानी लाने के लिए कुँआ जाते है। उस समय लड़का के लिए भार और लड़की के लिए घड़ा देते हैं। कुँआ में पहले सिन्दुर टिका देते हैं और अछत (अरवा चावल) देते हैं। सिन्दुर देने के समय लड़का गोहराता है कि ''हे दे इन्ना फलना गोतर ता आलिन अम्म ओन्दरा ओन्दरका र'अदन। इन्ना अख'आ–बल्ला इन्द्रीम मलदव मनो होले छेमा ननके। ईद बर'ओ होले एक'अम किसीम गहि दुक्खे तकलीप का ठे–स अम्बके लग्गा चि'आ गे।'' (हे दे आज फलना गोत्र का लडकी को पानी लाने लाया हूँ, जाने अनजाने किसी प्रकार का दुःख या ठेस पहुँगा तो छमा करना और आयेगी तो किसी प्रकार का दुःख तकलीप होने नहीं देना।) और अछर देते हैं तो चुँआ या कुँआ भी पहचान जाता है कि ये भी अब मेरे घर की हो गई। इसके बाद पानी ले कर आते है उस पानी को रखते है। परन्तु आज फैशन स्वरूप पानी लेकर आते समय उसका देवर लोग मार देते हैं या तो उसका भसुर पकड़कर लड़की के उपर ढाल देता है, जो कि गलत है। वह पानी पवित्र है जो नौ ग्रह को काटने का काम करता है। उस घड़ा के पानी को उनके भसुर लगने वाले ही उतारते हैं। क्योंकि वह विवाह के बाद अपनी भहो को छू नहीं सकता है।

3.2.4.2.37 स्नान करना

पानी लाने के बाद स्नान के लिए लड़का का बहन या तो उसके घर वाले ही ले जाते है। परन्तु लड़का चाहे तो अकेले भी ले सकता है। घर वाले जाने का मललब बताते हैं कि आज से तुम यहीं पर कपड़ा धोने के लिए आना अर्थात स्थान दिखाना है। नदी या तलाब पहुंचने पर पहले लड़का, लड़की का सिर धो देता है, इसके बाद लड़की, लड़का का धो देती है। स्नान करने के बाद वापस आते हैं।

3.2.4.2.38 भाख काटना

जब लड़का–लड़की नहाँ धोकर आते है। उसके बाद भाख काटा जाता है। भाख अपना अज्जो (नाना) काटता है क्योंकि अज्जो को धर्मेश के समान माना गया है या हंसनतुवा वाले। वह दोनों का संकट दूर करने के लिए भाख काटता है। इसमें गीत नहीं गाया जाता है। यह उराँव का बहुत ही पवित्र नेग

है। जिसे हर उराँव परिवार को करना चाहिए। साथ ही समय–समय पर तो होना ही चाहिए।

भाख काटने के लिए निम्नलिखित समान की आवश्यकता होती है। एक लोटा पानी जो सुबह में नया कन्या बर लाये थे। इसके आलावे देवचरण भगत (अद्दि धरम,3) एक सूप, सूया चिड़िया का अण्डा या नेर्र डिम्बो [22]कुछ अरवा चावल, तीन दोना, जिसमें एक में कोइला चूर्ण, एक में चुल्हा मिटटी, एक में पोतना मिटटी या रानू का चूर्ण, कीरो डण्डा[23] (दतवन), तपावन के लिए हड़िया, एक चाकू, गोबर। भाख काटने के स्थान को गोबर से लिपा जाता है। फिर आदिवासियों का पवित्र चिन्ह बनाया जाता है। धर्मेश का नाम लेकर डण्डा काटना प्रारम्भ करते हैं। इसमें भगवान का नाम लेकर उनके नई जीवन के लिए मंगल कामना के लिए गोहराते हैं। डण्डा काटने के बाद में शगुन देखा जाता है। इसके लिए भी सुबह का लाया हुआ पानी को ही थाली में डालते हैं और लकड़ी का तीनों टुकड़ा को गोहरा कर गिराते हैं। तीनों उलट गया तो सगुन अच्छा है, कहते हैं।

मनेश्वर उराँव (आंरगी, जनवरी 06, 2015) के अनुसार डण्डा काटने के बाद छोटा सा कुम्बा बनाकर खमी घांस को आग लगाया जाता है। उसी समय आम के पत्ता से पानी हाँथ में देते हैं और उसे मुँह में लेते है। उसी पानी से आग को बुझाना है। दोनों में से जो बुझायेगा, पुर्वजो का सोच है कि वही घर में किसी प्रकार का दिक्कत, परेशानी या लड़ाई झगड़ा को बुझायगा और वही घर का समस्या को हल करेगा।

3.2.4.2.39 ढेला पूजा

लड़का तरफ भी ढेला पुजा होता है। ढेला पूजा जैसे लड़की तरफ होता है वैसा ही होता है। ढेला पुजा के बाद ही भात पकाने के लिए दार गढ़हा कोड़ा जाता है। उसमें दो नया कटटु चढ़ाते हैं और सुबह का लाया पानी को ही अधन देने के लिए चढ़ाते हैं। उसमें नया वर–वधु को ही सबसे पहले चावल डालना है। दोनों के लिए नया सूप और दोनों में पांच–पांच पैला चावल को दोनों को एक ही साथ डालना है। इसमें जो पहले डाला वह बड़ा हुआ कहते हैं परन्तु यह फैशन स्वरूप ऐसा कहते हैं। परन्तु अन्दर की बात यह है कि यदि लडका का पांच पैला चावल यदि 20 लोगों के लिए होता है और यदि लडकी का 22 लोगों

---

[22] नेर्र डिम्बों एक फल होता है। इसका पौधा लतर वाला होता है तथा इसका फल अण्डा के आकार लगभग होता है। यह खेतो में अधिक पाया जाता है।

[23] कीरो कुडुख़ भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ ''भेलवा'' नामक वृक्षनुमा वनस्पति से है, जो प्रायः जंगलोंद्व झाड़ी–झुरमुटों में होता है। कीरो डण्डा इसी भेलवा वृक्ष की टहनी होती है। डण्डा से तात्पर्य है हिन्दी में छोटी टहनी। कहीं–कहीं भेलवा की टहनियों के साथ–साथ ''सलया'' बनैले वृक्ष की भी एक दो टहनियाँ गुच्छों में बांध कर बजारों में बिकती है। यह दोनों उराँव समुदाय के बीच आराध्य है। जिसका महत्व उराँव संस्कृति में धार्मिक के साथ ही औषधि के रूप में भी है। यह स्वयं एक जहरीली वनस्पति है। जिसके सम्पर्क मात्र से (कुछ लोग में) मनुष्य के शरीर में घाव तथा फोड़े हो जाते हैं।

के लिए तो इससे बरकत का पता चलता है। वहीं से लड़का या लड़की को घर का जिम्मा दिया जाता था, जिसका बरकत अधिक है।

गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, नवेम्बर 20, 2014) के अनुसार चावल डालने के समय यदि लड़का पहले डाल दिया और लड़की को सूप से मारता है तो हर समय, लड़का कोई गलत होने पर मार पीट करेगा। यदि लड़की पहले डालती है और मारती है तो वो भी हर गलती या छोटी–छोटी बात में मार–पीट करेगी और यदि दोनों में से ऐसा नहीं हुआ तो जीवन भर कभी मार पीट नहीं करेगें।

3.2.4.2.40 सरात जाना

सरात में लड़की को लाने जाते हैं उस समय भी रास्ते में गीत गाते–गाते जाते है। जो बारात आने पर गीत गाते हैं, वही गीत रहता है। पहले के जमाने में गाड़ी नहीं था इस लिए लोग पैदल ही आना जाना करते थे। रास्ते में गीत गाते हुए चलते थे। जिससे थकावट का पता ही नहीं चलता था।

3.2.4.2.41 सरात पहुँचने पर

सरात पहुँचने पर सभी सरातियों का पैर धोते हैं। पैर धोने के बारे में पहले ही बताया गया है।

108	उरखय उरखय दुलो	निकलो निकलो दुलो
	पहियर बरचर दुलो	मेहमान आये दुलो
	पहियर बरचर–2	मेहमान आये
	लोटा नू अम्ब ओन्दरय	लोटा में पानी लाओ
	ख़ेडा नुम नोड़य दुलो	पैर को धो दुलो
	खेड़ा नूम नोड़य –2	पैर को धो
.		
	खेड़ा नूम नोड़य दुलो	पैर को धो दुलो
	पीटीरी अट्टय दुलो	चटाई बिछाओ दुलो
	पीटरी अट्टय –2	चटाई बिछाओ दुलो
	पीटरी अट्टय दुलो	चटाई बिछाओ दुलो
	दुखा नूम मेनय दुलो	दुःख पुछो दुलो
	सुखा नूम मेनय –2	सुख को पुछो

जब सराती पैर–हाँथ धोकर बैठ जाते हैं तब उनसे गाँव वाले मिलने आते हैं अर्थात गोड़ लगने (प्रणाम) आते हैं। उस समय कुछ न कुछ नाटक की

तरह वेशभूषा पहन कर आते है। एक नाटक में जिस तरह के लोग बनते है, उसी तरह सजते संवरते भी हैं। जैसा कि कोई बन्दर बनता है तो कोई मछली मारने वाला। इसमें कई रूप में अपने आप को दिखाने का प्रयास करते हैं, जिसमें जीवन–यापन से संबंधित नाटक दिखाते हैं।

3.2.4.2.42 पान कसइली

पान कसइली बैठाने के समय नेग समान एक लोटा पानी, धूवन, अरवा चावल, खपरा में आग, कांसा थाली में अरवा चावल के साथ सुपाड़ी, गुड़ का मिला हुआ, चटाई और हड़िया। लड़का को घर वाले कोरा करके निकाले हैं। जहाँ बैठना है उसे पांच चक्कर लगाते है फिर लड़की तरफ वाले उसे लेते है और चटाई के ऊपर पत्तल में बैठाते है। उसे परिक्षने के लिए सबसे पहले घर वाले आते है। सबसे पहले आम डाली से पानी छिड़कते है, फिर अरवा चावल, तथा पान कसइली को लड़का को खिलाते हैं इसके बाद लड़का भी कुछ पान कसइली उन्हे देते हैं और वे सभी कुछ पैसा रख कर प्रणाम करके वापस आते हैं। इसी प्रकार सभी करते हैं। पान कसइली का मतलब का हम उन्हें परसाद के रूप में देते हैं। जो एक बर–वधु को देखने का भी माध्यम है।

उस समय भी चिढ़ाने के लिए या मजाक के तौर पर गीत गाया जाता है। इसमें लड़का को गीत के माध्यम से देखने में खराब बताने का प्रयास करते हैं और वहीं लड़की को सुन्दर बताने का। जैसा कि लडका सुनने में बहुत ही सुन्दर बताया गया है परन्तु सामने आकर देखने में कुछ और ही है। इसी तरह मेरी बहन सिम्बल के फूल जैसा बहुत ही सुन्दर है और आपका भाई गुलाईची पेड़ की तरह टेड़हो–मेंड़हो है। कुछ गीत इस प्रकार के हैं। :–

109 (ना) गाँवे घाटे बताएना	गाँव घाट बताते हैं
चुवा घाटे बताएना	चुंवा घाट बताते हैं
गाँवे घरे रे दादा अम्ब बान्धल	गाँव घर दादा अम्ब बांधा
चम्ब बान्धल तम्ब बान्धल कनिया रे	चाम बांधा तम्ब बांधा दुल्हन
110 (ना) काना में सुनालो	कान में सुना
सुन्दर बन्दर दमेदा	सुन्दर सा दमाद
आय के मोय देखालो	पहुँच के देखा
रोच रोचो दमेदा	रोच रोचो दमेदा
111 (ना) हमारो बहिन थरिया में खाएला	हमारा बहन थाली में खाती है
छक छकाएला।।–2	छक छकाती है

	तोहारो भाईया ढकना में खएला	तुम्हारा भाई ढकना में खाता है
	ढक ढकाएला।।–2	ढक ढकाता है
112 (ना)	हमारो बहिन सिमबाली फूल	हमारा बहन सिम्बल फूल
	लेखा सलय सलय।।–2	जैसा सलय सलय
	तोहारो भइया गुलाईची गाँछ	तुम्हारा भाई गुलाईची पेड़
	लेखा हंकाड़ हिंकोड़ ।। –2	जैसा हंकड़ हिंकोड़
113	कोमड़खो मन्न नू	कोयनार पेड़ में
	ने डण्डी पाड़ी –2	कौन गीत गाती
	एत्तय कोय फलनी	उतरो फलनी
	फलना मेना मेना केवा लगदस	फलना सुनकर गाली दे रहा है
114 (ना)	मड़वा खुटा में	मड़वा खुंटा में
	चिडरा चिड़ बिड़एला–2	गिलहारी चिढ़ चिढ़ता
	फलनी के छुई देले	फलनी को छूने पर
	फलना चिड़ बिड़ाएला।।–2	फलना चिढ चिढ़ाता है
115 (ना)	काने से आवे	किधर से आये
	डेना बंधल कौवा वा'–2	पंख बांधा कौवा
	फलना कर मोछ दाढ़ी	फलना का मोछ दाढ़ी
	''लिये लेलयं कौवा वा''।।–2	ले लिया कौवा
116 (ना)	काँदले रे फलनी काँदले रे	रोयी रे फलनी रोयी रे
	काँसी का माला लगिन काँदले	काँसी का माला के लिए रोयी
	मांइग देबे रे फलना गांइथ देबे रे	मांग देना फलना गांथ देना रे
	काँसी कर माला गाइथ देबे रे।।–2	काँसी का माला गांथ देना
117	नीन फलना एन्देर नलख नन्दय रे	तुम फलना क्या काम करते हो
	किय्या खुड़ी अड्डो बोंग्गी	नीचे टोली बैल भागता
	मइय्या खुड़ी पेल्लो बोंग्गी	ऊपर टोली लड़की भागती
	नीन फलना एन्देर नन्दय रे।।	तुम फलना क्या करते हो

3.2.4.2.43 नेवथरिया बिदा

सरातियों को बिदाई करने के सभी नेवथरिया के लिए भोज दिया जाता है। जिसे ही ''नेवथरिया बिदाई'' कहते हैं। जिसमें शादी के आलावा, उस मौसम

में गाये जाने वाले गीतों को मांदर, नगाड़ा के साथ बड़े ही उमंग से नाचते गाते हैं और खाना–पीना कर शाम तक बिदा हो जाते हैं। जिसमें कई प्रकार के गीत होते है। नेवथरिया बिदाई के दिन दमाद ससुराल में ही रहता है। उसे बीच–बीच में पंचों को प्रणाम करते रहना होता है।

118 (ना)	आसारे का महीना में	आषाड़ का महीना में
	बेंगा छुआ कान्दे।	मेंठक बच्चा रोये
	भवजी कहे मोरे छउआ कान्दे ।।	भाभी बोले मेरा बच्चा रोये
	ना लागे तोर छवआ,	नहीं है तेरा बच्चा
	ना लगे मोर रे ।	नहीं है मेरा बच्चा
	आसार का बेंगा छवआ कान्दे।।	आषाड़ का मेंढ़क बच्चा रोये
119	इदना ता पुना पेल्लो ।	इस साल का नयी लड़की
	कन्दा दारदार बोंग्गा लगी।।	कांदा दार दार भाग रही है
	कला तो भइया धरआ की ओन्दरा।	जाओ तो भाई पकड़कर लाओ
	चि'ओर होले पाहि ननोत।।	देगें तो मेहमान करेगें
120	इदना ता पुना पेल्लो ।	इस साल का नयी लड़की
	कोरोन्जो जब्बा गे केरा।।	करंज झाड़ने गई
	जब्बो जब्बो मला जब्बो।	झाड़ेगी झाड़ेगी नहीं झाड़ेगी
	डंगन धर'ओ इज्जकी र'ओ।।	डांग पकड़कर खड़ी रहेगी

3.2.4.2.44 लेगा–लाना

विवाह खत्म होने के बाद तीन बार नई कन्या और वर को पहुँचाना और लाना होता है। जैसे की पहले लड़की तरफ वाले पहँचा दिये तो बाद में लड़का तरफ वाले भी उन्हें पहुँचा देगें। विवाह के बाद लड़का को सुसराल जाने पर, सुसराल घर के सभी कमरों में घुंसना होता हैं और उस घर से जो कुछ भी अन्न है, थोड़ा सा निकाल लेता है, नहीं तो घर वाले प्रेम से देते हैं। उसी तरह से लड़की को भी विवाह के बाद लौटने पर अपने नईहर में भी सभी कमरे में प्रवेश करना होता है। यदि वह नहीं प्रवेश की तो बाद में किसी भी दिन जिस कमरे में प्रवेश नहीं की है, उसमें प्रवेश करने नहीं देगें। इसके बाद आस–पास के घरों में जाकर उसी तरह करती है और सभी घरों से कुछ न कुछ अन्न या उनके के लिए जो प्रेम से मिले उन्हें दे कर ही बिदा करते हैं।

3.2.4.2.45 भसुर एवं जेठ सास मनवाना

अन्य समाज की तरह उराँव समाज में भी भसुर एवं जेठ सास मनवाने की परम्परा है। जिसे उराँव में ''भसुर एवं जेठ साईस'' कहते हैं। ये रस्म होने के बाद उनसे स्पर्श करना या उनके किसी चीज को प्रयोग करना वर्जीत रहता है। यदि किसी करण से स्पर्श हो जाता है तो उसे पुनः उधार किया जाता है और दण्ड स्वारूप दोनों ओर से कुछ न कुछ लिया जाता है। भसुर एवं जेठ सास मनवाने की प्रक्रिया एक ही है। इसके लिए कहीं–कहीं हड़िया के स्थान पर दूध का प्रयोग करते हैं। सबसे पहले जिनसे भसुर मनवा रहे हैं, उनका पैर धोना होता है। उस पानी को छत में फेकते हैं। फिर आंचल में झोकते हैं। इसके पश्चात हड़िया या दूध से पैर धोते हैं और उसे पीते हैं। यही नेग दोनों तरफ से करते हैं।

3.2.4.2.46 बहुरता

बहुरता विवाह खत्म होने के बाद दोनों तरफ बुलाया जाता है। जिसे झगड़ा मिटाना भी कहते हैं। कहा जाता है कि शादी–व्याह में जाने अनजाने कुछ भी गलती–सलती हो जाता है तो उसे ही छमा मांगने के लिए बुलाया जाता है। इसमें गांव के कुछ लोग मेहमान जाते हैं और खा पीकर शाम तक वापस चले जाते हैं।

3.2.4.2.47 वर्जनाएँ

विवाह एक पवित्र बंधन है। जिसे हर कोई खुशी पूर्वक अपना जीवन बिताना चाहता है। अपने जीवन में किसी प्रकार का दुःख न हो और हमारा घर खुशियों से भर जाए। परन्तु हमारे जीवन में कुछ वर्जनाएं हैं जिसे पालन करने से सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। श्रीमती गोहरा उराँव के अनुसार (नवेम्बर 20, 2014) सबसे पहले लड़की देखने गये हैं तो किसी भी हाल में दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके नहीं बैठना और न ही भोजन करना चाहिए है। इसके अलावे खट्टा चीज और मांस भी नहीं खाना चाहिए। ऐसा होने पर विवाह के बाद सुखी पूर्वक नही रहते हैं और कभी बात भी नहीं बनता है। इसके अलावे रास्ते में लडकी देखने या लड़का देखते जा रहे हैं उस समय भी शगुन अपशगुन देखते जाते हैं। जो भी एक सुखी जीवन देखने का तरीका है।

इसके बाद एक गोत्र में विवाह होना है। एक गोत्र में विवाह होना ही नहीं चाहिए। परन्तु प्यार–मुहाब्बत करने वाले लड़का–लड़की को तो समझाना ही बेकार है। कुछ बोल देने पर तो मरने की धमकी देने लगते हैं। करे भी तो क्या करें? वैसे यदि हो गये तो मजबूरन गोत्र को छोटा बड़ा करके विवाह करते हैं परन्तु ऐसा करना ही नहीं चाहिए। यदि मेरा लकड़ा गोत्र है। यदि छोटा बड़ा करके किसी तरह विवाह कर देते है। यदि छोटा–बड़ा करते हैं तो उसका पूंछ या पैर को पकड़गें। परन्तु गोत्र अर्थात जानवर तो एक ही है न। इसे एक उदाहरण

से स्पष्ट समझ सकते हैं। जैसे कि बिजली का करेन्ट को ले। यदि बल्ब जलाना है तो उसके लिए गरम और ठण्डा दोनों की आवश्यकता होती है। यदि सिर्फ गरम को ही जोड़ दे तो बल्ब नहीं जलता है। उसी तरह ही हमारा गोत्र व्यवस्था है। इसके अलावे उनका वंश नहीं बढ़ता है। उनके बच्चे हर दृष्टि से कमजोर होते है। हर कोई अपना गोत्र को बढ़ाना चाहता है। एक ही गोत्र में विवाह करने पर गोत्र का भी लोप होता है।

तालिका 12 विश्वनाथ भगत के अनुसार वर्जनाएँ (स.क.48:2007)।

1. विवाह अगहन, माध, फागुन, बैसाख और आसाढ़ महीना में चढ़ती चांद में होता है। आसाढ़ महीना में रथ के बाद शादी नहीं होता है।
2. विवाह बढ़ती चांद में प्रथम, तृतीय, पंचमी, सप्तमी, नवमी, ग्यारहवीं, तेरहवीं और पुनिया के दिन होता है।
3. जोड़ा शादी नहीं होता है।
4. एक वर्ष में एक घर में दो शादी नहीं होती है।
5. दूसरे जाति के लड़की से शादी नहीं होती है।
6. लड़का–लड़की जन्म दिन शादी नहीं होती है।
7. बड़ा लड़का और बड़ी लड़की में शादी नहीं होती है।
8. छोटा–छोटा में भी शादी नहीं करते हैं।
9. एक ही गोत्र में भी शादी नहीं करते हैं।
10. यदि लड़का का नामकरण नहीं हुआ है तो शादी के पहले लड़का का पहले नामकरण होता है।

इसी प्रकार से कुछ वर्जनाएं जलेश्वर उराँव (लोहरदगा, जनवरी,10,2015) ने कुछ कारण बताये हैं। उराँव जाति में आसार–सावन माह में लड़की यदि नईहर (मायके) गई है तो वह मयके में ही रहती थी। और यदि ससुराल में है तो ससुराल में ही रहती है। क्योंकि आसार महीना का पानी बालक होता है, साथ ही किटाणु फैलने का डर अधिक रहता है। धरती कमजोर होती है, उस समय शरीर भी कमजोर हो जाता है। कुछ भी खाने पर जल्दी पचता नहीं है। इस लिए लटर–पटर खाने से बूढ़े बचने के लिए कहते थे। आषाढ़ आने के बाद ही जैसा–तैसा खाना प्रारंभ करते थे। क्योंकि उस समय तक पानी पोठ (तंदरूस्त) हो जाता है। उस समय तक में पाचन शक्ति भी बढ़ जाता है। रोग–प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ने लगता है। उस समय तक में बड़ा धान तो नहीं परन्तु छोटा धान पक जाता था। इसीलिए उसे पूर्वजों ने प्रसुति काल भी कहा है। इस लिए लोग कहीं मेहमान आना–जाना नहीं करते थे। इसके बाद ही करम शुरू होता है और सभी प्रकार के चीजों को खाना प्रारम्भ करते हैं।

3.2.4.2.48 अचरेल

उराँव आदिवासी समाज में बीच बीच में रंग–रितआ का नेग दस्तुर पाया जाता है। परन्तु आधुनिकता के चकाचौन्द में कुछ नेग दस्तुर पीछे छूटते चला जा रहा है। गाँव के परब त्योहार से लेकर अन्य किसी प्रकार का नेग–दस्तुर भी कम होते देखा जा सकता है। उराँव समाज में नेग–दस्तुर के कारण ही समाज में उठना बैठना और जीवन को आगे बढ़ाने का प्रेरणा मिलता है। इसके लिए उराँव लोगों का नियम कानून एक पंक्ति से बनाया गया है। इसी कारण से समाज में पहनाई खेत, भूंईहरी खेत दिया गया है। इस जमीन को कोई लूट नहीं सकता और न ही बेचा जा सकता है।

गाँव में पहान, पुजार महतो मालिक होते हैं। इनको साधारण से साधारण लोगों के यहाँ भी जाना पड़ता है। जैसे छठी संस्कार, विवाह संस्कार, गमी संस्कार आदि समय पहान का जरूरत होता है। समय–समय पर खेतों में कटनी मिसनी के समय भी भाख काटने के लिए बुलाया जाता है। इसी तरह से घर–द्वार को पवित्र करने और पवित्र रहने के लिए भगवान को गोहराने के लिए भी पहान की आवश्यकता होता है। इसी तरह से नेग–दस्तुर में भगवान को गोहराना को ही ''अचरेल'' के नाम से जानते हैं। अचरेल को ''नईहरी भूत'' के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि यह अपने खूँट के विवाहित लड़कियों को ही पकड़ता है। जब किसी परिवार में लड़की का विवाह होता है और विवाह के बाद सुसराल चली जाती है। परन्तु कभी–कभी लड़की की विदाई के बाद भी अपने मायके की देवी देवता, खूँट, पूर्वजों की आत्मा या गाँव के विविध देव–भूत आदि लड़की को पीछा करते सुसराल पहुँच जाते हैं। गाँव के देवी देवता या पूर्वजों की आत्मा एक साथ नहीं रह सकते हैं। दोनों गाँव के पूर्वजों की आत्मा एक दूसरे के विरोधी होते हैं। इसी कारण विवाह के बाद लड़की को किसी न किसी प्रकार की बिमारी हो जाती है। प्रसव कार्य में बाधा होती है या प्रसव के बाद बच्चे मर जाते हैं। बच्चे बार–बार रोगग्रस्त हो जाते हैं। इन दुषप्रभावों से बचने के लिए मायके में ही पूजा पाठ कर देवी देवताओं या आत्माओं को शान्त करने के लिए ''अचरेल'' संस्कार आयोजन किया जाता है। नईहर घर में आत्माओं, खूँट या देवी–देवताओं के शांत होने से विवाहित लड़की अपने सुसराल में अमन चैन से रह पाती है (भगत, छो.उ.री.354)।

उराँव लोग अपने भगवान को सभी स्थानों में, घर में हैं या कहीं अन्य स्थानों पर या तो नया स्थान ले रहे हैं, वहाँ पर भी भगवान को गोहराया जाता हैं। अचरेल का नेग भी एक खूँटी बीत जाने के बाद करते हैं। इस नेग में एक साथ बैठकर विचार करते हैं कि हमारा एक खूँटी बीत गया, इसी लिए अचरेल का नेग दस्तुर करना अति आवश्यक है। विचार कर एक दिन निश्चित करते हैं। इस समय घर के सभी लोगों को घर बुलाया जाता है, चाहे उनका विवाह की क्यों न हुआ हो। जिस लड़की का विवाह हो गया है, उन्हें निमांत्रण देकर बुलाया

जाता है और सभी विवाह का समान लेकर नईहर आते हैं। विवाह किये लड़की को एक दो दिन पहले ही नईहर भेज देते हैं और बाकी घर वाले उसी दिन विवाह का समान के साथ आते हैं। सभी एक साथ मिल कर नेग दस्तुर करना प्रारम्भ करते हैं।

सबसे बड़े रिस्ते वालों को दहिना तरफ और उसके आदमी को बांया तरफ। इसी तरह उससे छोटे भाईयों को पंक्ति–पंक्ति, सखुआ पत्तल में बैठाते हैं। जिनका पति नहीं हैं, उनके स्थान में ढेला, उनके प्रतीक के रूप में रखते हैं। शादी नहीं हुए हैं उनके लिए भी उसी तरह ढेला को रखा जाता है। क्योंकि इस तरह का नेग दस्तुर करने में बहुत दिन लगता है। इसके बाद उनके हाँथ में अरवा चावल और फूल देते हैं और सामने में ढेला और गोबर रखा हुआ रहता है। उसी में ढेला को धर्मे महायदेव और गोबर को पारवती के रूप में मानते हैं। पहान के कहे अनुसार ''मथाईन'' बनाया स्थान में अरवा चावल और फूल को रखते हैं। जिस तरह पहान भगवान को गोहराता है उसी तरह से सभी उसी को दोहराते हैं। कुछ लोग तो ऐसा नेग दस्तुर करने को देखा ही नहीं होगा। सभी नेग दस्तुर हो जाने के बाद जिस तरह से लड़की को बिदा करते हैं, उसी तरह से बिदा करना होता है। अचरेल नेग में शादी का सभी समान लगता है। जैसे नया साड़ी, तेल, हल्दी, सिन्दुर, दुबला घाँस, कसैली, तम्बा पैसा, पानी, कांसा लोटा, आम डाली, पट्टा, लूड़ही, पगसी, बांस डाली, मनी पिटरी (चटाई) ढोड़ही, मड़वा में कनियारी, जरजट्टा, महुवा डाली आदि। इसके लिए एक गीत भी है।–

121	कीन्दा ठुकडू जुड़ीन भले जुमा बाचकय। पद्दा गहि नामे जुड़ी भले जुमा बाचकय।।	खिजुर ढुठू प्रेमी भले जुमाया गाँव का नाम प्रेमी भले जुमाया

उराँव लोगों का विश्वास है कि भगवान हम सभी को जब तक जीवन है, तब तक अच्छी तरह से रखता है, किसी प्रकार का रोग, गलत सोच, हिंसगा–पटांगा हमारे मन में आने नहीं देना। सभी लोगों को आगे बढ़ने के लिए ज्ञान देना, काम करने के लिए सवंग देना, काम कर हम अपने बाल बच्चों को पालने–पोसने के लिए सवंग देना। हमलोग कहीं भी जायें, सभी जगह सुखी मिले, हम सभी जगह आपका गुनगान करेगें। भगवान के नाम से अपने पूर्वजों को भोग देते हैं और गाँव के लोगों को भी एक दिन खिलाते हैं। इससे जाना जाता है कि उराँव लोग भगवान से डरते हैं और समय–समय पर उन्हें याद करते हैं। सभी नेग दस्तुर हो जाने के बाद हल्दी काटी जाती हैं। (छो.उ.री.रि. पृ0सं0 357) विवाहित लड़की और उसके भाई विपरीत दिशा में (उत्तर–दक्षिण दिशा) हल्दी काटते हैं। हल्दी काटने के समय प्रश्न किया जाता है कि तुम किसकी हल्दी काट रही हो। तो वो अपने भाई का कहती है। लड़की सदा के

लिए अपने भाई से अलग हो रही है अर्थात एक दूसरे से बिदा लेना। इसी बीच भगवान परिवार के खूँट देवता, पूर्वजों के आत्माओं एवं देवी देवताओं से आग्रह किया जाता है कि आज से हम हल्दी काट रहे हैं। इसलिए इसके साथ हम लोगों का संबंध टूट रहा है। मेरी बहन या दीदी को परेशान मत करना।

उराँव लोग जहाँ रहते हैं या जहाँ घर बनाये हैं, वहाँ किसी न किसी रूप में एक रिस्ता जैसा होते हैं। इसी लिए जब भी इस तरह का नेग दस्तुर होता है, गाँव वालों को नेवता देते हैं। अचरेल नेग–दस्तुर, अन्दाजी स्थान में नहीं करते हैं। अपने घर आंगन में ही करते हैं। सभी नेग–दस्तुर होने के बाद घर को सोहान करने के लिए जैसे–जैसे नेग होते जाता है, विवाह गीत गाते हैं। इस तरह का नेग दस्तुर अब छूटते जा रहा है। आज के समय में पढे लिखे लोग भी अचरेल नेग–दस्तुर को भूलते जा रहे हैं। अभी तो सुबह–शाम पीने–खाने के लिए दौड़ धूप करने से फुरसत नहीं है। कुछ गाँव में बूढ़े बुजुर्ग बचे हैं, उनसे किसी भी नेग दस्तुर को पूछने के लिए जाना पड़ता है। अब ऐसा लगता है कि आने वाले कुछ दिनों में रोग खेदने जैसा छोड़ते जा रहे हैं, ऐसा जान पड़ता है। इस लिए अभी के नवजवान को सभी नेग दस्तुर करने में अपना सहयोग होना चाहिए। ताकि हमारा सारा रीति रिवाज बरकरार रहे।

3.2.4.3 मृत्यु संस्कार

नियमानुसार इस धरती में जो जन्म लिये हैं उन्हें एक ना एक दिन मरना ही है। यह शरीर मिटटी की बनी है और मरने के बाद मिटटी में ही मिल जाती है। मृत्यु संस्कार, संस्कारों में बहुत ही अहम स्थान रखता है। जब तक उनका अन्तिम संस्कार नहीं किया जाता तब तक मृत आत्मा को स्थान नहीं मिलता हैं। उसके लिए कुछ नेग–दस्तुर किये जाते हैं। परन्तु किन्हीं की मृत्यु हो जाती है, तब उनके कर्मो को याद कर, उसी को राग में गीत भी गाते है। परन्तु मृत्यु के समय का गीत का राग अन्य मौसम के गीतों से भिन्न होता है। आवाज रोने के जैसा सुनाई देता है। किसी का गाते हुए गीत को सुन कर यह स्पष्ट जान पड़ता है कि हो सकता है किसी के घर में कोई अनहोनी हुआ है।

122	इन्ना फलना ओन्द टीपा	आज फलना एक बून्द
	अम्म गे टूवर नंज्जकय	पानी के लिए अकेले किया
	एन्दरा गुनहा नंज्जका	क्या गलती किया
	रहचकन फलना	था फलना
	ओन्द दना मण्डी गे	एक दाना भोजन के लिए
	टूवर नंज्जकय	अकेले किया

यह गीत अकाल मृत्यु के समय का है। इस गीत में कहा गया है कि मैं क्या गलती की जो कि एक टीपा पानी और एक दाना भोजन के लिए तुम्हें तड़पना हो रहा है।

उराँव समाज में देखा गया है कि जब किसी का मृत्यु हो जाती है तो उसके शव को गाजे–बाजे के साथ शमशान घाट लिया जाता है। दस दिन के बाद मृत्यु संस्कार होता हैं, जिसे ''गमी'' कहते हैं। सभी नेग–दस्तुर खत्म हो जाने के बाद, सभी मिल–जुल कर नाचते गाते हैं। इसमें यह नहीं होता है कि मृत्यु संस्कार के लिए कोई अलग से गीत हो। जिस मौसम में यह संस्कार किया जाता है उसी मौसम के राग में गीत गाते हैं और यह बड़े ही उत्साह के साथ नाच गान करते है। हम गमी नेग–दस्तुर कर अपने आप को बड़ा ही गर्व अनुभव करते हैं। परन्तु यह सोचने का प्रयास नहीं किया है कि गमी नेग दस्तुर में लगने वाले समान हम किस लिए देते हैं और उसका क्या महत्व हैं। आज हम भूलते जा रहे हैं। जिसे बहुत ही कम लोगों ने जानने का प्रयास किया है परन्तु पुस्तक के रूप में देने का प्रयास नहीं किया है।

श्री तेजपाल उराँव (तेजपाल उराँव, पुगु बड़का टोली, जून 27, 2014) के अनुसार किसी के घर में मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के पहले शव के आत्मा को, अपने रिस्तेदार या पति–पत्नी में जिनका पहले स्वर्गवास हुआ है, लेने चले आते

है। घर वाले अपने अड़ोस–पड़ोस को खबर करते हैं। वहीं पर एक कटोरी में सादा पानी, एक में दूध और यदि हड़िया हो तो हड़िया रखा जाता है। जो उन्हें देखने के आते हैं, शव के लिए आम पत्ता का बना दोना से तीनों को बारी–बारी से देते हैं। इसके बाद घर वाले शव के नाम पर कुछ धान निकालते है। बाहर से जो भी आते हैं, वे भी अपने साथ कुछ न कुछ ले कर आते है, जिसे ''बीजिरको'' कहा जाता है।

उराँव़ समाज में जिनका अकाल मृत्यु हुआ है, उसे जलाया जाता है। अन्यथा अधिकतर को दफना ही दिया जाता है। इसके लिए कुछ लोगों को गडढ़ा खोदने के लिए भेजते हैं। इधर कुछ लोग सरह बनाने में लग जाते हैं। पहले सरह को बांधने के लिए पुवाल जिसे ''बज्जा'' कहा जाता है, से बनाते थे परन्तु अब सबई का रस्सी खरीद कर सरह को बांधते हैं।

3.2.4.3.1 गमी करने का औचित्य

हमारे तीनों संस्कार में मृत्यु संस्कार भी जुड़ा हुआ है। जन्म के बाद हमारा तीन संस्कार में पहला जन्म संस्कार, दूसरा विवाह संस्कार और तीसरा मृत्यु संस्कार है। इस संस्कार में हमारे शरीर का बना पांच तत्व ''वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी और आकाश'' से मिल जाता है। जब इस शरीर से प्राण निकल जाता है तब शरीर का नाश होता है। गमी करने का मुख्य रूप से देखा जाय तो आत्मा को शान्ति प्रदान करना है। महादेव उराँव (जन्ना, जनवरी, 09, 2015) अनुसार मृत आत्मा को पुर्वजों के साथ मिलाने का एक नियम है। जब तक उनका गमी नहीं किया गया है अर्थात कुटुम को नहीं खिलाते हैं तब तक उसका आत्मा पवित्र नहीं होता है और जहाँ–तहाँ भटकते रहता है। आत्मा की शान्ति के लिए कुण्डी में पुर्वजों से मिलाना भी बहुत जरूरी है। जनश्रुति के आधार पर हमारे समाज में भारी पांव, दुर्घटना या अन्य किसी प्रकार से मरे व्यक्ति को गमी संस्कार नहीं करते थे, जिससे उनका आत्मा भटकता रहता है और किसी को भी पकड़ता है, जिसे ही हम ''मउवा'' या ''चुरिल'' पकड़ा, कहते हैं और ओझा भगत के पास जाते हैं। भगत के ओझा–मती करने पर वह छोड़ देता है। कहने का तात्पर्य कि हम उसके नाम से खाने–पीने के लिए कुछ नहीं देते हैं, जिससे वह खाने–पीने के लिए भटकता रहता है। भगत लोग उन्हे खाने–पीने के लिए देते हैं तो मृत आत्मा उसे छोड़ देती है। यही कारण है कि हम भूत लगाया कहते हैं जिससे डाइन–बिसाही का अंधविश्वास बढ़ रहा है।

मनेश्वर उराँव के अनुसार भगवान का दस कर्म हैं, यदि दस कर्म पूरा नहीं हुआ है तो हमारा संस्कार भी दस दिन में नहीं होता है। हमारे समाज में पंचो को पंच परमेश्वर माना गया है। पंच ही निर्णय लेते हैं कि गमी किस दिन होगा। यदि हमारा दस काम नहीं पूरा हुआ है तो लाख चाहने पर भी पंचो द्वारा दस से कम दिनों में ही हो जाता है। मान लिया गांव में कोई पर्व है और दो दिन पहले मृत्यु हो जाती है तो पंचो द्वारा उसे रोक्का अर्थात उसी दिन गमी

करने का दिशा निर्देश दिया जाता है और उन्हीं के अनुसार गमी का नेग–दस्तुर होता है।

3.2.4.3.2 खाना पकाना

गाँव के कुछ महिलाएँ भात पकाती है। गमी में सभी नेग समान वही रहेगा परन्तु उनको करने का क्रिया या देना या चुमाना सभी लड़की में तीन और पुरूष में पांच बार होता है। जैसे भात पकाने में चावल को पांच बार चूम करके डालते हैं और दाल को भी। इसी प्रकार भात खिलाने के समय भी पुरूष में पांच और महिला में तीन बार खिलाते हैं। चुमाने का अर्थ कि कहीं जहर तो नही दे रहे हैं, उसे लगने से पहले मुझे ही लगे, ऐसा लोग सोचते हैं। उनके लिए खिचड़ी भात बनाया जाता है। उसी में से मरे हुए शव और पंचों के लिए निकाल कर रखते हैं। साथ ही एक बौगी में कुछ धान और रूई पकड़ते है।

ये सभी तैयारी हो जाने पर शव को पहले नहलाया जाता है। इसके पश्चात तुलसी पत्ता, हल्दी, तांबा पैसा को पानी में मिला कर शव को स्नान कर सिन्दुर दिया जाता है। भीखु तिर्की (उ.स.ध.सं.143) ने लिखा है कि मर्द होने पर उनके ललाट और दोनों कनपट्टियों में सिन्दुर भरते हैं। यह विधि शादी–शुदा लोगों के साथ ही की जाती है। पत्नी के जीवित रहने पर पत्नी स्वयं बायें हाथ की आँगुली से टिका लगाती है। अगर औरत मर गई है और उनके पति जीवित हैं तो पति अपने दाहिने हाथों की आँगलियों से मांग में सिन्दुर भर देता है। फिर उसे सरह में रखते है। सरह बनाने का तात्पर्य कि सोने के लिए नया स्थान बनाया गया। सरह में सात या नौ बांस का खरपाटी देने का मतलब, नौ में नौ ग्रह और सात में सात दिनो को इंगित करता है। (महादेव उराँव, जन्ना, जनवरी, 09, 2015 के अनुसार) सरह में रखने के बाद पहले अपने घर वाले सरह को उठाते है और दरवाजा को औरत हो तो तीन और मर्द हो तो पांच बार लाथ लगवाने के बाद वहां से मसड़ा/शमशान की ओर प्रस्थान करते है। शव को जैसे ही निकालते हैं, रखे स्थान पर गोबर पानी छिड़क कर राख को छिट कर दरवाजा बाहर से बन्द कर सभी चले आते है। जब तक दफन क्रिया करके नहीं लौटे हैं तब तक किसी को दरवाजा नहीं खोलना है। श्रीमती गोहरा उराँव के अनुसार मृत आत्मा वहीं पर रहती है। अचानक घुसने पर अनहोनी होने की संभावना अधिक रहती है।

शव को लेने समय रास्ते में तीन या पांच बार रूई और धान गिराया जाता है। धान मोरा, धान की पोटली है। श्रीमती गोहरा उराँव के बताये अनुसार उसी धान और रूई को देखकर ही मृत आत्मा घर आते हैं और आते समय कहीं रास्ता न भटक जाय यह सोच कर धान और रूई दिया जाता है। परन्तु श्री मनेश्वर उराँव के अनुसार तीन मुट्ठी धान और रूई का मतलब तीनों संस्कार को बताया गया है। रूई का मतलब इसका समय हो गया, इस लिए इसका प्राण निकला। जैसा कि सिम्बल का कोंग्गा (फल) पूर्ण रूप से पकने के बाद ही

निकलता है। तीन बार रखते हैं तो तीन बार मिला कर नौ हो जाते हैं अर्थात वह नौ ग्रह को इंगित करता है। दफनाने के लिए गडढा खोदते समय उसका मिट्टी पश्चिम दिशा की ओर निकालते हैं। गडढा का आकार लगभग छः फीट लम्बा, ढाई फीट चौड़ा और चार फीट गडढा खोदते हैं। मसड़ा/शमशान पहुँचने पर शव वाले गड्ढा को पांच या तीन चक्कर लगाकर पश्चिम कि ओर दक्षिण दिशा में सिर करके मिट्टी के ऊपर रखा जाता है। हमारे कुडुख़ समाज में शव के सिर दक्षिण दिशा में होता है। गर्भवती महिला, शव को ले जाने या मृतकों से जुड़े किसी कार्य में भाग नहीं ले सकती हैं (Ray.O.R&C.173)। विधवा महिला सभी नेग–दस्तुर कर सकती है।

3.2.4.3.3 दक्षिण दिशा में सिर रखना

दक्षिण दिशा में सिर करने का जलेश्वर उराँव (लोहरदगा जनवरी 10, 2015) के अनुसार दो कारण बताये हैं। एक तो कि हमारे पुर्वज दक्षिण दिशा की ओर से आये, इसलिए उस दिशा में सिर नहीं करते हैं। परन्तु दूसरा कारण यह है कि पृथ्वी का गुरूत्वार्षण शक्ति दक्षिण में नहीं है और उत्तर में चुम्बकीय शक्ति है। हमारे पुर्वजो ने सोचा कि जिधर गुरूत्वार्षण शक्ति नहीं होता है उधर दिमाग का हरास नहीं होता है। अर्थात उनका सोच था कि मृत आत्मा सदा के लिए जा रहा है तो उनका जो कुछ होगा वह अच्छे के लिए होगा, बुरा के लिए नहीं। हमारे पूर्वज जानते थे कि यदि सोने के समय दक्षिण तरफ सिर किया जाय तो दिमाग तरो–ताजा नहीं रहता है। यदि मृत शरीर के सिर को दक्षिण दिशा में करें तो लोग उस दिशा में सिर नहीं करेंगे। पूरब या पश्चिम दिशा में करेंगे तो उनका दिमाग चंचल और तरो–ताजा रहेगा। साथ ही दक्षिण तरफ चुल्हा का मुंह रहने पर भी खाना में बराकत नहीं होता है।

वहीं वैजनाथ हांसदा के अनुसार संथालों का मानना है कि (दैनिक जागरण, पृ0 2, दिसम्बर 17,2014) जननी व जन्म भूमि की महिमा स्वर्ग से भी ऊंची है। इसे संथाल समुदाय से और कोई नहीं समझता। कहा गया है कि पता नहीं कब से इनके पूर्वज दक्षिण दिशा की ओर से आये थे। सो मरने के बाद जलाने व दफनाने, दोनों ही स्थिति में पैर दक्षिण दिशा में नहीं रखा जाता है। उनका मानना है कि संथाल समाज दक्षिण दिशा की ओर उत्तर की ओर आये हैं। इसका मतलब साफ है कि आदिवासी समाज का मूल स्थान दक्षिण की ओर है। इस लिहाज से उधर की जमीन पूजनीय है और दक्षिण दिशा में सिर रखने की परम्परा पूर्वजों के काल से चली आ रही है।

3.2.4.3.4 शव को खाना–पानी देना

शव को रखने के बाद जो–जो शव को भात, पानी नहीं दिये हैं, वे देते है तत्पश्चात कब्र गड्ढा को तीन या पांच महिलाएँ गोबर, हल्दी और पानी मिलाकर आम के पत्ता से पवित्र करते हैं, तत्पश्चात आम का लकड़ी का तीन

डाली काट कर डिसना अर्थात बिछावन बनाया जाता है, यह भी तीनों संस्कार को इंगित करता है। तभी शव को गड्ढ़ा में डालते है। सबसे पहले अपने घर वाले ही मिटटी डालते हैं। उसी में एक कांसी को शव के सिर तरफ रखते है और मिटटी जैसे–जैसे भरता जाता है, वैसे–वैसे ऊपर खींचते जाते हैं और थोड़ा–थोड़ा पानी भी देते हैं। श्रीमती राधिका उराँव (आंजन, मई 04 2015) के अनुसार –''यदि कांसी गड्ढ़ा में पूरा डूब गया तो कहा जाता है कि वह जब भी जन्म लेगा उसी घर में लेगा, यदि एक बिता बाहर निकला तो एक किलो मीटर के अन्दर ही अपने खानदान में जन्म होगा और एक हाँथ के जैसे निकला हुआ है तो लगभग 10 किलामीटर दूरी में किसी अपने मेहमान घर में जन्म लेगा। इसका दूसरा अर्थ यह है कि कांसी मृत शरीर के सांस लेने के लिए है। क्योंकि कांसी का जड़ जमीन के अन्दर जितना गहराई तक सांस ले सकता है, उतना अन्य पौधा नहीं लेता है। जब थोड़ा सा के लिए मिटटी नहीं भरा हुआ है उस समय उसके छाती सीधा में तेल चुवाया जाता है। तेल उनके पूरे जीवन भर के लिए प्राण है। जब मिटटी भर जाता है तब उसके सिर तरफ एक घड़ा में पानी, उसी में दतवन को डालते है। जब पूरा मिट्टी भर जाता है तो पहचान के लिए सिर तरफ एक पत्थर गाड कर रूई और धान रखते हैं। जिसे ''टुण्टा'' कहते हैं। जब किसी के शव वाला मिटटी गड्ढा को नहीं भरता है तो कहा जाता है कि इन्हें भगवान पहले ही अपने पास बुला लिए, वे और कुछ दिन रहते। तत्पश्चात पूरे पंचो को खाना, हड़िया, सभी मिलकर खाना, ये कह कर दिया जाता है।

जिसमें उनके साथ, पूर्व में दफनाये सबों का नाम लिया जाता है, इसके बाद सभी तलाब या नदी की ओर प्रस्थान करते हैं।

3.2.4.3.5 आम का ही डाली और पत्ता हर समय क्यों

मनेश्वर उराँव (आंरगी जनवरी, 06, 2015) सबसे पहले भगवान ने धरती आकाश को बनाया। उस समय पूरा धरती गर्म था। भगवान बरसात का पानी को धरती में लाने के लिए पाईन (नाली) बना रहा था। ताकि धरती ठण्डी हो जाय। उसी समय भगवान ने केकड़ा को गडढ़ा खोदने के लिए कहा परन्तु वह खुद जल गया और उसका मृत्यु हो गया। उसी का एक गीत भी है।

123	एका कों–ड़ा अयो बांध हे–चकी।	किस कोना माँ बांध बांधी
	एका कों–ड़ा अयो पाईन सोझाबाचकी।	किस कोना माँ नाली चलायी
	आकाशे अयो बांध हें–चकी।	आकाश में माँ बांध बांधी
	धरती नू अयो पाईन सोझाबाचकी।	धरती में माँ नाली चलायी

अर्थात भगवान वहाँ पइन चला रहा था, जहाँ धरती गर्म था। जब गर्म चीज में ठण्डा चीज दिया जाय तो भाफ निकलता है अर्थात वह गर्मी में ही पाईन चला रहा था। तो उन्होंने सोचा कि कहीं छाया हो लेते हैं और वह छाया होने के लिए गये। तब उन्हें बहुत ही आनन्द और सुकून महशूस हुआ। बाद में ऊपर देखा तो आम और उसका पत्ता दिखाई दिया। तो उन्होंने सोचा कि यह पेड़ शरीर को इतना आनन्द और सुकून देती है। मैं आज से हर संस्कार में इसे दूँगा और इसी का परिणाम है कि आज हम तीनों संस्कार में आम की डाली देते हैं। उस समय पेड़ में डाली और पत्ता केवल था, फूल और फल नहीं। इस लिए सिर्फ डाली और पत्ता दिया जाता है। इसी को आज दरजा भी मिला है।

वहीं डॉ0 नारायण भगत के अनुसार आम का डाली से मेहमानों का परिछना उराँव समाज में अति शोभनीय माना जाता है। हमें भगवान ने ही आम की डाली के बारे में परिछने के लिए बाताये हैं। उनका कहना है कि जिस समय बारहो भाई असुर और तेरह भाई लोधा को खसरा–खुसरू ने सबक सिखाने के समय जब उनका कुट्ठी (लोहा गलाने की भट्ठी) में लोहा नहीं गल रहा था तब वही खसरा–खुसरू को मति करने बुलाया गया, तो उन्होंने कहा कि आपका कुट्ठी आदमी खोज रहा है। इसमें कौन घुंसेगा? तो कोई राजी नहीं हुए तब उन्होंने कहा कि मेरा तो इस दुनियाँ में कोई नहीं है, सो मैं ही अन्दर घुंसता हूँ। जब मैं अन्दर जाऊँगा तो इसे कोयला से भरना और कुट्ठि को सात दिन और सात रात धुकना और सात दिन होने पर नया घड़ा में पानी लाना और आम की डाली से छिड़कना।

उनकी पत्नियों से वैसा ही किये। जब नया घड़ा में पानी लाकर आम की डाली से पानी को छिंटे तब खसरा–खुसरू सोना–चाँदी, हीरा–मोती से झबराया हुआ निकला। तो बारहो भाई असुर और तेरहो भाई लोधाओं को लोभी लगने लगा। तो उन्होंने कहा कि इतना सोना–चाँदी, हीरा–मोती कहाँ से पाये? तो उन्होंने बताया कि आपके कुट्ठी में तो बहुत अधिक सोना–चाँदी, हीरा–मोती है। मैं तो अकेले था, इसी लिए इतना ही लाने सका। आपलोग तो बहुत हैं, आपलोग जाईये गा तो धनी हो जाइयेगा। तब उनमें लालच समा गया। वे बोले हमें क्या करना होगा? तब खसरा–खुसरू ने कहा कि आपलोग तो सात भाई हैं, इसलिए कुट्ठि बड़ा बनाना होगा और वैसा ही करना होगा।

तब वे खुशी से बड़ा कुट्ठि बनाने लगे। बनकर तैयार हो गया तो उन्होंने उसे बुलवाया। तब उन्होंने कहा कि इसमें आपलोग सभी अन्दर जाइये और इसमें कोयला भरकर उपर से मिट्टी देकर बन्द कर दीजिए और कुट्ठि को सात दिन और रात धुकियेगा। सात दिन जब हो जायेगा तो काला घड़ा में पानी लाना और सिन्दवार का डाली से पानी छिड़कना। तो वे वैसा ही किये। तो देखे तो उनके पति जलकर राख हो चुके थे (Lakra,S.52.)। यहाँ पर खसरा–खुसरू भगवान का ही अवतार थे। जिन्हें आम की डाली से पानी छींटने पर वे सोना–चाँदी, हीरा–मोती से झबराकर निकले और वहीं सिन्दवार की डाली से

पानी छींटने पर मृत पाये गये। इसी लिए हर शुभ कार्य में उराँव जाति में आम की डाली का ही प्रयोग किया जाता है।

3.2.4.3.6 राख में चिन्ह देखना

महिलाएँ पहले नहा–धोकर घर आते हैं। दरवाजा खोल कर देखते है। राख में किसी जानवर का पंजा, चिन्ह है या नहीं। यदि राख में मुर्गी, सांप, बिल्ली या किन्ही के पैर का चिन्ह दिखे तो कहा जाता है इसे भूत खाया और धाग या कुछ भी नहीं रहे तो भगवान लिया (पी.लकड़ा,कु.क.प.,80)। परन्तु श्रीमती रावनी उराँव (आंजन, मई 04, 2015) के अनुसार ठीक इसके विपरीत है। ''यदि राख में किसी भी जानवर का या अन्य किसी भी चीज का चिन्ह दिखे तो समझा जाता है कि उनका अगला जन्म उसी जानवर के रूप में होगा। चींटी या इस तरह से छोटे कीड़े–मकोड़े का चिन्ह दिखाई नहीं देता है। इस लिए वह पता नहीं चलता है। आज रूढ़िवादी के कारण वैसा होने पर भूत खाया या डाईन लोगों का कारगुणी कहते हैं। वहीं दूसरी तरफ पुरूष लोग बाल मुड़ाते है, परन्तु घर वालों को तो मुड़ाना ही पड़ता है। मुड़ाने से पाप या छुतका को मिटा दिये। यह भी पहचान होता है कि घर में अनहोनी हुआ है। फिर वे स्नान ध्यान कर कपड़ा में पानी लेकर घर आते हैं और कपड़ा को निचोड़ कर शव रखे स्थान में देते हैं। ऐसा विश्वास है कि मृत आत्मा को जब तक स्थान नहीं दिये हैं तब तक वह घर आता है। मृत आत्मा कहीं से घुमते–फिरते, बरबण्डो की तरह भौंड़ाते या कहीं से भी थके मांदे आये तो उसका आत्मा आकर पानी पीयेगा और प्यास बुछायेगा और उन्हे किसी प्रकार का कष्ट न हो।

3.2.4.3.7 शव जलाना

चन्दन लकड़ी, धूप, खमी घांस, चुका ढक्कन सहित, सराह में चन्दन लकड़ी और धूप को डालते है। तत्पश्चात लाश को चढ़ाते हैं। उनका कोई बड़ा लड़का मशाल अर्थात खमी घांस को जलाकर सबसे पहले मुँह को जलाकर एक चक्कर लगाते हैं और उसे सिर के नीचे लगा देते हैं। इसी प्रकार से पांचो मसाल को क्रमशः पैर, करते हुए चारों तरफ से लगाता है। जब शव पूरी तरह से जल जाता है तब राख और हड्डी को चुका में चुन कर घर आते हैं। उस चुका को घर में नहीं भितारते हैं, घर के ओहारी या पीपल के पेड़ की डाली में टांग देते हैं, जब तक गमी नहीं हुआ है। उसे नहा–धोकर पानी देना अनिवार्य है। जिससे अधिक माया–मोह रहता है तो जब वे पानी डालते हैं तो बुड़बुड़ जैसे अवाज करता है। इसके बाद ही वे खाना खा सकते हैं।

उराँव समाज में शव को दफनाने या जलाने के पूर्व ''सिर मुड़ाने'' की परम्परा नहीं है (भगत, छो.उ.री.198)। यह केवल शहरी प्रभाव से अथवा हिन्दु रीति की नकल है। उराँव लोग जलाने या गाड़ने के बाद ही सिर मुड़ाते है। जो शोक मनाने का चिन्ह है। सिर मुड़ाना, दाढ़ी बनाना, नाखुन कटवाना आदि सभी

छूतका मिटाने के लिए करते हैं अथवा शुद्धता का एक अंग है। राँची क्षेत्र अथवा मुण्डा गाँव में उराँव लोग भी दफनाने अथवा आग देने से पूर्व घर के मुख्य व्यक्ति को सिर मुड़वाने के बाद आग दिलाते हैं। यह रीति उराँव लोगों में नहीं है। गमी के दिन भी पुतड़ी जलाकर लौटने के बाद बाल मुड़ाते हैं।

3.2.4.3.8 सेवा करने वालों के लिए निषेध

मृत आत्मा को (जलाया हुआ को सिर्फ) रोज पानी दे रहा है। उन्हें तब तक शरीर में तेल नहीं लगाना हैं जब तक गमी नहीं होता है। नमक ,हल्दी, मसाला, मांस–मछली, अण्डा नहीं खाना है। जो कपड़ा पहनेगें उसे भी रोज धोना है। रोज उसी को नहीं पहनना है। दर्पण में अपना चेहरा भी नहीं देखना है।

3.2.4.3.9 तुलसी सबसे शुद्ध और पवित्र

मुनेश्वर उराँव (आंरगी, जनवरी 06, 2015) ऊपर में हमने देखा की हमारे शरीर में दस इन्द्रियाँ हैं। जिसे हमें अपने वश में रखना होता है। जैसे कि तुलसी को ही ले, वे एक साधारण मानव थे उन्हें ही तुलसी का दरजा क्यों प्राप्त हुआ? मानव के शरीर में दस इन्द्रियां हैं और दसो इन्द्रियों को अपने वश में रखा तो भगवान भी हैरान हो गये। ये तो मुझे भी जीत लिया इसे मैं क्या दरजा दूँ। तभी उसे तुलसी का दरजा दिया अर्थात वह एक मानव था परन्तु भगवान से भी बढ़कर निकाला। इस लिए तुलसी का दरजा दिया गया। इसी लिए हर जगह पवित्र या शुद्ध करने के लोग काम में लाते हैं। उसी में से कोई इन्द्रियां को अपने वश नहीं करते हैं तो हमारा कार्य पूरा नहीं हुआ कहा जा सकता है।

3.2.4.3.10 तुलसी का विशेषता

तुलसी हमारे जीवन में बहुत ही अधिक महत्व रखता है। जो कि प्रत्येक घर आंगन में देखने के लिए मिलता है। यह दिन और रात प्राण वायु छोड़ता है और आस–पास के वायु को स्वच्छ रखता है। उसके आस पास रहने पर भी किसी प्रकार का रोग नहीं पकड़ता है। साथ ही उसके फूल और पत्ता को रोज खाने से स्मरण शक्ति को बढ़ता है।

2.2.4.3.11 तापावन देना

कुछ लोग बीजरको धान को बेचकर खाने–पीने का समान लाकर सबों को देते हैं। उसी में से कुछ से हड़िया लाया जाता है, उसी से तपावन दिया जाता है, जहां शव को सुलाया गया था। इसमें पंच भी देते है। तपावन देने के समय सबसे पहले तो, पहले की तरह कहाँ से आये आये और अपने पूर्वजों का नाम लेते हैं इसके बाद आज आप भगवान को रूप हुए, आज पूर्वजों के बताये अनुसार नेग–दस्तुर कर बिदा कर रहे हैं। जाने अनजाने कुछ भी गलती होता है तो हमें छमा करना और आज घर–द्वार, बाल–बच्चा सबों का अच्छा से

देखभाल करना, और जैसे इस हडिया पानी को पीने से सब रोग दुःख भागता है, उसी प्रकार से सभी रोग–दुःख को दूर करना और सबके ऊपर सहाय रहना ...।''राधिका उराँव, आंजन, के अनुसार ''वहीं कुछ देर बाद गोड़लगी (प्रणाम) से पहले गमी का दिन ठीक करते है, ताकि पंच और आये मेहमान जान सकेगें की कब इनका गमी हो रहा है। इसमें पंचो से ही राय लिया जाता है। इसमें भी मनुष्य का दस कर्म होता है, मनुष्य का अधिकतर क्रिया क्रम दस दिन में ही होता है। यदि दस दिन में हुआ तो उनका सभी क्रिया क्रम पुरा हुआ है। दस कर्म कहने का तात्पर्य कि मनुष्य के शरीर में दस इन्द्रियाँ पायी जाती है और प्रत्येक का अपना–अपना कार्य होता है। यदि पंचों के द्वारा कभी सात, पांच, तीन या कभी–कभी तुरंत भी होता है। इसका अर्थ हुआ कि उनका सभी क्रियाक्रम पूरा नहीं हुआ है। क्योंकि इसे पंचो के द्वारा ही तय किया जाता है और पंच आदिवासी समाज में धर्मेश हैं। घर वाले इसके लिए कुछ नहीं कर सकते हैं। दिन निर्धारित करने के बाद घर वाले कहते हैं कि हे दे पंच लोग, फलना दिन, अर्थात आज से दसवां दिन में फलना का गमी और उसके नाम से खाना–पीना उसके दूसरे दिन है। किसी के पास खबर करने नहीं पहुँचने सकूँगा तो फिर से असरा नहीं करना और गमी में जरूर से जरूर आना। उनके नाम से जो भी सकूँगा, दूँगा।'' इसके बाद सभी अपने–अपने घर चले जाते हैं।

पहले जमाने रन्थ चलने के बाद किसी की मृत्यु हो जाती है तो उसे उस समय गमी नहीं करते थे। कारण यह था कि उस समय खाने–पीने से लेकर सभी प्रकार की दिक्कतें होती थी। आज की तरह सुविधा नहीं था। उस समय एक साथ मिलकर किसी निश्चित दिन में गमी करते थे जिसे ही उराँव समाज में ''कोंहा बेंज्जा'' कहा जाता है। परन्तु आज दसवें दिन में अधिकतर लोग गमी करते हैं जिसे ''दसकर्मा'' कहा जाता है। दसकर्मा में सभी छुटा हुआ मेहमान को भी निमंत्रण देते हैं। साथ ही सारा नेग का समान पूरा कर गमी करते हैं। इसमें भी सभी नेग दस्तुर पंचो के द्वारा होता हैं। जिसके लिए गाँव के पंचों को बुलाया जाता है।

3.2.4.3.12 भोजन देना

उराँव जाति में जब तक गमी नहीं हुआ है तब तक मृत आत्मा के लिए प्रतिदिन भोजन–पानी देना होता हैं। उसके लिए खाना पकाने के बाद सबसे पहले एक दोना में भात निकालते हैं और उसी में दाल, लोटा में पानी और दतवन। मृत आत्मा का नाम लेते हुए '' हे दे फलना आपके लिए भात दे रही हूँ, आकर इसे खा लेना'' चुल्हा के पींड़ा में रख देते हैं। लोगों का विश्वास है कि मृत आत्मा को जबतक गमी नहीं करते हैं तबतक उनका आत्मा रोज दिन घर आता है। वहीं रेभ ए0 ग्रीगनार्ड (पी.लकड़ा कु.क.प.81) ने कहा है कि गमी जबतक नहीं किये हैं तब तक मृत आत्मा के लिए दफनाया हुआ स्थान में रोज भात पहुंचा दिया जाता है। वहीं गोहरा उराँव के अनुसार मृत आत्मा के लिए घर

में रखा जाता है न कि मसड़ा पहुँचा दिया जाता है। चीक बड़ाईक जाति में रास्ते में पहुंचा दिया ताजा है। जिसमें वे शुरू दिन जिस स्थान में दिये उस स्थान से धीरे–धीरे पीछे करते भात रखते हुए कहते है ''आईये फलना आप के लिए भात दे रहे हैं।''

3.2.4.3.13 पुतड़ी जलाना

उसना चावल, अपटन (हल्दी और चावल को मिला कर पीसते हैं) हल्दी, सफेद कपड़ा, सिन्दुर, कौड़ी, तांबा पैसा, हड़िया, पानी, दूध, पत्तल, सफेद धागा। उपर्युक्त समान लेकर शमशान जाते हैं। वहां पर पहुँच कर शमशान के ऊपर समतल कर मड़वा बनाया जाता है। मनेश्वर उराँव के अनुसार मड़वा आम का डाली को छोटा–छोटा करके औरत में तीन और मर्द में पांच गाड़ते है फिर उसमें झण्डी कपड़ा को ही बना कर बांधते है। सफेद धागा को चारों तरफ लपेटते हैं। फिर उसे गोबर, तांबा, तुलसी, हल्दी, पानी से पवित्र करते हैं। फिर मिटटी से बना आदमी का मूर्ति, जिसमें तांबा पैसा, कौड़ी (लड़का में पांच, लड़की में तीन) डाला जाता है साथ ही उसमें जिन्दा घोंघी भी डाला जाता है। पैसा और कौड़ी तो उसका हड्डी हो गया और घोंघी उसका जीव है। उसे महिलाएँ तांबा तुलसी हल्दी से पवित्र कर खाना पानी अपने हांथो से चुमा कर खिलाती है, तत्पश्चात उसे पांच चक्कर लगाकर सारा (लाश को जलाने के लिए बनाया गया लकड़ी का ढ़ेर) में रख देते हैं। तभी उसका बड़ा बेटा या उनसे छोटा मुखाग्नि देते हैं। इसके लिए ख़ामी घांस और पुवाल दोनों को मिला कर तीन या पांच मसाल तैयार कर बारी–बारी से उसके मुँह में रखकर आग दिया जाता है। ऐसा करने के बाद वहां पंचो को भी भात पानी उनके नाम से देकर पहले की तरह गोहराते हुए नदी तालाब आते है। वहीं महिलाएँ स्नान ध्यान कर घर चले आते हैं और पुरूष बाल मुड़ा कर अपने घर आते है। घर वाले कपड़ा में पानी लाकर शव रखे वाले स्थान में देकर तेल हल्दी पकड़ते हैं। वहीं पंचो के लिए हड़िया लगाया जाता है उसी हड़िया को पुर्वजों के लिए तपावन देते हैं।

महादेव उराँव (जन्ना, जनवरी 09 2015) हमारे पुर्वज पहले पुतड़ी नहीं जलाते थे। गमी के दिन उस लाश को गड्ढा से निकाल कर जलाते थे और सारा नेग दस्तुर करते थे। परन्तु धीरे–धीरे यह छूटते आया। कारण कि वह शव दस दिन बाद दुर्गन्ध देती थी और साहस भी नहीं जुटा पाते थे। परन्तु जैसे–जैसे समझदारी आया तो शव को निकालने के बजाय पुतली बना कर जलाने पर कैसा होगा, ऐसा विचार कर उसी के स्थान पर अब पुतड़ी अर्थात मिटटी का मूर्ती बनाकर जलाते हैं और गमी का सारा नेग दस्तुर करते हैं।

3.2.4.3.14 उत्तुर खिलना

कसरी मुर्गी, (सादा करने वालों के लिए नारियल) अण्डा, एक दोना अरवा चावल, एक डलिया में उसना चावल, तीन दोना, एक में कोइला, एक में

रानू, एक में चुल्हा मिटटी, एक पतरी धान, लौह सिंग्हा, बेर डाली, जितया पत्ता, एक घड़ा जिसे एक तरफ छिद्र किया जाता है ताकि धान को लावा फुटाया जा सके, लम्बा दतवन, उरद को भिंगा कर पिसा हुआ बिदगी, चावल का बिदगी, सरसो या जंटगी तेल, डिम्बो बोहा, फाल, हसुवा, झण्डी, सफेद धागा, चुका ढक्कन सहित।

सबसे पहले ढेला से चुल्हा बनाते हैं और बगल में ही फाल से एक गडढा खोदते हैं। दोनों तरफ अलग–अलग व्यक्ति बैठते हैं। जो व्यक्ति गडढा तरफ बैठता है वह अरपन से चुका और ढक्कन को लेप लगाता है। चुल्हा आम का लकड़ी से जलाकर घड़ा में धान का लावा भुंजते है फिर उसे तीन पीपल पत्ता का बनाया हुआ दोना में तीन या पांच रखते है और कुछ को पतरी में, जिसमें पंच और शव के लिए रखते हैं। फिर उसी घड़ा में तेल डालकर दो रोटी, एक चुका को रखने और एक ढ़कने के लिए चावल का पीसा हुआ को छानते हैं, तीन लुड़पी पकाते हैं जिसमें लुड़पी और डिम्बोबोहा को बांधकर माला बनाकर चुका को पहनाते हैं। जिसमें चावल का बना रोटी जिसे नीचे जमीन में और उसके ऊपर चुका रखते हैं। इसके अलावे जो बचता है उसे बरा छानते हैं। लावा भूंजना और बरा वगैरह छानने का मतलब, भगत लोग किसी का छुवाया हुआ नहीं खाते हैं तो उन्हें छान–बार और लावा भुंज कर दिया जाता है। ताकि किसी पुरखे को न मिले, ऐसा न हो। लावा को तीन पीपल के पत्ता में थैला जैसा बना कर रखते हैं। जिसका कहने का तात्पर्य कि वह हमारा जीव है वह एक थैला में लावा की तरह है। तीन दतवन भी तीनों संस्कार को इंगित करता है।

सभी हो जाने के बाद पंच वहां पर डण्डा काटने का प्रतीक चिन्ह बनाता है। फिर जिस तरह से अण्डा और किरो डण्डा को रखा जाता है वैसा ही गोहरा कर रखते है। डण्डा काटने का तात्पर्य कि उसका आत्मा और घर परिवार को किसी प्रकार का दुःख तकलीफ न हो, तत्पश्चात बैठकर सुप में चावल को रगड़कर पुनः कैसे आये गये एवं पुर्वजो को गोहराते है और किसी पूर्वज का नाम छूट रहा है तो भी उनसे छमा मांगते हुए कहते हैं कि किसी तरह जोगाड़ कर आज आपको बाहर–भीतर कर रहे हैं और बाल–बच्चा, घर–द्वार में, घूमने–फिरने में, पढने लिखने में किसी प्रकार का तकलीप होने नहीं देना और सबके साथ सहाय रहना और साईस बराकईत भी पूरा करना. . . . ।'' इस तरह गोहरा कर मुर्गी को चराते हैं। नहीं चरता है तो तीन बार चराते है। सही नाम पता होने पर एक या दो बार में ही चरता है। इसके बाद बारी–बारी से चावल, हड़िया, दूध और पानी सभी को क्रमबध अण्डा, गडढ़ा, चुका और झण्डी में चुवाते है। इसके साथ एक या दो रूपया दान भी करते हैं। घर वालों का खत्म होने के बाद पंच लोग शुरू करते हैं। मुर्गी पकड़ने वाले चावल गिराने वालों का नाम लेते हैं कि ''हे दे आज फलनी, तेरी नाती .... पानी दे रही है। अच्छा से पीना।''

सभी लोगों का खत्म होने पर पुनः पंच और घर वाले चावल और मुर्गी

को पकड़ कर पहले की तरह गोहराते हुए चराते हैं। चरा कर मुर्गी को फाल से सिर को कुचल कर मारते है और उसका पैर के आंगुली का नाखुन वाला भाग, पंख का किनारे छोर का भाग और चोंच का आगे का भाग गडढ़ा में डालते हैं। ये कहते हुए कि ''हे दे आज फलना और पुरखा लोग। आज पांच कुडरी दे रहे हैं, उसी तरह से नब्बे कुडरी साइस बराइकत देना . . .।''

3.2.4.3.15 झण्डा

जिनका मृत्यु हो गया है वे अब हमारे लिए भगवान बन गये और उन्हें याद करने के लिए प्रतीक स्वारूप झण्डा रहता है। जिसे पर्व–त्योहार में गाड़ते और तपावन देते हैं। कुछ साल बाद गाँव के अखड़ा में पर्व–योहार के अवसर पर गाड़ने दे दिया जाता है ताकि उन्हें हर समय याद करते रहें। वैसे तो हर पूजा पाठ में उनका नाम लिया ही जाता है।

इसके बाद अण्डा को भी चाकु से जोखा करके फोड़ते है और किरो डण्डा से कुडरा कर गडढा में पहले की तरह गोहराकर गिराते हैं। फिर गिराया हुआ सभी दोना और चावल को गडढा में डालते हैं। उसे भर का डीपा को गोबर से लिपाई कर लौहसिंगहा गाड़कर, बैर डाली को रखकर, ऊपर से एक छोटा पत्थर को रखते है। लौहसिंग्हा बैर डाली, पत्थर ये तीनों ऐरी–बैरी है। ऐरी–बैरी का तात्पर्य डाइन विसाही का प्रकोप न लगे। इसे देने पर वे उठा नहीं सकेगें। अच्छे या बुरे लोग इसे जगा सकते हैं। ऐसा होने पर अपशगुन होने का डर रहता है। कहीं वे भूत बैताल बनकर रात में डराने न आ जाय। यदि बैर डाली रहे तो उसका आत्मा को चुभेगा और वह बाहर नहीं निकल पाएगा।

उधर बरा छानने वाला सभी लावा को एक दोना को छोड़कर, सभी को सुप में रखता हैं, उसी सुप में चुका भी रहता है। वह दहिना हाँथ से सुप और बांया हाँथ से लावा को गिराते हुए पीछे की तरफ घुमते हुए तीन चक्कर लगाने के बाद घड़ा को हाँथ से उठा कर पटकते हैं फिर चुल्हा को भी पैर से लातमार कर बिगाड़ देते है। यहाँ उल्टा किन्दरने का तत्पार्य कि उसका आत्मा का बुला रहें हैं। चुल्हा को तोड़ने का मतलब कि यदि हम अपने घर के लिए चुल्हा बनाये हैं तो उस चुल्हा में कोई भी जला सकते हैं परन्तु मृत व्यक्ति का चुल्हा में अन्तिम क्रिया होता है अर्थात उनके नाम से और किसी प्रकार का नेग–दस्तुर नहीं होगा। फिर शमशान की ओर हड्डी लाने के लिए प्रस्थान करते है। इसके साथ एक झण्डा भी जाता है। महिलाएँ मसड़ा में खिलाने–पिलाने का सारा नेग समान लेकर चलते हैं। मसड़ा से लौटने के बाद मुर्गी को घर वाले तहड़ी पकाकर पांच पंचो को खिलाते हैं।

3.2.4.3.16 हड्डी चुनना

ख़ोचोल पेसना अर्थात हड्डी चुनना। शमशान पहुँच कर सबसे पहले मिटटी का मूर्ति, जलाया हुआ को गोबर और हल्दी पानी से पवित्र करते हैं।

तत्पश्चात महिलाएँ हड्डी पुरूष के लिए पांच और महिला के लिए तीन बार चुनते हैं उसे धोने के लिए एक महिला, जो अपने पैर में सफेद कपड़ा को रखकर हड्डी को धोने के लिए तैयार रहती है और महिलाएं हड्डी चुन कर उसी में रखते हैं। (हडडी धोने के लिए उस व्यक्ति के सबसे नजदिकी वाले बहन या बेटी होती हैं।) धोने के बाद, वही महिलाओं ने ही उसे तीन बार चुमाकर चुका में रखते हैं। इसके पश्चात प्रत्येक मड़वा खुंटा में एक–एक कर पत्ता में भात रखते हैं। उस समय भी कहते हैंः– ''हरियो जल्दी सखी बहुत गर्म है मेरे बाबा का दाल भात, हाँथ जल रहा है'' इसके बाद उसके ऊपर लिंगी, जो कांसी का तीन डाली जैसा निकला हुआ बनाकर रखते है। लिंगी का अर्थ एक उसका सिर, एक हाँथ–पैर और एक उसका शरीर हुआ। जो कि कांसी बनारस नहीं जाते हैं इसी कारण से कांसी का लिंगी बना कर रखते हैं। सूप पकड़ने वाला लावा को बांया हाँथ और सूप को दहिना हाँथ में पकड़े दाहिने तरफ से पीछे घुमते हुए चक्कर लगता है। पहला चक्कर में पहला भात रखा हुआ पत्ता को उखाड़ते हैं। उखाड़ते समय मड़वा का जला खुंटा को भी उखाड़ कर पत्ताल को उलाट कर लिंगी को चुका में डालते है। इस प्रकार से सभी भात रखा हुआ पत्ता को उखाड़ते हैं। गोहरा उराँव के अनुसार मड़वा खुटा उखाड़ने का मतलब, उनका आत्मा को हम घर लाने के लिए करते हैं। यदि मड़वा खुंटा को नहीं उखाड़ते हैं तो घर में कुछ न कुछ अनहोनी होते रहती है या तो उसका आत्मा घर के लोगों को हरदम कुछ न कुछ करते रहते हैं। फिर भात और लावा को पंचो को देकर चुका को नचाते हुए घर आते हैं। आते समय रास्ता में तीन बार भात खिलाते हैं।

3.2.4.3.17 छाया लाना

छाया भितारने के लिए घर का कोई निश्चित स्थान को चुना जाता है। वहीं पर आत्मा को स्थान दिया जाता है। अधिकतर रसवा (कोठा) घर को ही चुना जाता जाता है। छाया लाने वालों के लिए हडिया, हसुवा, तीन फांड़ा आम लकड़ी, थोड़ा पुवाल, तम्बकु बीड़ी, फाल, दुब घांस, सादा पानी एक लोटा, उसना चावल, सिन्दुर, दतवन लावा भुजने वाला दतवन, सफेद धागा।

सबसे पहले दतवन और लकड़ी का कुम्बा/घर बनाते हैं। फिर उसे धागा से बांध कर पुवाल से छारते हैं। सिन्दुर टिका देने के बाद उसना चावल बीड़ी, तम्बाकु, पानी (पानी को जुठा नहीं करना है) को पांच–पांच बार पंचो को बांटते हैं और कुम्बा में उसके नाम से देते हैं। हड़िया दोना (पत्ता का कटोरा) को भी नहीं फेकना है। चावल गिराने के बाद बचा हड़िया को सभी पीते है, फिर कुम्बा को जलाते है। वहाँ का बचा हुआ सभी नेग समान को कुम्बा में ही डाल देते हैं। जलने पर कहते हैं– ''हे फलना, हे दे आपका झोपड़ी जल रहा है'' इससे समझा जाता है कि मृत व्यक्ति का आत्मा आ गया। कहते हुए आशिष पानी से सभी शुद्ध होकर वहाँ से वापस आते हैं। उन्हीं में से एक फाल को

हसुँवा से मारते अर्थात ठींग–ठींग बजाते हुए आते है। छाया लाने का स्थान वही होता है जहां से शव के लिए धान और रूई गिराना प्रारम्भ किये थे। फाल का तात्पर्य हमारा सारा खेती बारी का कार्य पहले फाल के द्वारा ही होता था, जैसे हल जोतने से लेकर कोड़ा, खबहा करने तक, हसुवा और फाल बजाने का मतलब कि उसे नाचते गाते पहुंचायें।

हम जब कभी भी उत्सव मनाते हैं, किसी न किसी रूप में मान्दर, नगाड़ा के अलावा बालटी या अन्य चीजों का प्रयोग करते ही हैं परन्तु हम फाल और हसुवा का प्रयोग कभी नहीं करते हैं। इसका प्रयोग सिर्फ गमी में छाया अन्दर करने के समय ही होता है। जिससे लोग समझ जाते हैं कि मृत आत्मा का छाया लाया जा रहा हैं और वे रास्ता से थोड़ा हट जाते हैं।

3.2.4.3.18. हिरी जोरी बांधना

छाया अन्दर करने वालों के लिए समान जो घर में करते हैं उसके लिए संड़सी चुका, उसना चावल, थोड़ा उरद, करंज तेल, बत्ती, पीडहा, कांसा लोटा, कसरी मुर्गी या चेगना, एक दोना हड़िया, खजूर का बिण्डो, सखुवा पत्ता, एक दीया आदि जो घर में करते हैं।

सबसे पहले सखुवा पत्ता को बीड़ी जैसे बना कर चुका का छेदा में डालते हैं। तत्पश्चात पीड़हा रखते हैं, पीड़हा के ऊपर खजूर बीण्डो, उसके ऊपर लोटा, लोटा के ऊपर संड़सी चुका, चुका के ऊपर दीया रहता है। लोटा में सादा पानी और चुका में हड़िया पानी तथा दीया में बत्ती उरद और उसी में करंज तेल डालकर दीया जलाया जाता है। इसके बाद मुर्गी और चावल पकड़कर पुर्वजों को अहवान किया जाता है।– ''हे दे आज ऊपर भगवान, नीचे पुरखा और बीच में पंच लोग, हे दे फलना आज आपको घर अन्दर कर रहे हैं। आज जाने–अनजाने कुछ भी नेग–दस्तुर करने में किसी तरह का गलती होता है तो हम छमा करना और हमें अच्छा आशिर्वाद देना, किसी प्रकार का कांटा गड़ने नहीं देना और घर–द्वार को भी ठीक रखना'' आदि।

जब छाया लाने वाले पहुँच जाते हैं तो पुनः और एक बार उसी तरह अहवान करते हैं। छाया लाने वाले जब छाया लेकर फल और हँसुवा को बजाते हुए घर पहुँचते हैं और दरवाजा के पास आकर खटखताते है –''हमारा घर में कौन है? अपना या बिरन।'' बिरन अर्थात दूसरे घर का। इस तरह से तीन बार होता है। तभी अन्दर से आवाज देते हैं ''अपन'' तभी दरवाजा को जोर से लात मारते हुए अन्दर चले जाते हैं। तभी उसका आत्मा अन्दर जाता है और अपने स्थान में बैठ गया, ऐसा समझा जाता हैं। जब छाया लेकर आते है और दरवाजा खोलकर घुसते हैं उस समय दीया हल्का झुकता है। इसी से पता चलता है कि आत्मा घर आया। वहीं छाया लाने वाले पूछते हैं कि दिया झुका या नहीं? वहीं सभी समान को रखकर वही हड़िया को पीते हैं। सभी भी छाया लाने वालों को अन्दर घुसना पड़ता है। यह भी ध्यान देना है कि दीया का तेल सुबह तक जलते

रहना चाहिए। तेल खत्म होने पर पुनः डालते रहें।

वहीं डॉ0 भगत (छो.उ.री.200) लिखते हैं कि छाया लाने वाले सभी व्यक्ति भी अन्दर प्रवेश करते हैं। अन्दर बैठे सभी व्यक्ति एक दूसरे का हाल–चाल पूछते हैं। साथ ही मृत व्यक्ति के सगुण देखते हैं। राख में यदि मृत व्यक्ति के पद चिन्ह देखते हैं तो समझा जाता है कि मृतक की छाया वापस आ गई। विभिन्न प्रकार के पद चिन्हों को देखकर भिन्न–भिन्न अनुमान लगाये जाते हैं। यदि बिल्ली या अन्य जानवर के पद चिन्हों को देखते हैं तो मृत्यु को अशुभ मानते हैं। दीपक के संबंध में भी लोग आपस में पूछ–ताछ करते हैं कि दीपक कैसा जल रहा था। उसके संबंध में लोग आपस में बात–चीत के माध्यम से मृत्यु का कारण का पता लगाते हैं। यही एस0सी0 राय (OR&C,179) ने भी बताये हैं।

बबलु तिर्की (बेन्दोरा, मार्च, 2015) के अनुसार जब दरवाजा ढका हुआ हो और अन्दर दीया जल रहा हो, तो अचानक दरवाजा खोलने पर हवा अचानक अन्दर प्रवेश करती है, जिससे ही दीया थोड़ा सा झुकता है। वैसा देखा जाय तो आत्मा आती है या नहीं कहा नहीं जा सकता है। परन्तु पूर्वजों से लेकर आज भी लोगों को विश्वास है कि आत्मा ही प्रवेश किया।

छाया या आत्मा घर लाने का तात्पर्य कि हम उसे अपने घर का सदस्य बना रहे हैं और कुण्डी लेने का तात्पर्य कि जब तक उसे अपना घर नहीं अन्दर करते हैं तब तक नहीं पता चलता है कि वह आत्मा किस घर का है। क्योंकि कुण्डी में तो सभी घर के रहते हैं।

3.2.4.3.19 कुण्डी जाना

कुण्डी सबों का एक स्थान पर नहीं होता है। लोग अपनी सुविधा के अनुसार कहीं भी नदी किनारे में बनाते है। कोई–कोई परिवार एक रात रूक कर कुण्डी जाते है। सोमा उराँव के अनुसार पहले के पूर्वज मृत शरीर की हड्डी को अन्तिम संस्कार के लिए उस व्यक्ति के मूल गाँव (अद्दि पद्दा) में पहुँचाया जाता था। आजकल गाँव में रहने वाले भी सामाजिक रीति–रिवाज से जगह खरीदकर कुण्डी स्थान बना रहे हैं क्योंकि अपने मूल गाँव से बाहर रहने अथवा परदेश में रहने के कारण ऐसा किया जाता है। यही डॉ0 भगत (वही.202) ने भी लिखे हैं।

3.2.4.3.19.1 कुण्डी का समान

कसरी चेंगना, हल्दी, सफेद धागा, गोबर, हड़िया मेरा, उसना चावल, खिचड़ी भात, लावा, छाना रोटी जो चुका के साथ रहता है।

कुछ पुरूष कुदाल और बाल्टी, साथ में गोबर, हल्दी, हड़िया मेरा लेकर कुण्डी जाते हैं। कुण्डी स्थान को साफ सुथरा कर उसे गोबर और हल्दी से पवित्र कर, तीन चक्कर सफेद धागा को पहनाते हैं। फिर पुर्वजों को गोहरा कर कसरी चेंगना को चराते हैं कि ''हे दे आज आपको अन्दर–बाहर किये और कुण्डी में दे रहे हैं। कुण्डी के सभी पूर्वज ठीक से रखना और किसी प्रकार का

दुःख—तकलीप नहीं होने देना, सुख—शांति से हमें रखना।'' चरने के बाद में चूजा का सिर को ऐंठ कर नदी में फेंक देते हैं। इसके बाद महिलाएँ आती हैं वे तीन पतरी भात चुमा कर तीन स्थान पर रखती है। पहले की तरह कहती है कि फलना का भात बहुत ही गर्म है ....। इसके बाद चुका पकड़े हुए व्यक्ति आते हैं और पानी भरकर एक चक्कर लगाकर वही पूछते हैं हमारा महल में कौन है? ''अपना या बिरन'' बिरन अर्थात दूसरे घर का। तो जो पहले आते हैं वे कहते हैं ''अपन'' इस प्रकार तीन बार होने के बाद चुका को फोड़ा जाता है और सभी को नदी में विर्सजित कर देते हैं। इसके बाद कुण्डी वालों को भी भात, लावा, रोटी देते हैं। नदी में सबों के लिए खाना मिलता है, जैसे मारा—पासा हुआ, कुँआ में डुबा हुआ अर्थात अन्य किसी भी प्रकार जिनकी मृत्यु हुई हो। सभी नदी में स्नान करते हैं। स्नान कर एक स्थान पर एकत्रित होकर गोलाई में खड़े होते हैं। वहीं पर तेल हल्दी छूते हैं। मृत आत्मा की शांति के लिए धर्मेश से विनती करते हैं और वहीं पर पवित्र पानी जिसे ''कुरूष'' पानी कहते हैं, पंक्ति वध पवित्र पानी लेते एवं प्रणाम करते हुए अपने—अपने स्थान पर खड़े होते जाते हैं। सभी का खत्म हो जाने के बाद ''अना आदि'' प्रर्थाना करते हैं, तत्पश्चात अपने घर की ओर विदा होते हैं।

3.2.4.3.20 हिरी जोरी उतारना

दूसरे दिन सुबह नहा—धोकर घर को पवित्र किया जाता है। फिर हीरी जोरी को उतारने के लिए पुजा पाठ होता है। उसना चावल को लेकर पहले की तरह गोहराया जाता है। तत्पश्चात ऊपर से दीया को एक किनारे से उतारते हुए पंक्ति से रखते हैं। फिर मुर्गी को भी चरा कर उसे भी मारकर, खिचड़ी बनाते हैं और पांच पंचो को खिलाते हैं। उस समय भी पहले की तरह गोहराते हैं।

3.2.4.3.21 घर पवित्र करना

इसके पश्चात घर को पवित्र किया जाता है। इसके लिए घर को सबसे पहले गोबर से लिपाई करते हैं। इसके बाद घर को पवित्र करने के लिए कांसा लोटा में साफ सादा पानी, उसमें तुलसी पत्ता, हल्दी और तांबा पैसा होता हैं। सबसे पहले पूर्वजो को गोहराकर पूरे घर में उस पानी को छिड़काया जाता है। इसके बाद उस पानी को थोड़ा—थोड़ा घर के सभी सदस्यों को देते हैं। जिससे वे भी पवित्र होते हैं।

जब तक हीरी—जोरी नहीं उतारे हैं और घर को पवित्र नहीं किये हैं। बाहर से आने वाले मेहमान उस घर का खाना—पीना नहीं करते हैं। इससे पहले घर को अपवित्र ही समझते हैं। यदि घर से बाहर खाना—पीना बना है तो ही वे खाना—पीना कर सकते हैं।

3.2.4.3.22 गाँव बनाना

कोंहा बेंज्जा (गमी) के दूसरे दिन गांव को बनाते हैं अर्थात पवित्र करते हैं। कोंहा बेंज्जा के बारे में पहले बताया गया है। इसमें पुजारी गाँव के पवित्र के लिए पूजा पाठ करता है। इसके लिए गांव के सभी एक जगह इकट्ठा होते हैं। इसके लिए जिसके घर में कोंहा बेंज्जा किये हैं, प्रत्येक घर से एक–एक हड़िया लगता है। पानी भरे घड़े को पहान के पास लाया जाता है। पानी से भरे एक या दो घड़ा को भी पहान के पास लाया जाता है। इसमें से एक लौकी के पानी में थोड़ा सा तांबा रखा जाता है और कुछ स्थानों पर एक अन्य लौकी के पानी में चांदी के सिक्के रखा जाता है। पुजारी गांव के पूरे क्षेत्र में उस पानी का छिड़काव करते हैं। और पूर्वजों के आत्माओं का नाम लेकर गोहराते हैंः–''आज फलना–फलना पुरखा रो, आज कुण्डी पवित्र कर रहे हैं। आज गाँव में गाँजार में सुख शान्ति रहे।'' इस तरह से गाँव के पहान और उसके साथ गाँव के सभी ग्रामीण साथ में चलते हैं। और वहाँ सफेद मुर्गी को देते हैं और धर्मे को गोहराते हैं– ''हे बीड़ी बेलय, ए–म अक्कु पद्दन उधरा लगदम, अक्कु एम्हय काम बेस–बेसेम मन'आ नेक'आ, एकसानुम कौम होले अच्च हूँ अम्बके चक्खा चि'आ ने'का'' (हे सूरज राजा, हमलोग, गाँव को पवित्र कर रहे हैं, कहीं भी जायेगें तब कांटा भी नहीं चुभने देना) इस तरह गाँव सभी बुरे प्रभावों से मुक्त हो जाता हैं (Ray.O.R&C.183)। इसके बाद गाँव में एक जगह एकत्र होकर खाना–पीना और नाच–गान करते हैं।

3.2.4.3.23 कांडसा ख़ेत्तना

गमी के दूसरे दिन सभी नेग–दस्तुर हो जाने के बाद कांड़सा नचवाना होता है। यह विवाह में भी होता हैं। कांड़सा नचवाना अर्थात विसर्जन करना भी है। सभी मिलकर हंसी–मजाक से लोटा में थोड़ा पुवाल और पानी डालकर कांड़सा झांटते है। इसके बाद ही सभी खाना पीना कर अपने–अपने घर की ओर प्रस्थान करते हैं।

इसमें जिस मौसम में गमी हो रहा है, उसी मौसम का गीत गाते हैं। उसके कर्मो के अनुसार या अन्य भी हो सकता है। जैसे की बड़ पेड़ में माता–पिता का छाया लगाता है। परन्तु माता–पिता के नहीं रहने पर वही धूप सेकने लगाता है। माता पिता जिस समय थे, उस समय कितना सुन्दर से शादी–विवाह कर दिये। घर कितना सुन्दर था परन्तु माता–पिता के नहीं रहने से दादा अर्थात बड़े भाई तो ठीक करते हैं परन्तु भाभी ठीक से बात भी नहीं करती है। इसी तरह से और कई गीत गाते हुए रिझ–रंग करते हैं। –

124	बड़ा ए–ख़ नू अयो	बड़ छाया में माँ
	बड़ा चैन लगिया	बहुत सुख लगा
	अयो कुलुरका बेसे लग्गी रे	माँ छाँव जैसा लगा

	बबा कुलुरका बेसे लग्गी ।।	पिता छाँव जैसा लगा
	नयो केच्चा बली मुच्चरा	माँ मर गई दरवाजा बन्द हुआ
	ए–ख़ इज्जा अडडा हूँ मल्ला।।	छाया होने के लिए स्थान नहीं
125	अयो लेखे दुलारो	माँ जैसे दुलार
	बबा लेखे बलारो	पिता जैसे प्यार
	सन्नी नू जुड़ी जुमा बाचर।।	छोटा में ही जुड़ी मिला दिये
	ददा लेखे दुलारो	बड़े भाई जैसे दुलार
	नासगो लेखे निठुर	भाभी जैसे दुश्मन
	एंग्गन एर्रर बली मुच्चिया चिच्चर	मुझे देख दरवाजा ढक दिये
126	अयो जियत बारी	माँ जिन्दा समय
	बबा जियत बारी	पिता जिन्दा समय
	बड़ा मुली कुलुरका र'ई।।	बड़ पेड़ छाया ढका हुआ है
	नयो केच्चा बली मुच्चरा	माँ मर गयी दरवाजा बन्द
	बड़ा मुली मरेचा मंज्जा।।	बड़ पेड़ छाया घाँस हुआ

3.2.4.3.24 चुरिल या चुड़ैल

जब कोई स्त्री की गर्भावस्था में मृत्यु हो जाती है तो उसे ''चुरिल'' कहा जाता है। ऐसे मृत शव को दोषपूर्ण या अशुद्ध समझा जाता है। ऐसी अवस्था में उनके सभी श्रृंगार को हटा लिए जाते हैं। उन्हें सामान्य मासड़ा में नहीं दफनाया जाता है। उसे गाँव से दूर गाड़ते हैं। शव को रास्ते में ले जाते समय सरसो या उरद के दानों को छींटते जाते हैं। जिससे उनका विश्वास है कि उनका आत्मा वापस गाँव नहीं लौटे।

ऐसे शवों को दफनाने लेने के पहले उनके आँख को सिलाई कर देते हैं (तिर्की,उ.स.ध.सं.156)। उनके हाँथ पैर तोड़ दिये जाते हैं, उनके पैरों एवं हथेलियों के तलवे को कांटा से चुभा दिये जाते हैं उसके शव को उल्टे मुँह करके दफनाते हैं। वहीं बड़े बुजूर्ग का कहना है कि चुडैल से लोग डरते हैं, जब कोई अनजान पुरूष को पाती है तो उसको पकड़ने का प्रयास करती है। पुरूष को पकड़ने पर गुदगुदाती और गुदगुदाकर थका देती है, यहाँ–वहाँ जंगल–झाड़ों में घुमाती। कभी–कभी नारी वेश में मिलती और पुरूष को पकड़कर संभोग कराती है, क्योंकि गर्भावस्था में रहने से पूर्व वह पुरूष प्रेमी रहती है, इस कारण पुरूष वर्ग को अधिक पकड़ती है। स्त्री एवं बच्चों से दुश्मनी या बैर रखती और दु:ख पीड़ा पहुँचाती है।

3.2.4.3.25 अस्वाभाविक मृत्यु

जब किसी की मृत्यु आकस्मिक दुर्घटनाओं से होती है, उसे ही ''अस्वाभाविक मृत्यु'' कहते हैं। जैसे–पेड़ से गिरना, आग में जलना, बस या किन्हीं अन्य से दुर्घटना से मृत्यु, नदी–तालाब में डूबकर मृत्यु, फांसी होना या किसी जानवर का शिकर होना, ये सभी अस्वाभाविक मृत्यु है। जिनका भी अस्वाभाविक मृत्यु होती है, उन्हें दफनाने के लिए सामुहिक मसना में नहीं लिया जाता है। उनके लिए अलग से कहीं भी दफनाते या जलाते हैं। उन्हें पूर्वजों के आत्मा से नहीं मिलाया जाता है, और न उनके आत्मा को कुण्डी में मिलाया जाता है। उन्हें बाहर ही छोड़ दिया जाता है। आदिकाल में अस्वाभाविक मृत्यु होने पर गमी (क्रियाकर्म) भी नहीं करते थे। जालेश्वर उराँव, लोहरदगा के अनुसार कहा जाता है कि गमी नहीं करने से उनका आत्मा भटकता रहता है और कहीं भी घुमते फिरते कोई व्यक्ति उनके रास्ते में मिल गये तो उनका आत्मा उन्हें पकड़ लेता है। जिससे लोगों में डर पैदा हो जाता है, जिससे लोग कहते हैं कि भूत पकड़ लिया। इसी लिए आज उनके नाम से बाहर ही नेग–दस्तुर कर, नदी किनारे में पिण्डा पार देते हैं। जिससे कहा जाता है कि जिस समय कुण्डी में खाना–पीना देते हैं, उसी से उनको भी मिल जाता है। जिस समय खाना–पीना देते है, उस समय देने वाले जिनका मृत्यु हुआ है, उनका नाम तो लेते हैं, साथ ही अन्य पूर्वजों के साथ अन्य जिस तरह से भी उनका मृत्यु (अस्वाभाविक मृत्यु) हुआ है, सभी उसी से खा लेना। ऐसा कहते हुए पानी में फेक देते हैं। जिससे अस्वाभाविक मृत्यु वालों को खाना मिल जाता है, जिससे उनक आत्मा शान्त रहता है और उनका आत्मा नहीं भटकता है।

उन्हीं के अनुसार यह भी कहा जाता है कि भगत के पास पूजा पाठ कराने पर छोड़ देता है। डॉ0 भगत (छो.उ.री.203) ने लिखे हैं कि ऐसे मृत्यु का तर्क है कि ये लोग जन्म से ही परिवार के साथ नहीं रहते हैं। छल कपट या गलती से इस परिवार या कुल में जन्म लेते हैं, जिसकी वजह दुर्घटना या मृत्यु हुई हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस पृथ्वी पर जो आया है उनका किस तरह से जीवन–यापन होगा और उनका मृत्यु भी किस प्रकार की होगी, इसे कोई बता नहीं सकता है। मृत्यु अटल सत्य है, एक दिन सबों को इस पृथ्वी से जाना ही है। इस लिए जो भी इस पृथ्वी पर आया है, उन्हें बड़े ही प्रेम के साथ रहना चाहिए और जीवन–यापन करना चाहिए। यह पृथ्वी ही स्वर्ग है। अन्यथा कहीं इसके जैसा स्वर्ग नहीं मिलेगा। उराँव लोग स्वर्ग–नरक में विश्वास नहीं करते हैं, वे सब कुछ इसी पृथ्वी को समझते हैं। लोग जैसा कर्म करेगें वैसा ही इसी जन्म में फल पायेगें। इसीलिए उराँव लोगों में अभी भी छलकपट की भावना बहुत ही कम दिखाई देती हैं। वे अपने कार्य के प्रति निष्ठावान रहते हैं। इसी का लाभ अन्य लोग उठा लेते हैं।

3.2.4.3.26 पुल्खी गाड़ना

पुल्खी गाड़ना यानि मृतक के नाम से पत्थल गाड़ने की क्रिया को ''पुल्खी गाड़ना'' कहते हैं। गमी क्रियाकर्म के कुछ दिन बाद यह किया जाता है। मैं सबसे पहले तो बता देना चाहता हूँ कि पुल्खी गाड़ना उराँव जाति में नहीं पाया जाता है। यह उन क्षेत्रों में पाया जाता है, जो क्षेत्र मुण्डा प्रभावित है। जैसे राँची, खूँटी आदि। राँची के पश्चिमी क्षेत्र में पत्थल गड़ी प्रथा नहीं है।

भीखु तिर्की (उ.स.ध.सं. पृ0 154) ने लिखा है कि यह क्रिया मृतक के यादगारी में किया जाता है। यह पत्थल करीब आठ–दस फीट ऊँचा और दो–तीन फीट चौड़ा होता है। इसमें मृतक का नाम, मरने की तिथि, वर्ष और अन्य आवश्यक विवरण खोद कर गाड़ दिये जाते हैं। हड़बोड़ा त्योहार के समय बचाकर लाये हड्डियों, धान, उरद, बंगुर, दतवन, चम्मच, बैंठी, पैसे और मृतक के मुख्य–मुख्य समानों को भी इस पुल्खी के नीचे डाल देते हैं। इसी तरह से एस0सी0 राय (O.R&C.184.) ने भी अपने किताब में लिखे हैं। इस पुल्खी को अपने खेत या बगान में गाड़ने की प्रथा है। गाँव के उपस्थित लोग स्नेह के रूप में थोड़ा चावल डाल देते हें। इसके बाद पुल्खी को अच्छी तरह पानी से धोकर तेल–सिन्दुर और चावल की गुंडियों से तीन घड़ी लाईनें बनाये जाते हैं। इसकी स्थापना करते समय घर के कर्त्ता या निकट संबंधी इस प्रकार नाम देकर प्रार्थना करते हैं –''हे बासु बुढ़ा, आपके नामसे पत्थर गाड़ रहे हैं। आज से हमारे घर में दुःख तकलीप नहीं होने देना। आज से दुःख नहीं खोजे हमें, आपके नाम से हम अच्छी तरह से खायेगें–पीयेगें और नाचेगें–डेगेंगे।''

इस प्रकार उराँव जाति में मृत व्यक्तियों के प्रति भी अपार श्रद्धा भक्ति है। इनका विश्वास है कि मृत व्यक्ति का आत्मा अब भगवान बन गया। इसी लिए घर के प्रत्येक पूजा–पाठ या दुःख के समय अपने पूर्जजों का नाम लेते हैं। क्योंकि मृत व्यक्ति का आत्मा अपना कुल देवता बन जाता है और अपनी सुख सुविधा के लिए प्रार्थना करते हैं। कोई भी चीज खाने से पहले पूर्वजों को देते हैं, उसके बाद ही खाते हैं। पर्व त्योहार या घर में किसी भी दिन पार–पाकवान बनता है, तो भी पूर्वजों को ही पहले देने के बाद खाना–पीना होता है।

3.2.5 राग के आधार पर

उराँव लोकगीत को राग के आधार पर भी वर्गीकरण करने का प्रयास किया गया। जैसे की कुछ किताबों में मिलता है। जैसे कुँडुख़ कत्थ पण्डी, पीयुष लकड़ा, कुँडुख़ फोकलोर, हॉन, मिंजुर झाइल, जुलियस कुजूर आदि। इन गीतों में राग के आधार पर गीतों को बांटा गया है। परन्तु उपर्युक्त वर्गीकरण में भी इन रागों के गीतों को गाया गया है। मुझे लगता है कि क्षेत्र विशेष पर इस तरह के राग पाये जाते हैं। जैसे–डोल रागे, जो साहे डण्डी के अन्तर्गत ही आता है। जिसे माध महीना से पहले चईत तक के राग को कहा गया है जो भूख–प्यास के समय गाया गया है। कहा गया है कि थोड़ा दिल को धीरज रखो, अब आम में मंजर लग गया है। अब यह फलेगा और पकेगा, हम सभी आम खाने के लिए नमक और मिर्चा लेकर आम खाने जायेगें। और सचमुच में धूप के दिनों में कहीं से आ रहे हैं, बगीचा में गये और पका आम मिल गया तो दिल बहुत खुश हो जाता है। और जब हवा में आम गिरता है तो उस समय तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहता है। जो निम्न गीत से पता चलता है।

127	टटेखा मंजरारा पेल्लो।	आम मंजर लगा लड़की
	धीरीजा नानय	धीरज धरो
	कड़ेमा नू बे–क मरीचा दोलो कन्तो	कमर में नमक मिर्च चाकु
	टटेखा मंजरारा पेलो,	आम मंजर लगा लड़की
	धीरीजा नानय	धीरज धरो
	दुलारो बलारो टटेखा।	दुलार प्यार आम
	खरा दुलारो खतेरा लगी।।	बहुत सुन्दर गिर रहा है
	कीड़ा अम्म ओनका बीरी।	भूख प्यास समय
	खरा दुलारो खतेरा लगी।।	बहुत सुन्दर गिर रहा है

इसी प्रकार चिरदी राग में भी है। (Kurux Folk-lore. 82) यह राग कहीं जेठ में गाया गया है तो कहीं भादों के महीना में।

128	खूड़ी खूड़ी पेल्लो	टोला टोला लड़की
	मन्न बेद्दा कादी।	मन्न खोजने जाती हो
	मयना निंग्हय पेल्ला	मन्न तुम्हारा लड़की
	कों–ड़ा नुम र'ई।।	कोना में ही है

जोंखस ही लोभे पेल्लो	लड़का के लोभ में लडकी
मन्न बेद्दा कादी।	मन्न खोजने जाती हो
मयना निंग्हय पेल्लो	मन्न तुम्हारा लडकी
कों–ड़ा नुम र'ई।।	कोना में ही है

इस गीत को हमारे उराँव समाज में सरहुल के अवसर पर गाया जाता है। इस गीत में एक लड़की 'मन्न' यानि धान कूटने का समठा, जिससे ओखली में धान कूटते हैं। उसी को किन्ही के घर से लाने के बहाने लड़की घर से निकल जाती है और देरी से आती है होगी। इस तरह का वह बार–बार बहाना करती है। इसी तरह धुड़िया राग और डोल राग के गीतों में भी हो सकता है। उराँव समाज में धुड़िया राग, जिस गीत को सुर्रा राग में गाते हैं उसे ही ''धुड़िया राग'' कहा गया हैं। (कु.क.प.130) जैसे कि

129	ई समय काला लगी रे	ये समय जा रहा है
	दोसर समय किर्रो का मला	दूसरा समय आयेगा या नहीं
	अगे अगे समय काला लगी रे	आगे–आगे समय जा रहा है
	ख़ोख़ा नू काल बर'आ लगी हरो	पीछे से काल आ रहा है
130	एन्देर बीनको अरगी दो अयंगो	क्या तारा उग रहा है माँ
	खेंसो खेंसो अरेगा लगी	लाल लाल उग रहा है
	चलकी बीनको अरगी दो अयंगो	झाड़ू तारा उग रहा है माँ
	खेंसो खेंसो अरेगा लगी	लाल लाल उग रहा है

इस तरह से देखा जाय तो क्षेत्र विशेष में भी गीत के राग, ताल एवं नृत्य में परिवर्तन पाया जाता है। गीत का बोल वही रहता है।

3.2.6 खेल गीत

झारखण्ड आदिवासी विरासत के लिए मशहूर है। जो आदिवासी संस्कृति भारतीय समाज की एक अमूल्य निधि है। सुदूर अतीत से इसकी अविरल धारा प्रभावित होती आयी है। यह विभिन्न संस्कृतियों का एक गुलदस्ता है। इसी लिए झारखण्ड की भूमि को आदिवासियों का हृदय स्थल कहा गया है। यह धारा कभी–कभी विस्मृति के गर्त में खोयी जान पड़ती है। जिन्दगी के उत्साह, उमंग और सपनों से भरे वह मासूम दिन, जब बहुत पीछे छूट चलते हैं, तब याद आता है वह अतीत, वह बचपन, वह शरारतें और उन दिनों से जुड़ी ढेरों सारे यादें। लेकिन यादों के इस काफिले से बचपन का जो याद उभरता है, वह अब कहीं नहीं दिखाई देता। वक्त के साथ बहुत बदल गया है बचपन। दिन–प्रतिदिन की धमा चौकाड़ी, तरह–तरह के खेल और छोटी–छोटी तकरारें, मस्ती और आपसी प्यार–सद्भव से भरे वह गुजरे पल अब कहां है? जिन्हें खेल कर कई पीढियाँ जवान हुई।

किसी देश के खेलकूद के अध्ययन से वहाँ के निवासियों के स्वाभाव, साहस और शक्ति का पता चलता है। जिस जाति के खेल जितने साहसपूर्ण और वीरता से युक्त होगें, वह जाति उतनी ही साहसी समझी जायेगी। खेल–कूद लोक संस्कृति के प्रधान अंग हैं। इसके अनुसंधान से यह जाना जा सकता है कि आदिम जातियों की अवस्था कैसे थी? उनके मनोरंजन के क्या साधन थे? (उपाध्याय,लो.सा.भू.187)।

3.2.6.1 खेल के उद्देश्य

खेल का मूल उद्देश्य छिपी हुई प्रतिभा को निखारना है। परन्तु आधुनिकता के इस दौर में बचपन के खेलों का कोई उद्देश्य नहीं रहा है। आज बचपन का खेल इलेक्ट्रोनिक मिडिया बन चुका हैं और हम माता पिता भी बच्चों को आधुनिकता के चकाचौंध में इलेक्ट्रोनिक खेल ही खेलाना पसन्द करते हैं। बचपन से ही इन्हें इलेक्टोनिक मिडिया का आदि बना दे रहे हैं। आगे चलकर इससे निकल पाना असम्भव जान पड़ता है। हाँ आज इनकी सख्त जरूरत है। पर अपने स्वस्थ को अच्छा रखने एवं बच्चों के दिमाग को तरोताजा बनाये रखने के लिए खेल बहुत ही जरूरी है। खेल के माध्यम से ही हम भेदभाव को दूर कर सकते हैं एवं सामूहिक भावना का विकास कर सकते हैं। अनिल उराँव (लोहरदगा, अगस्त 21, 2017) के अनुसार जैसे यूएसए, जर्मनी जैसे देशो में बच्चों को खेल के माध्यम से ही शिक्षा प्रदान की जाती है। परन्तु भारत जैसे देश में इस तरह की व्यवस्था नहीं है। अतः खेल का मूल उद्देश्य, बच्चों का शरीरिक एवं मानसिक विकास, ताकि बच्चा तन मन धन से स्वस्थ्य हो।

खेलों का उद्देश्य संघर्षों से उबरना, उनका सामना करने की क्षमता विकसित करना होता है। खेल भवना, जीवन में विपरीथ स्थितियों में मुकाबला

करने की साहस देती है। विषम परिस्थितियों में भी निराश और उदासी उसे नहीं घेरती। संघर्ष पूर्ण और तनाव से घिरा जीवन में खेल टॉनिक का काम करता है। हम सुख दुःख को असानी से लेना सीखते है। किताबी कीड़ा बनने वालों का जीवन असंतुलित रहता है।

3.2.6.2 खेल का महत्व

कहा जाता था कि ''खेलोगे कूदोगे, होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे, बनोगे नवाब।'' आज यह मान्यता बदल चुकी है। आज खेल हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। उराँव़ बच्चे इन खेलों को खेलने में आज भी माहिर हैं। इन खेलों को खेलने में बच्चे कभी उबते नहीं हैं। परन्तु आज यह दूरदर्शन, टेलीविजन एवं अन्य मनोरंजन के साधन आने से बचपन का खेल लुप्त होने के कगार पर है। जिनका ज्ञान का साधन पोथी नहीं, लोक विश्वास है। उस जमाने में बच्चों के मनोरंजन का साधन खेल ही था। खेल के माध्यम से अपने बुद्धि का परिचय भी देते थे। साथ ही खेलों के माध्यम से जीवन जीने की हर पहलुओं को स्पर्श करते थे। इन्हीं के माध्यम से ही बचपन में खेती–बारी से लेकर जीवन के सभी संस्कारों को अपने जीवन में लाते थे। कहा भी जाता है कि बच्चों को जैसे महौल मिलेगा, वह वैसे ही बनेगा। इसी कड़ी में वे बड़ों से जो सीखते हैं वे उसी को याद कर घर–दरवाजा बनाकर पति–पत्नी जैसे रहते हैं। यह बच्चों के लिए जीवन का एक अद्भूत पल होता है।

श्री अनिल उराँव के मत अनुसार ''बच्चों के शिक्षा में खेल को अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। खेलों से शरीर स्वस्थ्य और शक्तिशाली बनता है। रक्त संचार बढ़ता हैं। मांसपेशियां और हड्डियाँ मजबूत बनती है। पसीना निकलने से शरीर के विष तत्त्व बाहर निकलते हैं। पाचन क्रिया भी सुचारू हो जाती है। इस तरह से शरीर चुस्त और फुर्तीला बना रहता है। बच्चे और खेल एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। बच्चे की यदि खेल में रूचि न हो तो निश्चय ही वह चिन्ता का विषय बन जाता है। खेल शरीरिक विकास की नींव होती है। साथ ही बौधिक और भावनात्मक विकास के लिए भी आवश्यक है। खेल मन को रमते हैं। सामुहिक खेल बौधिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे आपसी–तालमेल और सूझ–बूझ विकसित होती है। सारे तनावों को भुलाकर मन जब खेलों में रम जाता है तो व्यक्ति जीवन का दुःख भूल जाता है। इस प्रकार तनाव मुक्त कर हमें मानसिक शान्ति भी प्रदान करता है।

खेल के माध्यम से बच्चों में सामूहिकता की भावना पैदा होती है। वे खेल में हार तो जाते हैं परन्तु प्रतिशोध की भावना नहीं रहती है। जाति–पाति का भेदभाव मिट जाती है। वे खेल को खेल के भवना से देखते हैं। यदि बच्चों को बचपन से ही खेल की भावना विकसित किया जाय तो वह खेल में अपना कैरियर भी बना सकता है। इन खेलों से सहयोग की प्रवृति लक्षित होती है। अंग्रेजी की एक कहावत है कि ''वाटरलू की लड़ाई क्रिकेट के मैदान में ही जीती

गई थी।'' जिसका आशय यह है कि ''साथ मिलकर काम करने की आदत से ही बैलिंगटन को विजयश्री प्राप्त हुई थी।'' आदिम लोगों में खेल कूद में सहयोग की भावना थी। वह आज भी उपलब्ध है। भारत के प्रत्येक राज्य में विभिन्न प्रकार के खेल पाये जाते है। यदि इसका सम्यक अध्ययन किया जाय तो लोक संस्कृति के अनेक तथ्यों का उनसे पता चल सकता है (उपाध्याय, लो.सा.भू.188)। खेल किताब के अनुसार ''विभिन्न प्रकार के स्थानों के 'साखा'' को ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित स्वास्थ्य और सुरक्षा सावधानियों को गतिविधियों के संचालन में लागु किया जाना चाहिए।[24] अतः उराँव समाज के अमूल्य ज्ञान एवं धरोहर को अच्छुन बनाए रखना, इसे लोगों के बीच फैलाना, अपनी भाषा, संस्कृति एवं रीति–रिवाज को संरक्षित रखना अति आवश्यक है।

3.2.6.3 बचपन का खेल

आज भी गांव देहातों में कुछ खेलों को खेलते हुए देखा जा सकता है। जिसे बड़े ही उत्साह के साथ खेलते हैं। इन्हीं में से कुछ को संयोजने का प्रयास किया है।

3.2.6.3.1 चाल गुटी

इस खेल को दो व्यक्ति के द्वारा खेला जाता है। एक पक्ष और एक विपक्ष। इस खेल को खेलने के लिए दोनों ओर छः छः गड्ढा की आवश्यकता होती है। प्रत्येक गड्ढा में पांच–पांच गोटी रखा जाता है। इसके बाद खेल खेला जाता हैं। जो पहले गोटी चलता है, वह जिस गडढा से गोटी उठाता है, उसे छोड़ कर गोटी चलता है, जहाँ गोटी खत्म होता है उससे आगे गडढा का गोटी उठाकर फिर चलता है। यदि चलते–चलते उसका गोटी जहाँ खत्म होता है उससे आगे विपक्षी तरफ गढढ़ा खाली होने पर उससे आगे का गोटी को उठायेगा। फिर यही क्रिया विपक्षी टीम करता है। खेल खत्म होने पर जो जितना गोटी अधिक जीतता है उतना घर वह विपक्षी का घेर लेता है। इस प्रकार से चाल गुटी खेलने में हार–जीत का फैसला होता है।

3.2.6.3.2 इक्कड़िग्ग बक्कड़िंग

स्थिति :– इस खेल में तीन व्यक्ति होते हैं। सभी एक दूसरे का हाथ पकड़ते है और सभी हाथ पकड़े हुए ही एक दूसरे की ओर घुस कर विपरीत दिशा में हो जाते हैं। इसके बाद सभी अपने पैर को एक दूसरे के पैर में, एक पैर को फंसाते हैं और एक पैर से खड़ा होते है। हाथ छोड़कर सभी अपने–अपने हाथों से ताली बजाते और नाचते हुए कहते हैं–

[24] http://hssnorway.org/wp-content/uploads/2012/06/khelbook.pdf

131	इकड़िंगं का बकड़िंग कोय चिलम ढाप ढाप''	इकड़िंग या बकड़िंग लड़की हुका बन्द बन्द

बोलते हैं। यह क्रिया तब तक होता है जब तक पैर एक दूसरे से न छूट जाए। इस तरह का वे बार–बार करते हुए मनोरंजन करते हैं।

3.2.6.3.3 धप्पा

इसे लुकाछिपी का खेल भी कहते हैं। इस खेल में कितने भी व्यक्ति रह सकते है, परन्तु चोर एक ही होता है। चोर सभी छुपे हुए व्यक्ति को खोज कर निकालता है। इसमें चोर पकड़ने के लिए तीन–तीन मिलकर हांथ आगे पीछे फेकते हुए ''जुमरा जुमरा बेलायो नेखय मल जुमरा आद खलबर'' (मिले–मिले राजा जिनका न मिले से चोर) कहते हुए हाँथ मिलाते है, जिसका नहीं मिलता है वह चोर होता हैं। यह क्रिया तब तक होता है जब तक अन्तिम चोर न पकड़ा जाय। जब चोर पकड़ा जाता है उसे गिनती करने के लिए एक निश्चित संख्या दिया जाता है, उसे वह एक निश्चित स्थान पर जाकर गिनती करता है उसी दौरान सभी छिप जाते है। इसमें चोर जिसे सबसे पहले देखता है, उसका नाम बताकर ''फलना आसपास ''कहता है। इसी प्रकार सभी को कहना पड़ता है। इसमें जिसे वह सबसे पहले बताता है वही चोर होता है। परन्तु यह भी है कि कहीं से जो छिपा हैं वे धप्पा न कर दे, इससे भी बचना पड़ता है। यदि कोई धप्पा करे तो पुनः चोर बन जाता है। इस लिए वह धप्पा करने वालों से भी सावधान रहता है। इस तरह से यह सिलसिला चलता रहता है। (जीरामनी कुमारी, खरता, अगस्त 24, 2015)

2.2.5.3.4 एन्दरा हो'ओय? (क्या लो गे?)

यह समूह का खेल है, इसमें दो समूह होता है। दोनों पंक्ति में लड़का–लड़की मिलाकर खड़े होते हैं। इसमें पहला पंक्ति के नाचते गाते आगे बढ़ते हैं।

3.2.6.3.4.1 पहला समूह

132	अलुवा गहि दाम, मसाला गहि दाम, नासगो नली छम छम छम''	आलु का दाम मासाला का दाम भाभी नाचे छम छम छम

वे दूसरे समूह के पास आते हैं तो दूसरा समूह पुछता है –
''एन्दरन हो'ओर?'' (क्या लोगे?)

3.2.6.3.4.2 दूसरा समूह

''बर या ख़ई '' (दुल्हा या दुल्हन) कहते है। तो दूसरा समूह उन्हे जो बोलते हैं वही दिया जाता है। वे उसे लेकर वापस अपने स्थान पर आकर खड़े हो जाते हैं। पुनः वही क्रिया दूसरे समूह भी नाचते गाते पहला समूह पास जाते हैं और जैसा पहले वाले किये थे उसी तरह वे भी करते है। यह सिलसिला जारी रहता है। (सुमित्रा कुमारी, पुगु बड़का टोली, मई 10, 2015)

2.2.6.3.5 गुगु चू

इसमें एक व्यक्ति लेटा हुआ है और कोई छोटा बच्चा को पैर में सुला कर या बैठा कर पैर के सहारे उपर उठाता है। उठाने कि क्रिया के समय वह ''गुगु चू पड़की चू'' बोलता है। इससे बच्चे बड़े ही आनन्दित रहते है।

3.2.6.3.6 छुर्रे

इस खेल में व्यक्तियों की संख्या का हिसाब नहीं है। कितने ही व्यक्ति रह सकते हैं। परन्तु पक्ष और विपक्ष में संख्या बराबर होना चाहिए। इस खेल में पहला पंक्ति छुर्र का होता है। बीच का लम्बा डढ़इया, बीच–बीच का विपक्षी टीम के सदस्यों को रोकने के लिए है। उनमें से एक नमक घर होता है।

सभी पंक्ति में एक–एक व्यक्ति खड़े हो जाते हैं, लम्बा पंक्ति वाला व्यक्ति डढ़इया एवं छुर्रे दोनों में आ जा सकता है। बाकी पंक्ति वाला अन्य पंक्ति में नहीं जा सकते हैं। छुर्रे पंक्ति में जब छुर्रे बोला जाता है तभी सभी विपक्षी समूह के लोग अन्दर प्रवेश करते हैं परन्तु पंक्ति में खड़े व्यक्तियों से बचना भी है। यदि वह छुवा जाता है तो वह मर जाएगा यानि पंक्ति से बाहर हो जाएगा। यह भी है कि यदि कोई व्यक्ति छुर्रे पंक्ति सें बाहर है तो वह नहीं छुवाता है जब तक वह अन्दर प्रवेश नहीं कर जाता।

सभी पंक्ति के अन्त वाला नमक घर होता है। जिसमें सभी प्रवेश करना चाहते हैं। परन्तु उनमें से कोई एक व्यक्ति प्रवेश करता है और वह नमक लेकर बाहर आ जाता है तब वह दूसरे व्यक्ति को भी दे सकता है। एक बात ध्यान देने योग्य है, यदि कोई व्यक्ति नमक लेकर नमक घर से बाहर आ जाता है और यदि नमक घर में कोई नहीं है तो वह पुनः नमक घर में प्रवेश नहीं कर सकेगा। यदि प्रवेश कर जाता है तो वह मर जाएगा और खेल खत्म हो जाएगा। इसके बाद दूसरा समूह खेलने आएगा।

जो व्यक्ति नमक लेकर चला है, वह जिसे भी नमक देगा उनमें से यदि कोई एक छुवा जाता है तो वह सभी व्यक्ति बाहर हो जाएगें और यदि नहीं छुवा कर उनमें से कोई एक व्यक्ति छुर्र करता है तो उस समूह का जीत होता है।

खेल में यह भी ध्यान देना है कि किसी भी पक्ष वाला व्यक्ति को पंक्ति से बाहर नहीं निकलना है, यदि वह किसी कारण से बाहर निकल जाता है तो वह मर जाएगा और उस खेल से बाहर हो जाएगा। इनमें से यदि कोई नमक

लेकर बाहर होता है तो पुरा खेल खत्म हो जाएगा और पुनः विपक्षी समूह को मौका मिलेगा।

2.2.6.3.7 नेखय हकुड़ (किनका घोड़ा)

इस खेल में दो, चार, छः कितने भी व्यक्ति रह सकते हैं। सभी का मुँह एक दूसरे के सामने होता है। सभी अपने हथेली को घोड़ा की आकृति देते है। उनमें से ही एक अपना उँगली दूसरे का में रख कर कहता है।

133	नेखय हकुड़ – बेलस गहि	किसका घोड़ा –राजा का
	ल'ओन चि'ओन–तेंग्गोन चि'ओन	मार दूँगा–बता दूँगा
	अम्म ओनय हकुड़।''	पानी पियो घोड़ा

यह तब तक चलता रहता है जब तक सभी खेलने वालों का हाँथ सपाट न हो जाय। इसके बाद सभी अपने हथेली को सपाट रखते हैं। इसके बाद में पुनः कहा जाता है। (सीता कुमारी, चुगलु)

134	इचिर मिचिर धमची मिचिर	इचिर मिचिर धमची मिचिर
	कोइल अच्च भुसड़ी अच्च	कोइल कांटा भुसड़ी कांटा
	अन'आ मन'आ गोजा परता	किस्म किस्म का गोजा जंगल
	मईया तितिर चींखीं देमका	ऊपर तितिर रोती देमता
	कादस राजा	जाता है राजा
135	आदर चटकन लेदेर चटकन	आदर चटकन लेदेर चटकन
	खैरा गोटी रस रस टोली	खैरा गोटी रस रस टोली
	नामे तेंग्गा बेनी भाई	नामे बताओ बेनी भाई
	तब कालोय गंगा पार।।	तब जाओगे गंगा पार
136 (ना)	आम को जाम को तेताली चियां	आम को जामुन को इमली बीज
	चियां बोले चायं चुई	बीज बोले चांय चुंई
	उठ भउजी आईग जोरेक	उठो भाभी आग जलाने
	बबु गेलक नेवता	बाबु गया नेवता
	का – का नाम होलक	क्या क्या नाम हुआ
	बबु किलनक बिछिया।।	बाबु खरीदा बिछिया

अलग–अलग क्षेत्रों में उपर्युक्त गीत में से किन्ही एक गीत गाया जाता है। इस गीत का अन्त जिसके हाँथ में होता है वे अपने हाँथ को अपने काँख (गुतु) में रखते हैं। यह क्रिया सभी के खत्म हो जाने तक चलता रहता है। इस तरह से सबका खत्म हो जाता है। उसमें से एक जो उपर्युक्त गीत को गाता है वही ताला खोलता है। ताला खोलने के लिए निम्न गीत गाता है–

137 ''ची चन्दो कुन्जी, चुरूठ'' दो चाँद चाभी ''चुरूठ''

इस तरह कहते हुए सबका ताला अर्थात काँख से निकालते हैं परन्तु मुटठी सबका बन्द रहता है। फिर मुटठी को खोलने के लिए पुछता है –

प्रश्न – मुटठी नू एन्दरा र'ई? (मुटठी में क्या है)
उत्तर – मण्ड़ी मलता अमख़ी। (भोजन या सब्जी) दोनों में एक बताते हैं।
प्रश्न – नीन मोख़ोय का चन्दो गे चिओ'य? (तुम खाओगे या चाँद को दोगे)
उत्तर – नीन मोखा अन्ती। (तुम खाओ तब)

इस तरह से सभी का मुटठी खोला जाता है और सभी को नहाने के लिए भेजते हैं। सभी नहा कर आते हैं। तो उनसे प्रश्न करते हैं–

प्रश्न – एन्देर अम्म ने एमचकय? (क्या पानी में स्नान किया)
उत्तर – कादो अम्म नू। (कीचड़ पानी में)

यहाँ पर जिसको जैसा बोलना रहता है वैसा बोलता है। गन्दा पानी बोलने पर उसे पुनः स्नान के लिए भेजा जाता है जब तक वह साफ पानी नहीं कहता है। इस प्रकार से यह खेल सम्पन्न होता है।

3.2.6.3.8 लीख फटाफट

इस खेल में कितने भी बच्चे रह सकते हैं। सबसे पहले एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोलाई में खड़े हो जाते है। उनमें से एक बीच में रहता है। सभी मिल कर बीच वाला से पुछते हैं –

निम्बस एन्देर केरस – पटना। (तुम्हारा पिताजी कहाँ गया–पटना
पटना ती एन्देर ओन्दरस – बक्सा। (पटना से क्या लाया – बक्सा)
बक्सा नू एन्दरा र'ई – साड़ी। (बक्सा में क्या था –साड़ी)
साड़ी नू एन्दरा र'ई – साया। (साड़ी में क्या है – साया)
साया नू एन्दरा र'ई – जाकिट। (साया में क्या है – जाकिट)
जाकिट नू एन्दरा र'ई – परकला। (जाकिट में क्या है – आईना)
परकला नू एन्दरा र'ई – बगिरका। (आईना में क्या है – कंघी)
बागिरका नू एन्दरा र'ई – चुट्टी। (कंघी में क्या है – बाल)
चुट्टी नू एन्दरा र'ई – लीख। (बाल में क्या है – लीख)
लीख आने के बाद बोलते हैं –

138	लीख फटा फइट ला–ओत	लीख फटाफट मारेगें
	झका झुमाईर बे–चोत।''	झका झुमर खेलेगें

बोलकर सभी एक साथ बैठ जाते हैं। इस तरह से सभी गोलाई के बीच में आने का बारी आता है और इसी तरह के कहते हुए खेलते हैं।

3.2.6.3.9 कोना–कोना

इस खेल में पाँच व्यक्ति का होना अनिवार्य होता है। कोना–कोना का खेल घर के अन्दर का कोना को अपना घर मानते है और इसमें कोई चोर को घुसने नहीं देते हैं। इसमें भी चोर पकड़ने के लिए तीन व्यक्ति मिल कर हाँथ को फेकते है और हाँथ को मिलाते हैं। जिसका नहीं मिलता है वह चोर हो जाता है। चोर पकड़ने के लिए भी गीत है। जो गीत धप्पा खेल में चोर पकड़ने के लिए बताया गया है। (सीमा कुमारी, चुगलु, अगस्त, 05 2015)

चोर पकड़े जाने के बाद चारों अपने–अपने कोना में चले जाते है और जब एक कोना वाले दूसरे के कोना में जाने का प्रयास करते है तो चोर उनके कोना में घुसने का प्रयास करता है। जो अपना कोना को बचा नहीं पाता वह चोर हो जाता है। कोना में घुसने के समय भी गीत है :–

139	कों–ड़ा कों–ड़ा एका कों–ड़ा?	कोना कोना किस कोना?
	आ कों–ड़ा।।''	उस कोना

कहते हुए किसी कोना में घुसने का प्रयास करता है।

3.2.6.3.10 ब'आ तो कोकरा (बोलो तो मुर्गा)

ब'आ तो कोकरो का अर्थ ''बोलो तो मुर्गा'' होता है। दो व्यक्ति हांथ मिलाकर और हांथ ऊपर उठाकर खड़े रहते हैं, उनमें से एक अयो और बबा बनते हैं। कुछ बच्चे आगे थोड़ा झुककर खडे हैं। उनका पीठ पकड़कर बाकि सभी खड़े हो जाते हैं। तत्पश्चात चलना शुरू करते हैं। चलते समय गीत गाते चलते हैं। (जीरामनी कुमारी, खरता, अगस्त 24, 2015)

140	कौड़ी का रान–भान,	पैसा का छितिछान
	कौड़ी खेले बिजो बीरी,	पैसा खेले सुबह शाम
	चुपे–चुपे नजइर	छुप–छुप के नजर
	चली बली पंख लागे।।	चले पंख लगे

इस तरह से गाते हुए खड़े बच्चों को पार करते है। उन्हीं में से अन्तिम

बच्चा को दोनों फंसा लेते हैं, जब वे दूसरी बार घुम कर आते हैं तब वे पुछते हैं:–

प्रश्न – नीम एम्हय कोकरोन एन्देर गे बझा बाचकर?
(आप लोगों ने हमारा मुर्गा को क्यों फंसाया?)
उत्तर – ईद एम्हय ओन्द उड़्डू ख़ेस्सन मोक्की र'ई।
(यह हमारा एक उड़िया धान को खाया है।)
प्रश्न – चींखताय तो कोकरोन?
(बोलने बोलो तो मुर्गा को?)
उत्तर – चींख़य तो कोकरो।
(बोलो तो मुर्गा)

जो उनके जाल में फंसे हुए रहते हैं वे ''कोंकरों चों'' कहते हैं।

प्रश्न – ओख़ो मुक्की र'ई ख़ेस्सन, चींख़ा हूँ पोल्ला लगी? (कहाँ खायी है धान को, बोलने ही नहीं सक रही है?)
उत्तर – मल मुक्की र'ई। (नहीं खायी है)

तब जो फंसाये हुए रहते हैं उन्हीं में एक बोलते हैं ''चलिए तब अयो या बाबा'' इसमें अयो बोलने पर अयो का पैर पकड़कर बैठे रहेगें और बाबा बोलने पर बाबा का पैर पकड़कर बैठ जाएंगें।

इस प्रकार से सभी बच्चे अन्त में खत्म हो जाते है। इसके पश्चात सभी बच्चों को घुमाने के लिए ले जाते हैं। जाते समय भी गीत गाते हुए जाते हैं :–

141 कडरांग कुडरूंग
कडरांग कुडरूंग

कुछ दुर जाने के बाद यह सभी भाग जाते हैं। इस तरह से उराँव़ समाज के अलावे अन्य समाज में कई ऐसे बचपन का खेल हैं, जिसे बच्चे बडे ही उत्सुक्ता पूर्वक खेलते थे।

3.2.6.3.11 जंगली गदा

इस खेल को बच्चों का महत्वपूर्ण खेल माना जाता है। इस खेल में तीन, चार या इससे अधिक बच्चे भी रह सकते हैं। यह खेल एक पैर से खेला जाता है। इसमें खेलने वाले अपना गोटी प्रथम घर में रखता है, जिस घर में गोटी है, उस घर को डेग कर पार करता है और आगे जाकर जहाँ बीच में लकीर है, वहाँ दोनों पैर से खड़ा होता है, बीच में एक पैर तथा आगे वाला में

दोनों पैर रखता है। फिर वही स्थिती में लौटता है, लौटते वक्त अपना गोटी उठाता है फिर उसे डेगता है। यही स्थिती दूसरा घर, तीसरा घर क्रमशः चलता रहता है। जब सभी घर हो जाता है तब खेल मैदान से उस पार गोटी फेकता है। जिसे ''गंगा पार'' कहते हैं। वहाँ से गोटी लाकर फिर राज लेने के लिए जाता है। जब गंगा पार हो जाता है तब राज लेने के पहले पुछता हैः– ''उइठी या बैठी''। यदि उइठी बोलने पर उठकर राज लेगा, बैठी बोलने पर बैठकर। जिधर राज लेना है, पीठ की ओर करते हुए अपना गोटी पीछे फेकते हैं। गोटी जिस घर में जाकर रूकेगी वही उसका घर हो जाएगा। यदि किसी कारण से लकीर को छू दिया तो अगले बार जब उसका पारी आएगा तभी वह राज ले सकेगा अन्यथा नहीं। जो राज लेगा वह केवल अपना राज में घुस सकेगा परन्तु दूसरा नहीं। यदि गोटी लकीर को छू दिया या खेलते समय पैर से लकीर यदि सट जाता है तो खेल की भाषा में ''गया'' कहा जाता है और वह अपना पारी का इन्तीजार करेगा।

3.2.6.3.12 नाक घरवा

इस खेल में गोटी प्रथम घर में रखा जाता है और दहिना की ओर से एक पैर से लंगड़ी चलना पड़ता है। सबसे पहले तो अपना गोटी प्रथम घर में रखा जाता है। इस खेल में एक पैर से डेगना है तथा अपना गोटी को उसी पैर से घर से बाहर ठेलना है, उसके बाद क्रमशः आगे बढ़ना है और अन्त में बीच में जाकर दोनों पैर से खड़ा होकर अपना गोटी को घर के बाहर ठेलता है, उसे उसी स्थान से डेगकर थामना अर्थात पैर लगाना है। इसी तरह सभी घर पूरा हो जाने के बाद राज लिया जाता है। जो राज लेगा उसे अपना राज में दोनों पैर से खड़ा हो सकता है परन्तु विपक्ष उसमें पैर नहीं रखेगा, उसे छलाँग लगाकर पार करना पड़ता है। यदि गोटी पंक्ति से सट जाता है तो ''गया'' हो जाता है अर्थात वह बाहर हो जाता है। इससे दूसरा को मौका मिलेगा।

3.2.6.3.13 रेचा

रेचा दो या तीन व्यक्ति से खेला जाता है। यदि तीसरा व्यक्ति है तो दोनों बैठे हुए व्यक्ति को घुमाता है। रेचा में दो व्यक्ति दोनों छोर पर बैठते हैं। दोनों हाँथ से रेचा का लकड़ी को पकड़ता है तथा दोनों पैर को झुलाता है अर्थात जमीन पर सटने नहीं देता है। तीसरा व्यक्ति रेचा को घुमाता है। जब किसी का पैर जमीन पर सट जाता है तो दूसरे व्यक्ति को मौका दिया जाता है। इस तरह से खेल चलता रहता है। रेचा चलाने समय उसका आवाज अच्छी सुनाई दे एवं वह अच्छी तरह से चले, इसके लिए रेचा का खुटा के शंकु भाग में करंज का बीज डाल दिया जाता है।

3.2.6.3.14 बित्ती

बित्ती अर्थात गोली–डण्डा या इसे देहाती भाषा में ''बितवाईर'' कहते हैं। यह दो समूह के बीच खेला जाता है। दोनों समूह में बराबर–बराबर रहते हैं। इसमें बित्ती लगभग तीन से चार इंच लम्बाई तथा डण्डा डेढ़ या दो फीट का होता है। बित्ती को चेगने के लिए छोटा सा गडढ़ा खोदा जाता है। इसके लिए एक निश्चित संख्या रखा जाता है। वह संख्या पूरी होने पर ही जीत होता है।

बित्ती पहले कौन समूह खेले, इसके लिए टॉस की तरह किसी झेटकी (खपरा का टुकड़ा) को एक तरफ थूक से भिगाते है और उसमें से एक समहू थूक या सूखा बोलते हैं फिर उसे उपर फेकते हैं। मान लिया एक समूह सूखा बोला और सुखा हुआ तो वह समूह पहले खेलेगा। जो समूह खेलता है उसका एक व्यक्ति छोड़ बाकी बैठ जाते हैं और दूसरा समूह लोकने अर्थात कैच करने के लिए आगे की ओर जाते हैं।

जो खेलता है वह गुल्ली अर्थात बित्ती को डण्डा के सहारे चेंगता (फेकता) है, यदि उस बित्ती को विपक्षी समूह कैच करता है तो वह खेल से बाहर हो जाता है। फिर उसी समूह के दूसरे व्यक्ति को खेलने का मौका दिया जाता है। फिर वह वही कार्य करता है। यदि उसे कैच करने नहीं सकते हैं तो वह डण्डा को उसी स्थान पर रख देता है। फिर दूसरा समूह उस डण्डा को गुल्ली से मारता है। यदि उस को लग जाता है तो वह भी बाहर हो जाता है। यदि नहीं तो वह उस गुल्ली को उछाल कर मारता है, मारते समय भी विपक्षी समूह से बचना है। जितना सकता है उतना वह मार लेता है। यदि उसी दौरान कोई कैच करता है तो वह समूह उसी बित्ती से डण्डा को नापता है, यदि वह डण्डा पाँच बित्ती होता है तो उतना ही उस डण्डा से नापते हुए आता है। परन्तु कैच नहीं करने पर वह कदम के अनुसार 1, 2, 3,. . गिनती करते हुए आता है। यदि निश्चित संख्या नहीं पुरा होता है तो वह फिर खेलता है। इस तरह से यदि सभी को बाहर करते हैं तब ही दूसरे समूह को मौका दिया जाता है।

जो समूह निर्धारित संख्या पूरी कर लेता है। वह समूह का कोई एक व्यक्ति बारी–बारी से दोनों हाँथ से डण्डा के सहारे गुल्ली को नचाता है, जितना बार नचा सकता है। नचाते समय भी विपक्षी समूह गुल्ली को कैच करता है तो उसे एक बार जितना फेक सकता है उतना हाथ फेक सकता है। परन्तु वह जिस हाँथ से गुल्ली को नचाता है और कैच करता है उसी हाँथ से फेकना पड़ता है। जो नचाता है वह गुल्ली को उछाल कर मारता है इसमें भी विपक्षी समूह कैच करता है तो भी जिस हाँथ से मारते हैं उसी हाँथ से वापस फेकते हैं। इस तरह से पक्ष समूह का सभी खत्म हो जाने पर उन्हे बीतना पड़ता है। इसमें विपक्षी समूह चाहे तो अपना बित कर पक्ष वाले समूह को उल्टा बितवा सकते हैं क्योंकि जो वह कैच किया है उसे पूरा बीत कर वह अपना फेक सकता है। बीतने के समय अकेले नहीं सकेगें इसलिए दो व्यक्ति बीतते है। बीतने के

लिए बित्ती बोलते हुए दौड़ना है। जब एक व्यक्ति को सांस अटकने लगता है तो वह हाँथ खड़ा करता है तो दूसरा व्यक्ति बीतना आरम्भ करता है। इसी तरह से बीतना पूरा करता है। यदि बितते समय कहीं पर सांस अटक जाता है तो पुनः पक्ष समूह एक–एक बार मारता है। इससे विपक्षी समूह को फिर से बितना पड़ता है। जब तक बितना खत्म नहीं करते खेल समाप्त नहीं होता है।

3.2.6.3.14.1 बित्ती खेल का दूसरा भाग

बित्ती का दूसरा भाग को ''खटवाईर'' कहा जाता है। परन्तु इसमें दो समूह का खेल नहीं होता है। इसमें सिर्फ एक व्यक्ति खेलता है और बाकि सभी खटते है अर्थात क्षेत्ररक्षण करते हैं। इसमें गुल्ली और डण्डा पहले की तरह होता है। सिर्फ इसमें एक गोलाई के अन्दर एक गडढ़ा होता है उसी से बित्ती को चेगना होता है।

इसमें भी पहले खेलने के लिए टॉस होता है फिर बारी–बारी से सभी खेलते हैं। इसमें एक व्यक्ति बित्ती को चेंगता है और बाकि सभी बित्ती को कैच करने के लिए जाते है। यदि कैच कर लिए तो वह बाहर हो जाता है और वह फिर क्षेत्ररक्षण करता है। इसके बाद पुनः दूसरा खेलता है। यदि कैच करने नहीं सकते हैं तो उस बित्ती को उस गोलाई के अन्दर घुसाने का प्रयास करते हैं, खेलने वाला उस गोलाई में नहीं घुसने देने को प्रयास करता है। गोलाई में घुसाने के लिए पीछे तरफ से कुछ व्यक्ति खड़े रहते हैं ताकि बित्ती बाहर जाय तो रोके और गोलाई के अन्दर कर सके। यदि बित्ती घुस जाता है तो वह स्वतः बाहर हो जाता है और दूसरा को खेलने का मौका मिलता है।

3.2.6.3.15 एड़पा पली (घर–दरवाजा)

एड़पा पली अर्थात घर दरवाजा। इसमें बच्चे बालु का घर–दरवाजा बनाकर खेलते है। इसमें घर के माता–पिता जिस तरह घर का काम–धाम कर घर चलाते हैं। इसमें खाना बनाने से लेकर शादी विवाह, मरण तक का सारा काम एड़पा–पली के खेल में खेलते हैं। इनसें बच्चों में जीवन जीने की कला और संस्कृति की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

3.2.6.3.16 आतीर–पातीर

आतीर–पातीर खेल समूह द्वारा खेला जाता है। इसमें दो–दो बच्चे एक दूसरे का हाँथ पकड़कर हाँथ उपर उठाते हैं। इस तरह से पांच–छः का समूह खड़ा होते हैं। इसमें बच्चे सबसे पहले आगे की ओर झुके हुए रहते है, उसी का पीठ पकड़कर सारे बच्चे उसी तरह झुककर ही आगे बढ़ते है। बढ़ते समय गीत भी गाते हुए कदम से कदम मिलाकर चलते हैं।

142	अतीर–पतीर दिगहा तीर,	अतीर–पतीर लम्बा तीर
	ने कमचा गांधी तीर	कौन बनाया गांधी तीर
	ने का गे, किचरी गे	किसके लिए, कपड़ा के लिए
	नेखय बेन्जा, बेलस गही	किसका विवाह, राजा का
	एन्दरा बजा, ढांक बजा	क्या बाजा, ढ़ोल बाजा

बोलते हुए आगे बढ़ते जाते है। इसमें जो खड़े रहते हैं, वे प्रश्न करते है और घुसने वाले उत्तर देते है। जो बहुत ही सुन्दर दिखाई देता हैं परन्तु अब तो ऐसा लगता है कि आधुनिकता की तेज धारा ने बच्चों को भी एक दूसरे से अलग थलग कर अपने–अपने आंगन तक सीमित कर दिया है। स्वचालित खिलौने, दूरदर्शन और सेटेलाईट चैनलों ने बचपन की तस्वीर ही बदल दी है। रही सही कसर पूरी कर दी है कि किताबों के बढ़ते बोझ ने उम्र से जुड़ी चंचलता, बालुसुलभ शरारतें और सहजता अब कहाँ हैं। कुल मिलाकर बचपन की पूरी तस्वीर ही बदल गई है। उस समय बचपन का मतलब कुछ अलग ही था। अब बच्चों के हाथों में स्मार्टफोन ही उनकी खेलों की दुनियां है और हमारा बचपन का खेल कहीं खो गया। बच्चों में अब वो कौतुहल नहीं रह गया है।

उराँव बच्चों में बचपन के खेल की प्रासंगिकता आज भी गाँव देहातो में बनी हुई है जो संचार के साधनों से दूर हैं। आज टेलिविजन एवं अन्य मनोरंजन के साधनों का आविष्कार के फलस्वरूप इसकी प्रासंगिकता का अभाव होता जा रहा है। आज कई गांव देहातों में तास के पत्तों को मनोरंजन का साधन बना लिया है। जिससे उनका बौधिक एवं शरीरिक विकास नहीं हो पा रहा है। इस प्रकार बचपन का खेल व्यक्ति और समाज से वंचित होता जा रहा है। स्पष्ट है कि खेल हमारे स्वस्थ्य के लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण है। स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मन निवास होता है। स्वस्थ्य व्यक्ति केवल अपना जीवन संवारता है। वह दुनियां से अन्याय, शोषण और हर बुराई से लड़ने की हिम्मत प्राप्त करता है। ''अबकी बिछड़े तो किताबों में मिलेगें।'' इस कहावत की चरितार्थ सचमुच देखने के लिए मिल रही है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि खेल जीवन के अभिन्न अंग हैं और खेल को शिक्षा के साथ जोड़कर बचपन के खेल को विलुप्त होने से बचाया जा सकता हैं। अन्यथा बचपन का खेल सिर्फ किताबों में ही देखने के लिए मिलेगें।

3.2.7 बाल गीत

बच्चों के जितनी भी कियायें हैं–जैसे उठना–बैठना, चलना–फिरना, कूदना, किसी वस्तु को पाने के लिए मचलना, घुटनों के बल चलना तथा थिरक कर नाचना आदि। इन सभी के संबंध में लोक गीत पाये जाते हैं। ये बालक के किया कलापों से संबंध रखने वाले गीतों को ''बाल गीत'' कहते हैं। इस तरह की गीत बचपन से ही सुनते आ रहे हैं। जो आज के बच्चे बिलकुल भूल गये हैं। कुडुख़ में बाल गीत कुछ इस प्रकार के हैं (डॉ0 नारायण उराँव,चि.ड.ख़ी,02)।

143 **ची चन्दो पपा**

ची चन्दो पपा,	दो चाँद रोटी
घुड़ गडडी नू खतरा,	गोबर गड्ढा में गिरा
झांझो पच्चो पेत्ता	झांझो बुढ़िया उठायी
तान–तान मोक्ख,	खुद खायी
एंग्गा के मल चि'च्चा	मुझे नहीं दी
ची चन्दो पपा।।	दो चाँद रोटी

ची चन्दो पपा,	दो चाँद रोटी
छिरका मला बरिका,	छिलका नहीं बारा
ईख़का मला रोक्का,	ठण्डा नहीं गर्म
इंगड़ी अरा एंग्गा	बहन और मुझे
, ची चन्दो पपा	दो चाँद रोटी
ची चन्दो पपा।।	दो चाँद रोटी

144 **चकर मकर**

चकर मकर ए–रदय,	चकर मकर देखते हो
अड्डो मेक्खो ख़ापदय	बैल वैग्यरह चराते हो
ए–ड़ा निंग्हय बोंग्गा,	बकरी तुम्हारा भागा
चिगला चरा मंज्जा।।	सियार चारा हुआ

चकर मकर ए–रदय	चकर मकर देखते है
एड़पा पली बे–चदय,	घर दरवाजा खेलते हो
भेण्डो निंग्हय बोंग्गा,	भेंड़ तुम्हारा भागा
हुण्डरा चरा मंज्जा।।	हुण्डरा चारा हुआ

चकर मकर ए–रदय,	चकर मकर देखते हो
लस्सा ठुङही ननदय,	लासा ठोंगही करते हो
बछिया निंग्हय बोंग्गा,	बाछी तुम्हारा भागा
हड़हा चरा मंज्जा।।	बाघ चारा हुआ

145 चिंचि बुँची

चिंचि बुँची लग्गय,	चिंचि बुंची लगो
पलखंन्जा खंज'अय,	खीरा फलो
इङड़ी ए–म मोखोम।।	बहन हम खायेगें
चिंचि बुँची लग्गय,	चिंचि बुंची लगो
कुहु पदा मनय,	कुहू पदा हो
इङड़ी ए–म मोखोम।।	बहन हम खायेगें
चिंचि बुँची लग्गय,	चिंचि बुंची लगो
गोसो कठड़ा परदय,	गोसो कठड़ बढ़ो
इङड़ी ए–म मोखोम।।	बहन हम खायेगें
चिंचि बुँची लग्गय,	चिंचि बुंची लगो
नौर लट्ठा मनय,	सखुआ लट्ठा हो
इङड़ी ए–म मोखोम।।	बहन हम खायेगें

146 चेरे–बेरे

चेरे–बेरे चेरे–बेरे चीं–चीं–चीं,	चेरे बेरे चेरे बेरे चीं चीं
चेरे–बेरे, चेरे–बेरे, गुल्ले मिठाई ची	चेरे बेरे चेरे बेरे गुड़ मिठाई दो
चेरे–बेरे चेरे–बेरे चीं–चीं–चीं,	चेरे बेरे चेरे बेरे चीं चीं
चेरे–बेरे, चेरे–बेरे, दुदही मण्डी ची	चेरे बेरे चेरे बेरे दूध भात दो
चेरे–बेरे चेरे–बेरे चीं–चीं–चीं,	चेरे बेरे चेरे बेरे चीं चीं
चेरे–बेरे, चेरे–बेरे, पेन्ट झुला ची।।	चेरे बेरे चेरे बेरे पैन्ट शर्ट दो
चेरे–बेरे चेरे–बेरे चीं–चीं–चीं,	चेरे बेरे चेरे बेरे चीं चीं
चेरे–बेरे, चेरे–बेरे पुथी पेन्छो ची।।	चेरे बेरे चेरे बेरे किताब पेन दो

चेरे–बेरे चेरे–बेरे चीं–चीं–चीं,
चेरे–बेरे, चेरे–बेरे लुरकुड़िया
काला ची

चेरे बेरे चेरे बेरे चीं चीं
चेरे बेरे चेरे बेरे विद्यालय
जाने दो

147 **पईरी मंज्जा**

कोकरो ब'ई कोकरो–कों
कटड़ी ब'ई कोट–कोट।।
हाचुंग–हुचुंग ढिंक्की ब'ई,
फेचेर–फेचेर कें–तेर।।

एम्बस ढिंक्की चुंज्जदस,
इग्यो कींस'ई तीखिल।।
पइरी मंज्जा इङड़ी ब'ई,
चो'आ गुचा लुरकुड़िया।।

मुर्गा बोलता है कोकरो कों
मुर्गी बोलता है कोट–कोट
हाचुग–हाचुंग ढिंक्की ब'ई
फेचेर फेचेर सूप

मेरे बाबा ढेकी कूटना
मेरी माँ ओसाती धान
सुबह हुआ बहन बोली
उठो चलो विद्यालय

3.2.8 लोरी गीत

लोरी गीत उतने ही प्राचीन है जितना मानव का इस पृथ्वी पर आविर्भाव। अतः इन गीतों की परम्परा चीर प्रचीन है। शिशु या बच्चा जब रोता है, तब माँ उसको थपकियाँ देकर सुलाती है। वह उसे बिछावन पर सुला कर लय से गीत सुनाती है। यह गीत 'लोरी गीत' कहे जाते हैं। इन गीतो का कोई अर्थ नहीं होता क्योंकि ये अर्थ–प्रधान न होकर लय प्रधान होता है। इनमें ऐसे शब्दावली का प्रयोग किया जाता है जो श्रोता को सुखद लगती है और उच्चारण साम्य के कारण लययुक्त है।

ग्रेसी (C.S.N.R) ने अपने पुस्तक में लिखा है। ''नेन्ना, इन दो पंक्तियों के साथ प्ररम्भ, नीरस लय में दो टिप्पनियों के साथ गाया जाता है। उनका लय माँ के नीरस ताल में नीहित है।''

माताएँ बालक को सुलाते समय निन्नी, नेन्ने, नुन्नी आदि को बड़े आरोह–अवरोह के लय के साथ गाती है। इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता। इनकी मनोहरता माता के स्वरयुक्त उच्चारण में हैं। लोरी के गीत अधिकतर दो या तीन शब्दों में ही होते हैं। परन्तु उराँव लोरी गीतों में ऐसा नहीं है। उराँव में लोकगीत की तरह ही कुछ गीत पाये जाते हैं जिनसे शिशु के स्नायुओं पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में ग्रेसरीज का निम्नांकित कथन सटीक एवं उपयुक्त जँचता है। सबसे अच्छी लोरी में ऐसा लगता है कि प्रकृतिक रूप से किसान माताओं द्वारा गाया जाता है, परन्तु तीन शब्द और कोई दो अलग नहीं गाता है। एक प्रकार का सुखदायक ड्रोन, जो एक पालना के गीत की आवाज के समान होता है और जाहिर तौर पर बच्चों की नसों पर समान प्रभाव पड़ता है।''

छोटे से छोटे बच्चों में लयपूर्ण गीतों को सुनने की भावना जन्मजात होती है। वे उन मधुर गीतों को सुनकर सुख का अनुभव करते हैं और शीघ्र ही निद्रा देवी की गोद में चले जाते हैं। कुछ गीत इस प्रकार के हैं। –

148	हो'ओ बबु हो'ओ चुपे र'आ से	हो बाबु हो चुप रहो
	निंग्गयो गा बिच्ची बिसा केरा	माँ तुम्हारी रानू बेचने गई
	बर'ओ होले दुदु मण्डी चि'ओ	आयेगी तो दूध भात देग
	बर'ओ होले दाली मण्डी चि'ओ।।	आयेगी तो दाल भात देगी
149	अम्बा चींखा बो–लो अम्बा चींखा,	मत रो बाबु मत रो
	निंग्गयो को बो–लो	तुम्हारी माँ बाबु
	ढ़िलीवा बे–ची का रेचा बेची।।	ढिलवा खेलती या रेचा

पइरी बीरी बो–लो अम्बा चींखा	सुबह समय बाबु मत रो
निंग्गयो को बो–लो	तुम्हारी माँ बाबु
ढ़िलीवा बे–ची का रेचा बेची।।	ढिलवा खेलती या रेचा

उपर्युक्त गीत में एक बच्चा से कहा गया है कि तुम चुप रहो अभी मत रो, तुम्हारी मां आयेगी तो तुम्हे दूध भात और दाल भात देगी। वहीं दूसरा गीत में मत रो बबु आपकी मां ढिलवा खेलने गई है अर्थात हो सकता है उसकी माँ को छोटे में ही विवाह कर दिये होंगे। जिसके कारण विवाह के बाद भी खेलने के लिए चली गई है। वह आयेगी तो तुम्हे खाना देगी। कहने का तत्पार्य यह है कि जब तक बच्चा जवान नहीं हो जाता है तब तक विवाह बंधन में नहीं बांधना चाहिए और माता–पिता को भी ये बात समझना चाहिए कि अभी उसे पढ़ाना–लिखाना है। हमें अपनी जिम्मदारी से नहीं भागना है।

150	हरे राजी कीड़ा मंज्जा	हरे देश भूखा हुआ
	निंग्गियो को बो–लो छिपा ख़ेत्ता केरा	तेरी माँ बच्चा छिपा झारने गई
	पईरी बीरी राजी की–ड़ा मंज्जा	सुबह में देश भूखा हुआ
	निंग्गियो को बो–लो छिपा खेत्ता केरा।	तेरी माँ बच्चा छिपा झारने गई

''झिपा'' एक प्रकार का घांस होता है। जिसका छोटा–छोटा पौधा होता है। (गोहरा उराँव के अनुसार) यह दोन में पाया जाता है। पहले खाने–पीने के लिए बहुत ही तकलीप होता था। कहीं खाने–पीने नहीं मिलने पर, छिपा घांस को ही लाने जाते थे। उसे लाकर, कुछ सूख जाने के बाद झाड़ने पर कुछ छोटा–छोटा अन्न झरता था। वह इतना हल्का होता है कि मुँह से फूंक मारने पर उड़ जाता था। इसीलिए फूंक नहीं मारते थे। उसे वैसा ही लाकर, साफ करते थे और खाना पकाते थे। जिसका भात बहुत ही स्वादिष्ट होता था।

इस तरह बच्चों का ठगने अर्थात सुलाने के लिए माताएँ कई प्रकार के गीतों को गाती और बच्चा को खेलाती है।

3.2.9 लड़का–लड़की का गीत

लड़का लड़की का गीत में अधिकतर प्रेमी–प्रेमिका से संबंधित गीत पाये जाते है। इसमें लड़का–लड़की के प्रेम का मेल–मिलाप, बिछड़न सभी प्रकार के गीत पाये जाते हैं। अधिकतर गीतों में प्रेमी या प्रेमिका अपने जीवन साथी को गीतों के माध्यम से पुकार रही है तो अपने किये पर पश्चताप कर रही है। कुछ गीत में लड़का, लड़की से कहता है कि तुमको लड़कों के लिए बड़ी जतन से जोगा कर रखी है। तो कुछ गीतों में कौन सा फूल को खोपा में खोंसायी है जो बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा है। तो रास्ता में कौन लडकी आ रही है, जो बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रही है। कुछ गीत इस प्रकार के हैं।

151	निंग्गन कोय निंग्गयो कुहु लेक्खा जोगाब'ई।	तुमको लड़की तुम्हारी माँ कुहू जैसा रखी
	जों–खर गे कोय निंग्गन, कुहु लेक्खा जोगाब'ई।।	लड़कों के लिए तुमको कुहू जैसा रखी
152	नेख़य पटा बरई कोय पेल्लो, तीना तरा मुलर'आ लगदी।।	किसका पटा आती है लड़की दहिना तरफ झबरा रहा है
	पइरी बीरी बरई कोय पेल्लो, तीना तरा मुलुर'आ लगदी।।	सुबह में आती है लड़की दहिना तरफ झबरा रहा है
153	तूसा डहरे नू भइया रे, जूड़ि कड़सा उरखा दे।।	चुँवा रास्ता में भाई रे प्रेमी कंड़सा निकला
	पइरी बीरी जूड़ी कड़सा जूड़ि कड़सा उरखा दे।।	सुबह समय प्रेमी कंड़सा प्रेमी कंड़सा निकला
154	डन्दुती खे़–ल बर'आ लगी पेल्लो, मैना मिंजुरा लेक्खा पेल्लो बर'आ लगी।।	डन्दु से मांदर आ रहा है लड़की मैना मोर जैसे लड़की आ रही है
	किर्र ए–रय चेड़ा पेल्लो, मैंना मिजुरा लेक्खा पेल्लो बर'आ लगी।।	लौट देखो जवान लड़की मैना मोर जैसा लड़की आ रही है

155	अक्कु पुरेन्ता चेंड़ा जोंखय,	अभी समय का जवान लड़के
	किय्या जुड़ो मइंय्या पगा।।	नीचे जुड़ो ऊपर रस्सी
	किर्र ए–रोय चेड़ा पेलो,	लौट देखो जवान लड़की
	ए–रा ए–रा जिया सली हो,	देख देख मन खुश हो
	ए–रा ए–रा कया सली हो।।	देख देख शरीर खुश हो
156	पण्डरू बकईला मोखारो ख़ाखा,	सफेद बगुला काला कौआ
	एकसन ए–रोय पण्डरी पेल्लो।।	कहाँ देखोगे चरकी लड़की
	पइरी बीरी पण्डरू बईकला	सुबह में सफेद बगुला
	मोखारो खाखा,	काला कौआ
	एकसन एरोय पण्डरी पेल्लो।।	कहाँ देखोगे चरकी लड़की
157	बिछर'आ जुड़ि बिछर'आ हो,	छोंड़ो प्रेमी छोंड़ो
	बांहि एंग्हय खचेरा लगी।।	बांह मेरा टूट रहा है
	निंग्गन बिछर'ओन जूड़ि,	तुमको छोडूँगा प्रेमी
	एंग्हय मने मला लग्गो रे।।	मेरा मन नहीं लगेगा
158	ई समय कालम लगी रे,	ये समय जा रहा है
	दोसर समय किर्रो का मला।।	दूसरा समय लौटेगा या नहीं
	मांग सिन्दुर किर्रो	मांग सिन्दुर लौटेगा
	दाईल चाउर किर्रो,	दाल चावल लौटगा
	डिण्डा समय मला किर्रो।।	जवानी समय नहीं लौटेगा
159	केन्तेर केसों बीरी	सूप पेछरने समय
	इतर्रदी पेल्लो कोय,	इतराती हो लड़की
	एवं कोड़हे रीझिवर र'अदी,	कितना अधिक रिझवार हो
	एवं कोड़हे रासिका र'अदी।।	कितना अधिक रासिका हो
	जूड़ि जोंख़ासिन ए–रा ख़नेम	प्रेमी लड़का देखकर
	इतर्रदी पेल्लो कोय	इतराती हो लड़की
	एवं कोड़हे रीझिवर र'अदी,	कितना अधिक रिझवार हो
	एवं कोड़हे रासिका र'अदी।	कितना अधिक रसिका हो

160 कपड़ेन ता सिन्दरी कोय पेल्लो	कपाल का सिन्दुर लड़की
जनम जुग र'ओ,	जन्म युग रहेगा
तिरियो बिड़ियो एवं उल्ला र'ओ।।	छैला सिंगार कब तक रहेगा
पइरी बीरी ता सिन्दरी कोय पेल्लो,	सुबह का सिन्दुर लड़की
जनम जुग र'ओ,	जन्म युग रहेगा
तिरियो बिड़यो एवं उल्ला र'ओ।।	छैला सिंगार कब तक रहेगा

लड़का लड़की के गीत में युवा नौजवान को गीत के माध्यम से बहुत ही अच्छा नीति शिक्षा देने का प्रयास किया गया है। यदि इन गीतों का सही व्याख्या की जाय तो समाज में बहुत ही सुन्दर संदेश जाता है। जैसा कि 159 संख्या के गीत में, गीत के माध्यम से बताया गया है कि यौवन अवस्था बहुत ही चंचल होता है। यही समय बनने और बिगड़ने का होता है। नौजवान युवक–युवतियाँ सही और गलत का निर्णय नहीं कर पाते हैं और लड़का–लड़की अपने जीवन का फैसला लेना प्रारम्भ कर देते हैं। दोनों जीवन साथी बनने के लिए राजी हो जाते हैं। इस समय दोनों का प्यार, इतना परवान चढ़ा रहता है कि किसी भी स्थिति में किन्ही का बात नहीं सुनना चाहते हैं। दिमाग में ऐसा बैठ जाता है कि वो नहीं तो मेरा जीवन अधुरा है। जीने मरने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। परन्तु सच यही है कि प्यार–मुहाब्बत ''दो दिन की चांदनी है, और फिर अंधेरी रात'' वाली कहावत का बिलकुल चरितार्थ करती है।

यदि दोनों में थोड़ा सा भी किसी प्रकार का अनबन हो जाय तो, वहीं से उनका प्यार–मुहाब्बत कम होने लगता है, जो कि उसी के लिए मरने के लिए तैयार थे। ऐसा प्यार–मुहाब्बत करने वाले कुछ ही दिन का मेहमान होते हैं। यदि उनके मन में किन्ही और से प्यार हो गया तो पहले को छोड़, दूसरे से रहना प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसे प्यार करने वालों का बहत ही कम लोगों का विवाह हो पाता है। किन्ही न किन्ही कारण से छूट ही जाते हैं।

इसी लिए इस गीत के माध्यम से कहा गया है कि कपाल का सिन्दुर जीवन भर रहेगा। ये तिरियो–बिड़ियो अर्थात प्यार–मुहाब्बत कितना दिन रहेगा। ये छैला सिंगार दो दिन का चांदनी है। इसी लिए लड़की, लड़का से कहती है कि मैं जाने–अनजाने तुमसे प्यार–मुहाब्बत की, तुमसे मिली–जुली परन्तु अब मैं तुमसे मिलने नहीं जाउँगी। सूरज के सुबह की किरणों की तरह जोड़ी भी, जिस तरह से सुबह की लालिमा शोभा देती है। उसी तरह से हमारा जोड़ी भी शोभा देगा। पूरे धरती में चमकता है, उसी तरह मेरा कपाल का सिन्दुर भी पूरा धरती में चमकेगा। इसी लिए मेरे कपाल में सिन्दुर दो, तभी मैं आपके साथ जाउँगी। विवाह में आये सभी मेहमानों का आशिर्वाद रहेगा। साथ ही गाजे–बाजे के साथ हमारा विवाह होगा, उसे सुनकर हमारे पूर्वज भी जान जायेगें कि आज हमारे फलनी का विवाह हो रहा है, अर्थात हमारे पूर्वज का भी आशिर्वाद रहेगा। इसी

लिए तुम बरात लेकर आओ और मुझे विवाह कर ले जाओ तभी मैं तुमसे जाउँगी, अन्यथा नहीं और विवाह करने के बाद बहुत कम, उराँव समाज में छोड़ने वाले मिलते हैं। विवाह होने के बाद किसी भी तरह के परिस्थिति का सामना करते हुए जीवन भर, जीवन संगनी की तरह साथ रहते हुए जीवन यापन करते हैं। इस तरह से कई गीत हमारे उराँव समाज के लोकगीतों के माध्यम से ज्ञान देने का प्रयास किया है।

3.2.10 भजन गीत

भजन गीतों में अपने इष्ट देवता को पुकारा जाता है या उससे विनती प्रार्थना किया जाता है। सभी भगवान को अपने–अपने ढ़ंग सें याचना करते हैं। कोई दुःख दुर करने के लिए, कोई सुख पाने के लिए, कोई अपने बच्चों की भविष्य के लिए तो कोई अपने परिवार के लिए। सभी ने भगवान को गीत गाकर खुश करने का प्रयास किया है। भगवान को पाने के कई माध्यम है परन्तु गीत एक ऐसा माध्यम है जो रिझाने का बहुत ही सरल उपाय है। ऐसा कहा जाता है कि गीत से भगवान बहुत खुश रहते हैं।

कुछ भजन गीत है जो भगवान की स्तुति या भक्ति भाव से गाया गया है। परन्तु उराँव़ समाज में अधिकतर गीत स्वयं के लिए न होकर सबों के लिए विनती प्रर्थाना किया गया है। जिसमें पृथ्वी पर रहने वाले सबों के कल्याण की भावना पायी जाती है। व्यक्तिगत नहीं के बराबर होता है। कुछ गीत इस प्रकार है –

161	चाला अयो बर'ओन बाचा,	चाला माँ आऊंगी बोली
	मनियारो गांथा लेले	मनियारो गांथा लेते
	टटखा डारी लेले	आम का डाली लेते
	आरिझान नना से	आरिछन करो से
	पारिक्षन नना से ब'अदन बहिन	परिछन करो कहता बहन
	आरिझान नना से.....	आरिछन करो से
	धरती अयो बरोन बाचा	धरती माँ आऊंगी बोली
	मनियारो गांथा लेले	मनियारो गांथा लेते
	टटखा डारी लेले	आम डाली लेते
	आरिझान नना से	आरिछन करो से
	पारिक्षन नना से ब'अदन बहिन	पारिछन करो से कहता बहिन
	आरिझान नना से.....	आरिछन करो से
	धर्मेश बबास बरोन बाचस	धर्मेश बाबा आऊंगा बोला
	मनियारो गांथा लेले	मनियारो गांथा लेते
	टटखा डारी लेले	आम का डाली लेते
	आरिझान नना से	आरिछन करो से
	पारिक्षन नना से ब'अदन बहिन	पारिछन करो से कहता बहन
	आरिझान नना से.....	आरिछन करो से

162	धरम धरम ब'अदर	धर्म धर्म बोलते हो
	भाई बहिन बगारो –2	भाई बहन लोग
	धरम नम्हय एकेसन र'ई –2	धर्म हमारा कहाँ है
	पुरूबे हूँ मल्ला पच्छिमे हूँ मल्ला	पूरब भी नहीं पश्चिम भी नहीं
	धरम नम्हय जिया नूम र'ई रे	धर्म हमारा दिल में है
	धरम नम्हय कया नूम र'ई	धर्म हमारा शरीर में है
	उत्तरे हूँ मल्ला दखिने हूँ मल्ला	उत्तर भी नहीं दक्षिण भी नहीं
	धरम नम्हय जिया नूम र'ई रे	धर्म हमारा दिल में है
	धरम नम्हय कया नूम र'ई	धर्म हमारा शरीर में है
	आकासे हूँ मल्ला पताले हूँ मल्ला	आकाश भी नहीं पताल भी नहीं
	धरम नम्हय जिया नूम र'ई रे	धर्म हमारा दिल में है
	धरम नम्हय कया नूम र'ई	धर्म हमारा शरीर में है
163	मझी टोड़ंग नू	बीच जंगल में
	मानिम पूंप पूंईदा –2	सच फूल फूला
	नमा गे ने तोक्खो चिओ रे –2	हमारे लिए कौन तोड़ देगा
	मूलि मइय्या डाड़ी,	फेंड़ ऊपर डाली
	डाड़ी मइय्या पूंप सोभ'आ लगी–2	डाली ऊपर फूल शोभा
	नमा गे ने तोक्खो चिओ रे –2	हमारे लिए कौन तोड़ देगा
	पूंप मला नेदगी	फूल नहीं झड़ता
	पूंप मला खायी –2	फूल नहीं सूखता
	नमा गे ने तोक्खो चि'ओ रे –2	हमारे लिए कौन तोड़ देगा
	मझी टोड़ंग नू	बीच जंगल में
	मानिम पूंप पूईदा	सच फूल फूला
	नमा गे धरमे तोक्खोस चि'ओ रे	हमारे लिए कौन तोड़ देगा

164 पाण्डो कुमारी, अंरगी काचापरा, गुमला

सृजन बबा होय	सृजन बाबा हो
निर्मला आम धरू	निर्मल रूप पकड़ो
सिरजान मना बबा	सृजन हो बाबा
सिरजन। मना बबा सिरजान।	सृजन, हो बाबा सृजन

सृजन मनोय होले	सृजन होना होले
उराँव मुण्डा खड़ियर	उराँव मुण्डा खड़िया
गहि चली नूम बरोय बबा	के आंगन में आना बाबा
बली। बरोय बबा	दरवाजा। आना बाबा
चली नूम बरोय बबा बली।	आंगन में आना बाबा दरवाजा
चली नूम बरोय होले	आंगन में आना होले
हांथे झाइर ननोन बबा	हांथ से परिछूँगा बाबा
ननोन बबा अराती	करूँगा आरती बाबा
ननोन बबा विनती।	करूँगा बिनती बाबा
आरती ननोन होले	आरती करूँगा होले
ज्ञान नूम चि'आ बबा	ज्ञान देना बाबा
चि'आ बबा	देना बाबा
ज्ञान नूम चि'आ बबा।	ज्ञान ही देना बाबा

165 रा.प.अ.क. भिखराम भगत,16

जिया कालो बीरी	प्राण जाने समय,
काया कालो बीरी	शरीर जाने समय
नें–हु संग्गे मला कालोर	कोई साथ नहीं जायेगा
जिया कालो बीरी,	प्राण जाने समय,
काया कालो बीरी	शरीर जाने समय
अयो–बबा संग्गे मला कालोर	माता–पिता साथ नहीं जायेगें
भाई–बहिन संग्गे मला कालोर	भाई–बहन साथ नहीं जायेगें
जिया कालो बीरी–2	प्राण जाने समय
मईया तंग्गियो सग्गे मला कालो	बच्ची का माँ साथ नहीं जायेगी
जिया कालो बीरी–2	प्राण जाने के समय
अना–धना संग्गे मला कालो	अन्न–धन साथ नहीं जायेगा
ढीबा–कौड़ी संग्गे मला कालो	पैसा कौड़ी साथ नहीं जायेगा
जिया कालो बीरी –2	
खेबदा ता पिपर पत्ता	काना का बाली
संग्गे मला कालो	साथ नहीं जायेगा
ठोंसा–पयंड़ा संग्गे मला कालोर	सिंगार–पतार साथ नहीं जायेगा
जिया कालो बीरी–2	

सोना–रूपा संग्गे मला कालो	सोना–रूपा साथ नहीं जायेगा
कड़मा ता ओन्द ताग मेर	कमर का एक धागा
संगे मला कालो	साथ नहीं जायेगा
जिया कालो बीरी –2	
मेना हारो–मेना हारो	सुनो भाई सुनो भाई
धरम–करम संगे–संगे कालो	धरम–करम साथ साथ जायेगा
जिया कालो बीरी–2	
अद्दि धरम बिन्ती संगे–संगे कालो	आदि धरम, विनती साथ–साथ जायेगा
धरम–नलख संगे–संगे कालो	धरम काम साथ–साथ जायेगा
जिया कालो बीरी–2	

इस प्रकार उराँव़ लोकगीतों को संकलन करने का प्रयास किया है परन्तु इसमें कार्य सत्त जारी रहेगा। उराँव लोकगीत बहुत अधिक है, इससे संबंधित कई किताब प्रकाशित हो चुके हैं, जिसमें गीतों को संग्रह किया गया है।

3.3 उराँव़ लोकगीत की विशेषता

लोकगीत रचना प्रणाली के अनुसार सामूहिक दृष्टिकोण लिए होते हैं। इनमें व्यक्ति विशेष को कोई स्थान नहीं दिया जाता है। रचना काल तथा रचियता के नामकरण की प्रथा भी नहीं होती क्योंकि गीत धरती एवं सभ्यता के उद्‌गम के साथ अपना संबंध स्थापित किये रहता है। लोकगीतों को इनकी नैसर्गिकता के लिए जाना जाता है, ऐसी मान्यता है। गीतों में विज्ञान की तराश नहीं, मानव संस्कृति का सारल्य और व्यापक भावों का उभार है। भावों की लड़ियाँ लम्बे–लम्बे खेतों–सी स्वच्छ, पेड़ो की नंगी डालों–सी अनगढ़ (Rough) और मिट्‌टी की भाँती सत्य है।

डॉ0 नारायण भगत (छो.उ.री.302)ने अपने पुस्तक में उराँव लोकगीत के निम्नलिखित विषेशताओं को बताये हैं।

तालिका 13 : उराँव लोकगीत की विशेषता

1. उराँव लोकगीत ऐतिहासिक घटना पर आधारित है।
2. उराँव लोकगीत में जीवन की सम्पूर्णता का चित्रण है।
3. गीत के द्वारा आनन्द की प्राप्ति होती है।
4. उराँव जाति के महान चरित्र और उनके कार्यो का अनुकरण का संबंध है।
5. वीर भवना।
6. भाषा और शैली की प्रर्याप्ता।
7. गीत उत्तम गुणों से भरा है।
8. गीत किसी विशेष कार्य को पूर्ण करने की अनुकृति करती है।
9. गीत में वीर रस, श्रंगार रस, करूण रस, भयानक रस, वात्सल्य रस आदि सभी मौजूद हैं।
10. गीतों में मानवीय विश्वासों और उराँव जीवन के सांस्कृतिक सभ्यता का चित्रण है।
11. उराँव लोकगीतों में सामाजिक जीवन तथा सामाजिक भावनाओं तथा उद्‌गारों की अभिव्यक्ति है।उराँव लोक जीवन में उराँव जातीय–जीवन व्यापक चित्रण है।
12. इनका जीवन शौर्य, वीरता और प्रेरणा का श्रोत है।

डॉ0 भगत के विशेषताओं में सभी पहलुओं को छूने का प्रयास है। परन्तु उराँव लोकगीतों में इसके आलावे और कुछ विशेषताएँ है। जो निम्न है।

तालिका 14 : उराँव लोकगीत की अन्य विशेषता

1. उराँव़ लोकगीत में पहला पद प्रश्न होता है और दूसरा पद उत्तर होता है।
2. उराँव़ लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जो व्यक्ति बिलकुल कुँड़ख़ बोलने नहीं जानता है, उसे उराँव़ गीत को गाने कहा जाय तो वह बिना हिचक के साथ गा सकता है और यदि बिलकुल ही नागपुरी भाषा नहीं जानता है, उसे उराँव़ गीत जो नागपुरी भाषा में है उसे वह बिना हिचक के साथ गा सकता है।
3. उराँव लोकगीत में गीतों को अखड़ा में गाते हैं तो महिला और पुरूष, दोनों में से कोई एक तरफ से गीत की शुरूआत करते हैं। यदि पहले महिलाओं ने प्रारम्भ किये हैं तो उसी गीत को पुरूषों द्वारा दोहराया जाता है। ताकि गीत सबों को याद हो जाय और एक साथ गाने में अच्छा लगे। इससे नाचने और बाजाने वालों को भी रिझ लगता है।

लोकगीत के विशेषताओं के संदर्भ में कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इस लिए मैंने सभी प्रकाशित विशेषताओं को संग्रह नहीं किया हूँ। जिसमें लगभग सभी विशेषता मिलता–जुलता ही रहता है।

चतुर्थ अध्याय
4 उराँव लोककथा

मानव का इस पृथ्वी पर जन्म हुआ है तभी से कथा–कहानी का भी जन्म हुआ होगा, ऐसी मान्यता है। इसी कारण मानवीय कलाओं में कथा–कहानी कहने की कला सबसे प्राचीन है। आदिम युग से ही मनुष्य ने अपनी अनुभूतियों को कथा रूप देना प्रारम्भ किया और वह कथाओं के माध्यम से ही अपने जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करने लगा है।

सभी समाज में लोग अपने बाल–बच्चों को विद्वान बनाने के लिए प्रयास करते हैं। वे बाल–बच्चों को ज्ञान प्रदान करने के लिए तरह–तरह का रास्ता अपनाते तथा प्रयास भी करते हैं। इसमें हमारे पूर्वज भी ज्ञान देने में पीछे नहीं रहे हैं। जानकारी के अनुसार हमारे पूर्वज बाल–बच्चों को मेहनती बनाने के लिए, सही राह दिखाने के लिए, गीत गाना और गवाना, कहानी बताना और बतलाना तथा कार्य को करना और साथ में करवाना था। गीत गाने और गवाने के लिए हमारे पूर्वजों ने अखड़ा को चुना। अखड़ा में एक ही गीत को बारी–बारी से गाया और गवाया भी। जिससे कि गीत लोगों के दिमाग में बैठ जाय और नहीं भूले। इसके अलावे कार्य को सिखाने के लिए हमारे पूर्वज ''धुमकुड़िया'', लड़कियों के लिए अलग और लड़कों के लिए अलग, बनाये और उसी में बैठने का भी निश्चित किये। इसमें अपने और समाज का कार्य को सीखना और सीखाना का कार्य करते थे। कार्य करने के लिए लड़का–लड़के खेत–खलिहान जाते थे।

हमारे उराँव पूर्वजों का कहानी बताने का मूल कारण क्या रहा होगा? ऐसा लगता है, हमारे पूर्वज के बताये कहानी को गहराई से सोचने पर कहानी में उनके जीवन–यापन की सच्ची तस्वीर, मजूबती, ज्ञान, डर–भय, अहंकार, संस्कार, परिवार एवं समाज के प्रति प्रेम, रीति–रिवाज, सेन्दरा, रोज दिन का दैनिक कार्य आदि दिखाई देता है। हमारे उराँव पूर्वज पक्षियों या जानवरों के रोना या गाना को सुन कर समझ रहे थे। वे मृत व्यक्ति के जीवत होना और धरती में जीवन–यापन करने वाले जैसा ही जीवन–यापन करना चाहते थे।

कहानी बताना और सुनाना शाम के समय, गर्मी और अगहन महीना के आस–पास होता था। आजा–आजी, नाना–नानी और लड़के–लड़कियाँ घर के आंगन में, धुमकुड़िया में और खलिहान में कहानी बताते थे। सभी लोग इनके बताये कहानी को बड़े ही चाव से सुनते थे और वे कहानी सुनने के लिए भी नहीं अनसाते थे। कहानी सुनने वाले सुन रहे हैं, नहीं सोये हैं। कहानी सुनते समय कहानी बताने वाले बीच–बीच में गीत भी गाते और सुनने वालों को भी गीत को दोहराना होता था। हमारे पूर्वजों का कहानी बताने का ठंग अलग ही था। किसी भी घटित बात को, उस कार्य के जैसा, एक दो कड़ी जोड़कर

बार–बार बताते थे और गीत को भी घुरा–फिरा कर बार–बार गवा रहे थे। ऐसा करने से कहानी सुनने वालों को याद जल्दी होता था और जल्दी नहीं भूलते थे। परन्तु आधुनिकता के दौर में हमें ये सभी भूलते जा रहे हैं। आज टेलिविजन एवं अन्य मनोरंजन के साधनों का आविष्कार के फलस्वरूप इसकी प्रासंगिकता का अभाव होता जा रहा है। उराँव लोककथा की प्रासंगिकता आज भी गाँव देहातों में बनी हुई है जो संचार के साधनों से दूर हैं।

उराँव लोककथा प्राचीन काल से ही भारतीय मानस कहानियों में रमा है और कहानियों में ही उसने विकास भी पाया है। दादी–नानी की कथाएँ तो हर समुदाय के लोकसाहित्य में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल से आज तक आदिवासी उराँव समाज में इन कथाओं का अपना अलग महत्व है। उराँव समाज में तो ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं होगा जिसने लोककथाओं का स्वाद न लिया हो। उराँव लोककथा मौखिक साहित्य के रूप में जीवित हैं और ये सदियों से लोगों के जुबान पर अपना विकास करती हुई आज भी हमारे सामने है। आज भी इस मौखिक साहित्य को सुरक्षित रखने का कार्य उराँव लोगों के द्वारा जारी है।

3.1 लोककथा की परिभाषा

लोककथा को विभिन्न विद्वानों अपने ठंग से परिभाषित करने का प्रयास किये हैं। लोककथा की परिभाषा देते हुए डॉ0 सत्येन्द्र (हि.सा.को.748) ने लिखा है कि– ''लोक में प्रचलित और परम्परा से चली आनी वाली मूलतः मौखिक रूप में प्रचलित कहानियाँ, लोक कहानियाँ कहलाती हैं।''

डॉ0 भुनेश्वर (ना.लो.60) ने भी लोककथा की परिभाषा न देकर, उसके स्वरूप पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि–''नागपुरी लोककथाओं में आदर्शवादिता का समन्वय स्वयं में ही हो गया हैं। नागपुरी लोककथाओं में नीति और उपदेश के तत्व समाहित रहता है। इन कहानियों में चमत्कार प्रधान काल्पनिकता का कम प्रयोग हुआ है। इसके अनेक सजीव उदाहरण हैं।''

इसी प्रकार से डॉ0 सान्तराम अनिल (क.लो.168) ने भी परिभाषित किये हैं। उनके अनुसार ''लोककथा उन प्रचतिल कथाओं के लिए प्रयुक्त होता है, जो मौखिक परम्परा के द्वारा निरंतर रूप से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को प्राप्त होती रहती है। इन कथाओं का जन्म भी मानव के साथ हुआ होगा और उसी प्रकार विकास की परम्परा में चलती हुई ये आज तक जीवित हैं'' ।[25]

---

[25] लोककथा की परिभाषा के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ठंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। जैसे श्री राम शर्मा ने अपने पुस्तक लोकसाहित्य सिद्धान्त और प्रयोग में, लोककथा के बारे में कई विद्वानों के परिभाषा को संग्रहित किये हैं। उसी तरह से नागपुरी लोकसाहित्य में डॉ0 भुनेश्वार अनुज ने भी संग्रह किये हैं। इसी प्रकार डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय की लोकसाहित्य की भूमिका, सरोजनी रोहतगी की अवधी लोकसाहित्य, डॉ0 सुरेश गौतम एवं डॉ0 वीणा गौतम की भारतीय लोकसाहित्य कोश, डॉ0

इस प्रकार लोककथा मानव जीवन की उन घटनाओं का वर्णन है जो उनके जीवन में घटित हुआ होगा, जिसे कथा के रूप में बताते हैं, जिसमें किसी प्रकार की बनावटी पन नहीं रहता है। जो मौखिक परम्परा के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। लोककथा कहा जाता है।

आज भी उराँव आदिवासियों के प्रति लोगों का धारणा है कि वे असभ्य और जंगली होते हैं, जो बिलकुल ही गलत है। वास्तव में देखा जाय तो सभ्य और सुलझे हुए लोग है। उनका लोगों के प्रति किसी प्रकार की हीन भावना या थोड़ा सा भी गलत सोच नहीं दिखाई देता है, वे सबों का कल्याण ही सोचते हैं। उनकी संस्कृति के बारे में भी कहा जाता है कि बहुत ही गिरा हुआ है, परन्तु उनके लोककथाओं में इनके गहराई पर जाने से उनकी अच्छाई को बहुत ही करीब से जान सकते हैं। आज वैज्ञानिक भी इनकी संस्कृति से प्रभावित हैं। जो कई मायने में सही साबित हुआ है। इसका उदाहरण सरहुल पूजा में स्पष्ट देखा जा सकता है। उराँव आदिवासी समाज कृषि पर निर्भर है। अतः इनकी कृषि के लिए उचित व्यवस्था किया जाय तो इन्हें भी मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है।

4.2 उराँव लोककथा का वर्गीकरण

उराँव़ समाज में लोकसाहित्य की प्रासांगिकता आज भी गाँव–देहातों में बनी हुई है, जो संचार के साधनों से दूर हैं। आज टेलिविजन एवं अन्य मनोरंजन के साधन का आविष्कार होने के फलस्वरूप इसके प्रासंगिकता का अभाव होता चला जा रहा है। इस प्रकार उराँव लोकसाहित्य व्यक्ति और समाज से दूर होता जा रहा है। जिस समय मनोरंजन का साधन नहीं था, उस समय उनका मनोरंजन का साधन सिर्फ कहानियाँ, चुटकुले, बुझावल आदि था। जो फुरसत के क्षण या रात को सोते समय घर के माता–पिता या दादा–दादी कहानी सुनाया करते थे। साथ ही उसके साथ हुँकारी भी भरना पड़ता था। जिससे उत्साह वर्धक ज्ञान, जिज्ञासा तथा लक्ष्य की ओर बढ़ने की दिशा एवं प्रेरणा प्राप्त होता था। जिसमें सभी प्रकार की कहानी कथा सुनाया जाता था। इससे संबंधित कुछ कहानियाँ निम्नलिखित हैं।[26]

तालिका 15 उराँव लोककथा का वर्गीकरण

1. मानव से संबंधित कथाएँ,
2. पशु–पक्षी से संबंधित कथाएँ,

सत्येन्द्र की ब्रज लोकसाहित्य, डॉ0 श्याम परमार, मालवी लोकसाहित्य आदि। इस लिए मैं सबों की परिभाषा को नहीं दोहरा रहा हूँ। जिन्हें इन किताबों में देखा जा सकता है।

[26] लोककथाओं के वर्गीकरण के संबंध में भी यही बात है। इनका भी कई विद्वानों ने अपने ठंग से वर्गीकरण करने किया है। इसीलिए मैं इनके वर्गीकरण को पुनः नहीं लिख रहा हूँ। इसी तरह से लोककथा का विशेषताओं के बारे में भी उपर्युक्त किताबों में देखा जा सकता है।

3. भूत–प्रेत की कथाएँ,
4. साहसिक कथाएँ,
5. धार्मिक कथाएँ,
6. ऐतिहासिक कथाएँ,
7. मनोरंजन कथाएँ
8. सृजन कथाएँ
9. परिकथाएँ,
10. बाल कथाएँ
11. सामाजिक कथाएँ
12. विविध कथाएँ।

उपर्युक्त वर्गीकरण को आगे विस्तार से आपसबों के बीच रखने का प्रयास किया गया है।

4.2,1 मानव संबंधित कथाएँ

उराँव समाज में मानव संबंधित कई कथाएँ प्राप्त होती है। जो कि मनोरंजन के साथ समाज को ज्ञान, राह एवं प्रेरणा देती है। आदिकाल में हमारे पूर्वज किस तरह से जंगलों के बीच रहते थे और शिकार के द्वारा अपना जीवन–यापन करते थे। उनमें बहुत ही प्यार–दुलार रहता था। जिस तरह से इस कहानी में बताया गया है। जो समाज को नई दिशा एवं प्रेरणा दे जाती है।

4.2.1,1 ए–ड़ भईयोर ओन्टा तंगड़ी (दो भाई एक बहन) गोहरा उराँव, फरवरी 25, 2014

आदि काल की बात है। एक गाँव में दो भाई और एक बहन रहते थे। वे बहुत ही अच्छी तरह से अपना जीवन–यापन कर रहे थे। उनके दोनों भाई शिकार खेलने रोज जंगल जाया करते थे। वे जानवर को मार कर लाते थे, उसे उसकी बहन बनकार, पका रही थी। इसके बाद सभी मिलकर खा रहे थे।

एक दिन की बात है। दोनों भाई ने सोचा कि चलो आज दूसरे तरफ शिकार खेलने जाते हैं। कहे अनुसार दोनों उधर ही गये। साथ में तीर धनुष, बलुवा आदि लेकर गये, वे उधर तो गये परन्तु एक भी जानवर शिकार का नहीं कर पाये।

शिकार खेलते–खेलते एक स्थान पर पहुँचे। देखे कि बहुत ही सुन्दर चम्पा फूल फूला हुआ है, बहुत ही सुन्दर महक रहा है। वह फूल बहुत बड़ा स्थान में था। फूल देखकर उन्हें घर आने का इच्छा ही नहीं कर रहा था। परन्तु क्या करेगें? अपनी बहन को सोचकर घर आने के लिए सोचे। पर ये भी कहे कि इस फूल को बहन के लिए लेते जायेगें तो कितना खुश होगी। फूल को खोपा

में खोंसायगी, कितना सुन्दर उनके लिए लगेगा। वे कुछ फूल लेकर घर लौटे और अपनी बहन को दिये। बहन फूल को देखी और बहुत खुश हुई। वह उस फूल के बारे में पूछने लगी। नहीं बता रहे हैं तो जिध करने लगी। तब बताये :–''वह स्थान बहुत दूर है। तुम अभी छोटी हो, थक जायेगी, बड़ी होगी तब तुम जायेगी।'' परन्तु वह नहीं मानी।

जाने के दिन वे खाने–पीने के लिए गुड़–चिवड़ा पकड़े। बहुत दूर चलने के बाद उस स्थान पर पहुँचे। किस्म–किस्म का फूल देखकर वह बहुत ही खुश हुई और फूल से खेलने में वह रम गई। वह वहाँ से हटना नहीं चाह रही थी। दोनों भाई चलो कहे। जिध भी किये परन्तु वह कहीं जाने के लिए राजी नहीं हुई। वह अपने भाईयों से कही–''तुमलोग जाओ शिकार खेलने, इसके बाद जायेगें।'' वे शिकार खेल कर भी लौट आये और अपनी बहन को बोले –''दादा, मैं अब नहीं जाउँगी। तुमलोग जाओ।'' दोनों भाई बाले –''यहाँ जंगली जानवर, सांप आदि सब रहता है। वे तुम्हें खा जायेगें'' फिर भी वह नहीं मानी और अन्त में बोली –

''दादा! मैं दो फूल आपको दे रही हूँ। घर पहुँचकर दोनों को एक–एक दोना में रखना। एक में पानी और दूसरा में दूध डालना। दादा तुमलोग देखना कि जिस दोना में पानी है, वह दूध हो जायेगा और जिस दोना में दूध है वह खून हो जायेगा। तब आपलोग सोचना कि मैं मुसिबत में हूँ।''

दोनों भाई फूल लेकर जल्दी–जल्दी घर लौटने लगे। उनकी बहन फूल से खेलने में रम गई है। वह कभी फूल को खोपा में खोंसाती है, तो कभी माला बनाकर गले में पहनती है। इसी तरह किस्म–किस्म का बनाकर खेलने में मस्त है। उन्हें पता ही नहीं कि एक साँप खाने के लिए आ रहा है। ये सब एक ढेरको पांड़की खुन्टी पेड़ में बैठ कर देखने लगी। जैसे–जैसे सांप उनके पास पहुँच रहा था। तो वही पांड़की उन्हें गीत गा कर बताने लगी।

166 पूँप बटगी ता, पूँप बटगी ता।	फूल बगान का, फूल बगान का
कारी नाग बहिन मो–ख़ा बर'आ लगी	कारी नाग बहन खाने आ रही है।

परन्तु उसकी बहन पांड़की का गीत को नहीं सुनी और खेलने में रम गई। वह फूल को देखकर और खुश होती है। अकेले–अकेले नाचती–गाती, तो कभी क्या न क्या बना चलती है। इधर उनके दोनों भाई जल्दी–जल्दी घर लौटने लगे। वह सांप तो गीत को सुन कर समझ रही है। इसलिए लड़की के पास धीरे–धीरे पहुँचने लगी। पांड़की बेफिक्र खेलते हुए देख कर फिर से वही गीत को गाती है। उन्हें तो पता ही नहीं कि क्या होने वाला है? उनके भाई थक कर चूर–चूर हो गये, फिर भी जल्दी–जल्दी घर लौटने लगे। प्यास लगने पर भी रास्ता में पानी नहीं पी रहे हैं। उधर पांड़की भी लड़की के चारों और घुम–घुम कर गीत गा रही है परन्तु उन्हें पता ही नहीं कि क्यों इस तरह का पांड़की रो

रही है।

इधर सांप लड़की के पास पहुँचा और खाने लगा। अब उसकी बहन क्या करेगी, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अब उन्हें लगने लगा कि क्यों मैं अपने भाईयों से घर वापस नहीं गई। अब तो मुझे कोई देखने नहीं सकेगें। मेरे भाई लोग रहते तो, बचाते। मुझे मेरा भाई लोग कितना प्यार कर रहे थे। मैं अपने जिध से उनके साथ नहीं गई, अब क्या होगा? यही सब सोच कर गीत गाने लगीः—

167	निम्हय बरजान्न मल मेंज्जकन।	तुम्हारा बात को नही सुनी
	ददा मल मेंज्जकन।।	दादा नहीं सुनी
	पूँप बटगी नू नेर्र	फूल बगान में सांप
	मो—ख़ा लगी ददा! मोख़ लगी!	खा रहा है ददा! खा रहा है!
	बरा—बरा ददा बरा।	आओ आओ दादा आओ
	एंग्गन बछा ब'आ गे,	मुझे बचाने
	ददा बछा ब'आ।।	दादा मुझे बचाने।

इसी तरह उनकी बहन बार—बार गीत गा रही है कि मेरे भाई सुनेगें तो बचाने के लिए आयेगें। परन्तु बहुत देर हो चुकी थी। वह सांप उन्हें पूरा निगल गया।

उसी समय उसके भाई लोग घर पहुँचे। पहुँचने के साथ ही दोना बनाये और दोनों दोना में एक—एक फूल रखे। एक में पानी और एक में दूध दिये। जैसे ही दिये, जो पानी था, वह दूध हो गया और दूध, वह खून हो गया। वे सोचे कि हमारी बहन जरूर किसी मुसिबत में है। यही सोच वे दोनों फिर तीर—धनुष, बलम, तलवार आदि लेकर अपनी बहन को खोजने निकल गये। उन्हें आते—आते सुबह हो गया। उस फूल के पास पहुँच कर पुकारने लगे। परन्तु कहीं भी उनकी बहन का पता नहीं चला। वे रोने लगे कि हम अपनी बहन को खो दिये। उसी समय एक ठेरको पांड़की खुन्टी पेड़ में बैठकर गीत गाने लगी। वही पांड़की जो उनकी बहन के बारे में देखी थी।

168	पूँप बटगी ता, पूँप बटगी ता।	फूल बगान का, फूल बगान का
	कारी नाग ददा मो—ख़ा लगिया।।	कारी नाग ददा खा रहा था।

वो ठेरको पांड़की उनके चारो और उड़ कर गीत गा रहा था। वे उस चिड़िया का बात को समझे। वे उनके गीत को ध्यान से सुने। पांड़की उन्हीं गीत के माध्यम से ही बताया। वे समझ गये कि हमारी बहन यही आसपास है। वे इधर—उधर खोजने लगे। थोड़ी दूर में ही बड़ा सा सांप जा रहा था। उनका बीच

में मोटा था। वे सोचे किः –
''सचमुच में यही सांप ही बहन को खाया है। चलिए इन्हें मारते हैं।''
''चलिए परन्तु''
''क्या?''
''नहीं सांप थोड़ा देर पहले ही खाया होगा। बहन कुछ भी नहीं हुई होगी। चलिए सांप को ऐसे मारेगें कि सांप मर जाये और बहन बच जाये।''

इस तरह विचार कर मोटा से कुछ पहले काटे और उससे थोड़ा पीछे। ऐसा काटने से उसकी बहन जिन्दा ही निकल गई। तब उन्हें दोनों भाई झरना का पानी में नहलाये और नया कपड़ा पहनाये। दोनों बहुत ही खुश हुए। तब वे फिर अपनी बहन को घर चलने के लिए कहे। तब वह बोलीः –
''दादा! अब मै घर नहीं जाउँगी, जाइये आपलोग बढ़िया से रहियेगा।'' अपने भाई लोग बहुत समझाये परतु वह नहीं लौटी। ''जाइये ददा! जइये आप लोग लौटिए।''

ये कहकर वह एक पांड़की पक्षी का रूप धारण कर, उड़ते हुए आम पेड़ का आगा में बैठ गई। बहुत बुलाये परन्तु नहीं आयी। तब वे अपने घर लौट गये। बाद में उनका विवाह भी हुआ और वे दोनों अच्छी तरह से रहने लगे। दोनों भाई समय–समय पर शिकार खेलने आते थे। तब उन्हें देखकर खुश होती थी और किसी प्रकार का मुसिबत में गीत गा कर उन्हें आगाह करती थी। इसी लिए आज भी कहीं अनहोनी होने वाली है तो चिड़िया चहक कर आगाह करती रहती है।

4.2.2 पशु–पक्षी संबंधित कथा

श्रीराम शर्मा (लो.सा.सि.प्र.144) ने लिखा है कि पशु–पक्षी मानव के समान व्यवहार करते हैं, ये कथाएँ उपदेशात्मक होती है। वहीं डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना. लो.77) ने लिखा है कि इन कथाओं में मनोरंजन की प्रधानता रहती है। बन्दर, लोमड़ी, खरगोश, मैना आदि पशु–पक्षी की चांलाकी भरी कहानी सुन कर श्रोता एवं खास कर बालकों को काफी प्रसन्नता होती है। साथ ही वे आश्चर्यचकित रह जाते है। मनोरंजन के साथ–साथ इन कहानियों से शिक्षा भी मिलती है।

पशु–पक्षी मनुष्य के जीवन में सहयोगी के रूप में आये हैं। कहीं उसने भय से, भयभीत होकर इन पशु–पक्षियों से संधर्ष किया और कहीं उसके सहचर्य में एक ममता और प्रेम का भाव प्राप्त कर क्रीड़ा भी करता है। ये मानव की भाषा भी बोलते हैं। इस प्रकार प्रकृति से चलकर मानव अपना समाधान कथा के रूपों में खोज लेता है। अन्तर केवल इतना ही है कि एक उस विराट सत्ता का उद्घोष है तो दूसरा मानव की जीवन का प्रहरी। मूलतः प्रकृति कथा रूप एक ही तत्व के दो पहलू हैं। पशु–पक्षी से संबंधित कथा निम्नलिखित है।

4.2.2,1 गंगा–जमुना, गोहरा उराँव, फरवरी 25, 2014

हुल्लो परिया यानि आदिकाल की बात है। एक गाँव में गंगा–जमुना नाम के दो भाई–बहन रहते थे। दोनों टुवर थे। कहते हैं कि एक दिन उनका पिताजी जंगल लकड़ी लाने गया, उधर से ही नहीं लौटा। उनकी माँ भी एक दिन जंगल पत्ता तोडने गई, उधर ही क्या खाया कि क्या हुआ, वह भी नहीं लौटी। दोनों किसी तरह अपना गुजर–बसर कर रहे थे। उन्हें खाने के लिए भी नहीं हो रहा था। जंगल का कोई भी फल मिला तो खाये नहीं तो खाली पेट ही सो जाते थे। उनका जीवन बहुत ही दुःख दयी था।

एक दिन का बात है। जमुना चट्टान में धान सुखा रही थी। गंगा कहीं खाने–पीने की जुगाड़ में गया था। उसी समय एक कौवा आया और काँव–काँव बोला और एक फल को गिराया। जमुना उसे उठायी और कुछ खायी तथा कुछ को अपने भाई गंगा के लिए रख दी। उसका भाई कुछ देर बाद आया। तो उन्होंने उस फल को दी। वह खाया, उनके लिए वह फल बहुत ही मीठा लगा। तो उसने पूछा

''कहाँ पायी इतना मीठा फल दीदी?''

''कहाँ मिलेगा की भाई, एक कौवा आया और गिराया। तब कुछ को खायी और कुछ को तुम्हारे लिए बचा दी हूँ।''

''कहाँ इतना मीठा फल है दीदी?''

इसी तरह दोनों बात ही कर रहे थे कि दूसरे दिन वही कौवा फिर से आया और वही पेड़ में बैठ कर काँव–काँव बोलने लगा। जमुना पेड़ के ऊपर

देखी वही कौवा बैठा हैं।

''ऐ कौवा! इतना अच्छा फल तुम कहाँ से लाया, बहुत मीठा था। वह कौन सा फल था''

''यह बड़ फल था और खाना चाहोगे, तो सामने में नहीं है, इसे बहुत दूर देश से लाया हूँ।''

''क्या देश कहते हैं, नेपाल या भूटान, यहाँ से बहुत दूर है।''

''चलिए आप वहाँ पहुँचा दीजिए। हम वहाँ जायेगें।''

''तुमलोग जाओगे?''

''हाँ! हम जायेगें।''

''तब मैं ऊपर–ऊपर उड़ते जा रहा हूँ, तुम लोग मेरे पीछे–पीछे आओ।''

तब कौवा ऊपर–ऊपर उड़ते जाता है, तब दोनों उन्हें देखते–देखते उनके पीछे–पीछे दौड़ने लगे। थक गये हैं परन्तु भूख के कारण बिना रूके जाने लगे। बहुत दिन के बाद वहाँ पहुँचे। बहुत दिन से भूखे थे। पेड़ के पास पहुँचकर पेट भार खाये। बड़ फल को खाये उसके बाद तो उनका पेट को बड़ बांध दिया। अब वे पैखाना करने ही नहीं सक रहे हैं। तब वे कौवा को पूछेः–

''ए कौवा! बड़ फल तो पेट भर खाये, परन्तु पैखाना करने ही नहीं सक रहे हैं। क्या करेगें?''

''चलो तुमलोग आगे तरफ झुको। मैं चोंच से ठोठ कर निकाल दूँगा।''

वे दोनो आगे की ओर झुके। तब कौवा अपने चोंच से ठोठ–ठोठ कर निकाला। कुछ दिन वहीं पर थे। लौटना चाह रहे थे। रास्ते में खाने के लिए कुछ जमा किये और अपने देश लौटने लगे। अपने देश लौट कर पैखाना वैग्यरह किये। इसी लिए इधर भी बड़ पेड़ उगा और पूरे देश में फैल गया।

इसी लिए हम कौवा वैग्यरह काँव–काँव करता है तो सोचते हैं कि कुछ तो बात है, तब ही सामने–सामने रो रहा है। आज भी कौवा सामने में रोना, अच्छा या बुरा खबर का संकेत मानते है। साथ ही आज भी बड़ा गोत्र के लोग बड़ पत्ता में पानी तक नहीं पीते हैं।

इस कहानी में कौआ मनुष्य का भूख मिटाने के लिए सहयोग करता है। साथ ही बरगद पेड़ इस छोटानागपुर में नहीं रहा होगा। परन्तु कौआ का कृपा दृष्टि से इस भूमि पर बरगद का पेड़ आया और आज भी कितने प्राणियों को सकुन की छाँव देता है। जिसे आज भी पूजा की जाती है।

4.2,3 भूत–प्रेत की कथा

आज भी उराँव समाज भूत–प्रेत में विश्वास रखता है। जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तब उसका आत्मा प्रेत बन जाती है। परन्तु उराँव आदिवासी समाज में ऐसी बात नहीं है। भूत–प्रेत उन्हीं आत्माओं को मानते हैं, जिनका आकस्मिक मृत्यु हुआ हो। जैसे दुर्घटना से, फाँसी होकर, पानी में डूब कर या जहर खाकर। जिनका भी स्वाभाविक मृत्यु होती है, उसे हमारा समाज पुरखा देवता (देव–पितर) अर्थात देवता के रूप में पूजते आ रहा है। इसके लिए खाना खाने के पहले घर के मुखिया प्रतिदिन खाना–पानी देकर ही खाता है। घर में कोई भी पर्व–त्योहर हो या अन्य किसी समय, घर में पाकवान बना हो तो भी सबसे पहले पूर्वजों को ही दिया जाता है। भूत–प्रेत आत्मा के लिए पानी तक नहीं देते हैं।

लोगों का कहना है कि उराँव आदिवासी लोग चुल्हा भूत को मानते हैं। जो बिलकुल गलत है। गैर लोगों के सम्पर्क में आने से उराँव लोगों के ऊपर भ्रम डाल दिया गया है कि चुल्हा भूत को पूजा करते हैं। परन्तु चुल्हा हमारा देवता है। जिसकी पूजा लगभग तीन या पांच वर्षो के अन्तराल में की जाती है। यदि चुल्हा देवता खराब है तो घर में किसी का नहीं बनता, साईस बराकईत भी नहीं बसता और घर में मनमुटाव बना रहता है।

भूत–प्रेत की कथाओं में किसी का कटा हुआ सिर, किसी और का शरीर में आकार जुड़ जाता है। इन कथाओं में प्रायः भूत–प्रेत, डायन, दानव, पिशाच आदि से संबंधित वार्ताएँ रहती है। ये सब अमानवीय रूप में रहते हैं। लोग इस प्रकार की कहानी अधिक सुनना पसन्द नहीं करते। भूत–प्रेत से संबंधित एक कथा निम्नलिखित है –

4.2.3,1 दानो दाइत, कुड़ुख़ कत्थ पण्डी, पियुष लकड़ा, 65

एक गांव मे पति–पत्नी रहते थे। उनका घर जंगल के सामने था। उनके दो बच्चे थे। एक लड़का और एक लड़की। एक दिन दोनों पीछे भागते हैं और रोते भी हैं। किस लिए रो रहे हैं, उसे बताये –

''हमारे घर अन्दर एक ''दानो दाइत'' मेरे पिता और माँ को खा रहा है और हमें भी खाऊंगा'' कहता है।

घोड़ा बोला –''मुझे खोल दो और दोनों मेरे ऊपर बैठ जाओ।''

घोड़ा उन्हे लेकर भाग गया। दानो दाइत उनके माता–पिता को चीड़–फाड़कर खाया और उन्हें दौड़ाने लगा। दौड़ाते–दौड़ाते उनलोगों के पास पहुँचने लगा तो वे एक बांस का खोह में ये कहकर घुंसे कि ''सचमुच में बांस खोह हो तो हमें बचाना।''

वह बांस खोह बहुत ही झुण्ड था। दानो दाइत अन्दर घुसना चाहा परन्तु

नहीं सका। अन्त में बांस का खोह को उखाड़ने लगा। तब घोड़ा निकला और बच्चों को आगे भगाया। भागते–भागते एक नदी के सामने पहुँचे। घोड़ा उन्हें पार कर दिया। उसी समय दानो दाइत लव लड़ंग चढ रहा था। जब चढ रहा था उसी समय लव लड़ंग टूट गया। तब दानो दाइत उन्हें पहुँचाने नहीं सका। नदी उस पार वह घोड़ा थककर गिरा और मर गया। वे उनका कान और पैर का फिरी बनाये और जंगल में ही रहने लगे। जंगल का हिरण, सियार आदि को मार कर खा रहे थे।

एक दिन उस देश का राजा शिकार खेलने गये। जंगल में उनके पास आग नहीं था। वे अपने आदमी को आग खोजने के लिए भेजे। वे पेड़ में चढकर देखने लगे। एक जगह धूवां निकलते दिखाई दिया। तो वे उधर ही गये। वहाँ दोनों भाई–बहन का घर था। लड़की आग देने के लिए उल्टी निकली तो वे मोहित हो गये। अपने राजा को आकर बताये कि तुम्हारा जीभ भी उनके पैर जैसा नहीं मिलेगा। तब राजा उस लड़की का भाई को बुलवाया और उनका बहन को मांगा। परन्तु वह नहीं दिया। उसी दिन से राजा उस लड़का को मारने के लिए मौका देखने लगा। उन्हें कहा –''मेरे देश में जीना चाहते हो तो जाओ मेरे लिए एक हिरण मारकर लाओ।''

तब वह लड़का घोड़ा का पैर और कान को लेकर हिरण मारने गया। जिस समय एक हिरण को मारने के लिए तीर चला रहा था, उसी समय एक हडूत चिल्ला दिया। हिरण भाग गया। अब लड़का हडुत को मारना चाहा तो हडुत ने कहा :–

''तुम किस लिए मुझे मारना चाहते हो? मुझे मत मारो। तुम जो बोलो गे वही करूँगा।''

''मुझे राजा, हिरण मारने भेजा था तब तुम चिल्लाया और भगा दिया।''

''चलो मैं राजा के पास जाता हूँ, मेरे गला में रस्सी लगाओ और राजा के पास ले चलो।''

लड़का उसे घसीटते हुए ले गया और पहुँचाकर –

''यही मुझे हिरण मारने नहीं दिया।''

परन्तु राजा उन्हें छोड़कर वही लडका से कहा –

''जाओ तुम मेरे लिए बाघ मारकर लाओ।''

लड़का बोला –''अब क्या करूँगा?''

''मेरे लिए एक नौ मन का मुगरा बना दो और चलो बाघ को मारने।'' हडुत बोला।

लड़का जल्दी से गया और एक मुगरा बनाकर लाया। वे दोनों जंगल गये। ठीक उसी समय उनको दानो दाईत पाया। वह उस लड़का को पकड़ा। तब हडुत उस मुगरा से एक मुगरा मारा तब दानो दाईत बोला :–

''मत मारो, जो बोलो गे, मैं कर दूँगा।''

''एक बाघ में हमारे लिए मारो।''

दानो दाइत एक बाघ मारा, तब उस बाघ को राजा के पास लाये। अन्त में राजा लड़का को किसी तरह से ठगने नहीं सका और अपना बहन को भी लेने नहीं सका। अन्त में राजा लड़ाई करने के लिए ठान लिये। वे बोले –
''चलो मेरे और तुम्हारे बीच में लड़ाई हो।''

तब लड़का ने हड्डुत का पूछा –
''अब क्या करना होगा, मैं तो अकेला हूँ।''
''मैं तुम्हारे लिए लड़ाकुओं को जमा कर लाता हूँ।'' बोला और वह दानो दाइत के पास गया – ''तुम्हारे जितने भी साथी हैं, उन्हें जमा करो।''

वह बहुत सारे दानो दाइत को जमा कर एक टोंगरी में खड़ाकर दिया। हड्डुत ने उन्हें कहा –''कहीं भी नहीं जाना, बिना मुझे बताये।'' और वह एक झुण्ड में दुश्मन को देखने घुस गया। लड़का घोड़ा कान को फिरी बनाकर पकड़ा और बीच में खड़ा हो गया। इतना अधिक तीर चलाये परन्तु एक भी तीर उन्हें नहीं लगा। उसी समय दानो दाइत लोगों को बुलाया –
''आज जितना अधिक खाने सकते हो, उतना मारकर खाओ।''

अन्त में सभी दानो दाइत भागकर आया और राजा के लोगों को पकड़ा और चीर–फाड़ दिया। राजा भी मर गया। उनके जिन्दा में वह लड़का राजा चुनाया और राजी पाटी चलाने लगा। ऊपर्युक्त कथा में दानो दइत (भूत) है वह शुरू में मनुष्य को सताया, पर बाद में वह सहयोग किया।

4.2,4 साहसिक कथा

साहसिक कथाएँ किसी वीर के शौर्य एवं पराक्रम से जुड़ी होती है। इसी प्रकार की कथाएँ न्याय पक्ष को ग्रहण करती हुई शत्रुओं को पराजित करती है। डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना.लो.88) ने बताया है कि नागपुरी लोककथाओं में साहसी की शूरवीरता एवं साहसिक कृत्यों का वर्णन मिलता है। इसी तरह से उराँव लोककथाओं में भी साहसिक कथा का वर्णन मिलता है। वह अपने साहस और शक्ति से असहाय व्यक्ति, समाज एवं देश पक्ष के लिए काम करता हैं राक्षसों से सुरक्षा प्रदान करना, इसके भयावह रूप का वर्णन लोककथाओं की प्रमुखतः है। इस प्रकार के कथाएँ उपलब्ध है। इसके लिए निम्न कथा उद्रित है।

4.2.4,1 डिढ़गर कुक्कोस अरा रंडो़ रकस, (साहसी लड़का और रंडो राक्षस) कुडुख़ कत्थ पण्डी, पीयुष लकड़ा, 42

एक बहुत घना जंगल था। उस देश में एक रंडो रकस रहा करता था। उस देश में घुंसने के लिए किसी को साहस नहीं हो रहा था। कोई भी गलती से उस जंगल में घुस गया या खो गया तो लोग समझते थे कि उसका अरदा पूरा हो गया है, उनका जीना खत्म समझो। अन्त में उनको मरना ही पड़ता था।

उस घने जंगल के बीच में एक बड़ा सा पाट था। उस पाट में एक बड़ा सा पीपल पेड़ था। रंडो रकस उस पाट के ही झबरीला पीपल पेड़ नीचे, आराम करता था और सो भी रहा था। समझो कि वह स्थान रंडो राक्षस का स्थान था। रंडो राक्षस उस ऊँचा झबरीला पीपल पेड़ में चढ़कर, उस टोंगरी से ही बाट जोह रहा था। वह रंडो राक्षस लोगों और जानवरों को अन्धा करने का दवा जानता था। पाट टुंगरी ऊपर कोई जानवार देखा और रंडो राक्षस तुरन्थ उधर ही जाता था। पहुँच कर अपने दवा को लोगों या जानवर के ऊपर फेंककर अंधा करता था। उसके बाद रंडो राक्षस अपने मन मुताबिक नचवाता था और बाद में मार कर पेट भर खाता था। उनका ऐसा करने के कारण, उस घनघोर जंगल में जिधर देखो, उधर ही गाय–बैल, मानव या अन्य जानवारों की हड्डी देखने के लिए मिलता था।

इसी लिए किसी साहसी आदमी भी उस देश में जाने के लिए साहस नहीं जुटा पाता था। उस देश में घुसते ही शरीर में बुदबुदा जैसा अनुभव होता था और शरीर शिहर जाता था। शरीर अपने आप थर्र थर्र कांपता था।

उसी जंगल के सामने ही एक गाँव के एक घर में चार, माता–पिता और दो भाई बहन रहते थे। लडकी बड़ी थी, वह शादी करने जैसा हो गई थी। वह अपने बहन से बहुत प्यार करता था। उसका बहन भी अपने भाई से बहुत प्यार करती थी। कोई भी काम होता था तो दोनों साथ में ही काम करने जाया करते थे।

एक दिन दोनों भाई–बहन, घर छारने के लिए बांस लाने के लिए जंगल गये थे। उस जंगल में लगभग दो–तीन कोस ही तो अन्दर गये थे और बांस काट रहे थे। किधर से रंडो राक्षस चुपचाप से आया। रंडो राक्षस लड़की को जल्दी से पकड़ा और तुरंथ अपने कंधा में घोड़ा बैठाया और लेने लगा। लड़का अपनी दीदी को पीछा करने लगा। वह अपने बहन को खोजने के लिए घनघोर जंगल में चला गया, एक भी डरा नहीं। जंगल में वह एक आदमी को पाया। वह लड़का उस आदमी से पूछा –

''मेरा दीदी को देखे हैं?''

''एक लड़की को तो देखा हूँ। रंडो राक्षस अपने कंधा में घोड़ा बैठाकर ले जा रहा था।'' लड़का रोने लगा।

''मत रो, मैं तुम्हें साथ दूँगा।''

भगवान मानव रूप में धरती पर उतरा था। वह उस दिन राक्षस को मारने के लिए ताकतवर, ज्ञानी, चंचल और साहसी लड़के को उस क्षेत्र में लाया। भगवान उस लड़का के लिए पानी, आग, कांटा, नमक दिया। वह लड़का पानी, कांटा और आग का बीज लेकर रंडो राक्षस के रहने वाले घनघोर जंगल में गया। रंडो राक्षस उसे पाट के ऊपर से ही देखा। वह हाथ में अन्धा करने वाले दवा को पकड़ा और हाथ से बड़ा सा टुकु को उठाया। बाद में वह लड़का के तरफ तुरंथ जाने लगा। वह लड़का जान ही रहा था कि वह रंडो राक्षस देखेगा तो उनके तरफ आयेगा। और यह भी जान रहा था कि उनका बस चले तो उन्हें जीने नहीं देगा। यदि वह लड़का के पास पहुँचा तो लड़का का जीना आफत है, इसे लड़का समझ रहा था।

भगवान उस लड़का के लिए जबरजस्त मंत्र दिया था। वह उस मंत्र को बोलकर तीर को चलायेगा तो उसी समय उस स्थान और हवा का रूख बदल जायेगा। अन्त में वह भाग जायेगा। रंडो राक्षस का जिद्धी देख वह शक्ति के साथ खड़ा होकर आकाश की ओर देखकर मन–मन में मंत्र को गुमराने लगा। मंत्र गुमरा कर बाद में रंडो राक्षस की ओर सीधा देखकर हाथ फैलाकर आंख को चमकाया। इस तरह करने से रंडो राक्षस दस कोस दूर भूंडु जैसा हो गया। कुछ देर के लिए टस से मस नहीं होने सक रहा था। थोड़ा आराम करने के बाद वह वहीं से बड़ा सा टुकू को फेंका। वह टुकू थोड़ा सा के लिए उस लड़का को नहीं लगा। वह थोड़ा हिला, हाथ भी हिल गया, आंख भी अंधा हो गया। वह अपने आपको बचाने के लिए बहुत जोर से भागने लगा। रंडो राक्षस भी उस लड़का को पहुँचा कर पकड़ने के लिए दौड़ने लगा। जिस समय वह मुंह खोल रहा था, उस समय मुंह से आग निकल रहा था। वह बहुत ही थक गया, फिर भी वह दौड़ा ही रहा है। लड़का भी अपने ताकत भर भाग ही रहा है। रंडो रकस दौड़ा–दौड़ा कर कहता है –

''चलो तो, कहाँ भागोगें, चलो हमसे तुम्हें कौन बचायेगा। समझो तुम्हारा प्राण तो आज गया।''

लड़का इस तरह की बातें सुनकर वह एक बार फिर भूल गया कि मुझे भगवान ने शक्ति और मंत्र दिया है। डर से उसका आंद कांपने लगा। उनका होश गुम हो गया। थोड़ा सा डर अन्दर गया तो उनका पूरा शरीर में डर समा गया। करेगा तो क्या करेगा? वह डर से भाग ही रहा है और रंडो रकस भी उसे दौड़ा ही रहा था। परन्तु वह उसे अपने पास पहुँचने नहीं दे रहा है। सामने पहुँचा तब तो वह दवा को छिड़कर उसे अन्धा करेगा और मारकर खा जायेगा। अंधा होने के बाद वह रंडो राक्षस को कुछ नहीं कर पायेगा।

वह अब बहुत बड़ा पहाड़ के पास पहुंचा। वह जल्दी–जल्दी उसमें चढ़ने लगा। वह कुछ देर में ही पहाड़ का माथा ऊपर पहुँच गया। अन्त में कुछ आराम किया। इस लिए कि रंडो रकस बहुत ही दूर था। वह पहाड़ के पास नहीं पहुँचा था। जैसे ही वह पहाड़ किनारे पहुंचा, वैसा ही वह पानी को फेंकने लगा और मंत्र को बोलकर वर्षा बुलवाया। कुछ देर के लिए पहाड़ के चारों क्षेत्र पानी में डूब गया। रंडो राक्षस भी पानी में डूबने जैसा होने लगा। वह उनका ऐसा होने को देखकर फिर भागने लगा। रंडो राक्षस भी समुद्र जैसा पानी में जल्दी ही पार होने लगा। उस पानी को पार कर लड़का को फिर से दौड़ने लगा।

रंडो राक्षस का इस तरह का शक्ति और जिद्धी देखकर लड़का के लिए अब तो बचने का कुछ उपाय नहीं दिख रहा है। फिर भी वह अपने को निराश नहीं किया है। रंडो राक्षस अपने पास पहुँचने लगा तो वह अपने पीछे तरफ का कांटा बीज को छिंट दिया। ऊँचा–ऊँचा और बहुत ही घना कांटा, पूरा क्षेत्र में फैल गया और पूरा क्षेत्र को ढंक दिया। फिर भी रंडो राक्षस उस लड़का को दौड़ाना नहीं छोड़ा। वह कांटा को खूंदते–रौंदते घुंसा। कांटा रंडो राक्षस का पैर, मुंह, पेट, छाती, यानि पूरे शरीर में चुभा था। इसके कारण रंडो राक्षस का पूरा शरीर से खून निकल रहा था। इतना कांटा चुभने के बावजुद वह उस लड़का को दौड़ना नहीं छोड़ा।

रंडो राक्षस का ऐसा जिद्धी देख लड़का बहुत ही डरने लगा। वह अपने पीछे का नमक बीज को छिंटते भागने लगा। नमक कांटा का चुभा हुआ घांव में गया। तब रंडो राक्षस लहरने और दर्द होने से छटपटाने, गिरने लगा। फिर भी वह दौड़ा ही रहा है। उनके जीवन में इस तरह का दुःख कभी नहीं हुआ था। प्राण निकलने जैसा पूरा शरीर दर्द करने लगा। उनका गुस्सा चुन्दी में चढ़ गया। वह कहने लगा।

''चलो दुश्मन, कहाँ जाओगे, तुम्हारे जैसा लड़का मैं कभी नहीं देखा था। तुम कौन आदमी हो जो मुझे इतना दुःख दे रहे हो। चलो तुम आज कहाँ जाते हो। तुमको मैं भी देखुँगा और तुमको दिखा भी दूँगा कि मैं कौन हूँ। चलो तुम या मैं।''

इस तरह कहते लड़का को दौड़ने लगा। वह बहुत ही थक गया था। पैर को भी उठाने नहीं सक रहा था। परन्तु वह हिम्मत नहीं हारा था। रंडो राक्षस का इस तरह का साहसी शरीर को देखकर भगवान का भेजा लड़का भी अपना

पूरा शक्ति को दिखाना चाहा –
''चलो तो आज तुम या मैं।''

कहकर वह आग बीज गिराने लगा। रंडो राक्षस थक गया था। दर्द से वह बहुत ही तकलीप महशूस कर रहा था। उनके लिए एक कदम चलना बहुत ही कठिन लग रहा था। अन्त में वह आग में ही जल कर मर गया। उसका मरा हुआ राख से एक बड़ा सा टुंगरी (टीला) बन गया। अन्त में वह लड़का अपनी बहन को उस जंगल में पाया। उसका बहन, माता–पिता तथा भाई से बिछड़न दुःख के कारण बहुत ही डरी हुई थी। वह अपनी बहन को देखकर बहुत खुश हुआ। दोनों बांस को काटकर घर लौटे। उस दिन से लोग उस क्षेत्र. में आना–जाना करने लगे। रंडो रकस के मरने के बाद वह क्षेत्र शांत हुआ और लोग शांति से जीवन–यापन करने लगे।

इस कहानी में दोनों भाई बहन रंड़ो राक्षस से लड़ने के लिए संघर्ष किये और अन्त में उनकी जीत हुई। दोनों सुखी पूर्वक जीवन यापन करने लगे।

4.2,5 धार्मिक कथा

धार्मिक कथा में धार्मिक अनुष्ठान से संबंधित कथाएँ होती हैं। जो किसी त्योहार से संबंधित होता है। धार्मिक कथा अपने समाज के प्रति लगाव एवं धर्म के भटकाव से बचाती है। जिस पर पूरे समाज के लोगों का आस्था टिका हुआ रहता है, जिसे आज भी जीवित बनाए रखा है। उराँव लोककथा में धर्म से संबंधित कई कथा प्रचलित है। इसी का परिणाम है कि उराँव़ समाज अभी भी अपने धर्म में आस्था एवं विश्वास को बनाए रखा है। धार्मिक कथा से लोगों में आस्था प्रगाढ़ होता जा रहा है।

धार्मिक कथा से संबंधित एक कथा ख़द्दी (सरहुल) का है। यह पूरे झारखण्ड में शुक्ल पक्ष चैत तृतीय को मनाया जाता है। परन्तु कहीं कहीं अन्य दिनों में भी मनाया जाता है। यह उराँव जनजाति का सबसे बड़ा त्योहार है। जिसे हमारे पूर्वज क्यों मनाते आ रहे हैं तथा इसका भविष्य में क्या उपयोगिता है। जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में महत्व पूर्ण स्थान रखता है। यह भारत के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में मनाया जाता है, जहाँ पर उराँव जाति का निवास है। इसके अलावा अन्य जाति भी मनाती है। धार्मिक कथा से संबंधित निम्न कथा प्रमुख रूप से प्रचलित है।

4.2.4,1 **बंक्की बींड़ी** (बंकी रानी)

उराँव जनजाति में धार्मिक कथा भी प्रचलित है, जो इस प्रकार है। (डॉ0 भगत, ख़द्दी 'सरहुल',05) आदिकाल में एक उराँव राजा के घर में पांच लड़के थे। इसमें सबसे बड़ा भाई का नाम कैइला था। दक्षिण देश मद्रास में उराँव राजा ''मदरास'' के नाम से हुआ। मंदर या ''मन्द्र'' या ''आस'' दो शब्द से बना है। मद्रास में मदरा राजा के पांच बच्चे थे। पांच भाई में सबसे बड़ा का नाम कइला था। वह सतपुड़ा पहाड़ के दक्षिण देश, खुखरा के दक्षिण गोदावरी नदी किनारे में राजधानी बनाया। बंक्की बींड़ी का विवाह कइला राजा के साथ हुआ। जिसका क्षेत्र कलिंग था अर्थात उनका नईहर कलिंग था। कइला घर का बड़ा होने के कारण सब काम जैसे घर के लोगों को भोजन कराना, देखना, करना पड़ता था। बंकी सभी समय पूजा–पाठ किया करती थी। सबसे बड़ी होने के कारण अपने सास–ससुर को सेवा सुथर ठीक से नहीं कर पा रही थी। उन्हें घर को सम्भालने में अधिक समय लग रहा था। उनके गोतनी भी दूसरे पर भरोसा कर घर का कोई भी कार्य नहीं करते थे। वे अपना काम दूसरे के ऊपर थोप देती थी।

वह सभी समय भगवान को विनती कर रही थी और भगवान को सेवा करने वाली महिला थी। दिन–रात भगवान का ही गीत गा रही थी। कहते हैं कि जिस समय भगवान के सेवा में डूबी रहती थी, उस समय उनके कपाल में तीन लकीर या चिन्ह दिखाई दे रही थी। इसी लिए उराँव लड़कियाँ कपाल में

तीन खोदा खुदवाते हैं। परन्तु अब बहुत दिन होने के कारण छूट गया। भगवान के गीत गाते देखकर उनके गोतनियां हिंसगा हो रही थी। उराँव रीत के अनुसार बड़ा भाई के मरने के बाद भी वे राजा नहीं बनते। परन्तु वे जानते थे कि कइला का एक भी बच्चा नहीं है। मझला भाई का एक लड़का था। रीत के अनुसार कइला का बच्चा नहीं रहते तो मझला भाई का लड़का राजा बनता। परन्तु अब देख रहे हैं कि बंकी भी गर्ववती है। तब सभी भाई और उनकी पत्नी, एक स्थान पर जमा हुए और उसे बिसाही कहने लगे। उस समय, उस क्षेत्र में बहुत अधिक लोगों की मृत्यु हुई थी। तब उन्हे बोले कि यही करगुनी की है। राजा को रीत जैसा ही रास्ता चलना था। बंकी पंचों के सामने ही बोली–''मैं बिसाही नहीं हूँ।'' परन्तु वोट तो उधर ही गया। बेचरंगा कइला भी क्या करता। गर्ववती थी इसी लिए गड्ढा खोदकर तो नहीं गाड़े। उस समय गलती करने वाले को गड्ढ़ा खोदकर गाड़ने की प्रथा थी। वे उसे एक बक्सा में डाल कर नदी में बहा दिये। बहते–बहते बहुत दूर, दूसरे देश चली गई। दूसरे देश के गाय चराने वालों ने निकाला। उन्हें सारी बात बतायी और फिर अपने देश वापस चली आयी। उस समय तो बहुत बड़ा बैठक बुलाये और उन्हें और अधिक बिसाही कहने लगे। उस समय फैसला सुनाये कि ''सतपुड़ा'' जंगल के उस पार, अपना पति छोड़कर आयेगा।'' अब कइला क्या करेगा। पंचों का नियम को सुनना ही था। खाने–पीने का सारा समान जोगाड़कर, अपना घोड़ा में अपनी पत्नी को बैठाया और जाने लगे। बहुत दूर घनघोर जंगल बीच में पहुँचकर बोला :–''अब हम दोनों यहीं पर रहेगें। देखो यहाँ बहुत बड़ा बड़ पेड़ है और किस्म–किस्म का फल, जैसा कि बड़, पाकर, डुम्बर, केउन्द, चार भरपूर है। तरह–तरह का पक्षी भी भरा पड़ा है। हमलोग यहाँ शिकार करेगें और खायेगें।''

कइला जंगल में एक झोपड़ी बनाया और दोनों रहने लगे। रोज शिकार खेलने जाया करते थे। उधर से ही मधु और फल आदि लेकर आते थे। उन्हीं को खाकर जीवन–यापन कर रहे थे।

प्रेमचन्द उराँव (पलमा डुगडुगिया, जून, 22,2019) इस तरह कुछ दिन बीत गया। एक दिन की बात है। जंगल में ही बंकी और कइला एक कियारी में बैठे हुए थे। बात करते बंकी को नींद आने लगी। वह अपने पति के धोती का आंचल में अपना सिर रखी और सो गई। कइला तो पहले से ही मौका देख ही रहा था कि कब अपने घर लौटूँगा। वह अपनी पत्नी से अधिक अपने भाईयों को याद कर रहा था। वे कैसे होगें? क्या कर रहे होंगे? वह दिमाग लगाया कि यदि आंचल को घीचूँगा तो वह जाग जायेगी। इसलिए वह अपने तलवार से धोती को ही काट दिया और अकेले छोड़कर अपना देश लौट आया।

इधर बंकी नींद से उठी तो अपने को अकेले पायी। वह बहुत रोयी परन्तु अब वह क्या करेगी, कहाँ जायेगी। उन्हें तो घर से ही निकाल दिया गया है। वह जंगल में ही एक सखुवा का पेड़ को, वही धोती का आंचल से बांध दी, ताकि इधर–उधर जाने पर भी उस स्थान को न भूले और भूल भी जाये तो उस

कपड़ा को देखकर वहीं पर आ जाये। वह जंगल में ही बाध, भालु के आलावे अन्य जंगली जानवरों के बीच में ही रहा करती थी। हर समय रोते बिलखते रहती थी। वह हर समय भगवान का नाम ले रही थी। उनका प्रसव का भी समय नजदीक आ रहा था। जिस दिन समय हुआ, उस दिन पेट दर्द से छटपटाने लगी। उस समय लोगों का जरूरत पड़ता है। परन्तु उन्हें सहारा या सेवा करने के लिए कोई नहीं थे। पूरा झोपड़ी बिसर हो गया। जंगल का जंगली जानवर सामने आने लगा। ऐसे समय में उनके लिए भगवान ही सहारा था। बच्चा जन्मा, किसी तरह घसीटते हुए झोपड़ी से बाहर निकली और पत्थर से अपना नाल काटी और जंगल में ही अपना फूल को गडढ़ा खोदकर गाड़ दी। जो इस गीत से पता चलता है। (डॉ0 भगत, ख़द्दी,05)

169	एबसरका पेल्लो रानी मंज्जा, टोड़ंग मझी नू ख़द्दासिन पाकिया।	खोयी लड़की रानी हुई जंगल बीच में बच्चा पायी
	मक्का मन्न किय्या पाकिया, परता राजी नू ओच्चा दरा केरा।	सखुवा पेड़ नीचे पायी जंगल देश में लेकर गई

भगवान का लीला, जंगल के जंगली जानवर ही उनके लिए सहारा था। वही उनके लिए खाने–पीने के लिए सभी चीज ला देते थे। जंगल के फल और मधु को ला देते थे। उसी को खाकर जीवन बीता रही थी। उस बच्चा का नाम दुःख से आया। तकलीप में कांटा लेकर आया। इसी लिए उसका नाम ''हरे अच्च ओन्दरस''। जो बाद में हरिश्चन्द्र हुआ।

बंक्की रानी का बच्चा बढ़ने लगा। वह दिन रात भगवान का सेवा कर रही थी। एक रात, झोपड़ी के बड़ पेड़ ऊपर दो कौवा बात कर रहे थे। एक बोला–

''तुम कल किधर गई थी?''

''हे भगवान! कैसे बताऊंगी। जाकर देखी एक राजा के देश में कान पकने का रोग हुआ है। बहुत सारे लोग मर रहे हैं।''

तब बंक्की सोचने लगी कि ''मेरे बात को नहीं सुनेगें और मेरे दिखाये रास्ते पर नहीं चलेगें तो इसी तरह मर कर समाप्त हो जायेगें। हे भगवान सभी कुड़खर लोगों को इसी तरह खत्म करोगे तो तुम्हें पिता बोलकर कौन पुकारे गा।'' दोनों कौवा ही –

''हरयो! वैसा रोग तो किन्ही को न लगे।''

''पर इससे बचने के लिए कोई उपाय है क्या?''

''इस सखुवा पेड़ नीचे का हमारा पैखाना को सुखाकर उनके कान में डालेगें तो वे ठीक हो जायेगें।''

बंकी उठी, सखुवा पेड़ के पास गई और खूब रोने लगी और बोली –

''हे भगवान! मैं जाउँगी, मुझे भेजो।''
ऊपर से चाल (आवाज) सुनाई दिया ''जाओ''

भगवान का चाल दिया हुआ के कारण उराँव में ख़द्दी (सरहुल) पूजा स्थान का नाम ''चाला टोंक्का'' हुआ। भगवान के कारण ही, क्योंकि भगवान बंकी से बात की और बंकी भी उनका बात को सुनी और समझी। क्योंकि भगवान कुडुख़ से ही बात किया था। उन्हीं के बताये अनुसार सखुवा पेड़ के नीचे के पक्षी का पैखाना को उनके कान में डालो गे तो ठीक होगा।

कइला के देश के लोग और घर के सभी लोग उसे बिसाही बोले और घर से निकाल दिये थे। ये कुछ ही दिन का बात था। हरे अच्च (कांटा) लाया का जन्म हुआ था। उनका दिया तकलीप को नहीं भुलायी थी। फिर भी बंकी भगवान का चाल सुनकर अपने लोगों को बचाने के लिए पक्षी का पैखाना को लेकर अपना बेटा के साथ जाने लगी, यही उराँव दिल है। जो भगवान के छाया में रहेगें वे भगवान का आवाज को सुनेगें। वही उराँव लोगों के सुख–दुःख में साथ देगें। अपना लोग अपने समाज को नहीं छोड़ेगें। उनके लिए कितना भी गुस्सा आये परन्तु वे गुस्सा नहीं करेगें। जिनके ऊपर गुस्सा चढ़ता है, उनके ऊपर शैतान सवार रहता है। जैसा कि केकड़ा का खपराही में भगवान शैतान बनाया।

बंक्की अब पक्षी का पैखाना को तो रात भी जमा की। परन्तु कैसे उस क्षेत्र जायेगी। उन्हें तो समझ में नहीं आ रहा था। तभी पेड़ में बैठी कौवा काँव–काँव आवाज दी, बंकी ऊपर देखी। जिधर कौवा जाता उधर वह दौड़ती। इसी तरह करते–करते जाने लगी। जब वह थक जाती थी तो कौवा भी रूक जाता था। इसी तरह करके वह उस क्षेत्र में पहुँची। बहुत सारे लोगों का कान पकने रोग से मृत्यु हो चुकी थी और बहुत सारे लोग बिमार से बिछावन में पड़े थे। वह गाँव के लगभग लाखो लोगों को, गाँव–गाँव जाकर दवा की थी। राजा उनका कार्य को देखकर महल बुलवाया। सबों का आँख ओझल हो गया था। जो भगवान बंकी के साथ चाल दिया, सबों का आँख बन्द कर दिया। सभी पापी लोग बंकी को कोई नहीं पहचान रहे हैं। दवा कर सबों को ठीक कर दी। उस क्षेत्र के लोग उन्हें ''धरमी अयंग'' (धर्म माँ) कहने लगे।

यह भी कहा जाता है कि जब वह दवा कर सभी लोगों को ठीक कर दी तो वहाँ के राजा ने बंकी रानी को अपने महल बुलवाया। उन्होंने कहा कि तुम जितना चाहो उतना जमीन ले सकती हो। तब बंकी ने कहा कि ''मैं उतना जमीन को क्या करूँगी। मेरे लिए एक छोटा सा कमरा दे दीजिए। मैं उसी में रह लूँगी।''

तब राजा ने उसके लिए एक कमरा दिया और खाने–पीने का सारा समान भी पहुँचा दिया। कुछ दिन होने के बाद कइला लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब हो गई। कइला रोज लकड़ी बेचकर अपना जीवन यापन करता था। एक दिन की बात है। कइला उसी महल की ओर लकड़ी बेचने आया। वह

चिल्लाया ''लकड़ी ले लो, लकड़ी ले लो'' बंकी रानी आवाज को सुनी और उसे बुलवाया। लकड़ी खरीदी और खाना–पीना देकर भेज दी। और आठ दिन के बाद फिर से लकड़ी लेकर आने के लिए कही।

कइला आठ दिन के बाद और लकड़ी लेकर आया। उसी दिन लकड़ी रखने के बाद, उन्हें स्नान करने के लिए कही और खाना खाने के लिए दी। खाना खाने के बाद उनके बारे में पूछी। वह सबकुछ बताया। बाद में बंक्की रानी बोली कि ''तुम मुझे पहचान रहे हो?'' कइला बहुत रोने लगा और रोते हुए बोला कि कैसे कहूँ कि तुम मेरी पत्नी हो।'' ये कहते ही वह और जोर से रोने लगा। ''देखा मुझे इतना दुःख में छोड़कर आये थे। देखो तुम्हरा ही बच्चा है। आज मैं ही हूँ जिसे लोग पूजते है। तुमलोग कितना गरीब हो गये हो कि आज लकड़ी बेचकर जीवन–यापन करना पड़ रहा है।''

कइला और जोर से रोने लगा। तब उन्हें शान्त करायी और ये खबर राजा के पास पहुँचवायी कि मेरा पति अब लौट आया है। आज दिन बहुरा है। उसी दिन सबों को बतायी कि देखो वही मैं बंक्की हूँ जिसे आपलोगों ने बिसाही कह कर भारी दुःख के समय घर से निकाल दिया था। सभी आँख फाड़ कर देखने लगे। सभी उनसे छमा मांगने लगे और उस स्थान के बारे में बतायी, जहाँ उन्हें चाल सुनाया था।

दूसरे वर्ष, जिस समय में भगवान बंक्की को चाल दिया था। राजा से बोले ''फलना दिन सभी परजा लोगों को गढ़ बुलाना होगा। हंकवा हुआ। परे क्षेत्र के लोग चींटी की तरह आने लगे। राजा के भाई लोग भी आये। पूरा गढ़ परजा लोगों से खचाखच भर गया। धरमी माँ भगवान का गीत गाने लगी। बंक्की सबों को पहचान रही थी। उनके देवर, गोतनियाँ सभी उनका पैर पकड़ रही थी। बंक्की रानी रोने लगी। रो–रो कर लाखो लोगों के बीच कहने लगी।

''मैं ही बंक्की हूँ! तुम सबों का रानी। यही वह बच्चा है, जो पेट में था, उसी समय मुझे घर से निकाल दिये थे।''

सभी ये बात सुनकर पागल हो गये। भगवान चाल दिया और उनसे जो बात हुई, सभी को धीरे–धीर बतायी।

''कल हम सभी पूरा दिन उपवास करेगें। धरती कोई भी नहीं खोदेगा। आज मैं उस नियम को तोड़ रही हूँ, जिसके कारण बेगुनहा को जिन्दा गड्ढ़ा में डाल रहे थे। इतना हम गलती किये और हमारा पुरखा से, उसके लिए हमें छमा मांगना होगा और दिखाना होगा कि आज से गड्ढ़ा खोदकर मिट्टी डालने का नियम खत्म होगा। गढ़ के उस पार अमरय बगीचा था। वहाँ बड़ और सखुवा पेड़ था। एक दिन पहले उस स्थान को साफ करने के लिए कही। दूसरे दिन नगाड़ा, मांदर के साथ पूरे देश के परजा उस स्थान पर पहुँचे। सभी परजा लोगों को अपना बीता कहानी को बतायी और भगवान के साथ बात–चीत को धीरे–धीरे बतायी। तब सभी लोग उनसे छमा मांगने लगे।

''हे जिन्दा रहे भगवान, तुम हमे नहीं छोड़ना, तुम्हारा दया धर्म हमारे साथ रहे।''

सभी सखुवा फूल को खोंसाये और बड़ फल को खाये। उस काल से आज तक कुड़ख़र लोग ख़द्दी मनाते आ रहे हैं। भगवान ने चाल दिया इसी लिए आज भी भगवान चाला टोंक्का में चाल देते हैं। उसी समय से कुड़ख़र ख़द्दी में ''चाला पच्चो'' जैसा कि बंक्की रानी के द्वारा बताये धर्म को मानते हैं। उसी समय से आज भी चैत माह में नया वर्ष में चाला माँ का पूजा करते हैं। नया नियम बना, इसी लिए कुड़ख़र चैत महीना को नया वर्ष कहते हैं और नया फल को उसी समय से खाना प्रारम्भ करते हैं। बीज भी उसी दिन के बाद ही निकालते हैं।

इस कथा में कहा गया है कि बंक्की बीड़ी सखुआ पेड़ के नीची बच्चों को जन्म दी, इस लिए ''ख़द्दी'' कहा गया। क्योंकि बच्चा जन्म को उराँव भाषा में ''ख़द्द कुन्दुरना'' अर्थात ख़द्दी पर्व हुआ। वहीं से बंक्की बीड़ी को कान पकने का ''चाल'' अर्थात आवाज सुनाई दिया इस लिए ''चाला टोंक्का'' कहा गया।

4.2.6 ऐतिहासिक कथा

लोककथाओं का एक स्वरूप ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर भी प्राप्त होता है। भारत पर अनेक जातियों के आक्रमण, उन जातियों के संघर्ष आदि की कथा ऐतिहासिक तथ्यों के अन्तर्गत समाहित की जा सकती है। उराँव़ में इतिहास से संबंधित कथाएँ प्राप्त हैं। इसमें किसी वीरता और शौर्य से परिपूर्ण कार्य जीवन में एक स्मृति छोड़ जाते हैं। जो सुखद होती है और जिसका स्थाई प्रभाव भी होता हैं। ऐतिहासिक कथाओं में मानव को आगे बढ़ने की अपरिचित शक्ति होती है। इस कथा में इतिहास से संबंधित अर्थात हमारे पूर्वज पूर्व में किस अवस्था में थे, कहाँ थे, वहाँ का शासन व्यवस्था कैसा था। ये सभी ऐतिहासिक कथा से स्पष्ट होता है। उराँव जनजाति समाज में ''रोहतासगढ़'' की कथा उराँव समाज में बहुत प्रचलित है। इससे इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

4.2.6,1 रूइदासता कुडुख़ बे–लस (रोहतास का कुडुख़ राजा)

एक राजा और रानी थे। (ग्रिगनार्ड, कुडुख़ कत्थ ख़ीरी अरा डण्डी, 51) उनका एक ही बेटा था। वह राजी भगत था। वह श्रद्धा रखने वाले, अंधरा लंगड़ा–लुल्हा, सबों के लिए कुछ न कुछ देता था। कोई भी लोग मांगने के लिए आये तो उन्हें भी खाली हाथ नहीं लौटाता था। कोई एक अना मांग रहे थे तो उन्हें दो अना दे रहे थे। यदि कोई पांच पयला धान मांगे तो उन्हें दस पयला धान दे रहे थे। किन्हीं को काना हिंसा नहीं कर रहा था। वह चेहरा देखकर भी किसी के तरफ फैसला नहीं करते थे। वह स्नान कर प्रत्येक दिन सुबह समय बांट रहे थे।

एक दिन ऐसा हुआ। भगवान ने भिखारी का रूप धारण कर उनके महल में भीख मांगने आया और दरवाजा के पास खड़ा होकर भीख मांगने लगा। तब राजा ने कुछ पूछा और कहा –''क्या खोज रहे हो, मैं तुम्हे दूँगा।'' वह बोला –''हे राजा, मैं बताने के लिए सकपकाता हूँ। पता नहीं देने सकोगे या नहीं'' वह बोला –''मैं देने नहीं सकूँगा तो कौन देने सकेगा? मेरा तो सबकुछ है। बहुत मांगने वालों को दिया हूँ तो तुम्हें नहीं सकूँगा? तभी भिखारी इतना पैसा मांगा कि राजा देने भी नहीं सक रहा था। तब राजा ने क्या किया? अपना गढ़, गाय–बैल, भैंस, हाथी–घोड़ो सभी को बेच दिया, फिर भी देने के लिए नहीं होता है। तब अन्त में अपनी पत्नी और बच्चा को तेली के घर में बेच दिया और खुद को एक डोम (लाश जलाने वाले) के घर में बेच दिया और भिखारी का पैसा को पूरा किया।

उस समय कोई मर रहे थे तो उन्हें डोम जाति के लोग जला रहे थे। उस समय यह एक नियम ही था। बहुत दिन होने के बाद एक दिन ऐसा हुआ कि राजा का बेटा बीमार हुआ और मर गया। रात में ही मरा, रात में ही तेली लोग डोम के पास जलाने के लिए बोह कर लेने लगे। रानी भी पीछे से रोते हुए

जा रही थी। आधी रात को डोम के घर पहुँचे और बुलाने लगे। तब एक डोम उठा और उसका मूल्य मांगने लगा। तब उसके बदले में मालिक ने दिया। एक डोम ने राजा के बेटा को जलाने के लिए उठा। वह आग पकड़कर मसड़ा तरफ जाने लगा।

रास्ते में उनका रोना सुनाकर उन्हें दुःख लगा। वह पूछने लगा, इसलिए कि वह उसे नहीं पहचान रहा था। बेचने के दिन से कभी भी देखा–देखी नहीं हुए थे और तेली लोगों के जैसा उनका कपड़ा भी मैला था। वह भी उन्हें पहचाने नहीं सकी। उनके लिए फेके हुए लोग जैसे दिखाई दे रही थी। तब वह रोते–रोते राजा और भिखारी के साथ अपनी भी सभी बात को बतायी। सुन कर वह भी रोने लगा। रोते हुए ''मैं ही हूँ''। तब दोनों बहुत रोने–कल्पने लगे। फिर भी राजा हरिश्चन्द्र ने कहा :–

''मेरे मालिक ने कहा है, जिनका भी लाश जलाना, उनका आधा कफन रखना। मेरे लिए कफन का एक टुकड़ा चाहिए।''

''मेरे पास तो कफन भी नहीं है, मैं कहाँ से दूँगी, और ये तो तुम्हरा ही बेटा है।''

''नहीं तुम्हें कफन का आधा टुकड़ा देना ही पड़ेगा, मैं अपने नियम से बंधा हुआ हूँ, जब आप दीजिएगा तभी आपका बेटा का चिता जलेगा।''

''इनके नसीब में तो एक कफन का टुकड़ा भी नसीब नहीं है, मैं कफन नहीं खरीदने सकी तो अपने साड़ी के आंचल में ही ढककर ला रही हूँ। ऐसी बात है तो इस साड़ी को ही आधा काट लीजिए।''

उनकी पत्नी के पास उतना ही कपड़ा था, यदि उसे वह काट कर आधा ले लेता तो उन्हें पहनने के लिए भी नहीं बनता। ऐसी बातें सुन उसी समय एक भिखारी की तरह रूप पकड़कर उतरा और उन्हें कहा –''तुमलोग मुझे बहुत प्यार कर मनाया। इसलिए मैं तुम्हें आशिर्वाद देता हूँ। तब मरा हुआ उनका बेटा को जिन्दा कर दिया। और कहा –''जाओ ररूइदास को लेकर, तुम्हारा ही देश होगा।'' अन्त में उनके माता–पिता बच्चे को लेकर गये और उनका बेटा के नाम से ''रूईदास'' नाम से ही नया गढ़ बनाये जो आज भी है। अन्त में बहुत दिन राज किये और अच्छी तरह से थे।

आज भी उराँव समाज में किसी भी पूजा पाठ के समय कैसे–कैसे आये उनका नाम लेते हैं। उनमें से पहला नाम रोहतासगढ़ का नाम ही आता है। इसके बाद ही अजमगढ़, पिपरी पाठ, हरदी नगर, आदि का नाम लेते हैं। इससे स्पष्ट पता चलता है कि हमारे पूर्वज का निवास रोहतास गढ़ में सचमुच ही था। इसके लिए कई कथा एवं गीत मिल जायेगें। जैसा कि–

170	एस्ते की बरेचकर	कहाँ से आये
	नागापुर नू रहेचकर	नागपुर में रहे
	अक्कुन कुडुख़र एकसन कालोर	अब कुडुखर कहाँ जाओगे।

रोहतास ती बरेचकर	रोहतास से आये
नागापुर नू रहेचकर	नागपुर में थे
अक्कुन कुड़ख़र एकसन कालोर	अब कुड़ख़र कहाँ जाओगे
असम भोटांग निन्दया	असम भूटान भर गया
नागपुर हूँ निन्दया	नागपुर भी भर गया
अक्कुन कुड़ख़र एकसन कालोर	अब कुड़ख़र कहाँ जाओगे।

इस गीत से भी पता चलता है कि हमारे पूर्वज रोतहासगढ़ से आकर नागपुर में बसे और यहाँ से बाद में असम–भूटान की ओर काम करने गये।

4.2.7 मनोरंजन कथा

उराँव़ समाज में बहुत सारे ऐसे कथायें हैं, जो मनोरंजन से संबंधित है। जो सभी को बहुत ही अच्छा लगता है। जिसमें मनोरंजन के साथ ज्ञान, प्रेरणा आदि मिलता है। लोग तनिक छण के लिए अपना सारा दुःख–दर्द भूल जाते हैं। ऐसे ही मनोरंजन से संबंधित एक कथा है जो बहुत ही मजेदार है।

4.2.7.1 केन्दरा अस्सुस (केन्दरा बजाने वाला)

बहुत पहले की बात है। (चिमनी उराँव के अनुसार) एक गाँव में एक माँ और उनका बेटा रहते थे। उनका बेटा का नाम ''बुधवा'' था। दोनों बहुत अच्छा से जीवन–यापन कर रहे थे। दोनों रोज काम कर दिन बिता रहे थे। उनका खेत नहीं था। कहते हैं कि उनका खेत को उनके खानदान वाले लूट लिये थे। परदेश जाने के लिए भी दिक्कत था। क्योंकि अपनी माँ को छोड़कर कहाँ जायेगा। अपनी माँ के कारण कहीं नहीं जा रहा था। उसकी माँ भी कुछ नहीं कर पा रही थी।

एक दिन वह बाजार गया था। बाजार में एक स्थान पर एक जोगी केन्दरा बजा रहा था। उनका धुन सुनकर सभी थिरकने लगे थे। बुधवा भी वहाँ गया और नाचने लगा। सभी नाच–नाच कर बहुत जोर से थक गये थे। वह बजाना बन्द किया तब उन्हें लोग खूब पैसा दिये। उन्हें लगा कि मैं भी केन्दरा बजाता तो किताना अच्छा होता। उनके मन में तरह–तरह का सोच जन्म लेने लगा। वह उस केन्दरा को लेना चाह रहा था। वह जोगी के पास गयाः–

''मुझे बाजाने के लिए सिखाओगे?'' जोगी ने कुछ देर सोचा।

''तुम किस लिए बजाना चाहते हो?''

''मुझे तुम्हारा बजाया हुआ बहुत ही अच्छा लगा। मेरा दिल बोला बजाना सीख जाओ।''

''परन्तु इसके लिए तुम्हें पैसा देना होगा?''

''कितना पैसा देना पड़ेगा, मेरे लिए देने जैसा रहेगा तो दूँगा।''

''तुम्हें एक माह में एक ओड़िया धान देना होगा।''

''बाबा मैं उतना तो नहीं सकूँगा, पर देने का जरूर प्रयास करूँगा।''

''नहीं तुम्हें मेरे लिए देना ही होगा, तब ही मैं सिखाउँगा।''

उसे क्या करें क्या न करें। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। कुछ समय के लिए तो केन्दरा बजाने सिखुउँगा, ये सोच कर बहुत खुश था। सभी पानी में बह गया। उन्हें कुछ नहीं बुझा रहा था। आँखों के सामने अंधेरा छाया हुआ था। उसने सोचने लगा कि मैं जोगी को धान दूँगा तो पेट उपवास ही रह जायेगा। मैं तो किसी तरह परन्तु माँ को क्या खिलाउँगा। तरह–तरह की बात उनके मन

में भर गया। फिर भी वह साहस कर के बोला :–''आप मुझे केन्दरा बजाना सीखा दीजिए, मैं आपके लिए धान जुगाड़ करने का प्रयास करूँगा।''

उनका ऐसी बातों को सुनकर जोगी को लगा कि इन्हें सिखाने पर अच्छा होगा। यह पहला व्यक्ति है, जो केन्दरा बजाना सीखना चाह रहा है। यदि इन्हें मैं बजाना सीखा देता हूँ तो मेरा जीना सफल हो जायेगा।

''ठीक है, परन्तु महीना के अन्त में मेरा एक उड़िया धान देना होगा।'' वे देने के लिए राजी हो गये।

वह केन्दरा बजाना सीखने के लिए, जितना पैसा एक दिन में कमा रहा था, उसी में से घर का सभी समान खरीदने के बाद कुछ पैसा को बचाने लगा। पहले तो वही पैसा नहीं बच रहा था। वह भी रात दिन करके केन्दरा बजाना सीखा। जब पैसा देने का पाली आया तो जोगी के कहे अनुसार ही उनके लिए सुबह में ही पैसा पहुँचा दिया। ऐसा देख –

''बेटा! तुम पैसा को अपने पास रखो।''

''नहीं ये आपका पैसा है।''

''नहीं मैं तो देख रहा था कि तुम सीखने के लिए कितना उत्सुक हो। तुमने बहुत अच्छा से सीखा। यही मेरे लिए ''धान'' है।

''नहीं ये आपका पैसा है।''

''नहीं! तुम ये पैसा से एक केंन्दरा खरीदो और पूरे देश में फैलाओ। यही मेरा इच्छा है, यही मेरा धन है।''

वह उस पैसा से एक केन्दरा खरीदा। रोज बाजार की ओर जाकर केन्दरा बजाता। उसी से कुछ पैसा हो जा रहा था। उसी से दोनों का जीवन–यापन होता था। परन्तु फिर भी खाने पीने के लिए नहीं हो रहा था।

रोज की तरह वह जंगल शिकार खेलने जा रहा था। उधर से ही पक्षी वैग्यरह मार कर लाता था और दोनों बना कर खाते थे। रोज कोई न कोई पक्षी को मारता ही था। वह जंगल के हर क्षेत्र को जानता था। एक दिन एक राही उस रास्ते में मिला। वह जंगल पार करने के लिए डर रहा था।

''तुम मुझे जंगल पार कर दो गे, तुम्हें भगवान भला करेगा।''

''ठीक है'' कहे और जंगल पर कर दे रहे थे। दोनों साथ में रास्ता चल रहे थे। रास्ता चलते ही राही ने पेड़ पर एक पक्षी को देखा। उसे देखकर, उन्हें लोभी लग गया। सचमुच में मारते तो कितना अच्छा होता.......।

''तुम इस चिड़िया को मार दो तो''

''किस चिड़िया को?''

''वो .. वहाँ बैठा है।''

''ठीक है मैं मार रहा हूँ परन्तु गिरे गा तो तुम्हे लाने जाना होगा।''

''ठीक है मैं जाउँगा।''

बुधवा उस चिड़िया को मारा। वह चिड़िया पुटुस झाड़ी में गिरा। राही ने उस पक्षी को लाने के लिए पुटुस झाड़ी में गया। उसी समय वह अपना केन्दरा

बजाना प्रारम्भ किया। जैस ही केन्दरा बजाना शुरू होता है, वैसा ही उसका पैर थोड़ा–थोड़ा उठना प्रारम्भ होता है। जैसे–जैसे कुछ समय बीतते जा रहा है, वैसा ही उसका पैर जोर से थिरकने लगा। कुछ देरी के बाद तो वह जोर–जोर से पुटुस झाड़ी में ही नाचने लगा। नाचते–नाचते वह बहुत थक गया। उनका शरीर को पुटसु झाड़ी का कांटा छिल दिया, जिससे उनके शरीर से खून भी बहुत बहने लगा। तब राही :–

''मत बजाओ बाबु, मब बजाओ'' बोलते रहा गया। फिर भी वह बहुत देर बाद बजाना बन्द किया। राही ने झाड़ी से निकला।

''बाबु तुम बहुत अच्छा केन्दरा बजाते हो। तुम्हे बहुत–बहुत धन्यवाद। तुमने मुझे बहुत रीझाया। लो तुम इस धन को, मैं इस पक्षी को लेकर जा रहा हूँ।''

बुधवा उस धन को लेकर अपना घर चला गया और अपनी माँ को सारा बात बताया। वह भी पक्षी केवल लेकर ही अपने राजा के पास पहुँचा। उनके खाली हाथ आते देख –

''धन कहाँ है? क्या किया जो?''

''क्या करूँगा, मैं अकेला था। तब एक लकड़ा को जंगल पार करने के लिए कहा। तब उन्होंने जंगल बीच में मार कर सारा धन लूट लिया।''

''वह किस गाँव का है?।''

''गाँव तो नहीं जानता हूँ पर वह पूरब की ओर गया।''

''उन्हें पहचानो गे?''

''हाँ, पहचान लूँगा।''

राजा अपने प्रजा लोगों को बोला –''जाओ उस लड़का को पकड़कार मेरे पास लाओ।''

उनके प्रजा लोग राहगीर को लेकर उधर ही जाने लगे। उधर ही जाकर उस केन्दरा बजाने के बारे में पूछने लगे और उनके घर गये। राजा के लोग बुधवा को पकड़कर लेने लगे। उसकी माँ बहुत रो रही है। उन्हें विनती कर रही है। ''मत ले जाओ मेरा बेटा को बाबु, वह कुछ नहीं किया है। मैं किस तरह से रहूँगी।'' वे नहीं सुन रहे हैं तब ''चलिए मैं जा रहा हूँ परन्तु मेरा केन्दरा को पकड़ने दो।''

और वह अपना केन्दरा को पकड़ा और उनके साथ जाने लगा। साथ में उनका माँ भी जाने लगी। बुधवा लौटा के देखा परन्तु वह नहीं लौटी। राजा के घर ले जाकर राजा ने उनसे पूछे –

''तुम इनका धन को लिये हो सचमुच बताओ नहीं तो तुम्हे मार देगें।''

''हाँ मैं लिया हूँ।'' बिना डरे। वह नहीं ठगा। तब राजा ने उन्हें फांसी का सजा सुनाया। बुधवा की माँ इसे सुन बहुत रोने लगी।

''हजूर मेरा बेटा कुछ नहीं किया है। उन्हें छोड़ दो, मैं किसके सहारे रहूँगी।''

''हजूर मुझे तो मरना ही है। परन्तु मरने से पहले मेरे इच्छा भर केन्दरा बजाने

दो। उसके बाद आप जो भी सजा देगें।
''ठीक बोला। चलो तुम बजाओ।''
''परन्तु पहले माँ को घर छोड़ दो''
''हजूर इन्हें केन्दरा मत बजाने बोलिय।'' राजा ने राही का बात सुनकर
''क्यों नहीं बजायेगा। बजाने दो ना।''
बजाने के पहले राजा ने बुधवा का माँ को घर पहुँचवा दिया। इधर बजाने से पहले –''मैं घर जा रहा हूँ आपलोग केन्दरा बजाना सुनिये।'' (राही)
''ऐसा कैसा होगा, तुम भी रहो।''
''हजूर तब तो मुझे इस कुर्सी में अच्छी तरह बांध दो।''

उसके कहे अनुसार राही को कुर्सी में बांध दिये। अब केन्दरा बजाने वाला धीरे–धीरे केन्दरा बजाना प्रारम्भ किया। जैसे–जैसे केन्दरा बजना शुरू हुआ, लोगों का धीरे–धीरे एक पैर उठने लगा। धीरे–धीरे दोनों पैर उठने लगा। इधर राही ने भी अपने पर ताकत लगा कर देखा, पर उसका कुर्सी भी धीरे–धीरे नाचने लगा। लोग रीझ से डेगने लगे उसी तरह उनका कुर्सी भी नाचने लगा। नाचते–नाचते कितना बार पलटने भी लगे। अब मत बजाओ बाबु मत बजाओ बाबु कहने लगे परन्तु वह बजा ही रहा था। जितना देर वह केन्दरा बजाया उतना देर वे नाचते ही रहे। जब सभी थक गये फिर भी वे बजाते रह गये। अन्त में राजा –

''मत बजाओ बाबु मत बजाओ।''

तब वह बजाना बन्द किया। सभी थक के चूर हो गये थे। कुछ देर बाद ''ये लकड़ा इनका धन को नहीं लिया होगा। यही इन्हें जबरजस्ती बोल रहा है।''

राजा ने सच बात बताने के लिए कहा। तब राहगीर ने सभी सच्चाई को बताया। राजा ने उनसे छमा मांगा और बुधवा का केन्दरा बजाना देखकर उन्हें और धन दिया और उन्हें बिदा कर दिया। वह भी सभी पैसा लेकर अपना घर वापस आ गया। और अच्छी तरह से केन्दरा बजाकर ही अपना जीवन यापन करने लगे।

इस कहानी से जो सुनता है वह हसकर लोट–पोट हो जाता है। इस कहानी मे केवल हँसाना ही केवल उद्देश्य नहीं रहा, बल्कि ज्ञान एवं अच्छे संस्कार देना भी है।

4.2.8 सृजन कथा

मानव की उत्पति कैसे हुई? सबसे पहले इस धरती पर कौन आया? धरती का सृजन कैसा हुआ? इन सभी की जानकारी सृजन कथा से ही प्राप्त होता है। उराँव़ जाति में भी सृजन से संबंधित एक कथा है। जो इस प्रकार है।

4.2.8,1 सृजन कथा (उत्पति कथा) चुन्दा लोहरा, फरवरी 20, 2015

आदिकाल का बात है। जिस समय इस धरती पर एक भी जीव–जन्तु नहीं थे। पूरा क्षेत्र में पानी ही पानी था। केवल भगवान ही रहते थे। उन्हें भी इस पृथ्वी में अकेले रहना ठीक नहीं लगा रहा था। भगवान यानि धर्मेश की पत्नी बार–बार जन्म–करम करने के लिए कह रही थी। परन्तु धर्मेश किसी प्रकार का कुछ नहीं करता था। एक दिन उसकी पत्नी रूठ गई और खाना–पीना छोड़ दी। बहुत दिन हुआ तो धर्मेश ने अपनी पत्नी से –

''क्या हुआ जो भोजन–पानी छोड़ दी हो?''

''तुम्हें रोज बोल रही हूँ कि मानव जाति का जन्म–करम करें। परन्तु आप तो किसी प्रकार का रूची नहीं दिखा रहे हो। जबतक तुम मानव जाति का जन्म–करम नहीं करोगे, तब तक खाना–पीना नहीं करूँगी।

धर्मेश क्या करेगें, पत्नी से हारा हुआ। वह बहुत ही सोच में पड़ा गया। इसके कारण उनका शरीर काला दिखने लगा। यही देख एक कछुवा आया और भगवान से पूछा –''हे धर्मे! क्या बात है जो तुम्हारा शरीर काला दिखाई दे रहा है?''

''हे कछुवा! मैं इस धरती पर मानव जीव के साथ, जीव–जन्तु, पेड़–पौधा को जन्म–करम देना चाहता हूँ। परन्तु सभी तरफ तो पानी ही पानी है। कौन इस पानी के अन्दर से मिट्टी को लायेगा। यही सोच रहा हूँ।''

''कछुवा ने अपने पीठ उठाते हुए कहा

''मैं लाउँगा! मैं जाउँगा और लाउँगा।''

ऐसा कहे और पानी के अन्दर गये। मिट्टी को अपने पीठ पर रखे और ऊपर आने लगे। ऊपर आते–आते सभी मिट्टी पानी में बह गया। कछुवा खाली हाथ भगवान के पास आया। वह शर्म से अपने ही शरीर में सिर को छिपाने लगा।

''कहाँ मिट्टी, तुम तो मिट्टी लाउँगा, ये कहकर बड़े ही ताव से गया था।''

भगवान के ऐसी बातों को सुनकर कछुवा और सरमा गया। तभी भगवान ने श्राप दिया कि –''अभी जिस तरह से मुझे देखकर अपने ही शरीर में अपना सिर को छुपा रहे हो, उसी तरह से लोगों को देखकर छिपना और पीठ को भी ऊँचा करके आया था उसी तरह से तुम्हारा पीठ ऊँचा और पत्थर की तरह कठोर हो

जायेगा।'' और आज भी वैसा ही है। महायदेव फिर से सोचने लगा। कि अब कौन मिट्टी को पानी अन्दर से लायेगा। इसी क्रम में एक केकड़ा आया। वह भी इसी तरह सवाल किया और महायदेव ने भी वही जबाब दिया कि मैं इस धरती पर मानव जीव के साथ, जीव–जन्तु, पेड़–पौधा को जन्म–करम देना चाहता हूँ। परन्तु सभी तरफ तो पानी ही पानी है। कौन इस पानी के अन्दर से मिट्टी को लायेगा। यही सोच रहा हूँ। तब केकड़ा ने

''अरे भगवान इसके लिए सोचते हैं। मैं हूँ न, मैं पानी के अन्दर जाऊँगा और मिट्टी को लाऊँगा।'' बड़े ही ताव से कहा।

केकड़ा ने पानी के अन्दर गया और मिट्टी को समेटकर ऊपर आने लगा। ऊपर आते–आते सभी मिट्टी पानी में बह गया। अब केकड़ा ने शर्म से भागवान को तिरछा चलने और देखने लगा। तभी ''तुम तो देखने में बहुत ही सीधा दिखती हो परन्तु बहुत ही टेड़हा हो। जाओ जिस तरह से तुम्हारा विशेषता है, उसी तरह से जीवन भर रहना।''

इसी लिए आज भी केकड़ा तिरछा देखता है और तिरछा चलता है। इसके बाद महायदेव और सोचने लगा। अब क्या करना होगा। कछुवा गया, वह भी नहीं सका, केकड़ा गया वह भी नहीं सका। अब कौन जायेगा मिट्टी लाने। इसी तरह वह उदास बैठा हुआ है। तभी किधर से घुमते हुए एक लेण्डा आया। उन्होंने ने भी भगवान को ऐसा देखकर वही प्रश्न किया। तब उन्हें भी वही जवाब मिला। तभी लेण्डा ने –

''भगवान मैं जाउँगा।'' लेण्डा का बात सुनकर भगवान ने कहा कि –''कछुवा का तो बहुत चौड़ा पीठ था वह भी नहीं लाने सका और केकड़ा का तो बंक्का था। वह भी लाने नहीं सका। तुम्हारा तो कुछ नहीं है। तुम कैसे मिट्टी को लायेगा?''

''हे धर्मे, मैं प्रयास करूँगा। यदि लाने सकूँगा तो आशिर्वाद देना और नहीं सकूँगा तो मुझे छमा करना।''

ये कहकर लेण्डा पानी के अन्दर गया और पेट भर मिट्टी को खाया। इसके बाद ऊपर आकर कछुवा का पीठ में पैखाना कर दिया और वही धरती बन गया। इसी लिए आज भी पुरखा लोगों का विश्वास है कि इस धरती को कछुवा ने ही बोह कर रखा है। जिस समय खांद (बांह) बदलता है, उस समय धरती डोलता है। यह धरती पानी के ऊपर बना है इसी लिए जहाँ भी मिट्टी को खोदा जाय, वहाँ पानी मिलता है। इसके बाद भगवान ने बहुत खुश हुआ।

इसके बाद नगड़ा मिट्टी का लोथा बनाकर दो मुर्ती बनाया और सुखाने के लिए धूप में रख दिया तभी भगवान का हंस राजा घोड़ा आकर बिगाड़ देता था। तब उसका पंख को काट दिया। दूसरी बार बनाया तब भी बिगाड़ दिया। तब उन्होंने एक लीली भुली कुटी कुत्ता बनाया और मूर्ति को पहरा करने के लिए कहा। इसी लिए आज भी लोगों का पहरा के लिए कुत्ता पालते हैं। तभी हंस राजा घोड़ा आ रहा था। तभी कुत्ता भौंक रहा था। तभी भगवान ने अधा कच्चा और अधा पका, उसी में प्राण डाल दिया। तभी दोनों भाई–बहन जीवित हो उठे।

इसी लिए लोग मरते हैं और यह शरीर मिट्टी का ही बना है। इसी लिए मरने के बाद मिट्टी में ही मिल जाता है। इसके बाद भगवान ने दिन–रात, चाँद–सूरज, तारा के साथ धरती का सभी जीव–जन्तुओं को बनाया। वहीं दोनों भाई–बहन के ही लोग आज पूरे क्षेत्र में फैल गये हैं। लोग बहुत ही सुख से रहने लगे। धीरे–धीरे लोग अपने–अपने शरीर के लिए केवल जीने लगे। अर्थात वे भगवान को भूल गये थे। धरती पर पाप काम अधिक होने लगा।

इस कथा से हमे यह ज्ञात होता है कि हमारा जन्म करम कैसे हुआ। हमें कौन बनाया।

4.2.9 परिकथा

परियों से संबंधित कथा को परी कथा कहा जाता है। ये लोककथाएँ काल्पनिक होती हैं। फेयरी (परिकथा) शब्द लैटिन के फैटम से बना है। जिसका अर्थ जादू अथवा इन्द्राजाल होता है।

पश्चिमी देशों में फेयरी की कल्पना अदृश्य, छोटे और बौने के रूप में की जाती है। इसका आवास पहाड़ अथवा कन्दरा में होता है। परी कथा में कोई अप्सरा या परिलोक जो अलौकिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मानी जाती है। वे अपनी अपनी सुन्दरता से ही मनुष्यों को मोहित कर लेती है। अलौकिक और मानवीय प्राणी मानी जाती है।

इस संबंध में श्री राम शर्मा (लो.सा.सि.प्र.131) ने अपने पुस्तक में कहा है कि जर्मन के प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक ग्रिम ने फेयरी टेल्स का संकलन एवं सम्पादन किया है। इन्होंने लोककथाओं के संबंध में अनेक गवेषणाएँ की हैं।

वहीं डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय (लो.सा.भू.172) के अनुसार इन अलौकिक और दिव्य प्राणियों से संबंधित लोककथाओं का 6 श्रेणी में विभक्त किया है।

तालिका 16 परियों के द्वारा सहायता की श्रेणी

1. परियों द्वारा मनुष्यों की सहायता
2. परियों द्वारा मनुष्यों को क्षति पहुंचाना
3. परियों द्वारा मनुष्यों का अपहरण
4. परियों द्वारा कृत्रिम पुत्र देना
5. परियों द्वारा मनुष्यों को परीलोक की यात्रा कराना
6. प्रेमिका अथवा प्रेमी के रूप में परी

नागपुरी के विद्वान डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना.लो.81) ने कहा है कि नागपुरी लोककथाओं में परियों की क्रियाओं एवं स्वभाव का आश्चर्यजनक तथा कौतूहलपूर्ण वर्णन मिलता है। कहीं अप्सराओं का वर्णन है, तो कहीं दिव्य कन्याओं का। दानव और डाइनों का वर्णन इन कथाओं में मिलता है, जिनमें जादू तथा चामत्कारिक क्रियाओं का वर्णन है। उराँव लोककथाओं में परीकथा गिने चुने ही मिलती है अर्थात नहीं के बराबर। परन्तु इन कहानियों में मनुष्यों की हर प्रकार की सहायता करती है। आर्थिक सहायता के अलावे भूखे को भोजन भी प्रदान करती है। उनका जीवन स्तर सुधार देती है। इससे संबंधित एक कथा निम्नलिखित है।

4.2.9.1 परी कथा, चामु उराँव, जनवरी 29, 2014

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में एक उराँव लड़का बहुत ही गरीब था। वह खेत–टांड़ में ही कार्य करता था। खेत कम होने के करण वह शहर

तरफ काम करने जाया करता था। वह अपनी पत्नी को बोला –''मेरे लिए चार गो रोटी बना दो, मैं लेते जाउँगा।'' कहकर रोटी बनवाया। वह रोज काम करने जाया करता था। चलते–चलते अपने काम करने का समय होने से पहले एक कुँआ के पास जाकर, दतवन कर हाथ मुँह धोकर खाने के लिए शुरू करता था। उस समय–''एक ठो खाउँगा, दो ठो खाउँगा, तीन ठो खाउँगा कि चारो को खाउँगा।'' कहता था। उस कुँआ में चार परी रहती थी। वे परियाँ सुन–सुन कर आपस में बात करते थे। ये तो हम चारो को खाउँगा कहता है। इसके लिए हम क्या करेगें। वे बहुत डरने लगे। वह भी खाया पीया और शहर की ओर काम करने चला गया। पूरा दिन काम करने के बाद अपना घर वापस होता था। उधर से ही दाल–चावल लेकर घर लौटा। उसी को रात में खाकर सो जाते थे। सुबह उठकर फिर अपनी पत्नी को चार रोटी बनवाता था और वही रोटी को लेकर काम करने चला जाता था। अपने काम करने से पहले दतवन कर हाथ–मूँह धोकर खाने के लिए बैठता है और फिर उसी तरह कहता है। ''एक ठो खाउँगा, दो ठो खाउँगा, तीन ठो खाउँगा कि चारों को खाउँगा।'' ये कहकर खाता था। परी फिर कह रह थे कि वह तो हमें ही खाउँगा कहता है। तो उनके लिए दुःख हुआ। वह व्यक्ति तो हमे ही खाउँगा बोलता है। कल भी बोला आज भी बोल रहा है।

वह पूरा दिन काम किया और उधर से ही खाने–पीने का समान लेकर घर आया और शाम में खाना खाकर सो गये। दूसरे दिन सुबह फिर वही अपनी पत्नी से बोले कि ''मेरे लिए चार ठो रोटी बना दो।'' उसकी पत्नी बना दी और उसे लेकर वह काम करने चला गया। काम करने से पहले वही कुँआ के पास दतवन कर खाने–पीने के लिए बैठ गया। ''एक ठो खाउँगा, दो ठो खाउँगा, तीन ठो खाउँगा कि चारो को खाउँगा।'' तभी चारों परी निकले और कहते हैं –''हे राजन् आपसे हम विनती करते हैं कि हमे मत खाओ।'' वह तो डर गया कि यह क्या चीज है। जो इस तरह का कह रही है। छोटी–छोटी तो है। भूत है या क्या है। तभी परियों ने –''लो तुम्हारे लिए एक थाली दे रहे हैं। इसे पूर्व मुँह करके, हाथ में हथला के कहना कि ''ए थाली भात दो, तो इसमें भात भर जायेगा। यह सोना का थाली है। तुम अच्छा से खाना–पीना। और जितना बार कहोगे, उतना बार भात भर जायेगा।'' वह हँसते हुए अपने झोला में थाली को डाला और शहर की ओर चला गया।

वह काम करके लौटा और अपनी पत्नी को बताया। ''एक कुँआ के पास परी मेरे लिए एक सोना का थाली दी और कहा कि सुबह में हाथ–मुँह धोकर, थाली को हथला कर भात मागेंगे तो इसमें भात भर जायेगा।'' इसे सुनकर उसकी पत्नी बहुत खुश हुई और बोली कि अब तो हम भूखे नहीं रहेगें। अब हमारा पेट नहीं सूखेगा। बच्चों को भी सुख मिलेगा। अब हम सुबह हाथ–मुँह धोकर पूजा कर मांगेंगे। सुबह वे अच्छी तरह से हाथ मुँह धोने के बाद पूजा–पाठ किये और ''ए थाली भोजन दो'' कहे तो उसमें खाना पूरा थाली में भर गया।

तब वे दोनों पति–पत्नी और खुश हुए। वह खाया पीया और और वह उसे लेकर काम के लिए निकल गया। काम करने के बाद वह नास्ता करने के लिए आया और वही थाली को–''ए थाली मुझे भोजन दो'' बोले तो उसमें भोजन भर गया। तब वह अच्छा से खाया और काम कर वह लौटने लगा। तभी खेत में काम करने वाले, जिसे हम किसान कहते हैं। हमलोग भी किसान ही हैं। परन्तु किसान उन्हें कहते हैं, खेती बारी करने वालों को। उनके पास आया और बैठ गया। इसके बाद बात करते–करते उसे बता दिया, उस थाली के बारे में। तब उन्हें लोभी लगने लगा। तब किसान कहने लगा कि–''आज मत जाओ। मेरे पास मेहमान रहो। यहाँ से ही काम करने जाओगे।''

तब वह किसान का बात को मान गया और वहीं पर रह गया। सुबह में वह खाना–पीना कर जाने लगा। तो जाने से पहले वह किसान उनका भोजन देने वाला थाली को रख लिया और उसी तरह का थाली उसी स्थान में रख दिया। जब उसे खाना खाने का समय हुआ तब उसी तरह का कह रहा है–''ए थाली मुझे भात दो'' उसमें तो खाना आया ही नहीं। ''ये परी लोग झूठ बोलते हैं। एक ही बार भात दिये और दे ही नहीं रहे हैं।'' ये कहकर वे काम करके घर लौट गये।

दूसरे दिन फिर अपनी पत्नी को –''मरे लिए चार ठो रोटी बना दो।'' उसकी पत्नी ने चार ठो रोटी बना दी। वह उस रोटी को लेकर काम करने चला गया। और वही कुँआ के पास बैठकर –''एक ठो खाउँगा, दो ठो खाउँगा, तीन ठो खाउँगा कि चारों को खाउँगा।'' तब वे परी फिर डरने लगे। ये तो हमें ही खायेगें कहते हैं। तभी सभी परी बाहर आये और –''हे राजन्! हमें मत खाओ। लो तुम्हारे लिए एक बक्सा दे रहे हैं। ये बक्सा में तुम नहा धाकर पूजा करना तब इसमें पैसा आ जायेगा। तुम्हारे लिए बहुत पैसा हो जायेगा। ये हमारा जादु का बक्सा है।''

तब वह बहुत खुश हुआ और वह काम करने नहीं गया। ''मेरे लिए बक्सा ही पैसा देखा तो मैं किस लिए काम करने जाउँगा।'' कहते हुए हंसते–हंसते घर लौटने लगे। शहर और उनके घर के बीच में किसान का घर था। वह बक्सा को ढोकर आ रहा है तब वह और उन्हें ठगने लगा। ''आओ संगी आओ, बहुत दूर से तुम आ रहे हो। उस दिन आये थे खा–पीकर गया था, आज भी आओ। आज तुम्हें और अधिक सेवा करूँगा। तुम्हारे लिए हड़िया दूँगा, दारू दूँगा, मुर्गा मारूँगा।''

ये कहकर उन्हें ठग कर बुलाया। हड़िया दारू पिलाकर उन्हें मतवा दिया। तभी उनका दिल नहीं माना और उस बक्सा के बारे में बता दिया कि ''ये बक्सा को नहा–धोकर पूजा करने पर इसमें पैसा भर जाता है।''तब किसान के ऊपर लोभ भर आया। वह उस बक्सा को छिपा दिया और दूसरा बक्सा को रख दिया। अब सुबह हुआ तब वह उस बक्सा को लेकर अपना घर चला आया। घर आने पर उन्हें बहुत खुशी लगा कि बक्सा को पूजा करोगे तो इसमें पैसा भर

जायेगा सोचकर। अब सुबह ही नहा–धोकर आया और पूजा किया। इसके बाद देख रहा है, तब तो उसमें कुछ नहीं है। तब वह परियों को बहुत गुस्साया, ये झूठ बोलते हैं। मुझे इस तरह का कहते हैं। अब दूसरे दिन और चार ठो अपनी पत्नी से रोटी बनवाया और वही कुँआ के पास गया। दतवन कर हाथ–मुँह धोकर खाने के लिए शुरू करता है। उस समय कहता है –''एक ठो खाउँगा, दो ठो खाउँगा, तीन ठो खाउँगा कि चारों को खाउँगा।'' तभी और प्रणाम करते हुए सभी परी निकलती है। और कहती है –''हम तुम्हारे लिए अच्छा चीज दिये थे। तुम गलती किये हो या किन्हीं के लिए दिये हो। ''नहीं मैं किन्हीं के लिए नहीं दिया हूँ।''

परियों ने समझ गये। वे तो अगम जानी थे। ''तुम एक किसान के यहाँ मेहमान गया था, वही तुम्हारा थाली और बक्सा, दोनों को लिया है, उनका ही काम है। लो तुम्हारे लिए एक डण्डा और रस्सी दे रहे हैं। इस डण्डा को मारने के लिए कहोगे तो यह मारेगा और इस रस्सी को बांधने के लिए कहोगे तो यह बांध देगा।'' ये कहकर परी चले गये। वह काम करने शहर तरफ गया। काम कर वह सीधे उस किसान के घर आया।

''तुम ही मेरे थाली और बक्सा को लिये हो। तुम लिया और दूसरा थाली और बक्सा को रख दिया।''

''तुम्हारा थाली और बक्सा को मैं क्या करूँगा, मैं नहीं लिया हूँ।''

''मैं विचार दिखा कर आ रहा हूँ। तुम ही लिये हो कहे हैं।''

''नहीं! मैं नहीं लिया हूँ।''

''हे रस्सी इसे बांधो तो।'' बोले तो रस्सी उन्हें बांध दिया और डण्डा को मारने के लिए कहे तो उसे मारने लगा।

''मैं लिया हूँ, अब मत मारो, अब मत मारो। मैं तुम्हारा थाली और बक्सा दोनों को ला दे रहा हूँ, मुझे मत मारो।''

''लाओ कहाँ रखे हो उसे, नहीं तो और मारने के लिए कहूँगा तो और मारेगा।''

''थाली और बक्सा को ला दो।''

तब लाकर वहाँ रख दिया। तब बोले कि ए थाली मुझे भोजन दो, तब उसमें भोजन भर गया, यह मेरा है। इसके बाद रस्सी और मुगरा को बोला कि ''आओ तो'' दोनों चला आया। उन्हें लेकर वह अपना घर वापस आ गया।

दूसरे दिन सुबह में पूजा अच्छा से किया और कुछ देर के बाद बक्सा को खोलकर देखा तो उसमें पैसा लबालब भरा हुआ है। तब वे कहे कि परियों ने ठीक ही कहे थे कि वही किसान ने छुपाया है। तब वे अपनी पत्नी को कहे कि चलो अब इसे लौटा देते हैं। हमारा मिला तो इसे अब क्या करेगें। अपनी पत्नी को बक्सा को बुहवाया और किसान के घर पहुँचा दिया। लो तुम्हारा थाली और बक्सा को। तुम हमारा समान को चलाकी कर छिपाया था। उसका तुम्हें मार मिला। किसान शर्म से सिकुड़ने लगा। इसके बाद विनती किया कि आज से मैं ऐसा काम नहीं करूँगा।

वहाँ से वे अपने घर आये और अच्छा से पूजा करने लगे। तो बक्सा में पैसा भर जा रहा था और थाली को सुबह में नहा–धोकर हाथ में हथलाकर ''ए थाली भोजन दो'' कहने पर उसमें भोजन भर जाता था। इसके बाद वे हंसी–खुशी से जीवन–यापन करने लगे।

परियों ने उनके लिए भगवान की तरह आये थे। उसी दिन के बाद वैसा ही करते अपने बाल–बच्चों को भी शादी–विवाह किये। और उन्हें भी बताये कि अच्छा से हमलोगों को सेवा करना और इस बक्सा को पूजा करना तो इसमें पैसा आयेगा और थाली में भोजन मांगोगे तो भोजन मिल जायेगा। इस तरह से बाल–बच्चे करते–खाते अपना जीवन बीताये।

इस कथा में परियों ने उस गरीब मजदूर का जीवन यापन अच्छी तरह चले इसके लिए थाली और बक्सा दिये। वह गरीब मजदूर रोज शहर की ओर काम की तलाश में जाता था। परन्तु रास्ते में एक किसान उन्हें ठगा और उनका थाली और बक्सा को छिपाया। उसे दिन परियों की सहायता से उस किसान से वह मजदूर वापस ले आया और किसान को दण्डित करने के साथ किसी को भी ऐसा नहीं करने का सुझाव दिया।

4.2,9 बाल कथा

बाल कथाएँ खास कर बच्चों के लिए मसाला का काम करती है। जिससे बच्चे अधिक सुनना पसन्द करते हैं। इस प्रकार के कथाओं में बच्चों को शिक्षा भी मिलती है तथा बच्चों के नैतिक पृष्ठभूमि मजबूत होती है। ऐसे कहानियों से अच्छे कर्म करने की प्रेरणा मिलती है और कहानी में कथा वस्तु इस प्रकार होती है, जो बच्चो के मानस को पुष्ट बनाती है।

डॉ0 सत्य गुप्ता (ख.बो.लो.सा.195) विद्वानों ने बालकथा को दो प्रकार के बताये हैं। लघु छन्द तथा साधारण। लघु छन्द का कथाओं में प्रयोग हुआ है। ये छन्द तुकान्त के रूप में प्रयोग होते हैं तथा इसमें एक लय को बनाकर रखने का प्रयास किया जाता है। साधारण शब्दों में दो–दो, चार–चार पंक्ति हैं। जिनका प्रयोग कहानी में कहानी के पात्र समय–समय पर करते हैं। दूसरी प्रकार की कथाएँ साधारण प्रकार ही हैं। जिसमें छन्द का प्रयोग नहीं किया गया है। वे केवल लय में कही गयी है।

इसके आलावे कहानियाँ बच्चों को मनोरंजन करती है। जो बच्चों का प्राण है। इसके साथ ही बच्चो को कौतुहल, चमत्कार, कल्पना जो बच्चों के रोचक पहलू हैं। बालकथा उराँव जनजाति में बहुत से लोक प्रिये रहा है। बच्चे वैसे तो किसी प्रकार का कहानी हो, बड़े ही चाव से सुनते हैं। परन्तु बाल कथा उनके लिए और खास हो जाता है। कौतुहल, चमत्कार, कल्पना बच्चों में कथाओं के विशेष रोचकता प्रदान करते हैं।

4.2.10.1 भइया–बहिन (भाई–बहन) सरिता उराँव, पुगु खोपा टोली, 22 फरवरी 2012

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में दो भाई बहन रहते थे। उसकी बहन सुबह में आंगन झाडु कर रही थी। उसी समय एक कौआ आया और आंगन में बड़ फल को गिरा दिया। उसे उठायी और अपने भाई को बुलायी। दोनों भाई–बहन उसे फाड़कर खाये। बहुत ही मीठा लगा। तब उसका भाई ''दीदी ये बड़ तो बहुत मीठा लगा। चलिए खाने जाते हैं।''

इसके बाद दोनों भाई–बहन तुम्बा में पानी लिये और बड़ा फल खोजने के लिए जाने लगे। चलते–चलते बहुत दूर चले जाने के बाद बड़ पेड़ के पास पहुँचे। तब उसकी बहन पेड़ में चढ़ी। उसका भाई नीचे बैठा है। उसकी दीदी गिरा रही थी, उसे उठा–उठा कर खा रहा था। प्यास लगने पर तुम्बा (कद्दु) का पानी को पी रहा था। पानी पीते–पीते खत्म हो गया।

''दीदी पानी प्यास लग रहा है?''

''तुम्बा में पानी है बुचु'' उतरी और बोली।

''पानी खत्म हो गया दीदी।''

उसकी बहन तुम्बा को पकड़कर पानी लाने के लिए गाँव तरफ गई। जाते–जाते एक घर में गई तभी उसे आगे जाने के लिए कहते हैं। और वह आगे जाती है, फिर भी और आगे घर जाने के लिए कहते हैं। इसी तरह करते–करते राजा के घर में जाने के लिए कहते हैं तो वह उस घर में घुसी तो बाहर से दरवाजा को बन्द कर दिये। निकलने नहीं दिये तो वह वहीं पर रह गई। रात–दिन बिरिंग–बिरिंग रोने लगी। मेरे भाई को अकेले छोड़ दी हूँ। मेरा भाई कैसा होगा। इधर उसका भाई बड़ पेड़ के नीचे बैठा हुआ है। उसका भाई दीदी के नहीं आने पर बहुत रो रहा है।

एक बन्दर दिन भर नीचे देखता है। तब वह गुस्सता है और पत्थर से बन्दरा को मार दिया तब बूढ़ा बन्दरा मर गया। पेड़ का बन्दर किस लिए बूढ़ा बन्दर मरा, ये कहकर सभी बन्दर नीचे उतरा और जंगल की ओर भाग गया। तब बूढ़ा बन्दरा का चमड़ा को छोड़या और एक ढोलक बनवाया और अपना दीदी को खोजने चला गया। वह अपनी दीदी जिधर पानी लाने गई थी उधर ही एक दरवाजा के पास गया और गीत गाने लगा।

171	टिंकीटिपिर टिंकीटिपिर	टिंकीटिपिर टिंकीटिपिर
	अम्मे ओन्दर'आ केरकी दीदी।	पानी लाने गई दीदी
	एकसन केरकी दीदी	कहाँ गई दीदी
	अजगोम रहचकी	उधर ही थी
	सात सव बन्दरा दीदी	सात सौ बन्दरा दीदी
	चर्रो पलको चि'ओ दीदी	चीर–फाड़ देता दीदी

उसी तरह पहला, दूसरा, तीसरा उसी तरह से अपनी बहन जिस दरवाजा में गई थी, वहीं गया और गीत गाता है –

172	टिंकीटिपिर टिंकीटिपिर	टिंकीटिपिर टिंकीटिपिर
	अम्मे ओन्दर'आ केरकी दीदी।	पानी लाने गई दीदी
	एकसन केरकी दीदी	कहाँ गई दीदी
	अजगोम रहचकी	उधर ही थी
	सत सव बन्दरा दीदी	सात सौ बन्दरा दीदी
	चर्रो पलको चि'ओ दीदी	चीर–फाड़ देता दीदी

इसे सुन अन्दर–अन्दर उनका दीदी रोती है। राजा भी उसी तरह सुनता है। उसका बहन रोती है और दिल में कहती है, मेरा भाई का राग जैसा सुना रहा है और रोती है। राजा बाहर निकला और कहता है –

''तुम बहुत अच्छा गीत गाते हो, तुम्हारे लिए क्या दूँगा। सोना, चांदी या रूपा।''

''मेरे लिए कुछ नहीं चाहिए। मेरे लिए मेरी दीदी चाहिए।''

''ये तो सोना चांदी रूपा कहता हूँ, फिर भी कुछ नहीं चाहिए कहता है। केवल मेरा दीदी चाहिए कहता है।''

इस तरह कहकर अपने चौंरा–भौंरा काला कुत्ता को ''गुतु रे चौंरा–भौंरा, आओ तो'' बोले। वह कुत्ता आया और चीड़–फाड़कर रख दिया। उनका दीदी अन्दर बहुत रो रही है। निकलने भी नहीं दे रहे हैं। अब जलाने के लिए जंगल की ओर ले जा रहे हैं। तब वह अपने साथ मिर्चा चूर्ण और नमक अपने कोंयछा में पकड़ी। जंगल के बीच में जलाने के लिए पहुँचे। सरा वैग्यरह सभी बनाये और उन्हें दाग दिये। तब उनका दीदी बोली –
''देखो तो रात में भी तारा दिखाई देता है।''

ऐसा बोली तो सभी ऊपर देखने लगे। तो वह मिर्चा चूर्ण और नमक को छींट दी। तब सबका आंख में घुस गया। सभी आंख को मिसने लगे। तब उनका दीदी दाग दिया हुआ आग में घोड़ा से ही छलांग लगा दी और अपना भाई के साथ जल कर मर गई। सभी देखते रह गये। राजा को बहुत दूःख हुआ। इस कहानी में भाई बहन–का प्यार को दिखाया गया है।

4.2.11 सामाजिक कथा

उराँव समाज में कथा की भरमार है। प्रत्येक कथा में समाज को किसी न किसी प्रकार से कोई न कोई संदेश या ज्ञान देने का प्रयास किया है। जिससे की समाज में किसी प्रकार से परेशानी न हो और लोगों का जीवन सुखमय हो। समाज में हर तरह के लोग एवं जाति पाये जाते हैं। उराँव जनजाति अपने काम के अनुसार गाँव में, हर जाति के लोगों का बसाया। जैसे–फाल पजाने के लिए लोहरा, विवाह में ढोल बजाने के लिए महली, सूप, उड़िया आदि के लिए ओड़। इस तरह न जाने कितने जातियों को बसाया होगा। परन्तु आज यही उराँव समाज में दुःख का कारण बना है। परन्तु ऐसे कई उदाहरण मिल जाएगें, जहाँ आज भी अन्य जाति के लोग सबों से मिलकर रह रहे हैं। लोगों के पर्व त्योहार में सरीक होते हैं। कुछ कारण रहा होगा, जिससे ही लोभ–लालची, चोरी–हारी का कारण बना होगा। डॉ. मासातो काबायशी और बबलु तिर्की (K.L.G.T.L.372) के किताब से एक कथा लिटियो चोर लिया गया है, जो निम्नलिखित है।

4.2.10.1 लिटिया चोर

अच्छा एक लिटिया चोर था। जन्म हुआ तब उसे सुलाकर कपड़ा धो रहे थे, कहते हैं। तभी उसे तो कोई चीज उठा कर ले गया का वहीं पर छिप गया। तब दो–तीन दिन होने के बाद वहीं पर वह था। बिलकुल सुलाया हुआ है। तब उसे जाकर लाये। वह संधी के दिन जन्म लिया था। वह धीरे–धीरे बढ़ने लगा। उसका काम सिर्फ चोरी हारी करना था। बाजार में सभी बच्चों को मिठाई खिला रहे थे। उनको वे अपने साथ ले जा रहे थे और उस आस–पास घुमेगें तो लिटिया चोर आया कहकर उनके लिए पैसा देते थे। फिर भी वह चोरी करना नहीं छोड़ रहा था। किस तरह का ताक लगाता था कि डलिया के साथ ही मिठाई को उठाकर ले जाता था और बच्चों को खूब खिलाता था। बूढ़ा लोगों के पास भी गया तो तुम्हारे लिए भी अच्छा हड़िया सबको दिये तो उन्हें भी खिलाता था। नहीं देने पर थाली–कटोरी को भी ले आता था। वह चोरी करने में माहिर था। इस तरह एक दिन तो चार लोग उनके साथ मिले। मेरे यहाँ से चोरी करके लाओ गे तो इतना अधिक पैसा दूँगा, मेरा थाली को निकालोगे तो। दूर नहीं बरवा टोली सामने है। वहाँ का वह बहुत जिद्धी चोर था। कई लोगों ने उसे मारा–पीटा था।

फिर भी वह कहा कि मैं तुम्हारे यहाँ का वस्तु को चोरी कर निकालुँगा। तुम मेरे से कम हो, उनका कहना है। पूरी रात तलवार पकड़कर खड़ा हो गया, दरवाजा के पास। देखिये न किस चलांकी से झुपकी लिया और किस तरह अन्दर गया और उनका थाली, लोटा सबको निकाल का बाहर आ गया, कह रहा है। मैं पहरा कर रहा था तो मेरा को क्या ले जाने सकेगा? जाओ तो देखो

तुम्हारा थाली कटोरी को जाकर देखा। तो वह सचमुच में निकाल लिया है। ''तुमसे मैं नही सकूँगा'' कहकर लिटिया चोर को प्रणाम किया।

इसी तरह करते जरगा टोली में कहते हैं कि विवाह हो रहा था। तभी किसके तरफ घुंसा तब तो पकड़ा गया। उस दिन तो दो तीन डण्डा सिर को ही मारे। तब उसका सिर फूट गया। तब वह रात में तो वैसा हुआ। सुबह में तो बम्हन लोगों के विवाह में नाचना शुरू कर दिया। सिर तो लाल ही है। तब उन्हें केंस (थाना में रिपोर्ट किये) किये। तब उसे जेल ले गये और जेल में डाल दिये। सभी फलना चोर, फलना चोर कहने लगे। तब वह कह रहा है कि मैं साहेब का टोपी चुरा दूँगा। तब वह साहेब का टोपी को भी किस समय चुरा कर ले आया। साहेब देख रहे हैं तो साहेब का सिर का टोपी तो है ही नहीं। बहुत बड़ा चोर, वे जेल जायेगें तो उनके लिए एक अलग कमरा रहेगा और दूसरों के लिए अलग कमरा। मेरे लिए दो देगें तो उनके लिए तीन ठो। जेल में खाना भी उनके लिए अधिक ही मिलता था।तब वह उसी तरह कहने लगा। उनके पास गुण भी था। इस तरह का हो रहा था। तब गाड़ी को भी लड़ाई कराता था, गाड़ी चल रहा है उसे। उनका कहना था कि वहाँ से भी वह जीत गया। उस लिटिया को पहले तो ओड़का (सिर काटने वाला) कहते थे। तब उनके आगे–पीछे छेक दिये। तब वे बोले कि पेसाब करने दो, उसके बाद मारोगे तो मारोगे। तब पेसाब करके एकदम उठा और बालु को घुमाया तो सब देखते रह गये। और उस दिन वह भाग गया। नदी को वह पार कर गया और घर चला आया। तब चोरों ने उसे घेर लिये। तब वे गाँव के लोगों को कहने लगे पेसाब कर नेवछाया तो वे देखते ही रह गये। और वह घर चला आया। शायद लिटिया भी ठगाया। तब क्या करेगा। घर तरफ भी चोरी कर रहा था।

घर का दरवाजा को खुला छोड़ा तो हल को भी ले जाता था। इसी तरह उनका काम था। तब उसका ऐसा होते एक बार अन्दर जा रहा था तो दरवाजा में ही डण्डा खोंसकर रखे थे उनके घर में। वह एक ही बार भागते जा रहा था। उसका दांत टूट गया। पहले लोग तब उनका थोसा चन्दवा को झबराकर आता था और बड़ा ही पगड़ी बांधेगा और अच्छी तरह से धोती पहन कर घुम रहा था। तब पीछे–पीछे से तो इधर–उधर, थोड़ा बहुत मार भी मिलता था। सभी समय तो भगवान साथ नहीं देगा। इसके बाद वह मराया। वे कहे थे कि यदि मुझे मारना भी तो सिर में इधर नहीं मारना। शरीर को जितना मारना है मारो और मिट्टी में गाड़ दो फिर भी ठीक है। एक बार उसे मार का गाड़ दिये थे। फिर भी निकल गया। अन्त में अपने से ही किसी तरह हुआ और मर गया। उनका किस्सा इतना ही था।

इस कथा से स्पष्ट पता चलता है कि जो बुरा करता है, उसका फल बुरा होता है। जैसा कि लिटिया चोर। उनका पेशा था चोरी करना और पकड़ा भी नहीं रहा था। किन्तु एक दिन पकड़ा ही गया और मारा भी गया। इस लिए हमें किसी का बुरा नहीं करना है और न सोचना है।

4.3 उराँव लोककथा की विशेषता

उराँव जाति के लोग हमेशा दूसरे जाति के साथ सम्पर्क में रहे हैं। अतः इनमें कुछ मौलिक विभिन्नताएँ हैं, जो एक अमिट छाप छोड़ गये हैं। दादी–नानी शाम में जब कहानी सुनाते थे तो सभी सुनने के लिए ललाइत रहते थे। जिसमें उत्साह, प्रेम भावना, मंगलकामना, सुख–दुःख आदि कई तरह से कथा का अन्त होता था। डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय (लो.सा.भू.164) ने लोककथाओं को आठ विशेषताएँ बताये हैं।

तलिका 17 लोककथा की विशेषता

1. प्रेम का अभिन्न पुट,
2. अश्लील श्रृंगार का अभाव,
3. मनुष्यों के मूल प्रवृतियों के निरंन्तर साहचर्य,
4. मंगल कामना की भावना,
5. संयोग में कथाओं का अन्त,
6. रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता,
7. उत्सुकता की भावना,
8. वर्णन की स्वाभाविकता।

4.3.1 प्रेम का अभिन्न पुट

अधिकांश लोककथाओं में प्रेम का अभिन्न पुट मिलता है। लोक कथा जीवन से संबंधित होने के कारण यह प्रेम का वर्णन स्वाभाविक है। यह प्रेम कई रूपों में पाया जाता है। कहीं भाई–बहन के प्रति तो कहीं पति–पत्नी के रूप में चित्रण मिलता है। कुछ कथा में बहन अपने भाई की रक्षा के लिए अन्न–जल त्याग देती है। भाई के प्रति पवित्र प्रेम होने के करण बहन उसकी अकाल मृत्यु के पश्चात् किसी अन्य रूप में पुनर्जन्म लेकर भाई की रक्षा करती है, सुझाव देती है और मार्ग दर्शन करती है। कुछ कथाओं में माता–पिता, माँ का बेटे से प्यार के प्रति वात्सल्य पर प्रकाश डालती है। गरीब माँ अपने पेट काटकर भी बेटे को पालन पोषण करती हुई, वात्सल्य का आदर्श प्रकट करती है। उराँव लोककथा में भी गृहणी जीवन में पति–पत्नी का प्रेम का सुन्दर वर्णन मिलता है, वह एक दिव्य और आदर्श प्रेम है। जिसमें कहीं भी अश्लीलता का गंध नहीं है। इस प्रकार कुँड़ुख़ लोककथाओं में प्रेम का वर्णन मिलता है।

4.3.2 अश्लीलता का अभाव

उराँव लोककथाओं में जो आज कल की कहनियों में भद्दा प्रदर्शन मिलता है, वह नहीं पाया जाता है। यह अशिक्षित लोगों द्वारा बनाया गया कथा है, लेकिन कहीं भी अश्लील प्रेम का वर्णन नहीं है। उराँव लोककथाओं में कहीं मन का

धुटन, दमित वासनाएँ, विलास प्रिये, प्रेम का स्थान नहीं मिलता है। आधुनिक कहानियों में प्रेम कामवासना, सौन्दर्य लोभजनित पाया जाता है। कुँडुख़ लोककथा में दिव्य प्रेम, अलौकिक प्रेम और आदर्श आदि इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

4.3.3 मनुष्यों के मूल प्रवृतियों के निरंन्तर साहचर्य

जिस प्रकार आधुनिक कहानियों में क्षणिक घटना अथवा किसी विशेष पात्र को आधार बनाकर लिखी जाती है, उसी प्रकार उराँव कथा भी क्षणिक घटनाओं पर आधारित नहीं होती है। लोककथाओं में वर्णित घटनाओं का साहचर्य हमारी शाश्वत मूल प्रवृतियों से होता है। सुख–दुःख, आशा–निराशा, काम–क्रोध, लोभ आदि ऐसी मूल प्रवृतियाँ हैं, जो लोककथाओं में अभिन्न रूप में अनवरत है। उराँव लोककथाओं की घटनाओं में शाश्वत सत्य रहता है।

4.3.4 मंगल कामना की भावना

मंगलकामना उराँव लोककथाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। लोककथा कहते समय कथा के अन्त में सभी के लिए मंगलकामना की जाती है। जिस समय का सुख अमुक पात्र को मिलता है, वैसा सुख प्रत्येक श्रोता को मिले। इस प्रकार का पद प्रत्येक कथा के अन्त में कहा जाता है। इनमें व्याप्त व्यष्टिमंगल ही लोकमंगल है। लोककथाकार अपनी कहानियों में आदर्श घटनाओं को कहकर संसार में मंगल कामना करता है।

4.3.5 सुख और संयोग में कथाओं का अन्त

उराँव लोककथाओं में दुःख, वियोग, विपत्ति, हानि, निराशा आदि अनेक प्रसंगों का वर्णन हुआ है। कथा का पात्र अपने धर्म की रक्षा अथवा किसी अन्य कारणों से अनेक कष्टों को भोगता है, परन्तु अन्त में उसे सुख और सफलता प्राप्त करता है। उराँव लोककथाओं की यह प्रमुख विशेषता है। इन कथाओं का अन्त दुःख में नहीं, सुख में होता है। वियोग में नहीं, संयोग में होता है। नायक–नायिकाओं को किसी कारण से वियोग हुआ है, परन्तु अपनी चेष्टा से अपने दुःखों पर अन्त में सफलता पाया है। अतः हम निःसंकोच कह सकते हैं कि कुँडुख़ लोककथाओं का अन्त सुख से है, दुःख से नहीं।

4.3.6 रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता

उराँव लोककथाओं में रहस्य, रोमांच और अलौकिकता का अंश होता है। इन कथाओं का वर्ण विषय भूत–प्रेत, दानव, राजकुमार और जादूगर अतिमानवीय शक्तियों से संबंधित रहस्य एवं रोमांच से परिपूर्ण होता है। जैसे–अमृत से जीव लौटाना, घाव ठीक करना अथवा असम्भव कार्य को करके दिखाना। इससे सुनने से श्रोताओं में अदभुत जागृति पैदा होती है। इसके जीवन के प्रसंगों को सुनने मात्र और कल्पना से अद्‌भुत रस की अनुभूति होती है।

साधारणतः लोग इसे बड़े चाव से सुनते है।

4.3.7 उत्सुकता की भवना

लोककथाओं में उत्सुकता की भावना मुख्य गुण है। लोककथाओं में अद्भुत रस की प्रधानता के कारण सुनने वालों में जिज्ञासा बनी रहती है। श्रोता आगे की धटना की जानकारी के लिए तनमय होकर सुनता है। बार–बार श्रोता यह जानने के लिए इच्छुक रहता है कि आगे क्या होगा, फिर उसके बाद क्या होगा, अच्छा, हाँ शब्द सुनने में उत्सुकता बना रहता है।

4.3.8 वर्णन की स्वाभाविकता

उराँव़ लोककथाओं में वर्णन की स्वाभाविकता पाया जाता है। कथानक की घटनाएँ, पात्र, कथन, शैली एक साथ इस प्रकार पिरोये रहते हैं कि उसमें कृत्रिमता का अनुभव नहीं होता। उराँव लोक कथाओं में क्षेत्रीय संस्कृति का सच्चा चित्र मिलता है। इन लोककथाओं में सजीव और स्वाभाविक वर्णन होता हैं। इन कथाओं में आधुनिक कहानियों की तरह अतिरंजना की प्रवृति नहीं होती है। इसके आलावे उराँव़ लोककथाओं में निम्नलिखित विशेषताएँ पाया जाता है :–

तालिका 18 उराँव लोककथा की अन्य विशेषता

1. प्रकृति चित्रण,
2. पशु–पक्षियों का चित्रण,

1. प्रकृति चित्रण का बहुल्य

लोककथाओं का उदभव प्रकृति के सुरभ्य प्रांगण में हुआ है और वे कहीं पर सुनी–सुनायी जाती है। इन कहानियों में तोता बोलता है, मोर नाचता है, सिंह न्याय करता है और वृक्ष साक्ष्य देता है। मैना, कोयल, कबूतर और पिंडकुलिया 'हूँका' भरती हैं। कहानियों के श्रोता हैं, मुस्कराता हुआ चन्द्रमा, हँसती हुई तारावलियाँ, हरे–भरे खेत, लता–वितान, वृक्ष–निकुज, नदी–पोखर–तालाब, धानों से लहराती हुई फसलें, कुलाचे भरते हुए मृग–शावक, कोयल की कुहू–कुहू, पपीहे की पी–पी गौधूलि की बेला में चारागाहों से लोटती हुई गायें और उनसे मिलने के लिए अतुर बछड़े, रहट चलाता हुआ किसान, घास की गठरी लाती हुई मजदूरिन, सिर पर पानी की गगरी ले जाती हुई ग्रामीण नारी कहानी के वातावरण को प्राकृतिक और सुरम्य बनाती हैं। लोककथाओं में प्रकृति और मानव एकाकार हो गये हैं। वे आपस में हँसते–बोलते हैं, एक दूसरे के दुःखों में हाथ बँटाते हैं।

2 पशु–पक्षियों का चित्रण

लोककथाओं में पशु–पक्षियों का चित्रण, कहानी को और ही मजेदार बनाती है। बच्चे इसे बडे ही चाव से सुनने है। पशु–पक्षियों के कहानियाँ बच्चों के दिमाग में जल्द ही समा जाता है और कई दिनों तक याद रहता है। इस प्रकार की कथाओं में बाघ, भालू, हाथी, घोड़ा, बकरी, तोता, मैना, बिल्ली, सियार, खरगोश, चीटीं आदि कई तरह के पशु–पक्षियों का कथा, लोककथा में प्राप्त होता है। पशु से संबंधित एक कथा निम्नलिखित है।

4..3.1 बण्डा चिगालो (बिना पूंछ वाला सियार) सुमति उराँव, 12 जनवरी 2014

एक बूढ़ा रोज नदी उस पार हल जोतने जाया करता था और उसकी पत्नी रोज भोजन पहुँचा दे रही थी। एक दिन सिरूपांडे (सियार) बुढिया के पास आकर बोलाः–

''कहाँ जा रही हो नानी?''

''ए बाबु! बूढ़ा के लिए भोजन पहुँचा दे रही हूँ।''

''ए नानी! ए नानी! बूढ़ी हो गई हो और नदी में अधिक पानी है, कैसे पार होगी? मैं पार कर देता हूँ'' नदी किनारे में पहुँच कर

''ए नानी! भोजन को मैं बोहता हूँ। तुम मेरे पूँछ को पकड़ो''

नदी पार होते–होते सिररूपाडे भोजन को खाकर आधा कर दिया। दूसरे दिन भी उसने ऐसा ही किया और बुढ़िया रोज बूढ़ा के लिए थोड़ा भात सा पहुँचा दे रही थी। तब बूढ़ा ने एक दिन पूछाः –

''ए बुढ़िया! किस लिए रोज थोड़ा सा भोजन लाती हो?''

''ए बूढ़ा! एक सियार रास्ता में रोज–रोज मिलता है। वही ठग कर खाता होगा''

ए बुढ़िया, तुम दोन में आज रहना। कल मैं तुम्हारे लिए भोजन पहुँचा दूँगा''

कहे अनुसार किये। बूढ़ा चुपचाप घर लौटा और बूढ़िया खेत तरफ थी। दोपहर समय में बूढ़ा, सिर महिलाओं की तरह बनाया और साड़ी को पहना और साथ में बड़ा सा एक तेज चाकु पकड़कर भोजन को बोह लिया और जाने लगा। नदी किनारे में सिरूपाडे को पाया –

''कहाँ जा रही हो बुढ़िया?''

''ए! बाबु बूढ़ा के लिए भोजन पहुँचा दे रहा हूँ''

''नदी में पानी अधिक है, कैसे पार होना, इस लिए मैं भोजन को बोह रहा हूँ तुम मेरा पूँछ को पकड़ो।''

सियार पहले की तरह भोजन को खाने लगा। तभी बूढ़ा चाकु निकाला और पूँछ को काट दिया। सिरूपांडे हैरान होकर पीछे देखा और पहचान लिया कि बूढ़ा है, बुढ़िया नहीं ....

तभी सिरूपाण्डे बूढ़ा को ललकार रहा है। ''रहो बूढ़ा मैं तुम्हारा हल में पैखाना कर के छेछरूँगा।'' तब बूढ़ा ने लोहा का खूँटी बनवाया और हल में ठोकवा दिया। रात में सिरूपाडे चुपचाप से आया और हल में छेछरने लगा तो उसका चुतड़ में कांटी गोदराया तो उसके चुतड़ से खून निकलने लगा।

तब सिरूपांडे और एक बार ललकारा। ''रहो बूढ़ा ठगे हो, तुम्हारा मुर्गी को तो चुराऊंगा।'' उसी तरह ललकारने के बाद एक दिन ढ़ेर सारा अपने दोस्त सियार को लेकर बूढ़ा के घर मुर्गी चुराने आया। परन्तु बूढ़ा पहले ही सभी मुर्गी को वहाँ से हटा दिया और खुद हसुवा को पकड़कर मुर्गी कुसली (घर) में बैठ गया। जब दूसरा सियार अन्दर घुसा तो उन्हें थोड़ा–थोड़ा ठोठा। तब वे कहने लगे।

''ए दोस्त! एक बड़ा मुर्गी है। वह ठोठता है और छोड़ देता है''

सबके अन्त में बण्डा सियार अन्दर गया तभी बूढ़ा उसे जोर से ठोठता है। वह भागा और सबको बुलाया–

''तुमलोग मुर्गी है बोलते हो, बूढ़ा है।''

''रहो बूढ़ा! तुम्हारा कोंहड़ा को चुराउँगा'' सिरूपाड़े गुस्साया।

तब बूढ़ा अपने सभी कोहड़ा को छत ऊपर से तोड़कर रख लिया और अपने शरीर में राख को मखाया। और पत्ता के बीच में छिप गया। सिरूपांड़े अपने साथियों को लेकर चुराने के लिए आया। जो–जो छत में चुराने के लिए चढ़ता है, उसे बूढ़ा ढकेल देता है। तब सियार कहता है –

''ए दोस्त! बूढ़ा का कोंहड़ा तो ढूंस के छोड़ देता है।''

बाद में सिरूपांड़े चढ़ा। उसे बूढ़ा ने जोर से ढकेल दिया। तब वहाँ से भागा और सबों को बुलाया–

''बूढ़ा का कोंहड़ा ढूंसता है, कहते हो। ओ बूढ़ा ही है।''

अन्त तक बूढ़ा सिरूपांड़े को मारने नहीं सका और सिरूपांड़े भी बूढ़ा का कोई भी चीज को चुरा नहीं सका। अन्त में दोनों बूढ़ा–बूढ़िया सलाह किये। कैसे ये सियार को ठगेगें और इन्हें मार देगें। एक दिन बुढ़िया आंगन में बैठी और रोने लगी–

''मेरा बूढ़ा मर गया, कैसे करूँगी?''

तभी सभी सियार आया और बोला –

''ए नानी भोज खिलाओ। हमलोगों को बुलाओगे या नहीं?''

''कहे नहीं बुलाऊँगी नाती।''

इधर बुढ़िया क्या कि। बहुत सारा गोबर को गोंयठा को जमा की। बूढ़ा को छिपायी और सभी सियार को भोज खिलाने के लिए बुलायी। सभी जमा हुआ तब बुढ़िया गोयठा को पत्थर के ऊपर जमा की और आग लगा दी। पत्थर तो निकाल–निकाल पानी में डालती है, उस समय ''छोंय गोड़ गोड़'' आवाज आता है। तभी वे सभी सियार–

''एक मेरे लिए नानी, एक मेरे लिए नानी'' कहते हैं।

''रहो नाती, पकने दो तब सबों के लिए दूँगी'' पकने के बाद बोली।
''आओ नाती, अब पक गया।'' सब आया तब बुढ़िया बोली –
''ए नाती सब, ऐसा रहोगे तो तुम लोग लूटा–लूटी होना। इस लिए आओ, सबको रस्सी से खूटती हूँ।''

और सभी सियार को तो रस्सी से बांधी परन्तु सिरूपांड़े को तो सिकड़ी से बांधी। सभी पंक्ति में बैठा तब बुढ़िया बुलाने लगी।
''लोहा, डण्डा जल्दी आओ बूढ़ा हो हो हो।''
''क्या बोलती हो नानी''
''ए नाती, छाया को बुला रही हूँ।''

पहले ही बूढ़ा घर में छिपा था। वहाँ से एक बड़ा सा मुगरा को निकाल आया और वे सभी सियार को पंक्ति से मारने लगा। बण्डा सियार के पास आया तो उसे और अधिक मारने लगा। कैसे हुआ और सिकड़ी टूट गया। उसे देख सभी सियार रस्सी को तोड़कर किधर भागा वह पता ही नहीं चला। इसके बाद बूढ़ा बुढ़िया अच्छा से रहने लगे।

इस प्रकार बहुत से कथा उराँव़ लोककथाओं में पाया जाता है। जो कि समाज को एक दिशा प्रदान करता है इससे समाज की संस्कृति को बचाकर रखा जा सकता है। उराँव़ समाज में बहुत सारे कथाएँ जिसे संजो कर रखना अतिअवश्यक है। ताकि हमारे समाज के इतिहास एवं पूर्वजों की देन को बरकरार रखा जा सके। जिससे हमारी जीवन चरितार्थ होती है कि हमारा जीवन पूर्व में किस प्रकार सुखी पूर्वक जीवन यापन करते थे। कभी भी किसी प्रकार की हिंसगा डाह नहीं था। उनका जीवन बिल्कुल ही गंगा की तरह पवित्र था। उनमें लोभ की भावना एक भी नहीं थी।

4.4 लोककथा के तत्व

लोककथा में कथा का तत्व अत्यन्त ही सहज रूप में होते हैं। कथा को को बोल–चाल की भाषा में बोलता है। लोककथा के निम्नलिखित तत्व हैं।

1. **कथावस्तु** – लोककथा में कथा बहुत ही साधारण और अपनी बोलचाल की भाषा में होती है। जिससे समझने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती है। लोग आसानी से समझते हैं और कई वर्षों तक उनके दिमाग में रहता है। शिष्ट कथा की भांति साहित्यिक भाषाओं का प्रयोग नहीं होता है।
2. **पात्र –** लोककथा में मनुष्य की तरह पशु–पक्षी भी पात्र होते हैं। कभी–कभी देवी देवता भी किसी रूप में कथा में पात्र के रूप में आते हैं तथा कथा मे ंनायक को सफलता और खलनायक को असफलता अवश्य मिलता है।
3. **कथोपकथन –** लोककथा बहुत ही सरल होती है। इसमें पशु–पक्षी भी बोलते हैं और न्याय भी करते हैं।
4. **चरित्र–चित्रण –** लोककथा में चरित्र–चित्रण के नाम पर प्रायः पात्र या तो उपदेष्टा के रूप में सामने आता है अथवा अलौकिकता के आवरण में अस्तित्व की संभवना से कोसों दूर। चरित्रों के विकास का कोई अवसर नहीं होता।
5. **शैली –** साधारण भाषा शैली, लोक भाषा की सरलता, सहजता एवं गतिशीलता के कारण इनकी शैली में बनावटी पन का कोई स्थान नहीं रहता है।
6. **वतावरण –** लोककथा में गांव का चित्रण खुलकर सामने आता है। स्वस्थ्य एवं सुख वातावरण की सृष्टि इनमें रहती है।
7. **उद्देश्य –** लोककथा का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन ही होता है। वैसे धर्म कथाओं में धार्मिक आस्था एवं धार्मिक शिक्षा का उद्देश्य भी होता है। कई बार श्रोताओं को रस प्राप्ति कराना भी एक उद्देश्य हो सकता है।

4.5 अन्य उराँव लोककथा

4,5.1 करम

करम पर्व उराँव जनजाति का दूसरा सबसे मुख्य पर्व है। यह पर्व भादो एकादशी के दिन मनाया जाता है। जिसे राजी करम भी कहते हैं। करम पर्व क्षेत्र विशेष में अलग–अलग दिनों में मनाया जाता हैं। जैसे – इंद करम, जितिया करम, दसई करम, कातिक करम। अलग–अलग दिनों में करम त्योहार, अधिकतर गुमला क्षेत्र में मनाया जाता है। अलग–अलग दिनों में करम मनाने का क्या कारण रहा होगा? यह बताने में असमर्थ हैं। परन्तु करम कथा एवं पूजा पद्धति, नेग–दस्तुर में अधिकतर समानता पायी जाती है, कुछ नेग–नियम को छोड़ कर। जैसे किसी गाँव में फूल के रूप में लेण्डा फूल चढ़ाते हैं तो किसी गाँव में सुरगुजा फूल। कहीं रात में ही पूजा होता है तो कहीं सुबह में। इस तरह से देखा जाय तो करम मनाने का मूल उद्देश्य एक ही रहा है।

4.4.2 करम कथा

हुल्लो परिया यानि आदिकाल का बात है। जिस समय हमारे पूर्वज रोहतासगढ़ या अजम गढ़ आसपास रह रहे थे। वहाँ उनका जीवन–यापन बहुत ही अच्छा था। किसी प्रकार का दुःख–तकलीप नहीं था। सभी साथ मिलकर रहते थे। इसे देखकर दूसरे लोग जल रहे थे। वे एक–दो बार तो गढ़ में लूटने के लिए गये परन्तु हमारे लोगों ने उन्हें अपने सीमा से भगा दिये। दुश्मन लोग हार गये परन्तु हिम्मत नहीं। इस लिए वे एक महरा महिला को गैंसी (सिईडी) बनाये। वह गढ़ में रोज दूध बेचने जाया करती थी। उनके बतलाये अनुसार दूसरी बार पुनः लड़ाई किये। उस बार लोगों को ही भागना पड़ा।
परन्तु मुझे लगता है कि हमारे पूर्वज रोहतासगढ़ से भाग कर आये। ये सही नहीं लगता है। क्योंकि करम पूजा करने की जनकारी इससे पहले भी से भी मिलती है। महली लिविंस तिर्की ने (करम.5) लिखा है कि द्रविड़ जाति के लोगों ने करीब 3500 ई.पू. ईरान होते हुए भारत वर्ष में प्रवेश किया और सिंधु घाटी सभ्यता की नींव रखी। करीब 2500 ई0पू0 और 2100 ई0पू0 के बीच इनकी सभ्यता तरक्की के शिखर तक पहुंच गई। इनकी सभ्यता द्राविड़ सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध हुई। द्राविड़ों ने जोदाड़ो, कालिबंगन आदि नगर बसाये।

वहाँ (वही,10) महली लिविंस तिर्की ने सरहुल और करम त्योहार का जिक्र किया है। जिसमें एक आदमी कंधे में बांहिगा के साथ रस्सी द्वारा दो पानी के घड़े को लटका कर जा रहा है। प्रो0 पारपोला का मानना है कि आदमी पूजा के लिए पूजा स्थान में ले रहा है। चार पानी भर घड़े चारों कोने में रखे जाते हैं। संभवतः चार दिशा की आत्माओं से तल्लुकात रखते हैं। पूजा स्थान में पूजा के लिए इस तरह का ढोकर चार घड़ों में पानी लेने का रिवाज उत्तर भारत में

बसे कुडुख़ द्राविड़ों में आज भी है। ये सभी कुडुखर सरहुल त्योहार में पूजा के पहले दिन डांड़ी (छोटा कुँआ) का सारा पानी निकालकर डांड़ी साफ करता है। फिर नया घड़ा में पानी भरकर बहिंगा में भार बनाकर सरना टांड में रखता है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यतः में भी हमारे पूर्वज सरहुल त्योहार मनाते थे।

उन्होंने यह भी लिखा है कि सरहुल जैसा करम त्योहार का जिक्र हड़प्पा के सील तो नहीं मिला। हाँ, एक सील ऐसा भी मिला, जिसमें यह चित्रांकन स्पष्ट है कि एक पेड़ के नीचे एक आदमी, संभवतः पुजारी बैठा है और चारों ओर घेर कर भक्ति भाव में कई लोग बैठे हैं। क्या यह करम पेड़ या पूजा स्थल पर गाड़ी गयी करम डाली है, जहाँ पहान पूजा करा रहा है और लोग बैठे करम कहानी सुन रहे हैं। उन्होंने यह भी लिखा है कि इस पर प्रो0 आस्को पारपोला और अन्य विद्वान अपने विचार अब तक नहीं दिये हैं। अगर सरहुल हरप्पा में मनाया जाता था तो संभवतः करम त्योहार भी आज से 4000 वर्ष (2500–2100 ई0पू0) हड़प्पा में मनाया जाता था। यह एक किवदंती भी हो सकती है या फिर ऐतिहासिक घटना भी। किन्तु आज सिंधु घाटी की सभ्यता पर ऐतिहासिक, पुरातत्विक खुदाई, भाषाविद और गूढ़ लिपि का अर्थ निकालने में विशेषज्ञों के शोध कार्य, मुण्डा और उराँव के हराप्पा और सिंधु घाटी में हजारो वर्ष पूर्व निवास करने की संभवना को और भी स्पष्ट और दृढ़ करते जा रहे हैं। अतः यह संभावित है कि रोहतासगढ़ की घटना के हजारों वर्ष पहले भी उराँव सिंधु घाटी में सरहुल और करम त्योहार मनाते थे।

उसी समय हमारे समाज का मुखिया पहान था। उनके साथ में परजा लोग भी थे, वे भी उनके साथ भागने लगे। साथ में कुछ खाने–पीने की वस्तु भी लेते गये। पहान का पत्नी गर्भवती थी। फिर भी घनघोर जंगल में भागने लगे, दुश्मन लोग भी उन्हें दौड़ा ही रहे हैं। पहानिन का समय भी पहुँच गया था। वे भागते हुए एक पेड़ के छाया में, जो बहुत ही झाड़ीदार था, उसी में छिपे और अपने समान को भी छिपाये। हीरा चमकेगा, ये कहकर पुरनी पत्ता से ढके। उसी समय दुश्मन आये और खोजने लगे। उनका घोड़ा उस पेड़ को तीन चक्कर लगाया और पेशाब भी किया। परन्तु दुश्मन लोग उनका इशारा समझ नहीं पाये और वहाँ से भाग गये। उसी समय रानी पेड़ नीचे ही एक सुन्दर सा बच्चा को जन्म दी। परन्तु उनमें इतना डर था कि उस छोटा बच्चा को वहीं छोड़कर भाग गये। उस समय बहुत ही धनघोर वर्षा हुई। वे लगभग चार–पांच दिन तक भागते रहे। उन्हें लगने लगा कि अब हम सुरक्षित है, तब वे स्थिर हुए। अब रानी को अपना बच्चा का ममता याद आने लगा, परन्तु अब वे क्या करेगें? कहाँ खोजने जायेगें? बोलना नहीं चाह रही थी परन्तु बच्चा का ममता को नहीं भूल पायी और अपने पति पहान यानि राजा से बोली–''चलो बच्चा को खोजने जायेगें?''

वे खोजने के लिए लौटना नहीं चाह रहे थे। परन्तु रानी जिध करने लगी। तब वे लौटने के लिए राजी हुए। वे लगभग दो–तीन दिन बाद उस स्थान

पर खोजते हुए पहुँचे। वहाँ देखे कि बच्चा बिन्दास पातुर (पत्ता का जमा) में सोया हुआ है। वह सात दिन में भी घनघोर जंगल के बीच में बिन्दास है। वे सोचे कि यही पेड़ ही इस बच्चा को बचाया है, खाने–पीने के लिए दिया, जंगली जानवरों से बचाया और किसी भी प्रकार का रोग नहीं लगने दिया। वह करम पेड़ था, इसी लिए उसका नाम ''करमा'' रखे। आज भी अधिकतर लोगों का नाम पकड़ने के पीछे किसी घटना के नाम पर रखते ही हैं। इसी लिए करम की तीन डाली काटते हैं।

वहीं (बक्कहुही,13) में बताया गया है कि आदिकाल में एक बार बहुत जोर से आकाल हुआ। खाने–पीने की बहुत दिक्कत होने लगी। वहाँ के राजा ने सभी तरह का पूजा पाठ करवाया परन्तु कुछ नहीं हुआ। एक दिन सभी करम पेड़ के नीचे बैठे थे तभी अलौकिक घटना घटा। करम पेड़ बिजली जैसे चमकने लगा और आवाज सुनाई दिया–''दुःख मत हो, दिल को धीरज रखो। आपका सभी करम किस्मत लौट जायेगा। इस करम पेड़ का तीन डाली ले जाओ और घर के आंगन में गाड़कर पूजा–धजा करो और दूसरे दिन नदी में बोहा देना। ऐसा करोगे तो तुम सबका देश में वर्षा होगा, खेती बारी भी अच्छा होगा और आकाल भाग जायेगा।'' इसके बाद वे इस तरह का किये और आकाल का अन्त हुआ।

साथ में देखते हैं कि खीरा, जावां, टट्ठी में दीया और उसे कुचू पत्ता किस लिए ढ़कते हैं, नया उपवास वालों को तीन बार घोड़ा कर किस लिए किन्दराते हैं। ये सभी का अर्थ हैं। जो इस प्रकार है।

तालिका 19 कुमार सिंह खलखो (क.ध.) के अनुसार करम डाली :–

1. बीच का डाली सूर्य के लिए
2. किनारे बायें ओर की डाली चाँद के लिए
3. किनारे दायें ओर की डाली पृथ्वी के लिए।

उन्होंने यह भी लिखा है कि ये तीनों जब तक जगत में रहेगा, तुम्हारा वंश–परिवार जीवित रहेगा और बढ़ेगा।

तालिका 20 बबलु तिर्की के अनुसार करम डाली

1. गांव देवता के लिए।
2. पुरखा लोगों के लिए।
3. भुंइहरी लोगों के लिए।

तालिका 21 विन्देश्वर उराँव के अनुसार करम डाली

1. भाई के लिए

2. बहन के लिए
3. भगवान के लिए

तालिका 22 करम की तीन डाली काटने का मतलब –

1. अन्न दिया (भोजन प्रदान किया।
2. सुरक्षा प्रदान (जंगली जानवरों से बचाया)
3. रोग से बचाव (किसी प्रकार का रोग लगने नहीं दिया)

4.4,2.1 जावां फूल –

वे अपने लिए खाने–पीने का कुछ समान बांध कर ले गये थे। उसे वहाँ रखे थे, वही, वहाँ पर गिरा और अंकुर हुआ, वही सूरज की रोशनी नहीं पड़ने के कारण हल्दी जैसा पीला हो गया था। इसी लिए सात दिन पहले नदी नाला का बालु को लाकर, उपवास कर जावां उठाते हैं। जावां में किसी प्रकार का रोग नहीं लगे, इसी लिए रोज सुबह हल्दी पानी छिड़कते हैं और रोज अखड़ा में नाचने के लिए निकलते हैं। इसी का एक गीत इस प्रकार है।

173	एका पेल्लो जावां जगा बाचा बालका अम्म ओन्ता बाचा	कौन लड़की जावां उठायी हल्दी पानी पिलायी
	चेड़ा पेल्लो जावां जगा बाचा बालका अम्म ओनता बाचा	जवान लड़की जावां उठायी हल्दी पानी पिलायी

4.4.2.2 टट्ठी में दीया जलाना और उसे कुचु पत्ता से ढकना –

जिस समय दुश्मन दौड़ा रहे थे, उस समय जहाँ छिपे थे, वहीं हीरा को पुरनी पत्ता से ढके थे। इसी लिए आज भी दीया को कुचु पत्ता से ढकते हैं।

4.4.2.3 तीन बार नया उपवास करने वाले को किन्दारना –

जिस समय वे पेड़ की झाड़ी में छिपे थे। उस समय दुश्मन का घोड़ा आया और तीन चक्कर उस पेड़ को लगाया। साथ ही पेशाब किया और पैर से जमीन के मिट्टी को पैर पीछे किया। इसी लिए आज भी नया उपवास करने वालों को तीन चक्कर घोड़ा कर करते हैं और उसके पीछे से हंसने बनने वाले लोग लोटा से पानी चुवाते हैं और फाल से खोदते हैं। इसके लिए गीत भी है।

174	बैरांगी हकुड़ बली गुसन बरचा उला कोरोन ब'अदन मेंन्दी का मला	दुश्मन घोड़ा दरवाजा पास आया अन्दर जाउँगा कहता सुनते हो या नहीं

पइरी बीरी बली गुसन बरचा	सुबह में दरवाजा के पास आया
उला कोरोन ब'अदन	अन्दर जाउँगा कहता
मेंन्दी का मला	सुनती हो या नहीं

4.4.2.4 खीरा – बच्चा के स्थान पर खीरा चढ़ाते हैं।

4.4.2.5 सुरगुजा फूल–

उस समय आज की तरह फूल नहीं था। उस समय सुरगुजा फूल ही सबसे सुन्दर फूल था। इसी लिए सुरगुजा फूल ही चढ़ाते हैं।

4.4.2.6 गुड़ और चिवड़ा –

आदिकल में खाने–पीने के लिए आज कल की तरह नहीं मिल रहा था। और वह जल्दी नहीं पच रहा था। इसी लिए कहीं भी जाते थे तो चिवड़ा और गुड़ ले जा रहे थे।

इसी तरह करते–करते सात भाई हुए। सबसे बड़ा का नाम करमा, उससे छोटा क्रमशः धरमा, धनी, मनी, मना, सेवा और रूपा था। सबसे छोटी बहन का नाम करमी था। सबों का विवाह हो चुका था। वे सभी अच्छी तरह से रहते थे। एक वर्ष अच्छी तरह वर्षा नहीं हुआ। खाने–पीने के लिए कुछ नहीं मिल रहा था। तब वे काम करने के लिए दूसरा देश गये। वे काम कर ठीक भादो एकादशी के दिन लौट रहे हैं, वे अपना सीमान पहुँचे। वहाँ वे डेरा किये और सबसे बड़ा भाई करमा सबसे छोटा भाई को कहा–

''जाओ भाई तुम अपने भाभी लोगों को बता देना की हम सब आ गये हैं। हमे वे परिछने अर्थात पवित्र करने के लिए आयेगें।''

उस समय जो भी बाहर जाते थे वे अंदाजी खा–पीकर आते थे। अर्थात अपवित्र हो जाते थे। उनका विश्वास था कि उनके साथ किसी प्रकार का रोग, पाप गाँव प्रवेश न करे। यही सोचकर उन्हें पवित्र कर ही गाँव में प्रवेश करने दिया जाता था।

सबसे छोटा भाई गाँव आया। उन्होंने देखा कि अपने भाभी लोग सभी गाँव के लोगों के साथ करम नाचने में व्यस्त हैं। छोटा भाई उन्हें देखकर वे भी करम खेलने में मस्त हो गये। वे भूल गये कि मेरा भाई लोग भूखे प्यासे इन्तीजार कर रहे हैं। इधर उनका भाई लोग असकतिया रहे हैं कि वह किस लिए नहीं आ रहे हैं। इसी तरह से देखने के बाद दूसरा भाई को भेजा। वह भी गाँव जाकर देखा कि सभी कोई करम नाचने में मस्त हैं। वह भी करम नाचने में मस्त हो गया। इसी तरह करके पांच भाई चले आये परन्तु एक भी भाई वापस नहीं आया। अन्त में करम ने धरमा को बोलाः–

''भाई जाकर देखा तो! क्या हुआ जो कोई भाई हमें परिछने नहीं आया।''

धरमा भी गया और देखा कि उनके सभी गोतनियाँ, गाँव के लोग और

उनके भाई करम नाचने में मस्त हैं। तो धरमा भी देखा कि खूँटी में मान्दर टांगा हुआ है। उसने भी मांदर टांगा और करम नाचने में व्यस्त हो गया। वे सभी भूल गये कि बड़ा भाई करमा भूखे–प्यासे हमें इंतीजार कर रहे हैं। करमा उनके नहीं आने से बहुत ही गुस्सा हुआ। उनके ऊपर शैतान प्रवेश कर गया। उनका खींस चुन्दी में चढ गया। वह सबों का समान को थोड़ा–थोड़ा निकाल कर अपने बोरी में भरने लगा और अपना को अधिक किया। अन्त में गुस्सते हुए घर आया। देखा कि सभी करम खेलने में मस्त हो गये हैं। उसे देखकर करमा, करम को उखाड़कर गोबर गडढ़ा में फेंक दिया। तब उसे सभी गोतनियाँ अच्छी तरह से उठाये और नदी में विर्सजन कर दिये। उसी दिन से करमा का करम किस्मत बिगड़ गया।

इस तरह से होने के, कुछ दिन होते–होते सबों का चुल्हा अलग–अलग हो गया। सभी अपना–अपना पकाने खाने लगे। अपना–अपना खेत को जोतने लगे। आसार का महीना आया। सभी अपने–अपने खेत में बीड़ा छीटने लगे। परन्तु करमा के पास तो कुछ नहीं है, क्या को बीड़ा छीटेगा। वह धरमा के पास बीज मांगने गया और बीज मांगा। धरमा भी वही बीज को दिया जिसे वह अपने खेत में छिटा था। सबका बीज निकला परन्तु करमा का बीज नहीं निकला। सभी रोपा रोप रहे हैं परन्तु करमा तो क्या को रोपेगा। उनके पास तो बीड़ा भी नहीं है। करमा सोचने लगा कि मैं तो सबों का बोरा से निकालकर अपना धन को अधिक किया था। मेरे भाइयों का तो खाना–पीना ठीक से चल रहा है परन्तु मेरा तो आधा दिन में ही खत्म हो गया। उसे कुछ उपाय नहीं सुझ रहा था। अपने आप में परेशान रहता था।

जिस दिन धरमा रोपा रोप रहा था उस दिन गाँव के सभी लोगों को बुलाया। परन्तु करम को नहीं बुलाया। उन्होंने सोचा कि करमा दादा तो घर के ही हैं। जब चाहे तब आ सकते हैं। उन्हें बुलाने के क्या जरूरत। जब करमा को नहीं बुलाया तो करमा ने अपनी पत्नी को कहा कि–

''सबको धरमा ने रोपा रोपने के लिए बुलाया परन्तु हमें नहीं बुलाया। चलो तुम रोपा रोप देना और मैं बीड़ा छीट दूँगा और कियरी सब को बना दूँगा। तब एक सांझ तो खाने के लिए मिलेगा।''

करमा सुबह कुदाल पकड़ा और क्यारी को बनाने लगा। बीड़ा भी छिटने लगा और उनकी पत्नी भी रोपा रोपने के लिए गई ये सोचकर कि एक बेला का तो खाने मिल जायेगा।

शाम में धरमा सबों को अपने घर पचाईत खाने के लिए बुलाये परन्तु करमा को नहीं बुलाये। वे सोचे कि घर का ही तो व्यक्ति हैं, जब चाहे, आ सकते हैं। परन्तु करमा ने सोचा–

''वाह रे मेरे भाई, इतना दुश्मनी, सबों को खाने के लिए बुलाया परन्तु हमें नहीं बुलाया। मैं भी तो क्यारी बनाने गया था और मेरी पत्नी भी तो रोपा रोपने गई थी।''

''जाओ न पराथ में माड़ पसायेगें तो, उसे झोककर लाना। किसी तरह तो पेट

भरेगा।'' अन्त में नहीं बुलाये तो अपनी पत्नी को कहे।

उसकी पत्नी परात पकड़कर माड़ पसा रहे थे वहाँ गयी और नहीं देखने जैसा स्थान से माड़ को परात में झोकी। परन्तु जब माड़ लेकर आ रही थी, उसी समय एक बछड़ा आया और उसे भी हिला दिया तो सभी माड़ जमीन में गिर गया। उसकी पत्नी खाली हाथ घर लौटी। करमा का गुस्सा चुन्दी में चढ गया। उनके ऊपर शैतान प्रवेश कर गया। वह रात में ही रोपा खेत गया और जिधर–जिधर उसकी पत्नी रोपा रोपी थी, उधर उखाड़ते जाता है। वह आगे–आगे उखाड़ते जाता है, पीछे से एक बूढ़ा रोपते आता है। और उखाड़ते जाता है, फिर से वही बूढ़ा रोपते आता है। करमा गुस्सा से बोला–

''तुम कौन हो? मैं इस रोपा को उखाड़ रहा हूँ और तुम इसे और रोप रहे हो।''

''मैं धरमा का करम किस्मत हूँ।''

''मै भी तो करमा हूँ, मेरा करम किस्मत कहाँ गया? मैं भी तो उतना ही काम करता हूँ परन्तु मेरे लिए खाने–पीने के लिए क्यों नहीं होता है?''

''हे करमा तुम जिस दिन करम राजा को उखाड़कर फेके हो, उसी दिन तुम्हारा करम किस्मत बिगड़ गया।''

करमा इतना सुनते ही शान्त हो गया।

''हे बाबा! मुझे छमा करना, बाबा मेरा करम किस्मत कैसे लौटेगा?''

''हे करमा! तुम्हारा करम किस्मत सभी लौट जायेगा। पहले तुम्हारा करम किस्मत नदी में बहते हुए सात समुन्द्र पार जा रहा है, उसे लेकर आओ और बढ़िया से सेवा करो। तुम्हारा करम किस्मत सभी लौट जायेगा।''

करमा का हृदय को चुभा और बाबा से छमा मांगा

''अच्छा बाबा मैं करम को खोजने जा रहा हूँ, मुझे आशिर्वाद दो।'' बोलकर बाबा को प्रणाम किया और अपना घर लौट गया।

घर में अपनी पत्नी से कहा कि –

''मेरे लिए कुछ चिवड़ा, गुड़ और तुम्बा में पानी डाल दो। मैं मेरा करम किस्मत को खोजने जा रहा हूँ।''

कहे अनुसार उसकी पत्नी उनके लिए सभी जोगाड़ कर दी। करमा घर से निकला और जाने लगा। चलते–चलते उनको भूख लगने लगा। तो झरना जैसे स्थान में गया और दतवन कर अपना मुटरी को खोला। देखता है कि सभी गुड़ ढेला और चिवड़ा बालु हो गया है। तुम्बा का पानी को देखता है तो उसमें भी पिल्लु हो गया है। वह रे मेरा किस्मत। सभी को वहीं पर छोड़ा और फिर से जाने लगा। चलते–चलते एक स्थान में एक ग्वाला को देखा। वहां गाय अपना बछड़ा को दूध नहीं पिला रहा था। वहाँ पहुँचने पर ग्वाला ने पूछा –

''हे करमा भाई! तुम इतना धूप में कहाँ जा रहे हो?''

''मैं अपने करम किस्मत को खोजने जा रहा हूँ।''

''ठीक है, तब तुम मेरा गाय अपने बछड़ा को दूध क्यों नहीं पिलाती है, उसे भी

पूछ कर आना।''
''हाँ मैं पूछ कर आउँगा।''

करमा का किस्मत बिगड़ा हुआ। उन्हें दूध भी नसीब नहीं हुआ। फिर भी वह जा ही रहा था। चलते–चलते एक स्थान पर बहुत बड़ा आम का बगीचा पाया। आम बहुत सुन्दर पका हुआ था। वहाँ जाकर वह आम खाना चाहा। आम तोड़कर देखा, उसमें भी पिल्लु भरा पड़ा है। उस आम बगीचा का मालिक वहाँ आया और करमा से –

''हे करमा! तुम इतना घनघोर जंगल में कहाँ जा रहे हो?''
''मैं अपने करम किस्मत को खोजने जा रहा हूँ।''
''अच्छा करमा इस आम में किस लिए पिल्लु होता है, उसे भी पूछकर आना।''
''ठीक हैं, मैं जरूर पूछ कर आउँगा।''

चलते–चलते उन्हें रास्ते में एक चिवड़ा कूटने वाली मिली। उनका चिवड़ा नहीं बन रहा था। वे करमा को देखकर पूछे –

''कहाँ जा रहे हो करमा और तुम्हारा शरीर काला दिख रहा है।''
''मैं अपने करम किस्मत को खोजने जा रहा हूँ।
''तब मेरा चिवड़ा क्यों नहीं बतना है, उसे भी पूछ कर आना।''
''ठीक है मैं पूछ कर जरूर आउँगा''

इसके बाद करमा फिर चलने लगा। चलते–चलते वह बहुत दूर निकल गया। बिना खाये–पीये, अकेले चलने लगा। चलते–चलते रास्ते में उन्हें एक नदी मिला। नदी में एक मगरमच्छ जो वह पानी में गोता नहीं लगा सक रहा था। करमा नदी किनारे पहुँचा तो उन्होंने पूछा –

''हे करमा इतना दूर तुम कहाँ जा रहे हो?''
''मैं अपने करम किस्मत को खोजने जा रहा हूँ।''
''तब मैं पानी में क्यों गोता नहीं लगाने सकता हूँ उसे भी करम देव से पूछ कर आना।''
''ठीक है मैं पूछ कर आउँगा परन्तु पहले मुझे नदी पर कर दो।''
''आओ मेरे पीठ में बैठ जाओ, मैं तुम्हे पार कर देता हूँ।''

मगरमच्छ कहे अनुसार अपने पीठ में बैठाया और नदी पर कर दिया। नदी पार कर फिर चलने गा। चलते–चलते सात समुन्द्र किनारे पहुँच गया। वहाँ देखता है कि अपना करम किस्मत पानी में उपुल–डुबुल (तैरते) होते हुए जा रहा है। उसे देखकर वह पानी में घुसने लगा। शुरू में तो सुपली तक पानी था। वह करम को पकड़ना चाहता है, परन्तु करम आगे चला जाता है। इस तरह से पानी उसके सिर तक पहुँच गया। फिर भी करम को पकड़ नहीं सका है। पकड़ना चाहता है, और आगे बढ़ जाता है। वह डूबने जैसा होने लगा और खूब जोर से रोने लगा।

''मैं बहुत दूर से इस करम को खोजते हुए आया हूँ और यह भागते जा रहा है, पकड़ने भी नहीं दे रहा है।''

उसी समय एक बूढ़ा व्यक्ति को समुद्र के किनारे बैठा हुआ देखा। वह पानी से निकलकर उस बूढ़ा व्यक्ति के पास गया और उन्हे बोला –

''हे बाबा! मैं करम देव को पकड़ने जा रहा हूँ परन्तु वह आगे भाग ही रहा है।''

''हे करमा! तुम सबसे पहले करम देव को प्रणाम करना और अछत छिट देना, तुम्हारा करम देव रूक जायेगा।''

करमा, बाबा को प्रणाम किया और पकड़ने चल गया। पहुँच कर सबसे पहले करम देव को प्रणाम किया और अछत छिटा। करम देव नहीं भागा। वह करम को पकड़ कर खूब रोया। इसी लिए सबसे पहले किन्हीं से मिलने पर प्रणाम करते हैं। बाद में करम को कंधा में लिया और पुनः वही बाबा के पास आया। वह बाबा करम देव ही था। जो बूढ़ा बाबा का रूप धारण कर बैठे हुए थे। वहाँ आकर फिर बाबा को प्रणाम किये और बिदा हुए। तब–

''हे करमा, तुम रास्ते में जितने भी लोगों का परेशानी देखा। उन सबों को रास्ता दिखाते जाना।''

''ठीक है बाबा, बताते जाउँगा।''

ये कहकर करमा वहाँ से बिदा हुआ और अपना घर वापस लौटने लगा। रास्ते में सबसे पहले उन्हें नदी मिला। वहाँ मगरमच्छ देखा। वह नदी किनारे में आया तो वह पूछा –''मैं सबको पूछा परन्तु सबसे पहले तुम मुझे नदी पर कर दो। उसके बाद मैं बताउँगा।''

मरगमच्छ अपने पीठ में बैठाकर करमा को नदी पर कर दिया। इसके बाद –''हे मगरमच्छ, तुम जिस दिन एक महिला उपवास कर स्नान करने आयी थी और अपना श्रृंगार–पतार को यहीं पर रख कर स्नान कर रही थी। उस समय तुम उसका श्रृंगार–पतार को खाये हो। इसी लिए तुम गोता लगाने नहीं सकते हो। यदि तुम उसे लौटा दोगे तो तुम गोता लगाने सकोगे।''

तब मरगमच्छ ने सब श्रृंगार–पतार लौटा दूँगा बोला और सबको लौटा दिया उसी दिन से मगरमच्छ गोता लगाने सकने लगा।

इसके बाद चिवड़ा बनाने वालों के पास पहुँचे और उन्हें भी बताये कि ''जिस दिन करम उपवास किये हुए बच्चे चिवड़ा मांगने आये थे, उस दिन तुम नहीं दी और खाली हाथ लौटायी। इसी लिए तुम्हारा चिवड़ा नहीं बनता है। जो भी तुम्हारे दरवाजे पर पूजा करने के लिए या कोई भूखा प्यासा आयेगें, उन्हें खाली हाथ नहीं लौटाओगे, तभी तुम्हारा चिवड़ा बनेगा।''

तब वे बोले कि ठीक है आज से हम किन्हीं को खाली हाथ नहीं लौटायेगें। उसके बाद उनका चिवड़ा बनने लगा। फिर लौटते–लौटते आम का बगीचा मिला। वहाँ बगीचा का मालिक –

''हे करमा तुम मेरे आम में किस लिए पिल्लु होता है उसे पूछा या नहीं?''

''हाँ मैं पूछा हूँ। जब यह आम फला और पक गया उस समय तुम शुरू का फल को पांच गो पंच को नहीं दिया। इसी लिए तुम्हारा आम में पिल्लु होता है। यदि तुम शुरू का फल को पांच गो पंच के लिए दोगे तो पिल्लु नहीं होगा।''

वह करमा के बताये अनुसार शुरू का फल को पांच गो पंच के लिए बांटा, उस समय से पिल्लु नहीं होने लगा। इसी लिए आज भी उराँव समाज में शुरू का फल को पांच गो पंचो के लिए बांटते हैं।

फिर लौटते–लौटते वही ग्वाला से मिला। वहाँ ग्वाला को भी बोला–
''हे ग्वाला, जिस समय तुम्हारा गाय दूध दी। उस समय शुरू का दूध खिरसा दूध होता है। उस दूध को तुम पांच गो पंच के लिए खिरसा बनाकर नहीं दिया। इसी लिए गाय दूध के स्थान पर खून देती है। यदि तुम पांच गो पंच को शुरू का दूध को खिरस बनाकर दो गे तो दूध देगी।''

इसी लिए आज भी खिरसा दूध को खिरसा बनाकर पांच गो पंच को देते हैं। उस दिन के बाद ग्वाला ने भी खिरसा बनाकर पांच गो पंच के लिए दिया। उसी दिन से गाय दूध देने लगी।

इसके बाद करमा ठीक भादो एका दशी के दिन करम को लेकर गाँव लौट रहा है। उसी दिन गाँव के और उनके भाई, सातो गोतनी फूल तोड़ने गये थे। वे देखते हैं कि करमा दादा करम को बोह कर आ रहे हैं। सभी उन्हें देखकर बहुत खुश हुए और सभी करम को लिये और नाचते–गाते गाँव पहुँचे। इसी लिए आज भी हम फूल तोड़ने जाते हैं। साथ ही जब करम काटते हैं तो उन्हें लड़के ही पकड़ते हैं। क्योंकि करमा ही करम देव को पकड़कर ला रहे थे। इसके बाद ही लड़की लोग पकड़ते हैं। इसके बाद सभी मिलकर करम को बहुत सुन्दर से सेवा किये। दूसरे दिन सुबह करम को सभी नाचते गाते हुए नदी में ले जाकर विसर्जन कर दिये। उस दिन से करमा का करम किस्मत वापस आय और सभी मिलकर अच्छा से रहने लगे।

4.4.3 जितिया करम कथा

जितिया करम, राईज करम के बारह दिन के बाद होता है। इस करम में जितिया डाली की पूजा की जाती है। इस लिए इसे जितिया करम कहते हैं। परन्तु अधिकतर गांव में करम की डाली की ही पूजा करते हैं। जितिया करम से संबंधित कथा मंगरा कुजूर (करम, 34) के अनुसार –

आदि काल में एक बुढ़िया के सतवहन और जितवहन दो लड़के थे। उस देश में डुण्डी रकसीन का राज था। उसके लिए रोज एक व्यक्ति भोजन के लिए जाने का नियम था। एक दिन उस बुढ़िया का पाली आया। बुढ़िया सतवहन को राक्षस के पास भेजने के लिए रोने लगी। जितवहन अपनी माँ का रोना देख बहुत ही दुःख हुआ। वह एक उपाय सोचा। राक्षस का जितया पेड़ छांव स्थान था। वह अपने बराबर तीर बनवाया। पीठ तरफ बरछा को कमर में खोंस कर राक्षस को मारने के लिए गया।

राक्षस भोजन आया कहकर मुँह को खोला। जितवहन राक्षस के मुँह में सीधा अन्दर गया और तीर को खड़ाकर दिया और वह बैठ गया। राक्षस मुँह को बन्द करने नहीं सका और वह निकल गया। राक्षस छटपटाते–छटपटाते मर गया।

जितवहन जितिया पेड़ के नीचे का मिट्टी, तीन जितिया का डाली घर लेकर आया और अपनी माँ को बोला। आठ अंग का आठ समान, पूजा का इन्तीजाम किया। जैसा कि खीरा, कटोरी, कोंहड़ा, बोदी, सिंबी, कुचू, अदरक, सुपाड़ी आदि। सबों को बुलाया, आंगन में जितिया गाड़ कर पूजा–ध्यान करने लगा। उसकी माँ पूजा के पास बैठी और सतवहन का ध्यान करने लगी। जितवहन का लाया हुआ वस्तु को स्पर्श की, सतवहन का शरीर बना। धूप दिया तो सांस आया, पानी दिया तो प्राण आया। सतवहन जी गया। सभी लोग खुशी से पर्व मनाने लगे। यहीं से जितिया करम परब मनाना प्रारम्भ किये। ये सब नेग–जोक करते राजी करम से बारह दिन लग गया। यहीं से जितिया पेड़ का नाम जितिया हुआ।

इसी तरह की कथा और मिलती है। चिच्च–चेंप (आग–पानी) की कथा भी इसी प्रकार का है। इसी तरह और एक कथा है। जिसमें उस कथा को ख़द्दी (सरहुल) कथा से जोड़ा गया है। सिर्फ नाम में परिर्वतन है। इस लिए यह नहीं कहा जा सकता है कि जितिया करम उराँव लोगों का है। जो जितिया करम मनाते हैं, वे भी राजी करम की तरह ही करम पेड़ के डाली की पूजा करते हैं। जितिया डाली की नहीं। जितिया करम की पूजा अन्य लोगों के देखा–देखी कुछ महिलायें पुत्र प्राप्ति के लिए करते हैं। साथ ही उराँव लोगों में कोई भी पूजा पाठ पंचों के माध्यम से होता है, जो इस नीति–नियम को जानता है। परन्तु जितिया करम में इसकी पूजा पंडित के द्वारा कराया जाता है। इसी से स्पष्ट पता चलता है कि यह उराँव जाति का नहीं है।

4.4.4 करम की विशेषता

विन्धेश्वर उराँव के अनुसार करम मनाने का वैज्ञानिक आधार मक्का मन्न (सखुआ पेड़) के जैसा ही गुण पाया जाता है। इसका बकला (छाल) और लकड़ी बहुत ही पवित्र, इसे अच्छे स्थानों में लगाया जाता है। इसके छाल को घाव में लगाने पर दवा का काम करता है। यह भी पीपल और सरई पेड़ की तरह दिन–रात प्राण वायु प्रदान करती है। इस लिए हमारे पूर्वज अधिकतर करम पेड़ के आसपास ही घर बना रहे थे, परन्तु अब नहीं दिखाई देता है।

इस करम कथा से स्पष्ट पता चलता है कि अच्छे और बुरे कर्मो का फल क्या होता है। साथ ही नया जीवन भी प्रदान करती है। इस लिए करम डाली हमें हर समय अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार से और कई कहानी हैं जिनके प्रेरणा से लोगों का जीवन परिवर्तन हो सकता है।

पंचम अध्याय
5 मंत्र

देखा जाय तो सिर्फ उराँव समाज में झाड़–फूँक का काम नहीं होता है, बल्कि अन्य समाज में भी पाया जाता है। समाज सदा से संसारिक घटनाओं का बड़े ही रहस्यपूर्ण ढ़ंग से देखता आया है। कुछ समस्याएँ ऐसे होती हैं, जिसके ऊपर मनुष्य का नियंत्रण होता हैं परन्तु कुछ घटनाएँ मनुष्य के नियंत्रण से बाहर होती है। अतः मनुष्य का यह विश्वास है कि अलौकिक शक्ति सृष्टि की समस्त घटनाओं का संचालन करती है। ऐसी शक्ति को मनुष्य ने अपनी श्रद्धा और आस्था का आधार बनाया। आदिकाल में मनुष्य का यह विश्वास था और इस अलौकिक शक्ति के प्रति इस विश्वास को ही मनुष्य के गुण दोष में शामिल किया है।

उराँव़ भाषी क्षेत्र के निवासी अदृश्य, अव्यक्त, अभौतिक तथा आत्मिक शक्तियों पर विश्वास करते हैं। लोगों की यह धारणा है कि मनुष्य जन्म से मृत्यु तक अदृश्य आत्माओं, भूत–प्रेतो और अज्ञात शक्तियों से घिरा रहता है। अधिकांश लोग यह मानते हैं कि चट्टान, पहाड़, पेड़ और नदियाँ सभी जीवयुक्त होते हैं। जीवयुक्त होने के साथ–साथ इनमें अन्य जीवोचित गुण–दोष होते हैं। जिसे मंत्रों के द्वारा आज भी मनुष्य विभिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करती है।

उराँव जाति में आदिकाल से ही अच्छाई पर अधिक विश्वास किया जाता था। (S.C Ray,O.R&C,252) उनका विश्वास की अवधारण सूर्य पर होता है। परन्तु नजर लगना और मूंह भाख जैसे बुराई से भी इनकार नहीं किया हैं। इसके लिए वे समय–समय पर डण्डा कट्टना जैसे महत्वपूर्ण पूजा भी करते हैं। जैसे कि कोई समारोह, जन्म, विवाह और मृत्यु पर तो डण्डा कट्टना पूजा तो करते ही हैं।

कहीं नजर न लगे और न किसी का मुंह भाग न लगे, इसके लिए यदि कहीं नया घर बनाते हैं तो वहां फटा हुआ सूप और झाडू को बांध कर लम्बी बांस के सहारे गाड़ देते हैं। इससे लोगों का विश्वास है कि घर पर किन्हीं का बुरी नजर या भाख नहीं लगेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि सबसे पहले उसकी नजर उस बांस में बांध कर गाड़े गये सूप और झाडू पर पड़ेगा।

वहीं जब भी बच्चा जन्म होता है तो बच्चे के उपर काला टीका और हाथ, पैर में काला चूड़ी और कमर में भी काला धागा बांध दिया जाता है। उसी प्रकार यदि कहीं खेतों में फसल लगाये हैं तो वहाँ भी नजर भाख न लगे इसके लिए किसी जानवर का सिर मिला तो गाड़ देते हैं या नहीं तो छोटा घड़ा को भी आदमी के सिर जैसा बनाकर बीच खेत में गाड़ देते हैं। इससे यह होता है कि वहाँ से जो भी राही गुजरेगा, सबसे पहले उसकी नजर खेत में गाड़ा गया घड़ा पर पड़ेगा।

उराँव जाति में सबसे प्रमुख भगवान में सूर्य भगवान, धरती माय, चाला पच्चो है। महायदेव और पारबत्ती भी इन्ही में से एक है। कहीं–कहीं भगतों ने काली माय का नाम लेते हैं। वह उराँव जाति का भगवान नहीं है। वह हिन्दुओं से लिया गया हैं। धर्मे और महादेव दोनों एक ही पिता के समान हैं। दूसरी ओर चाला–पच्चो, धरती माय, देवी माय सभी पारबत्ती माता के समान हैं। (S.C Roy,O.R&C,254)

डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना.लो.178) ने लिखा है कि लोकसाहित्य में संस्कृत के ''मंत्र'' को ''मन्तर'' कहा जाता है जो कि संकट मोचन का काम करता है। वहीं अपनी भाषा उराँव़ में ''मन्तरा'' कहा जाता है। मंत्र का प्रयोग मनुष्य कष्ट निवारण के लिए करता है। मन्तरों का प्रभाव उसके उच्चारण पर भी निर्भर करता है। मंत्र का सही प्रयोग के लिए सही और शुद्ध उच्चारण करने पर सही फल प्राप्त होता है, गलत मत्रों के उच्चारण से इसका प्रभाव नष्ट तो होता ही है और इसका प्रभाव स्वयं पर भी पड़ता। समस्त देव मंत्र, संस्कार अनुष्ठान से संबंध रखते हैं, वे रितुअलिस्ट है। मंत्रो के साथ–साथ टोने–टोटके की भावना लगी हुई है कि यदि इनका उच्चारण हम सविधि पूर्वक करेगें तो उनसे हमें अवश्य फल मिलेगा। मूलतः मंत्र अनुष्ठान टोने के एक आवश्यक अंग थे।

ऐसा भी कहा जाता है कि इस संसार से परे कोई अलौकिक तथा अतिप्रकृतिक शक्ति (Supernatural Power) है, जो मनुष्य से महान है, संसार की विधाता शक्तिशाली है। हमें उसके आगे झुकना चाहिए, उसी की प्रार्थना करनी चाहिए। भला या बुरा वही कर सकती है। जन्म तथा मृत्यु का अधिकार उसी के पास है, वह भगवान है। इस दृष्टि को धार्मिक दृष्टि कहा जा सकता है। दूसरी दृष्टि यह है कि एक अलौकिक शाक्ति तो है ही, किन्तु उसके आगे झुके, हम उसे अपने तंत्र–मंत्र द्वारा अपने वश में कर सकते हैं और उसे अपने अधिकार में रख सकते हैं। इसे जादू–टोना या तंत्रिक दृष्टि भी कहा जाता है।

वहीं अंधविश्वास का दूसरा नाम है तंत्र–मंत्र। इसमें रोग निवारण, वशीकरण, करते हैं। वे विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तंत्र–मंत्र का प्रयोग करते हैं। जो रोग निवारण का भी प्रमुख तत्व माना जाता रहा है। यह भी कहा जाता है कि मंत्रों द्वारा किसी को वश में कर सकते है, यह भी विश्वास किया जाता है कि मंत्रों के द्वारा किसी के काम में बाधा भी उत्पन्न किया जा सकता है। जो कि उराँव़ क्षेत्रों में अधिक विश्वास किया जाता है। इस काम में कभी सफल तो कभी असफल भी होते हैं। जिसके विरूध यह कार्य किया जा रहा है उसे जानकारी हो जाती है तो वह भी उस तंत्र विद्या को भगाने के बड़ी सावधानी से काम करता है। उराँव़ भाषी क्षेत्रों में लोग ओझा और भगत से काफी भयभीत रहते हैं। ओझा का तात्पर्य झाड़–फूक करने वाला।

गाँव देहातों में टोना–टोटका का काम चलता रहता है। इसमें गाँव के अधिकतर लोग विश्वास करते हैं। जो भूत–प्रेत, बाधा को समाप्त करने में बड़ा महत्वपूर्ण काम करता हैं। ओझा या भगत का काम है कि वह मंत्रों से झाड़–फूँक

कर भूत–प्रेतों के रूप में आयी गम्भीर बीमारी को दूर करें। गाँव के ओझा भगत केवल मंत्रों के शब्दों से ही परिचित होते है, वे अर्थ नहीं जानते। मंत्रों पर ध्यान देने पर यह विदित होता है कि उसमें ''अर्थ'' जैसे कोई वस्तु नहीं होती। भगतों एवं ओझाओं के क्रिया–कलापों को ''टोना'' कहा जाता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि ''मंत्र'' और ''टोना'' दोनों में अभिन्न संबंध है।

मंत्र का उपयोग वही व्यक्ति कर सकता है जो मंत्रों को जाप या सिद्धि के द्वारा अपने वश में कर लिया हो, यह बिना सिद्ध प्राप्त किये उपयोग में नहीं ला सकते हैं। जिससे भी यह विद्या लिया जाता है उसे दान स्वरूप कुछ दिया जाता है, पर वह गुरू पर निर्भर करता है।

5.1 मंत्र की परिभाषा

अभी तक मंत्र की परिभाषा स्पष्ट रूप से नहीं मिलता है। फिर भी कुछ विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किये हैं।

स्वामी ज्योतिर्मयानन्द (मं.की.यं.तं.8) पुस्तक के आधार पर ''मंत्र ऐसे आध्यात्मिक सूत्र अथवा परमात्मा के नाम है, जिसे श्रद्धा, भक्ति और समझदारी के साथ समृद्धि, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक प्रबुद्धता की प्राप्ति के लिए जपा जाता है।''

इसी पुस्तक में दूसरे शब्दों में मनन के द्वारा जो व्यक्ति की रक्षा करता है वह ''मंत्र'' है।

दूसरी परिभाषा डॉ0 नारायण श्रीमाली (मं.र.20) के अनुसार–''प्रत्येक वह शब्द जिसके मूल और अर्थ का रहस्य हम नहीं समझ पाते, वे उच्च कोटि के होते हैं परन्तु इस प्रकार के निश्चित लय और शब्दों से बंधे हुए समूह को ''मंत्र'' कहा जा सकता है।'' डॉ0 नारायणदत्त श्रीमाली ने लय को एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है। जैसे–एक व्यक्ति किसी सम्पन्न व्यक्ति के दरवाजे पर जाकर घर के स्वामी को यह कहता है कि ''मैं भूखा हूँ'' तो यह वाक्य मंत्रमय है। क्योकि इस शब्दों का अर्थ प्रभाव गृस्विामी के चित पर पड़ता है। एक भिखारी उससे याचना करता है पर वह उसे ठुकरा देता हैं। परन्तु कुछ दूर जाने पर दूसरा भिखारी विचलित कंठ से वही वाक्य दोहराता है, जो कि पहले भिखारी ने कहे थे तो वह व्यक्ति द्रवित होकर उस भिखारी को कुछ–न–कुछ दे देता है।

यहाँ पर दोनों भिखारियों ने एक ही वाक्य का प्रयोग किया हैं, परन्तु पहले भिखारी ने सामान्य तरीके से अपनी बात कही थी, जबकि दूसरे भिखारी ने उन्हीं वाक्यों को एक विशेष लय के साथ उच्चरित किया, जिसका प्रभाव उस व्यक्ति पर गहराई के साथ पड़ सका।

इस प्रकार से अपने शब्दों में भी मंत्र की परिभाषा को परिभाषित करने का प्रयास किया हूँ ''मंत्र वह अलौकिक शक्ति है जिसे लय और शब्दों में पिरो

कर स्मरण करते है। जिसे अपने वश में कर अच्छे या बुरे कायों में उपयोग कर सकते हैं, ''मंत्र'' कहलाता है।

देखा जाय तो मंत्रों का उपयोग अच्छे कार्यों में, अपने को सुरक्षित करने या घर द्वार को भी सुरक्षित रखने के लिए भी मंत्रों का जाप किया जाता है। यह भी बताया गया है कि मंत्रों का प्रयोग किसी को सताने के लिए भी किया जाता है।

मंत्र को लय और शब्दो में पिरोने का तात्पर्य यह है कि मंत्र के प्रभाव में ध्वनि और लय का विशेष महत्व होता है, क्योंकि वह मंत्र निरर्थक होता है, जिसके मूल में निश्चित लय या ध्वनि नहीं होती। इस प्रकार से वे शब्द निरर्थक कहे जा सकते हैं, जिनके अर्थ भले ही हो परन्तु यदि वे शब्द एक विशेष लय के साथ नहीं कहा जाय तो उनका प्रभाव सर्वथा नगण्य होता है।

5.2 तंत्र–मंत्र की उत्पति

तंत्र–मंत्र की उत्पति के संबंध में सही–सही जानकारी प्राप्त नहीं होता है, यह तो आदिकाल से जनजातीय समाज में होता चला आ रहा है। मिखाइल कुजूर (उ.सं.195) ने अपने पुस्तक में लिखे हैं कि महादेव एक विशेष व्यक्ति था। जिसमें देवताओं के बाराबर गुणशक्ति विद्यामान था। वह इस दुनिया में अन्य मनुष्यों की तरह घुमता–फिरता था। उसके वचन और कर्म दोनों ही का प्रभाव भगवान के वचन, कर्म के बराबर होता था। फलतः उसका नाम ''महादेव'' पड़ा। उसने एक व्यक्ति को आपने पास रखा, जिसके साथ वह बराबर जंगल–पहाड़, नदी–नाला सर्वत्र जाड़ा, गर्मी, बरसात सभी मौसमों में घुमा करता था। इन दोनों का प्रकृति संकट का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न कोई प्राकृतिक चीजें बाधा ही बनती थी। महादेव के साथ रहने वाले व्यक्ति को सिर्फ उसका (महादेव) साथ रहना महसूस होता था। वह महादेव द्वारा बोलते–सिखलाते सभी बातों तथा कर्मो का ज्ञान रखता, जो उसे स्वाभाविक–सा प्रतीत होता था। उनकी बोचलाल साधारण थी।

इस प्रकार महादेव के साथ रहने, घुमने–फिरने तथा इसका कथन सुनने से उस व्यक्ति के लिए वह गुरूतुल्य हो गया चूँकि महादेव सभी बातों को बताने लगा था। किन्तु महादेव उस व्यक्ति के लिए समझ के परे था। उसने उसे सभी प्रकार के गुण प्रदान किये। वह व्यक्ति भी महादेव के समतुल्य हो गया, फिर भी महादेव उसका गुरू था। बाद में महादेव ने सोचा कि यदि यह व्यक्ति मेरे ही समान सभी कार्यो को करने लगे, तो लोग मेरी कद्र नहीं करेंगे क्योंकि वह भी अपना चेला बनाने के लिए लोगों को जमा करने लगा था।

परन्तु जीतु उराँव (करौन्दा सरना टोली, अक्टूबर 13, 2014) के अनुसार तं़त्र–मं़त्र की उत्पति के बारे में बताये हैं। उनके अनुसार भगवान ने एक व्यक्ति को अपने पास बुलाकर कहा– मैं तुम्हे गुण दूँगा, परन्तु मैं जो गुण दूँगा उसे

तुम किसी को नहीं बताना। सिर्फ तुम्हारे पास ही रखना है। वह व्यक्ति महादेव से तो सभी प्रकार का गुण ले लिया परन्तु बाद में सोचने लगा कि इसका क्या मोल रह जाएगा, इसे सिर्फ अपने पास ही रखूँ। परन्तु उसे एक श्राप भी मिला था, यदि तुम किसी को गुण बता दोगे, तो सिद्ध देने के दिन तुम गुलाईची फूल लाने के लिए जाओगे, उसी समय तुम्हे नाग सांप डसेगा और तुम मर जाओगे। परन्तु वह नहीं माना और पाठ बांधा।

जब पाठ बांधा तो उनके पास 700 चेला गुण सिखने के लिए जमा हुए। उन्हें गुरू ने खूब पाठ पढ़ाया और सभी गुण को बताया। परन्तु सिद्ध देने की बात थी। मन में ख्याल आया भी भगवान का श्राप। पर क्या करें, वे मन में ठान लिए सिद्ध खिलाना है तो खिलाना है। वह बिना हिचक अपने सभी चेले को बुला कर बोले– ''हे बाबु सब, मैं तुम्हे जरूर पढ़ा रहा हूँ परन्तु मैं तुम्हें सिद्ध देने नहीं सकूँगा। जिस दिन मैं तुम लोगों को सिद्ध देने के लिए गुलाईची फूल लाने जाऊँगा, तभी मुझे नाग सांप डसेगा और मैं मर जाउँगा तो मुझे मत गाड़ना। मैं सिद्ध देने सकता तो तुम्हारा गुण पूरा हो जाता, इस लिए मुझे खा जाना। तो तुम्हारा गुण पूरा हो जाएगा।

इसके बाद वह व्यक्ति गुरू बनकर सात सौ चेलों को पाठ पढ़ाया। परन्तु सिद्ध देने के दिन भगवान के कहे अनुसार गुलाइची फूल लाने जाने के समय उन्हें एक नाग सांप डस लिया और उनकी मृत्यु हो गयी। चेलों ने कहे अनुसार सोचे कि गुरू ने हमें ऐसे कहे हैं और हम इतना पढ़े, परन्तु उनका मांस नहीं खाते हैं तो हमारा सीखा हुआ गुण का कोई लाभ नहीं। गुरू के कहे अनुसार खंसी काटकर बनाते हैं, वैसा ही उन्हें काट कर बनाया। बनाकर उसे एक बड़ा सा कढ़ाही में पकाने के लिए चढ़ाये और बहुत ही अच्छा से मसाला वैग्यरह देकर पकाये। पकाने को तो पका दिये परन्तु आदमी मांस को खाने के लिए दुहु सूंहू होने लगे। अब क्या करें तुम पहले खाओ, दूसरा बोलता है चलो तुम पहले खाओ, इस तरह की बात होने लगी। कुछ लोगों ने कहे कैसे खाएगें, सोचा जाय तो वे गुरू ही नहीं बल्कि हमारे बाबा थे। सब में सहमती बनी और सोचने लगे इसे अब क्या किया जाय। सभी ने एक उपाय सोचा और कहा कि चलो एक बड़ा सा खला सीलते हैं और उसे बड़े ही अच्छे से पोटोंग[27] बांधकर, नदी में बहा देते हैं।

बहाने के बाद वह पानी में टोपोल–टोपोल होते जा रहा है। नीचे एक

---

[27] यह सखुवा पत्ता का बना हुआ बड़ा सा पत्तल होता है, जिसे ही समेटकर बीटते हैं जिसे ही ''पोटोंग'' कहा जाता है। बताते हैं कि उस पोटोंग में किसी भी प्रकार के सूखा हुआ फुटकल साग, बेंग साग, कटई साग, इसी तरह से कई प्रकार के चीचों को रखते हैं और चुल्हा के ऊपर टांग देते हैं। जिसमें किसी प्रकार का पिल्लु नहीं होता है और न उसमें फुफुन्दी वैग्यरह और न वह कभी भी खराब होता है। बहुत दिनों तक उसे सब्जी के रूप में हमारे पूर्वज करते रहते थे। जिसे आज भी गाँव देहातों के घरों में देखा जा सकता है। किसी समय पुराना इमली दवा रूप में काम देगा, यह सोचकर तीन–चार सालों तक पोंटोंग बांध कर रखा गया है, जो कभी खराब नहीं हुआ है।

धोबिन महिला कपड़ा धो रही थी। उन्होंने देखी और सोचने लगी की क्या चीज है जो इतना सुन्दर बहते हुए आ रहा है। वो पानी में गई और पोटली को रेपट कर बाहर निकाली। निकाल कर देखती है कि उसमें तो बहुत ही अच्छा से मांस बंधा हुआ है। उन्होंने पोटली खोली और सभी मांस को खा गई।

अब जो होना था सो हो गया। सात सौ चेला लोग सोचने लगे कि गुरू कहे थे, मुझे मार कर खा जाना पर हम तो नहीं खाये सो हमारा गुण सीखने का क्या लाभ, जब हमारा गुण ही काम न करे। ये सोच कर सभी खोजने के लिए निकले। वे खोजते–खोजते बहुत दूर निकल गये। वे सभी खोजते–खोजते जा रहे हैं और रास्ता में धोबिन उन्हें देखी और बोली इस मेंढ़क को मार कर उलटाओ, यदि ये मेंढ़क मार कर नहीं उलटाओ गे तो सात सौ चेला को मैं एक बार में रट से मार दूँगी। क्योंकि धोबिन के उपर सभी गुण समा गया था क्योंकि सभी मांस उन्होंने खायी थी। वहां पर सभी डरने लगे। उन लोगों ने पंक्ति से अपने गुण से मेंढ़क को मारने लगे परन्तु किसी का गुण नहीं लग रहा था, कारण कि कोई सिद्ध नहीं खाये थे। आज भी गुण सीखने के बाद सिद्ध नहीं खाये हैं तो उनका गुण नहीं लगता है। इस तरह सभी खत्म होते जा रहे थे। अन्तिम पहुँचने के समय सबसे छोटा चेला, ''टुना'' उन्होंने बड़ी ही तेजी से बिड़बिड़ भागते–भागते आया जहाँ मांस बनाया गया था। वहाँ खून को ठिघना कर चाटा और जाकर मेंढ़क को मार कर उलाट दिया। तभी सात सौ चेला बच गये। इसी लिए ''नेतो डुबिन डाईन'' कहते हैं। इसी से ही भगत और डाईन, और पाठ में भी, एक पाट चेला, एक टुना चेला और एक कांस चेला चुनते हैं। पाट चेला रोज दिन पाट में लिपाई करते हैं, टुना चेला कटोरी में दुध खोजता है और चढ़ाता है, कांस चेला लोटा में कौड़ी और तांबा पैसा को धोता है।

इस प्रकार के गुण प्राप्त करने के लिए अत्यन्त कष्ट सहन करना पड़ता है, तपस्या करना पड़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक ही चीज से डाईन और भगत दोनों का सिरजन हुआ है। यदि सात सौ चेला गुरू का मांस खाये हुए रहते तो डाईन नहीं होते। परन्तु गंगू टोप्पो (म0प्र0) का कहना है (मिखाइल कुजूर, 197) कि ''चूँकि गुरू ने कहा था कि मांस भूनकर और कलेजा कच्चा खाना, किन्तु गुरू के मरणोपरान्त महादेव के वचन पर चेलों ने कलेजा नदी में बहा दिया और शरीर जला दिये। जलते शव का गंध कम मिला जिससे उन्हें गुण भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त हुआ। वे किसी के जीवन ले सकते हैं किन्तु जीवन लौटा नहीं सकते। फलतः ओझा–मतियों को डाइनपन सीखना आवश्यक हो जाता है। डाईन लोगों के बारे में बताया जाता है कि उनके पास एक प्रतिशत ही गुण रहता है। परन्तु वे लोगों के ऊपर काला जादु करते रहते हैं। जब वे सबसे पहले डाईन विद्या सीखती है तब वे सीखने के बाद सबसे पहले अपने ही घर के बड़े बेटे या बेटी, या नहीं तो अपने पति के ऊपर, अपने विद्या का प्रयोग करती है। जिसमें वे सफल होती है या नहीं उसे देखते है। यदि सफल होती है तो किन्हीं की मृत्यु हो जाती है।

5.3 डाइन विद्या

डाइन विद्या सीखने के बारे में कहा जाता है कि वे आमावश्य की रात को किसी निश्चित स्थान में एकत्र होते हैं। उनके लिए कार्तिक आमावश्य की रात बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं। वहाँ कहा जाता है कि वे कपड़े खुद उतार कर नाचते हैं और अजीबो–गरीब कार्य करते हैं। वहाँ नये सीखने वालों को विद्या दी जाती है। इस समय नये सीखने वालों को कहा जाता है कि ''कोड़ी पासा सहबे कि टांगा पासा सहबे?'' (कुदाल मार सहना कि टांगी मार सहना) और किसी को नहीं बताने के लिए प्रतिज्ञा लेती है। तब वे उत्तर देते हैं कि ''साहब गुरू साहब–साहब–साहब'' (सह लेगें गुरू, सह लेगें–सह लेगें–सह लेगें)। उसी रात को अपने जादु से दिल बनाकर (जिनका मृत्यु वे लिखे हैं) पीपल के पेड़ में टांग देती है और पीड़िता के मृत्यु के लिए नाम लेती है और नियत दिन में उसकी मृत्यु हो जाती है। (S.C.Ray,O.R&C,258) ऐसा कहा जाता है कि वे अपने मंत्र से पेड़ को भी उखाड़ सकती है। वहीं एक ही रात में बारह कोस तक जा सकती है तथा वहीं वापस भी आ सकती है।

इसी लिए कार्तिक आमावश्य की रात को गाँव से बाहर नहीं निकलते हैं। कहा जाता है कि रात के अंधेरे में जब वे दीया जलाकर जाती है और उन्हें रास्ता में दूर से कोई देख रहा है तो उस दीया के माध्यम से देख लेती है कि वे क्यो सोच रहे हैं। यदि वे गलत सोच रहे हैं तो वहीं से कुछ कर देती है कि वह बीमार पड़ जाता है। यदि वे डाईन के प्रति बुरा नहीं सोचे हैं तो वे कुछ नहीं करेगें।

ऐसा भी कहा जाता है कि मंत्र की सिद्धि तो चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण तथा प्रत्येक माह की अमावस्या तथा पूर्णिमा के अवसर पर ही प्राप्त की जाती है। किन्तु इस क्षेत्र के गुणी, जिन्हें बिसाहा (पुरूष) तथा डायन (नारी) कहा जाता है, विशेष सिद्धि के लिए कार्तिक अमावस्या के दिन श्मशान घाट में जाकर विधि पूर्वक सिद्धि प्राप्ति के लिए अनुष्ठान करते हैं। (डॉ.अनुज,ना.लो.179) इस रात को गाँव के लोग अपने बच्चों को घरों से बाहर जाने नहीं देते और प्रत्येक बच्चे के तलवे पर करंज का तेल की मालिश कर दी जाती है। उनका विश्वास है कि ऐसा करने पर किसी भी गुण की कोई भी अनिष्ठकारी कारवाई का असर बच्चों पर नहीं होगा।

इसी प्रकार मिखाईल कुजूर (उ.सं.,202) लिखते हैं कि शिक्षण काल में ही अपने गुणों का प्रयोग मनुष्य को छोड़ पेड़–पौधे या अन्य प्राणियों पर करती है। इस समय ये किसी पेड़ को गुण–वाण से मारकर सूखा देती है तथा पुनः उसे जिन्दा करती है। इससे वे स्वयं को जानती है कि डाइन के गुण अर्जित करने में कहाँ तक सफल हुई हैं। जब इसमें सक्षम हो जाती है तो गुरू से सिद्धि प्राप्त करती है। सफल गुण प्राप्त करने वालों को सिद्धि के रूप में ''नाशन गठरी'' दी जाती है जिसमें पूर्व वर्णित सभी प्रकार के डाईन करने की मंत्र शक्ति

होती हैं सिद्धि प्रदान करते वक्त जमीन पर तीन रेखाएँ खींचकर गुरू गोद में बैठाए तीन सवाल पूछती है –''कोख लेबे कि माँग लेबे कि फूल? अर्थात गुरू दक्षिणा में अपना बच्चा या पति या गर्भ नष्ट करोगी? प्रत्येक अपना–अपना जवाब देती है और बाद में अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वे अपने बच्चा या पति या गर्भ नष्ट करने में अपने गुण का प्रयोग करती हैं।

5.4 बिसाहा

बिसाहा का मतलब हम विष देने के अर्थ मे ले सकते हैं। जो एक ऐसा व्यक्ति होता है जिसने एक परिचित आत्मा प्राप्त कर ली हो और लोगों को हर समय नुकसान पहुँचाने के बारे में ही सोचता रहता है। बिसाहा को खण्ड करते हैं तो विष और अहा। अर्थात ''विष देने वाला'' या भाख लगाने वाला'' जिनके मुँह से दूसरों के प्रति अच्छा शब्द नहीं निकलता है। बिसाहा पुरूष होता है। ये भी डाईन की तरह होता है। इनके पास भी डाईन के समान ही विद्या होता है। बिसाहा लोगों को भगत या डाइनों की तरह प्रशिक्षण से नहीं गुजरना पड़ता है। बिसाहा के प्रति लोगों का कहना है वे बिल्ली का रूप–धारण करती है और जिनके घर में नुकसान पहुँचाना होता है, वे उनके घर में बिल्ली बनकर जाती है और अन्दर–बाहर होकर लौट आती है। उस समय रेंवथिती भी हैं। यदि उस समय उसे मार दिया जाय तो पुनः वह बाद में वही बिल्ली, मानव का रूप–धारण कर लेती है। यदि कहीं घायल करते हैं और जब वे पुनः अपने मनुष्य रूप में वापस आयेगें, तब उनके शरीर में घायल होने का चिन्ह रह जाता है।

इसी तरह से एस0सी0 राय (O.R&C.262) ने भी अपने पुस्तक में कही हैं। डाईन और बिसाहा, दोनों का कार्य एक ही होता है और आचरण और गुण, दोनों समान ही रहता है। ये लोग यदि लोगों को मारने नहीं सके तो पशुओं को भी नुकसान पहुँचाते हैं अर्थात डाईन और बिसाहा, किन्हीं के बारे में अच्छा सोच कभी भी नहीं रखता है।

5.5 ओझा–गुणी या भगत

ओझा गुणी या भगत, सिद्धि प्राप्त किये हुए व्यक्ति होते हैं। जो किसी न किसी प्रकार के किन्हीं गुरू के शरण में जाते हैं और ओझा गुणी का कार्य सीखते हैं। इनका मुख्य कार्य भूतों को पहचानना और अपने वश में करना तथा उसे उस घर से बाहर निकालना होता है। इसके अलावा बीमारी दूर करना, विष उतारना है। भगत लोग हमेशा लोगों की अच्छाई के लिए ही ओझा–गुणी का कार्य करते हैं। भगत करने वाले हमेशा अपने आपको शुद्ध रखते हैं और किन्ही का छूआ हुआ को खाना–पीना नहीं करते हैं।

तालिका 23 डाइन–डाईया के प्रति लोगों की धारणा

1. लोगों का विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति डाइन–डाईया है तो उन्हें अपने घर में भेलवा लकड़ी की बनी पीढ़ा बैठने देने पर वे नहीं बैठेगें। इससे भी समझा जा सकता है कि अमुख व्यक्ति डाइन–डाईया है।
2. इनसे बचने के लिए कहीं भी जा रहे हैं, अपने साथ लोहे की कोई वस्तु लेकर चलने पर उनका गुण–वाण नहीं लगेगा या उनका असर उन पर नहीं पड़ेगा।
3. यह भी कहा जाता है कि रात को सोते वक्त बिछावन में, जिधर सिर करते हैं, उधर अरवा चावल और कोयले का टुकड़ा रखने पर उनका किया हुआ वाण का असर उन पर नहीं पड़ेगा।
4. किन्हीं का नजर–गुजर न लगे इसके लिए बच्चों के ऊपर काला टीका लगाया जाता है।
5. डाइनों के ऊपर यह भी कहा जाता है कि यदि उन्हें मनुष्य का मल–मूत्र खिला दिया जाय तो उनका डाइन विद्या ही नष्ट हो जाती है।

इसी लिए लोगों को किसी प्रकार का तकलीप हो तो इसकी जाँच के लिए भगतों के पास जाते हैं। जिससे भगत किन्हीं का नाम तो नहीं लेते हैं परन्तु इशारों में बताते हैं कि अमुक व्यक्ति द्वारा आपसबों को इस प्रकार से सताया जा रहा हैं और भगत लोग इस प्रकार के नजर–गुजर या गुण–वाण को अपने मंत्रों से दूर करते हैं।

5.3 मंत्र का वर्गीकरण

प्रत्येक गाँव में समय–समय पर कोई न कोई पूजा पाठ होता रहता है। गाँव के अलावे घर में भी पूजा होता है। गाँव में पूजा पाठ करने के लिए पहान, पुजार, महतो, पइनभरा, कोटवार आदि का चुनाव किया जाता है। कुछ गाँव में पूर्वजों ने जिसे बनाया है, वही पीढ़ी दर पीढ़ी करते आ रहे हैं। जिसके लिए पहनाई खेत भी दिया गया है। परन्तु घर में पूजा, घर के बड़े व्यक्ति ही करते हैं, यदि वे घर पर हो, नहीं तो कोई भी कर सकते हैं। पहान, पूजार के अलावा गाँव में भगत लोगों को भी देखा जा सकता है। जो किसी प्रकार के होने वाले भूत–प्रेत के प्रकोपों से बचाते है। इन्हें निम्नलिखित भागों में विभक्त किया गया है।

डॉ0 भुनेश्वर अनुज (ना.लो.187) ने मंत्र को इस प्रकार से वर्गीकरण किये हैं।

तालिका 24 नागपुरी मंत्रों का वर्गीकरण

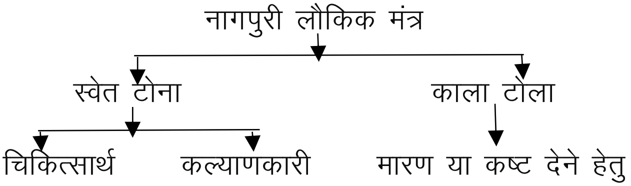

इस संबंध में उन्होंने बताये है कि स्वेत टोना जन–कल्याण के लिए काम में आते हैं। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के रोगों का चिकित्सा, विभिन्न तरह के विषैले जीव–जन्तुओं के काटने पर शरीर में फैले विष उतारने, संतान की प्राप्ति, गाँव में भूत–बाधा से छुटकारा, कृषि उपज बढाने आदि के लिए कार्य होते हैं। वहीं काला टोना के अन्तर्गत शत्रुओं को मारने के लिए, लोगों को हर तरह से परेशान करने के लिए, गाँव में अशान्ति फैलाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार उराँव जाति में पाये जाने वाले मंत्र को भी दो भागों में वर्गीकरण किया गया है।

तालिका 25 भगतों के मंत्रों का भाग

(क) सफेद मंत्र
(ख) काला जादु मंत्र

इसी प्रकार से उराँव जाति में भी देखा जाता है। गाँव में पूजा पाठ से संबंधित मंत्र में गाँव के भलाई, सुख–शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना की जाती है। खेती–बारी अच्छी हो, वर्षा अच्छी हो, घर द्वार सब ठीक–ठाक रहे और गाँव में किसी प्रकार की, किसी को भी परेशानी न हो। इन सभी के लिए समय–समय पर गाँव में पूजा पाठ किया जाता रहा है।

वहीं भगतों ने भी लोगों के जनकल्याण के लिए ही कार्य करते हैं। अकसर गाँव में देखा गया है कि लोग किसी न किसी प्रकार के दुर्भावना से प्रभावित हैं। लोगों का विश्वास है कि कभी–कभी बुरी आत्मा लोगों को परेशान करती रहती है या घर में कोई अनिष्ट शक्ति प्रवेश कर गई है, जिससे लोगों को कई तरह के बिमारी से परेशान हैं। गाँव में अधिक लोग बीमार हो रहे हैं, पशओं की भी मृत्यु हो रही है, ऐसी परिस्थिति में लोग बचने के लिए भगतों के पास जाते हैं और भगत लोग भी अपने मंत्रों की शक्ति से इस मुसिबत से बचा लेते हैं। इसके लिए कुछ भगत अरवा चावल, फल–फूल, सिन्दुर, अगरबत्ती से ही पूजा करते हैं वहीं कुछ भगत बलि भी चढाते हैं। ये भगतों के ऊपर निर्भर रहता है कि उन्हें उक्त परेशानी से बचने के लिए किन–किन चीजों की आवश्यकता होगी।

वहीं काला जादु मंत्र में बुरे कार्यो के लिए प्रयोग करते हैं। ऐसा वे लोग करते हैं जो डायन या बिसाहा हैं। उनका मुख्य उद्देश्य लोगों को परेशान करना होता है। लोगों के बीच अशान्ति फैलाना, उनका मुख्य कार्य होता है। कहा जाता है कि समय रहते भगत के पास नहीं जाने पर मृत्यु होने की भी संभवना रहती है। चुन्दा लोहरा (पुगु खोपा टोली, गुमला) ने बताया कि डायन लोग कितना भी परेशान करें परन्तु भगत लोग उन्हें बचा ही लेते हैं क्योंकि भगत लोग अच्छे कार्य के लिए मंत्र सीखते हैं न कि किसी का प्राण लेने के लिए।

5.4 भगतों के मंत्र

भगत दो प्रकार के होते हैं। पहला वे लोग हैं जो हमेशा दूसरे की बुराई ही सोचते हैं। जिसे ''डाईन'' कहा जाता हैं। वे किन्ही के ऊपर काला जादू करते रहते हैं। जिसे ही हम ''काला जादु मंत्र'' कहते हैं।

दूसरा वे है जो अच्छे कार्य करते हैं, लोगों का दुःख दूर करते हैं। वे कभी भी किसी का बुराई नहीं सोचते हैं। परन्तु कहीं–कहीं आपवाद स्वारूप एकाध मिल ही जाते हैं। जिसे ही कौंरू भगत, सोखा भगत, नगमतिया भगत, भूंईंभूट भगत आदि नामों से जानते हैं। इन्हें हम ''सफेद मंत्र'' कहते हैं।

5.5 भगतों के प्रकार

समाज में कई प्रकार के भगत पाये जाते हैं, जिनका अलग–अलग कार्य होता है, जिनका अपना मंत्र होता है। पाठ बांधने और घुसने की अलग–अलग प्रक्रिया होती है। वस्तु या तंत्र–मंत्र की सामग्री भी अलग–अलग होती है। देखा जाय तो अन्य भगतों से किसी प्रकार का संबंध नहीं होता है। भगतों के निम्नलिखित प्रकार बताये गये है – श्री बलकु भगत (दुन्दुरिया, गुमला, 22 जुलाई 2017) के अनुसार इस प्रकार के बताये गये हैं –

तालिका 26 भगतों के प्रकार

1. भूँय फूट भगत या उपदेशी भगत या सोखा भगत
2. नगमतिया भगत
3. कोंरियार या कवंरू भगत
4. दनाहा भगत
5. नेम्हा भगत
6. टाना भगत
7. डयडी भगत
8. जनग भगत
9. अन्य भगत

5.4.1 भूँय फूट भगत

भूँयफूट भगत को अन्य नामों से भी जाना जाता है। जैसे उपदेशी भगत, नेम्हा भगत, सोखा भगत। परन्तु इनका कार्य भूँय फूट भगत की तरह ही होता है। इस भगत में किसी भी प्राणी की हत्या या बलि नहीं दी जाती है। शरद चन्द्र राय (O.R.&C.316) भी लिखते हैं कि महादेव खुरी के परिवार के सदस्य, जो नेम्हा भगत परिवार से हैं, वे अपने देवता के सामने प्रत्येक सुबह–शाम को धूप जलाते हैं। भैरो भगत के परिवार के सदस्य भी इसका पालन करते थे, जिसे देखने के लिए लोगों को रखा जाता था। यह भी कहा गया है कि क्रिश्चयन युग अर्थात अठारहवीं शताब्दी के पहले भगत प्रथा की परम्परा नहीं थी। राय (O.R.&C 304) ने यह भी लिखा है कि सोखा भगत या भूंई भूट भगत, महादेव को पूजा–पाठ दिन–रात करता है, महादेव उनके मन या स्वप्न में, पत्थर के रूप में बाहर निकलते हुए देखते हैं या दर्शन करता है और निश्चित रूप से अगले सुबह उनके घर के बरामदा या आंगन में पाया जाता है। जो ''भंईभूट महादेव'' के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें ही ''भंईभूट भगत'' के नाम से भी बुलाते हैं।

वहीं मिखाईल कुजूर (उ.सं.198) सोखा भगतों को गुणवाण एवं सबसे ऊँचे दर्जे के ओझा–गुणी वाले माने जाते हैं। लोगों का कहना है कि महादेव ने ही सोखा भगतों को प्रेरणा एवं कृपा प्रदान करता है। वह उनको अनेकों दुर्गम स्थान को परिभ्रमण करता है। अन्त में परीक्षा होती है, जिसमें भयंकर दृश्यों को देखना व सुनना पड़ता है। भयभीत नहीं होने पर वह सभी गुणों को बतला देता है। उससे प्रेरणा प्राप्त व्यक्तियों में ही धन कमाने तथा अनेक प्रकार के भूतों को निकालने की शक्ति और विभिन्न दवाओं का ज्ञान होता है जो बुरे कार्यों को बतलाते व नियंत्रन करते हैं। डलिया देखना, भूत या बीमारी लगाने वालों को जानना व पहचानना इनके विशेष काम है।

बलकु भगत (दुन्दुरिया, गुमला, जुलाई 22, 2017) बतलाते हैं कि इस भगत में किसी गुरू की आवश्यकता नहीं होती है। पूजा–पाठ करते–करते ही स्वयं सीख जाता है। पूजा करते–करते ही भगवान उन्हें सभी चीजों को बतलाता देता है। भूंई भूट भगत लोग उस भगवान को रोज सुबह–शाम पूजा–पाठ करते हैं। वे पूजा–पाठ के लिए एक अलग घर भी बना लेते हैं। उसे ''देव कुडिया'' भी कहते हैं। वे उनके आत्मा में आये सभी देवी–देवता या सृष्टि के सभी देव–पित्रों का नाम लिया जाता है। इसमें भगवान के द्वारा प्रदान, सृष्टि के सभी छोटे से छोटे जीव–जन्तु, प्राणी और देवता–पितर का नाम लिया जाता है। जैसे–

175	सिरजन अयो, सिरजन बबा	सृजन माँ, सृजन बाबा
	के भण्डर कोना के अयो बबा,	के भण्डार कोना के माता–पिता,
	सूरज भगवान धरती माय, ब्रहमा	सूरज भगवान धरती माँ, ब्रह्मा
	विष्णु महेश हनुमान बीर, आकाश	विष्णु महेश हनुमान वीर, आकाश

और पताल को लेई के देखना	और पताल को लेकर देखना
होगा आईज फलना कर अंग में	होगा, आज फलना कर अंग में
काया में, कलबुज में, निरांकाल	शरीर में, काल ग्रह में निरांकाल
कइर के देखना होगा। चरई	करके देखना होगा। पक्षी
चुरगुन में गांछ–पतई में,	पक्षी में पेड़ पौधा में
कीड़ा मकोड़ा ... आदि	कीड़ा मकोड़ा .... आदि

इस तरह से सभी देवता–पित्रों का नाम लेकर कटनी किया जाता है। कहीं–कहीं झाडू के चरी से या कहीं–कहीं अरवा चावल से झरनी करते हैं।

5.4.1.1 सामग्री

इस भगत में केवल फल–फूल से ही पुजा किया जाता है। जैसे– सिन्दुर, अगरबत्ती, माचिस, अरवा चावल, नारियल, सिरनी मिठाई, फूल, धूप–धुवन, मोमबत्ती। इसके अलावे अपने मन से जो भी इच्छा चढ़ा सकते हैं। दान–दक्षिणा नहीं मांगा जाता है, वे जो देते, वही लेते हैं परन्तु विचार देखने पर 25 रू0 रखा गया है। कहीं–कहीं अपने अपने अनुसार पैसा रखा जाता है।

5.4.1.2.1 डलिया देखना

इसके लिए अपने घर से दो मक्का (सखुवा) का पत्ता, उसमें अरवा चावल साथ ही चुल्हा मिट्टी और आज के जमाने में 11 (ग्यारह) रूपया। जहाँ भगत या भगताई देखती है वहाँ रख दिया जाता है और उनका पैर छूकर वहीं बैठ जाते हैं। उसे भगत या भगताइन अपने हांथों में लेकर तीन बार सिर से पैर तक नेवछती है फिर अपने देवताओं को पुकारना शुरू करते हैं।[28]

डलिया देखने को सभी भगतों का अलग–अलग विधि होता है। कुछ भगत सखुआ पत्ता को पकड़कर मंत्रों का उच्चारण करते हुए अरवा चावल को उसमें मारते हैं। मंत्रों के साथ उनके घर या उनके ऊपर क्या–क्या लगाये हैं, उसे बताते हैं। वहीं कुछ भगत अरवा चावल को हाथ में लेकर मंत्रों का उच्चारण करते हुए उनके बारे में बताते हैं।

भगत लोग उनके यहाँ किस देवता या दानव, परेशान कर रहा है और शरीर में क्या परेशानी हो रही है, सपना–भभना किस प्रकार आता है, आदि को बताते हैं। इसमें सब तो सही नहीं होता है, परन्तु बहुत अधिक सच्चाई भी होती है। परन्तु भगत लोग कौन लोग इस प्रकार का दोषी–दुश्मन लगा रहा है, ये पूछने पर उनके घर के दरवाजे को बताते हैं। व्यक्ति का नाम किसी भी हाल में

---

[28] मंत्र सिर्फ एक भाषा नहीं पढ़ा जाता है। सभी भगत हिन्दी के आलावे कुडुख़/उराँव, नागपुरी आदि भाषाओं का समावेश मिलता है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि यह मंत्र हिन्दी है या उराँव है या नागपुरी। भगत लोग सभी मंत्रों को, सभी इन तीनों भाषाओं को मिलाकर ही बोलते हैं।

नहीं बताते हैं। जिससे शक की भावना पैदा होती है और लोगों में मार–पीट की नौबत भी चली आती है। इस लिए देखने तक तो ठीक है परन्तु मार–पीट की नौबत तक नहीं आनी चाहिए।

5.4.1.2,3 मंत्र''

176 जय देवी अयो ले करके
अयो के ले के फलना कर काया
में कलबुत में लेके देवी माय, टंगी
नाथ बाबा, सिरासिता नाले ता
ककड़ो लाता, चाला माय, सरना
माय, गांवारो माय, महेदो पारवती,
देवी, भैरो, काली, चन्दा अयो, सुरज
बबा, नागिन देवता ले के, भोले
बाबा ले के, इन्ना दोसी, लागल
टाकल के, इन्ना एकासे निंग्हय
ख़ेड़्ड मूली नू बरचका र'अनर,
अन्नेम खड़ा मनके, बेटा बेटी गे
राजी मल्ला, दुनिया ती ले करके
निंग्हय ख़ेड़्ड ले खड़ा मंज्जर
अन्नेम खड़ा मनके अरा उर्मी
पूरती ननके, इन्ना पूर्ति नन्ना
मनो बाबा,शंकर, काली भगवान
ले करके, चइरो कोना कर देवता
पितर ले करके खड़ा र'अके।
देवाकी कर भोले बाबा ले करके,
चइरो चौगिरदा का देवता पितर
ले करके इन्ना बांबे दहिना ले
करके खड़ा रअ'के फलना गांव
कर धरती ती अतख़ा तिख़िल
बरचकी र'ई सोने ही थरिया
नू आद एन्देर बेद्दा बरचकी र'ई।
ग्रह, संकट, काल कलयुगी, बैमान
सैतान ले करके, एन्दरा बेद्दा बरचकी
र'ई, अदिन बेद्दय, नीन एरय की
खुला ननके की बता ब'अके। निंग्हय
असरा ती भरोसा ननते, विश्वासी

जय देवी माँ लेकर
माँ लेकर के फलना का शरीर
में कलबुत में देवी माय टांगी
नाथ बाबा, सिरासिता पाईन का
केकड़ा बिल, चाला माँ, सरना
माँ, गंवारो माँ, महेदो पारवती
देवी, भैरो काली,चाँद माँ, सूरज
बाबा, नागिन देवता लेकर, भोले
बाबा लेकर, आज दोषी, लगाया
टकाया को, आज जैसे तुम्हारे
पैर में आये हैं।
उसी तरह खड़ा होना,बेटा बेटी
देश नहीं, दुनियाँ से लेकर
तुम्हारा पैर में खड़ा हुए
उसी तरह खड़ा होना और सभी
पूरा करना, आज पूर्ति करना
होगा बाबा, शंकर,काली भगवान
लेकर, चारो कोना का देवता
पितर लेकर खड़ा रहना।
देवाकी का भोले बाबा लेकर
चारो दिशा का देवता पितर
लेकर आज बांया दहिना ले
करके खड़ा रहना, फलना गांव
के धरती से पत्ता चावल
आया है। सोना का थाली
में वह क्या खोजने आया है।
ग्रह, संकट,काल कलयुगी बैमान
शैतान लेकर, क्या खोजने आया
है, उसे खोजो, तुम देख कर
खुला करके बताना। तुम्हारा
आशा से भरोसा कर, विश्वास

ती ले करके बेटा बेटी बरचका र'अनय, से लेके जिया कयन शान्ति ननके, जिया कयन दरवाजा ले करके खुला र'ई का मला, खुला र'ई बेटी।ले के छैना भैना, छैना भैना ती तरपांति ती छैना भैना ती अइरी बइरी ती उर्मी कोड़े र'ई, ननके, इन्ना शक्ति खुला, भक्ति खुला, कुट्ठी खुला, ज्ञान खुला ननके से विश्वास ले कर बेटा–बेटी बरचका र'अरन (कोटाम, जनवरी 23, 2014)	लेकर बेटा–बेटी आये हैं, से लेकर प्राण शरीर को शांति करना, प्राण शरीर, दरवाजा लेकर खुला है या नहीं, खुला है बेटी। लेकर छैना भैना, छैना भैला से पंक्ति से छैना भैना से अइरी बइरी से सभी ठीक है, करना,आज शक्ति खुला, भक्ति खुला, कुट्ठी खुला ज्ञान खुला करना, वह विश्वास लेकर बेटा बेटी आये हैं।

5.4.1.2,4 झरनी मंत्र के समान

रोग या भाख को काटने के लिए जिस तरह का रोग रहता है उसी तरह का समान भी लगता है। जैसे भाख काटने के लिए बारहो बिरही, नारियल, अरवा धागा, सिन्दुर, अगरबत्ती या धुप धुवन, तीन तरह का फल, सात प्रकर का फुल, पान पत्ता, कसैली, पोतना मिट्टी, सिद्धा यानि एक पैला चावल।

5.4.1.2,5 झरनी करते समय

सभी भगतों का झरनी करने का तरीका भी अलग–अलग होता है। कोई झाड़ू का तीन चरी लेकर झरनी करते हैं तो कोई भगत अरवा चावल को सखुआ पत्ता में लेकर मंत्रों को बोलते हैं। पहले अरवा चावल को सखुआ पत्ता में लेकर मंत्रों का उच्चारण करते हैं। बाद में झाडु चरी से झाड़ना शुरू करते हैं। कोई चावल को केवल मंत्रो का उच्चारण करते हुए ऐंड़ियाकर चारों तरफ फेंकते हैं।

5.4.1.2.6 झरनी मंत्र''

177	हे दे इन्ना मालिक, ए धरती अयो, पुरूब चले पुरूब खुले, पश्चिम चले पश्चिम खुले, उत्तर चले उत्तर खुले, दक्षिण चले दक्षिण खुले, सरग चले, सरग खुले, पताल चले पताल खुले, खुले गांव गंजियारी गली कोचा, हिंसगा में पंटगा में, देवता पितर में, आइज भेजल के जाइत	हे दे आज मालिक,ऐ धरती माँ, पूरब चले , पूरब खुले पश्चिम चले पश्चिम खुल, उत्तर चले उत्तर खुले, दक्षिण चले दक्षिण खुले, स्वर्ग चले, स्वर्ग खुले, पताल चले, पताल खुले खुले गांव गंजियारी गली गली हिंसगा में पंटगा में, देवता पितर में, आज भेजा हुआ जाति

परजाइत के ले कइर के, बेटा
कर पिण्ड है प्राण के कया है
भुजा के खण्डित कइर के रखबे
बांमे दहिने देवी देवता ले कइर
के काइट के समुद्र लंका पार
करबे, बाथा है पीरहा है सबके
काइट कइर के रखबे, आइज
सबके खुला कइर के रखबे,
आइज ले करके आइज रखना,
पखन खाइ पखन पाचे। हे इन्न
हिन्दु के गौ किरय, मुसलमान
के सुवइर किरया। हे दे इन्ना
भार जोर नने कि कले इन्ना।
इन्ना सोलो सिंगार बत्तीसो
सिंगार ले के करके देंवड़ा और
भेंवड़ा ले करके बेटा सिन इन्ना
देंवड़ा और भेंवड़ा ले करके एका
नलख गे कालोस आ नलख
मनान नेकान, अयो बबा से चारो
दिशा सातो दुवार ले करके खुला
मनके नेक'आ, कलय इन्ना डाइन
ही डुकुर ही ले करके करनी और
धरनी ले करके खण्डयकी उइय्य।
आइज खण्डित करके खण्डित
ननके की उइके। जैसे नेखय
दोस गुनहा परगन ले के खुला
ननके की उइके। दुनियाँ–दुनियाँ
नू इन्ना दुवारी माय एक्कने
खुला र'ई अन्नेम खुला ननके
की उईके। जय धरती माता
जय मालिक भगवान ले करके
हेठे पंच उपरे परमेश्वर ले
करके चाइल काटो चलनी
काटो डइनी के गुण काटो
डइनी बाण काटो, डाइनी
के जुड़ा काटो, डइनी के
दुधा काटो, नजरी गुजाइर

दूसरे जाति का लेकर बेटा
का पिण्ड है, प्राण के शरीर है,
भुजा को खण्डित करके रखना
बांया दहिना देवी देवता लेकर
के काट के समुद्र लंका पार
करना, दर्द है, तकलीप है, सभी को
काट करके रखना, आज
सभी को खुला करके रखना
आज लेकर के आज रखना,
पत्थर खाये, पत्थर पचना। हे आज
हिन्दु को गाय क्रिया, मुसलमान
को सुवर क्रिया। हे दे आज
भार जोर कर के जाओ।
आज सोलह श्रृंगार, बत्तीस
श्रृंगार लेकर देंवड़ा और
भेंवड़ा लेकर बेटा का आज
देंवड़ा और भेंवड़ा लेकर के जिस
कार्य के लिए जायेगा, वह कार्य
होना नेकान। माता पिता से चारो
दिशा सातो दरवाजा लेकर खुला
करना सैय्द, जाओ आज डाईन
का डुकुर के लेकर करनी और
धरनी ले करके काटकर रखिये।
आज काट करके काट
कर के रखना। जैसे किसी का
दोष गुनहा परगन लेकर खुला
करके रखना। दुनियाँ–दुनियाँ
में आज दरवाजा माँ जिस तरह
खुला है, उसी तरह करके
रखना। जय धरती माता
जय मालिक भगवान लेकर
नीचे पंच, ऊपर परमेश्वर ले
करके चाल काटो चलनी
काटो, डइनी के गुण काटो
डइनी वाण काटो, डइनी
के जुड़ा काटो, डइनी के
दूध काटो, नजर गुजर

काटो, मुहाँ का जाबान काटो,
मुहे का बात काटो, आठो अंग
की रे काया भुजा की रे चल
गे हराम जादी कहाँ लेगेबू तोके,
कहाँ लेगाबू गंगा ले जाबू
जमूना में लेगबू गंगा में कराबू
दहा जमुना में कराबू बोहाय
तोके। पिण्ड छोड़ प्राण छोड़ू
कया से भुजा के छोड़ निर्मला
कया रखू निर्मला कया करू
हलूक कया करू हलूक कया
के भुजा। खुरी डगारी केरा डंड़ी
घटे केरा चुंवा घटे केरा, अहरा
पोखेरा केरा बुण्डे के करेचा मरेचा
केरा नदी डहेड़ा केरा नदी
पोखेरा केरा, काचा कुवांर केरा,
के तो लगायं देलय। भुला के
लगायं देलयं। चारो के बाथा
सारो शैतान के चल गे सारो
सैतान के अंगे अलथा कटबे
बंम्बे दहिना काटबू छिरयाय के
माराबू बामे कइर के मरबू उड़बू
आकाश तोके उड़ाबू पताल, घुरी
न आबे मुदाई फिन न आबे,
तोके कसम देबू लाखो जबान,
देबूं हरदी किरया देबू तुलसी
किरया तांबा तुलसी किरया,
तुम्बा किरया देबू, बरा बछारे रे
तेरह बछारे रे बरो बिहरी किरया
कराबू किरया तोके तो कराबू
किरया तोके। बना चला गेलंय
बरूदा के तो गलांय आवी
जुबान कहाले बिजली ब'अतारकी,
बाण लोहा के लोह बाण
बजार बाण के ठनका बाण
बिजोली बाण के तो लगांय देलंय
डेड़हइया अढ़इया बाण चल गे

काटो, मुँह का जबान काटो
मुंह का बात काटो, आठ अंग
का रे शरीर भुजा का रे चल
गे हराम जादी, कहाँ लूंगा तुम्हें
कहाँ ले जाऊंगी, गंगा ले जाऊंगी
जमुना में ले जाऊंगी, गंगा में करेगें
दहा। जमुना में करेगें बहाना
तुम्हें। पिण्ड छोड़ प्राण छोड़
शरीर का भुजा को छोड़ निर्मल
शरीर रखना। निर्मल शरीर करना
हल्का शरीर करना, हल्का शरीर
के भुजा। गली महल्ला का चुंवा
घाट का चुवां घाट का, अहरा
तलाब का बुण्डे का करचा मरचा
का नदी रास्ता का नदीं
तलाब का, जवान कुवार का
कौन तो लगा दिया। भुला को
लगा दिया। चारो को दर्द,
सारो शैतान के चल गे सारो
शैतान के अंगे अल्था काटना
बांया दहिना काटेगें, छिरया के
मारेगें, बांया करके मारेगें उड़ायेंगें
आकाश तुम्हें उड़ायेगें पलाल, लौट
नहीं आना दुश्मन फिर नहीं आना
तुम्हें कसम देगें लाखो जबान
देगें। हल्दी किरया देगें तुलसी
किरया तांबा तुलसी किरया
लौकी किरया देगें, बारह वर्ष रे
तेरह वर्ष रे बारह बिहरी किरया
करेगें किरया तुम्हें तो करेगें
किरया तुम्हें। वन चल गया
बारूद को तो गलाकर आना
जुगान कहलायी, बिजली कहलायी
वाण लोहा के लोह वाण
बज्र वाण के ठनका वाण
बिजलह वाण को तो लगा दिया
डेड़हईया अड़हईया वाण चलो गे

अढ़इया गुण आगे अंथा कटबू
दहिना कटबू इड़ियाय के मराबू
बामे मरबू ले जाबू आकाश से
पताल, से आवी बजरंग
बली बाबा ग्रह के काटू बाबा
संकट के काटू, काटू कलजुगी
के धरती पिरती से आवी धरती
में कटाबू ग्रहा संकट अहरा
पोखरा का बुण्डे के करचा काटबू
संकट ग्रह। सिरनी–बिरनी बुदा
नदी जनम लेले। काटू से
नागिन बाबा केकरो किरया लागी
केकरो का नाशाला पंजाला के
सिनया धोबिनियां के जंगल
झाड़ केरा खुरी पिहिरा केरा
अखड़ा झखेरा केरा डांडे टिकरा
केरा करानी झारा हिके काटू से
काटू देवता, देवता से काटू
चारियो कोना गली कोचा केरा
जाती परजाती केरा लेके करू
देवता तोरे असेरा में तोरेतो
भरसा में रहबू। बनारी पंचो
कोराम्बी के भाषाण देवरा
हपामुनी के महारानी देवाकी माय
बाप, महेदो परवती, राँची के
बुडढ़े बाबा, रजरप्पा के काली
अयो कलकत्ता काली माय,
कलकत्ता कलूदा के संकटा
ग्रहा के, बारहो तेरहो संकटा
के खंडिता करू तोर असेरा में
तोरे भरसा रहबू।'' से ले के
काटे के भेजल भखल अवल
भखल आइज काइट करके
आइज बेटा कर काया के
भुजा लेकर चारो चौगिरदा के
खुला कइर के रखबे। महायदेव
परवती बाबा भैरो देवी दुर्गा माता

ढाई गुण आगे अंथा काटेगें
दायां काटेगें, इड़िया के मारेगें
बायां मारेगें, ले जायेगें आकाश से
पताल, से आयेगें बजरंग
बली बाबा ग्रह के काटिय बाबा
संकट को काटो, काटो कलयुगी
के धरती पृथ्वी से आयेगें धरती
में काटेगें ग्रह संकट अहरा
तालाब का बुण्डे के करचा काटेगें
संकट ग्रह। सिरनी–बिरनी बुदा
नदी जन्म लेकर। काटो तो
नागिन बाबा किसी का किरया लगे
किसी का नाशन–पांजन को
सिनया धोबी का जंगल
झाड़ का टोला रास्ता का
अखड़ा झखरा का, टांड़ टिकरा
का करानी हड़िया है काटो तो
काटो देवता, देवता से काटो
चारो कोना गली कोचा का
जाति परजाति का लेकर करो
देवता तुम्हारा आशा में तेरे ही
भरोसा में रहेगें। बनारी पांचो
कोराम्बी के भाषाण देवरा
हापामुनी के महारानी देवाकी माय
बाबा, महायदेव पारवती, राँची के
बूढ़ा बाबा, रजरप्पा के काली
माँ, कलकत्ता के काली माँ
कलकत्ता कलूदा के संकट
ग्रह के बारह तेरह संकट
को खण्डित करना। तेरे आशा में
तेरे भरोसा रहेगें। से लेकर
काटे, किसका भेजा, भाख आया
भाख को आज काट करके
आज बेटा का शरीर में
भुजा लेकर चारो दिशा को
खुला करके रखना। महायदेव
पारवती बाबा भैरो देवी दुर्गा माता

बजरंग बली बाबा अयो गुरू
गुरूवाइन अयो काली माता केकरो
उठल देव के पठाल देव के, बेटा
के काटेगें पीठ प्राण काया भुजा
लगाया लगावल के काटू से, काटू
देवता तोर आसे में तोरे
नंजरी से लगालंय नजरी
मुंहा जबान देलांय मुहां तो भखान
देलांय, हांथा से उसकालांय, गोड़ा
से इड़ियाय धमकाय देलांय,
इड़ियाला धमकाला के तेरहा
छैना भैना के खण्डित करू
देवता तोरे असेरा में, तोरे तो
भरसा रहबू, हवा रूपे अले मुदय
सपना रूपे आले भभना रूपे
आले, खेलते खुंदाते नचाते डेगते,
बुलते चलाते आले, भुखे पियासे
आले, कहाँ पाबे कुटल चऊर,
कहाँ पाबे छाँटाल दाइल तोके
देबू किरया तीता लौवा तीता
कोंहड़ा करबू किरया करांबू
कांसा में हेदे बेटा कर काया
भुजा में खण्डित कइर के रखबे,
जैसन कि लेकर के भूत के
बैताल के सातो दुवार खुला
रखबे जम्बू मन्न कर पतई
जेलेखे हरियर अहे से लेखे
हरियर कइरके रखबे। से
लेखे ले के बांस कर पताई
लेखे सलसलाय के रखबे।
हे दे जीव जहान के हे दे गंगा
माय जमुना माय से ले करके
रोगन दुक्खन खोरना बेरना ले
करके अयो बाबा ले करके बोहा
दुश्मन ले के आकाश पाताल में
बोहा ब'अय, धहा ब'अय। हे दे
दोसी और बढ़ाय के रखबे सत

बजरंग बली बाबा माँ गुरू
गुरूवाईन माँ काली माँ किसीका
उठाया दवे का पठाया देव का बेटा
कौन काटेगें पीठ प्राण काया भुजा
लगाया लगवाया को काटो, काटो
देवता तेरे आशा में तेरे
नजर से लगाया नजर
मुंह जबान दिया, मुंह का भाख
दिया, हांथ से उसकाया, पैर
से इड़ियाया, धमका दिया
इड़िया धमका के तेरह
छैना भैना के खण्डित करो
देवता तेरे आशा में, तेरे ही
भरोसा रहेगें। हवा रूप आया दुश्मन
सपना रूप में आया भभना रूप
आया। खेलते रौंन्दते, नाचते डेगते
घुमते–फिरते आया। भूखे प्यासे
आया, कहाँ पाना कुटा चावल
कहाँ पाना छांटल चावल, दाल तुम्हें
देगें किरया तीता कद्दू तीता
कोंहड़ा करेगें किरया करेगें
कांसा में हेदे बेटा का शरीर
भुजा में खण्डित करके रखना।
जैसा कि लेकर के भूत का
बैताल को सातो दुवार खुला
रखना, जामुन पेड़ का पत्ता
जिस तरह हरा है उसी तरह
हरा करके रखना। उसी
तरह लेकर बांस का पत्ता
जैसा सलसलाय के रखना।
हे दे जीव जहान के हे दे गंगा
माय, जमुना माय, से लेकर
रोग, दुःख घेरा–बेरा ले
करके माँ पिताजी लेकर बहा
दुश्मन लेकर आकाश पाताल में ले
बहा देना, ढहा देना। हे दे
दाषी और बढ़ा के रखना, सत्य

जुगी देवता आईज आशिर्वाद देबे अयो बाबा बेटा कर दुरा धाम खुईल जाना।	युग के देवता। आज आशिर्वाद देना माँ बाबा, बेटा का दरवाजा धाम खुल जाना।

इसके बाद भगत उठने बोलता है फिर अपने पैर वगैरह को झाड़ना है फिर अपने स्थान पर चले जाना है। परन्तु मंत्रो में कुछ उराँव़ और नागपुरी, दोनों भाषा से लिखा गया है। इसके लिए तीन सांझ झरवाना पड़ता है। इसमें जो सामान बोला जाता है उसे दिया जाता है। झरनी के पहले उनका मूल्य भी दिया जाता है।

5.5 नागमतिया भगत

नागमतिया भगत का कार्य साँप का विष झाड़ना या उतारना होता है। नागमति दो शब्दों से मिलकर बना है। नाग और मति। जिसका अर्थ हुआ ''सांप का मंत्र जानने वाला।'' (मिखाईल कुजूर,उ.सं,221) वहीं एस0सी0 राय (O.R&C,302) ने लिखा है किसी व्यक्ति या परिवार या गाँव में भूत को भगाने का कार्य करते हैं। जिससे साँप का जहर नहीं फैलता है और वह विष उतारने का कार्य करता है। जिसे ''नागमति'' के नाम से जाना जाता है।

नागमतिया भगत के ओझा का कार्य अलग होता हैं। नागमतिया भगत शरीर को छू कर ही जाँच लेते हैं कि विषैले जन्तु द्वारा काटे गये व्यक्ति के ऊपर विष का प्रभाव कहाँ तक चढ़ा है। यदि किसी व्यक्ति को सांप ने डस लिया और उसका विष उसके शरीर में चढ़ रहा है तो सबसे पहले काटा हुआ से उपर रस्सी से कस कर बांध देना चाहिए। साथ ही अधिक इधर—उधर दौड़—धूप नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से विष पूरे शरीर में फैल जाता है, जिससे प्राण जाने की अधिक संभावना रहती है। अतः ऐसे कार्यो से बिलकुल ही बचना चाहिए। यदि चिती है तो डसे हुए स्थान में रख देने पर भी सारा विष उतर जाता है और जब विष उतर जाएगा तो वह स्वतः ही गिर जाएगा। यह भी बताया गया कि यदि इमली का बीज को छिलका निकाल कर सांप काटा हुआ में लगाने पर लटक जायेगा और विष उतरने पर स्वतः गिर जायेगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो तुरन्त ही ''नागमतिया भगत'' को बुलाकर ''झाड़—फुँक'' शुरू कर देना चाहिए। सही वक्त पर सही इलाज से जान बचायी जा सकती है। ऐसा भी बताया गया है कि यदि किसी व्यक्ति को साँप डसा है, वही साँप को पकड़ कर उसको भी ''डसने या काटने'' पर उसका विष नहीं लगता है। साथ ही यह भी कहा गया है, काटे हुए स्थान से चुस कर विष निकालने से भी साँप का जहर खत्म हो जाता है।

5.5.1 पाठ बांधना

भुईंफुट भगत को छोड़कर सभी प्रकार के भगत सिद्धी प्राप्ति के लिए ''पाठ बांधना'' अति अवश्यक होता है। पाठ बांधने के लिए ''गुरू'' की आवश्यकता होता है। गुरू का चुनाव करके ही ''पाठ'' बांधा जाता है। गुरू ऐसे व्यक्ति को बनाया जाता है जो ''नागमतिया'' का पूर्ण ज्ञाता हो। जो किसी प्रकार का बाण या रोग आए उसे रोकने की शक्ति हो, साथ ही भीख उतारने या भूत भगाने या छेकने की क्षमता रखता हो।

5.5.2 पाठ बांधने के लिए सामग्री

पाठ बांधने के लिए सभी भगत घुंसने वाले या चेलों से मिल कर सामग्री खरीदी जाती है। जैसे—तीन रंग का झण्डा (सफेद, काला, लाल) का सिरा बनाया

जाता है जिसमें पैसा जैसा गांठ बांधा जाता है, फूल, प्रसाद (जैसा भी आप बनाना चाहें)। इसके अलावा देवी माय के लिए कसया बकरा, चाला अयो के लिए कसरी मुर्गी, गांवारों के लिए सफेद मुर्गी, भगवान के लिए पेरवां, पाठ–देशवाली के लिए कसया बकरा और बजरंग बली के लिए नारियल।

5.5.3 पाठ घुसने की विधि

पाठ घुसने या प्रशिक्षण की विधि, क्षेत्र विशेष में अलग–अलग होती है। जैसा कि मिखाईल कुजूर (उ.सं.221) ने पलामू जिला के एक गांव के नगमतिया प्रशिक्षण के बारे में जिक्र किया हैं। वहाँ गुरू दीया जलाकर प्रत्येक शिक्षार्थी को सबई रस्सी के कोड़े से हथेली में मारता है। इसके बाद सभी सूप और अरवा–चावल लेते हैं। गुरू घोंसते हुए गीत गाते हैं तो शिक्षार्थी भी घोंसते हुए उसे दुहराते हैं। इस समय देवताओं के भी नाम लिये जाते हैं। सभी अपना सिर दरसते हैं। जो नहीं दरसाता, उसे भी पकड़कर जबरजस्ती दरसाया जाता है। फिर गुरू चावल छिटकर सभी को सामान्य स्थिति में लाते हैं। इस प्रकार वे धीरे–धीरे इस क्रिया में आदि हो जाते हैं।

मैं पलमा डुगडुगिया के चामु उराँव के बताये, को रख रहा हूँ। इनके अनुसार जबर्दस्ती करने की आवश्यकता नहीं है और न किसी को कोड़े से मारा जाता है। किसी प्रकार खाने–पीने में गलती करने पर चेला ही उन्हें मारते हैं। यदि गुरू भी किसी प्रकार की गलती करता है तो उन्हें भी चेला ही मारते हैं। इस प्रकार से क्षेत्र विशेष में अन्तर हो सकता है।

पाठ घुसने के लिए सभी चेलों को सिद्ध देते हैं। इसके लिए सभी चेले नहा कर एक स्थान पर एकत्रित हो जाते है, तब प्रत्येक चेले को गुरू अपने पास बुलाता है, उसे अपने गोद में बैठाता है, अपने मुँह को चेले के कान में सटाता है और चुपके से उसके कान में कुछ बोलता है। जिसे गुरू को छोड़कर किसी को बताना नहीं होता है। जो चेले को हर समय रक्षा करता है। उसी का नाम लेकर सभी पूजा–पाठ करना होता है। जैसे–यदि किसी के कान में जट्टा महादेव या पानी महादेव या बजरंगी वीर कह दिये तो उसे उसी वीर का नाम लेकर पूजा पाठ–पाठ करना होता है। प्रत्येक चेले को कुछ ना कुछ नाम देते हैं।

इसके पश्चात घर के अन्दर जिस कमरा में झण्डा गाड़ने के लिए एक निश्चित स्थान चुना जाता है। वहीं एक स्थान पर 11 झण्डा, दूसरे स्थान पर 09 झण्डा और तीसरे स्थान पर 07 झण्डा गाड़ा जाता है। झण्डा प्रत्येक देवी देवता के नाम पर दिया जाता है। जैसे सात झण्डा ''सातो देवी'' के नाम पर। इसके बाद बाहर में तीन झण्डा ''चाला अयो'' के नाम से लाल, सफेद और काला गाड़ा जाता है। जिसे आकासी झण्डा भी कहा जाता है, जो कि पाठ बांधने के बाद किसी प्रकार का गुण–वाण, हवा–पानी आये, उसे रोक कर रखने के लिए होता है।

इसके बाद सभी पूजा—पाठ में लग जाते हैं, जब आषाढ़ का महीना आता है तब एक बार आसारी पूजा होता है। उस समय सिर्फ कबूतर से ही पूजा किया जाता है। सावन में सावन पूजा, इसके पश्चात भादो अष्टमी का पूजा होता है, जिसमें फल—फूल, नारियल से पूजा किया जाता है, इसमें भी सभी देवी—देवताओं का पूजा होता है। नया खानी में नया धान की बाली अर्थात गोड़ा, गुन्दली पक जाता है, उस समय का पूजा में प्रत्येक व्यक्ति से एक जोड़ा कबूतर (पेरवां) लिया जाता है। जिसे पूजा करने के बाद अपने साथ ही ले जाना होता है। इसके पश्चात कातिक पूजा होता है। पूजा के लिए सभी से पैसा लिया जाता है जिसे उराँव़ में ''बिहरी'' कहा जाता है। सभी मिलकर बकरा, पेरवां और शुरू में जो नेग पाठ बांधने के दिन लगा था, वही सभी समान इस दिन भी लगता है। इसी दिन ''सिद्ध'' और ''बीजक मंत्र'' भी दिया जाता है। उसी मंत्र को लेकर झाड़—फूक या अन्य किसी प्रकार का कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। बीजक मंत्र तीन प्रकार का दिया जाता है जो सब समय के लिए काम आता है। बीजक मंत्र को कोई भी मंत्र के बीच में कहें तो जिसका भी झाड़—फूँक करेगें, उसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यह मंत्र बहुत ही छोटे, सिर्फ दो—तीन कड़ी का होता है। परन्तु बहुत ही शक्तिशाली होता है।

इसके पश्चात अगहन महीना के पूर्णीमा के दिन पाठ उठाते हैं। उस दिन भी सभी चेला मिलकर पूजा का सारा समान खरीदते हैं। उस समय सभी चेले मिलकर, सभी चेले के यहाँ रात में भ्रमण करते हैं। इसके लिए उन चेले में से ही एक को साड़ी और एक को धोती पहनाया जाता है। साड़ी पहने वाला, घड़ा में पानी ढोता है उसमें आम का पत्ता और पानी रहता है। जो डलिया ढोने वाले का में पूजा का सारा समान जैसे—दोना, फूल, प्रसाद, धूप—धुवन, सिन्दुर, उसी में एक मशाल जैसा बनाया हुआ रहता है। मशाल के लिए अलग से एक डण्डा बनाया जाता है लगभग बाँस का चार—पांच फीट का, जिसे एक तरफ चार बार फाड़ा जाता है, उस फाड़ा हुआ में मिट्टी का तावा रखा जाता है, उसमें आग रहता है, उसे रास्ते में जलाते हुए जाना है। सभी चेले घुमते हुए पूजा के समय का गीत गाते एवं गोहराते हैं। साथ में शंख और घंटा बजाते हुए जाते हैं। वे प्रत्येक चेले के यहाँ बारी—बारी से जाते है और जो भी दान स्वरूप मिलता है, उसे लेते है।

जब सभी के यहाँ खत्म हो जाता है तब सुबह में नदी में जाते हैं। वहाँ पर उसके लिए स्थान देते हैं, पानी देते हैं, गोहराते हैं और पूजा पाठ करते हैं, वहाँ भी पहले की तरह नेग—दस्तुर करते हैं। इसके बाद दहा—बोहा करने के पश्चात, नहा धोकर वापस चले आते हैं। घर आकर सभी एक साथ बैठ कर भजन—किर्तन करते हैं। उसी दिन से उनका सारा नेग—दस्तुर खत्म हो जाता है।

5.5.4 गुरू दक्षिणा

जब पाठ बांधना समाप्त हो जाता है तब ''गुरू दक्षिणा'' का बारी आता है। इस दक्षिणा में कोई खास तो नहीं लिया जाता है। सभी चेले गुरू के लिए धोती, गंजी या कपड़ा और गुरूआइन के लिए साड़ी, बलाउज वैग्यरह दिया जाता है। इसके अलावे नये चेले से ''एक उड़िया'' और पुराने चेले से ''एक सूप'' धान लिया जाता है।

5.5.5 नागमतिया मंत्र के प्रकार

नागमतिया मंत्रों में भी अनेक मंत्र पाये जाते हैं। जैसे –पूजा मंत्र, कया बांधने का मंत्र'' है। इसमें किसी प्रकार का हवा व्यार या किसी प्रकार का बुरे व्यक्ति, मन भटकाते है, वे मन को भटकाने के लिए किसी सैतान को भेजते हैं। यदि कोई भी शैतानी करने वाला किसी शैतान को भेजते हैं जिससे कि भुला पकड़ता है या दूसरे का सिमान में जाने पर नजइर भाख लगने पर उनका हाँथ पैर, पेट दर्द आदि करता है। उस मंत्र को ''कटनी मंत्र'' कहते है। यह मंत्र बहुत ही लम्बा होता है। इसके साथ ही ''पुराण मंत्र'' होता है। साँप का विष उतारने का मंत्र, जिसे ''उड़ान मंत्र'' कहा जाता है। आगे हम कुछ मंत्रों को देखेगें।

तालिका 27 नागमतिया मंत्र के प्रकार

1. पूजा मंत्र
2. काया बांधने का मंत्र
3. कटनी मंत्र
4. विष उतारने का मंत्र या उड़ाने का मंत्र
5. भूला भगाने का मंत्र
6. लौटाने का मंत्र
7. साँप काटने पर मंत्र
8. बंधनी मंत्र
9. गरूढ़ मंत्र
10. झरनी मंत्र
11. रास्ता में चलने के समय का मंत्र

5.5.5,1 पूजा मंत्र''

जब पूजा होता है, तो वह पूजा मंत्र से ही प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात ही अन्य किसी प्रकार का नेग दस्तुर होता है। पूजा मंत्र इस प्रकार से है :–

178	अद्दि के सांप मुनी माता भगवती वासुदेव।	आदि के सांप मुनी माता भगवती वासुदेव

5.5.5,2 काया बांधने का मंत्र''

जब किसी के यहाँ झाड़–फूंक करने बैठ रहे हैं, उसके पहले अपने शरीर को बांधना है, ताकि किसी प्रकार का अनहोनी न हो। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई दुश्मन किसी प्रकार का वाण न चला दे, यदि चला भी दे तो वह वाण लौटकर वापस चला जाय। मंत्र के जाप के बाद वह सुरक्षित हो जाता है।

179	जल बांधो थल बांधो,	जल बांधो थल बांधो
	बांधो अपन कया,	बांधो अपना शरीर
	भुजा गुरू के चेला बांधो,	भुजा गुरू के चेला बांधो
	दिशा उत्तरे बांधो काल,	दिशा उत्तर बांधो काल
	दक्षिण बांधो भूत लगाल	दक्षिण बांधो भूत लगाया
	कर गुणी के मया उखाड़ो,	कर गुणी के माया उखाड़ो
	जो डाईन बाण चलाय	जो डाईन बाण चलाया
	उसी को हाँथे कड़ी पांवे	उसी को हाथ कड़ी पावे
	बेरी लगल माय देव,	बेरी लगाया महादेव
	सोने कड़ी रूपे विहान	सोने कड़ी रूपे सुबह
	पिण्ड प्राण साफ रखल	पिण्ड प्राण साफ रखना
	जाय मनसा माय के दुहांई।''	जय मनसा माय के दुहांई

5.5.5,3 रास्ता चलने का मंत्र

जब हम कहीं रात–विकार रास्ता चल रहे हैं और किसी अनहोनी होने की शंका हो रहा है, तो हम अपने शरीर को बंधने के लिए मंत्र को एक बार बोल कर चलने से रास्ते में किसी प्रकार की अनहोनी की संभावना नहीं रहता है। कहा जाता है कि रास्ते में एक टेंटगा भी अवाज नहीं करेगा और सुरक्षित अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँच सकते हैं। काया बांधने का मंत्र इस प्रकार है –

180	आसन बांधो पसन बांधो,	आसन बांधो पासन बांधो
	बांधो दस दुवारे,	बांधो दस दरवाजा
	रामजीत के दौलत में हड़ कुरे	रामजीत के दौलत में हड़कुरे
	लोहा मंस कुरे पत्थर फाटे फिटे	लोहा मंस करे पत्थर फटे फट
	वीर हनुमान, वीर देखा करे	वीर हनुमान, वीर देखा करे
	दोहांई गुरू के लंका जी के	दोहांई गुरू के लंका जी के
	दोहांई, सीता माय के	दोहांई सीता माय के

	श्रीराम जी के दोहांई	श्रीराम जी के दोहाई
	मनसा माय	मनसा माय

भुनेश्वर अनुज (ना.लो.196) ने भी देह बांधने का मंत्र इस प्रकार बताये हैं–

181	बज्र बांधो बज्र तार बज्र बांधो	बज्र बांधो ब्रज तार बज्र बांधो
	छूत–भूत के छाया बज्र	छूत–भूत के छाया ब्रज
	बांधो अपनी काया	बांधो अपना शरीर
	पीछे भैरो आगे काली जेकर	पीछे भैरो आगे काली जिसके
	पीछे जय बार पढ़ो जय बार	पीछे जब बार पढ़ो जय बार
	ताली दोहाई नरसिंह के	ताली दोंहाई नरसिंह के

(विधि – इस मंत्र को तीन बार पढ़ कर तीन ताली मारें।)

5.5.5,4 बंधनी मंत्र

बंधनी मंत्र से घर–द्वार को बांधा जाता हैं। जब किसी के घर झरनी करने जाते है तो किसी प्रकार का अनहोनी न हो, इसके लिए सबसे पहले घर को बांधा जाता है। उसे रोककर रखना ही ''बंधनी मंत्र'' कहलाता है।

182	धनी बांधो घर से धनी	धनी बांधो घर से धनी
	बांधो पावो, धनी बांधो जांघे,	बांधो पावो, धनी बांधे जांघे
	धनी बांधो कमरे, और धनी	धनी बांधे कमरे, और धनी
	लड़े चांड़े, मुँहे लड़े, ऐंठ बैठे,	लड़े चांड़े, मुंह लड़े, ऐंठ बैठे
	ऊपर जाय माय देवी,	ऊपर जाय माय देवी
	माता खाय जय मनसा दोहाईं,	माता खाय जय मनसा दोहांई
	जब बांधो तो बंधाइये जाय,	जब बांधो बंध जाये
	जब छोरो तो छूटी जाय,	जब छोड़ो तो छुट जाय
	मनसा माय।''	मनसा माय।

5.5.5,5 भूला भठका का मंत्र

भूला पकड़ने पर अचानक पेट दर्द बहुत अधिक होता है। दवा उनके नाम से उखाड़ कर सफेद धागा में बांधकर पहान–पुजार और गांव के देवी देवताओं का नाम लेकर उसके गरदन में टांग देते हैं।

5.5.5,6 लौटाने का मंत्र

जिस किसी के घर झाड़–फुँक करने गये हैं। तब कोई जानने वाला वाण चला न चला दें। इसके लिए अपना शरीर को, पहले ही बांध लेता है। उस

वाण को लौटाने का भी मंत्र है। यदि वह चाह लिया तो, उस वाण को लौटा कर उसी को मार सकता है परन्तु भगत करने वाले वैसा नहीं के बराबर करते है। भगतों का कहना है कि वे अच्छे काम के लिए भगत सीखते हैं, बुरे के लिए नहीं। यदि कर दिये तो निश्चित तौर पर कुछ अनहोनी होता है।

5.5.5,7 साँप काटने या विष उतारने का मंत्र

जब सांप किसी को काट लेता है तो सबसे पहले जहाँ काटा है, उसके उपर रस्सी से बांध देना चाहिए। साथ ही उसे अधिक इधर–उधर नहीं होना चाहिए। यदि ''चिती'' है तो डसे हुए स्थान पर रख देने से भी विष उतर जाता है। जब विष उतर जाएगा तो वह स्वतः गिर जाएगा। चिती तीन प्रकार के होते हैं, सबसे अच्छा नेवला चिती का होता है। –

तालिका 28 चिती का नाम

7.1. गरूड़ चिती
7.2. मोर चिती
7.3 नेवला चिती

सांप किसी को काटता है तो भगत सबसे पहले भगवान के नाम पर, टेक करने के लिए एक ''कसया बकरा'' चराता है कि :–

183	''हे चाला अयो, धरमे बबा,	हे चाला माँ, हे धरमे बाबा
	मनसा माय, महेदो पार्वती, हे	मनसा माँ महायदेव पारवती हे
	दे इन्ना फलना दुक्खे नू र'अदस,	दे आज फलना दुःख में है,
	असिन एक'अम किसीम गहि	उन्हें किसी प्रकार का
	मलदव अम्बन मनान नेक'अन	बुरा नहीं होना
	नीन सहाय मनके दरा आस	तुम सहाय होना और उनका
	गहि जियन बछा बअ'के, एकसन	प्राण बचाना। जहाँ
	परमकी र'ई असले भीखन अम्बके	डसा है, वहाँ से भीख को नहीं
	अरगा ची'आ, ए–म निंगहय मइया	बढ़ने देना। हम तुम्हारे ऊपर
	भरसा नन्र हे दे इन्न कसया	भरोसा करके हे दे आज कसया
	बकरा इजता लगदन, नीन	बकरा खड़ा कर रहे हैं। तुम
	भीखन मुन्ध भारे कानन इजताय''	भीख आज जाने को खड़ा करो

इसके बाद वह मती करने बैठता है। मती करने के लिए ''गुरू'' का इन्तीजार नहीं करते हैं, गुरू के आज्ञा के अनुरूप ''चेला'' लोग ही शरू कर देते है। नागमतिया भगतों की एक विशेषता है कि (चिमनी उराँव के अनुसार) जिस घर में सांप का विष उतारने गया है, उस घर से एक बूँद भी पानी नहीं पीता है।

पूरी तरह ठीक हो जाने के बाद उसे बुला कर कुछ देने से लेगें, अन्यथा स्वयं कुछ नहीं मांगते हैं।

184	सरगे से चाला लैं भीखा बरात	स्वर्ग से चला है विष बरात
	केसा अहे भीखा रहाले चपाइल,	बाल है विष है चपाइल
	धांव धांव गेदानी सुन गे बयरी	धांव धांव गेदनी, सुन गे बयरी
	मेनजुरा छेकल भीखा माइर देल।	मोर छेका विष मार दिया
	रांव दांव गेदानी सुन गे बयरी	रांव दांव गेदरी सुन गे बयरी
	नउरा छेकल भीखा माइर देल।	नेवला रोका विष मार दिया
	दांव दांव गेदानी सुन गे बयरी	दांव दांव गेदनी सुन गे बयरी
	गरूड़ छेकल भीखा माइर देल।''	गरूड़ रोका विष मार दिया

यहाँ पर तीन चीज का चिती का नाम लिया गया है। नउरा का भी चिती होता है जो कि सांप काटने पर एक घांस को खाने पर वह पुनः जुड़ जाता है, जिसे बैध ही जानते हैं। वे उसे पूजा पाठ कर रखते है। झरनी मंत्र बहुत ही लम्बा होता है। मंत्र के शुरू में ही ''सरगे'' अर्थात स्वर्ग से विष को उतार रहे हैं। सरगे के बाद बाल, कपाल क्रमशः नाक, होठ, गरदन..... घुठना... सुपली अंगली, अन्त में नाखुन, तुन्दी के बाद जमीन से समुद्र में लिया जाता है। समुद्र में ही भीख को भष्म किया जाता है। कभी–कभी ''तुली भीख'' वह बचा ही रहता हैं, उसे उतारने के लिए एक जबरदस्त मंत्र है। जिसे ''टुड़ी एत्तना'' मंत्र भी कहा जाता है।

185	चुनू रहो देवी झपिया दुलाइचा	चुन रहो देवी झपिया दुलाइचा
	सोनपाल के बैठल देवी,	सोन पाल के बैठी देवी
	गोपाल के बैठाल देवी माय,	गोपाल के बैठा देवी माँ
	मनुखा के अंगे हो नखे ब्रहमा	मनुष्य के अंग नहीं बह्मा
	विष्णु इकरे अंगे हो नखे ब्रहमा	विष्णु इसके अंग है नहीं बह्मा
	विष्णु'' सारा हरा सिम्बाईर, नागा	बिष्णु सारा हरा सिम्बल, नाग
	बांस, भीखा चलें थोड़–थोड़	बांस विष चलें, थोड़ा–थोड़ा
	हांय मंत्र'' के करो देहांय	हाय मंत्र के करो दोहांय
	पानी पांय के मनसा माय	पानी पांय के मनसा माय।

यह मंत्र भी लम्बा है। इसे अन्त में दोहरा–दोहरा कर बोला जाता है। कहा जाता है कि इस मंत्र के द्वारा भीख उतर ही जाता है।

5.5.5,8 गरूढ़ मंत्र

इस मंत्र को सांप काटने का मंत्र या झरनी मंत्रों के बीच में बोला जाता हैं। इसके बीच में प्रयोग से मंत्रों की शक्ति और अधिक बढ़ जाता है अर्थात अन्य मंत्रो को शक्ति प्रदान करता है।

186	वङग आदि बांधो, अनादि बांधो,	वङग आदि बांधो,अनादि बांधो
	और बांधो सभा, दस गरूड़रे	और बांधो सभा, दस गरूड़रे
	रावण बांधो, ऊपर बांधो,	रावन बांधो, ऊपर बांधो
	श्री राम नगर के माटी, तीन भवन,	श्रीराम नगर के मिट्टी,तीनभवन
	जात पड़े से पड़े संग्रह बांधो।।	जात पड़े से पड़े संग्रह बांधो
	नेग धरम बांधो तेका सुखी	नेग धरम बांधो तभी सुखी
	श्री गुरू रामचन्द्र कर देवें	श्री गुय रामचन्द्र कर देवें
	महादेव अज्ञाएं, विष बांधो	महादेव आज्ञा, विष बांधो
	मनसा माय।।	मनसा माय।।

आधुनिकता के इस युग में नागमतिया भगतों पर कहाँ तक विश्वास किया जाय, यह समझ से परे है। मैं यह नहीं कहूँगा कि इनके मंत्र में शक्ति नहीं है। बताते हैं कि सांप डसे हुए व्यक्ति को दफनाने ले गये व्यक्ति को जिन्दा किया गया है। ऐसा कुछ लोगों ने बताया है, यह कहाँ तक सच्चाई है, कहा नहीं जा सकता है

5.5.5.9 नगमतिया भगत के कुछ अच्छे और बुरे परिणाम

अच्छे परिणाम 1

श्रीमति चिमनी उराँव (पुगु बड़का टोली, 12 मार्च 2009) के अनुसार, जब मैं छोटी थी गुमला जिला के सारू गाँव के अगल–बगल की बात है। मैंने देखा कि एक घर में एक जवान लड़की को सांप डस लिया। तो एक नागमतिया भगत को बुलाकर लाये। उसने सबसे पहले जहाँ सांप डसा है उससे कुछ ऊपर रस्सी से बांधने कहा गया। सबसे पहले उसके नाम से एक कसया बकरा खड़ा किया। उसके बाद झाडू के खरिका से झाड़ना प्रारम्भ किया। जब तक उनका विष नहीं उतरा, तब तक वह झाड़ता ही रहा। झाड़ना शुरू करने के बाद उस घर का एक गिलास पानी भी नहीं पिया और न एक खोराक तम्बाकु खाया। इतना कि जब उस लड़की का सारा विष उतर कर ठीक हो गई, फिर भी वह उस घर से एक दाना तक नहीं लिया। वह ऐसे ही घर लौट गया है। परन्तु जिस दिन उस लड़की का विवाह हुआ, उस दिन उस भगत को बुलाकर वे जितना चाहे उतना मान–सम्मान और कुछ बहुत पैसा दिये।

अच्छे परिणाम 2

श्रीमति गोहरा उराँव (पुगु बड़का टोली, 22 जनवरी 2020) के अनुसार जब मैं विवाह नहीं हुई थी। अखड़ा में सभी लोग नृत्य करने में लगे हुए थे। मैं भी नृत्य करने के बाद एक बड़ा सा पत्थर में बैठ गई और अपना पैर को हिला रही थी। उसी समय उसी पत्थर में छिपे नाग सांप ने डस लिया। मुझे पता तो चला परन्तु कुछ काटा होगा, ये कहकर कुछ देर चुप थी। परन्तु एक बुढ़िया को बातों–बातों में बता दी तो उन्होंने बतायी की आपको सांप ने डस है। इस बिल में बहुत दिनों से रह रही थी परन्तु आज तक किसी को कुछ नुकसान नहीं पहुँचायी थी। तब उसके पैर को जहाँ डसा था, उससे ऊपर रस्सी से बांध दिये ताकि खून ऊपर न जाय। इसके बाद भगत को बुलाकर लाये। उन्होंने झाड़कर मेरा विष उतार दिया और आज भी जीवित हूँ, विवाह भी हुआ और बाल बच्चे भी हैं। उसी दिन उस सांप को कोड़कर निकाले और मार कर जला दिया।

बुरे परिणाम 1

मिखाईल कुजूर (उराँव संस्कृति, 223) के अनुसार एक गांव के सात व्यक्तियों को साँप डस दिया था। इसकी जानकारी उसमें किसी को नहीं थी। लेकिन एक बच्चे पर साँप–दांत के चिन्ह दिखाई देने और दर्द महसूस होने पर नागमतिया द्वारा झाड़–फूँक कराने लगे परन्तु बच्चा मर गया। उसे दफना कर लौटने तक दूसरे की भी मृत्यु हो गई। इस प्रकार उस परिवार के सभी सदस्यों की मृत्यु हो गई। लेकिन झाड़–फूँक वाले किसी की जान बचा नहीं पाये।

बुरे परिणाम 2

उन्हीं के अनुसार एक लड़की जो 12–13 वर्ष की थी, उसे साँप ने डस दिया था। लड़की का पिता स्वयं नागमतिया था। फलतः वह झाड़–फूँक करने लगा। इसके साथ और भी नागमतिया थे। हमें विष–निवारण के लिए जड़ी–बूटी या दवा की व्यवस्था करना चाही किन्तु वह मानने को तैयार न हुआ। अन्त में लड़की मर गई।

आज भी हम आधुनिकता के चकाचौंध के बीच में भी गांव–देहातों में वही पुरानी भगत पद्धति में विश्वास बनाये रखे हैं। जो कि आस्पताल में सांप काटने का दवा भी मिल रहा है। अतः मैं यही कहना चाहता हूँ कि भगतों के पास न जाकर, पहले अस्पताल ही जायें। अंध विश्वास के कारण की कई लोगों की सांप डसने से मृत्यु तक हो गई है।

5.6 कोंरियार या कौंरू भगत

कौंरू भगत घर को सुरक्षित रखने का काम करते हैं। इस भगत वाले पाठ में घुसने के बाद, जब तक भगत पाठ कर रहे हैं, किसी का छुआ हुआ नहीं खाते हैं। खाते भी हैं तो कुवारी लड़की या लड़का का या तो अपने घर वाले भगत हैं तब अन्यथा नहीं। यदि घर का कोई भी सदस्य अछुत हो जाता है तो उसे घर घुसने नहीं देते है और न ही उसका कुछ छुआ हुआ को खाते हैं, जब तक उसे सफेद मुर्गा का खून न पिलायी जाय। इस नेग के बाद ही उसे पवित्र माना जाता है।

5.6.1 पाठ बांधना

कौंरू पाठ बांधने के लिए निम्न सामग्री की आवश्यकता होता है –

तालिका 29 पाठ बांधने की समाग्री

3.1.1 दो कारी (काला) पाठी,
3.1.2 कसया (melt) बकरा,
3.1.3 पण्डरू (सफेद) बकरा,
3.1.4 झण्डा चार प्रकार – लाल, सफेद, हरा, काला

5.6.2 कौंरू भगत घुसने की विधि

कौंरू पाठ घुसने के लिए भी सबसे पहले गुरू पकड़ा जाता है। वे जिस गुरू को पकड़ते हैं, उसे वे अपने यहाँ बुलाते हैं। उसके बाद पाठ बंधवाया जाता है। पाठ बांधने के लिए चार प्रकार का सामान लगता हैं। तीन बकरी, जिसमें एक सफेद और दूसरा कसया, कारी पाठी। पाठ बांधने के पहले सभी चेले उपवास किये हुए रहते हैं। वे सबसे पहले गुरू का पैर धोते, फिर झण्डा गाड़ते हैं। इसमें एक झण्डा सफेद, एक हरा, एक लाल और एक काला, तथा एक में चारों रंग का होता है। गुरू झण्डा गाड़ने के बाद सभी को पूजा करवाते हैं। सबसे पहले बाहर दरवाजा में कारी पाठी से पूजा करवाते हैं। इसके बाद में सफेद बकरा को धार किये अर्थात गिराते हैं। इसके बाद तीन कुँवार (शादी नहीं किये हुए) लड़के, जिनमें से एक तांबा तुलसी, दूसरा दूध और तीसरा सफेद बकरा का खून, आम का पत्ता से झण्डा में चुवाते हैं। इनमें भी सबसे पहले कसया बकरा का खून दिया गया फिर दूध, और अन्त में तांबा–तुलसी दिया गया, जिससे वह पवित्र हुआ। इसके बाद पाठ बांधा जाता है।

5.6.3 काम बाटना

पाठ बांधने के बाद चेलों को कामों का बांटवारा किया जाता है। जिसे करना पड़ता है।

तालिका 30 कार्य का बांटवारा

6.6.3.1 दुवारी (दरवाजा) लीपना
6.6.3.2 सीरा (पींड़ा) लीपना
6.6.3.3 भीतर लीपना

5.6.3.1 दुवारी लीपना

जिस चेले का दुवारी लीपने का काम दिया गया है, वह रोज दरवाजा को लीपाई करता है।

5.6.3.2 सीरा लीपना

सिरा लीपना अर्थात बाहर लिपाई करना। जिसे भी यह काम मिला है वह जहाँ झण्डा स्थापित किया गया है, वहां लिपाई करता है।

5.6.3.3 भीतर लीपना

भीतर अर्थात घर के अन्दर भी भगवान को स्थापित करते है। जो कोठे घर के एक कोने में पींड़ा बनाया जाता है, उसे लीपना होता है।

चेले अधिक हैं तो उपर्युक्त कार्य को पारी–पारी से बांटा जाता है। पूजा होने के बाद रात का भोजन कर, गुरू मंत्रों को सीखाने में लग जाते हैं। मंत्रों को सीखने के लिए लगभग चार महीना लग जाता है। उन चार महीनों तक किसी का छुआ हुआ नहीं खाना है। यदि किसी प्रकार की गलती हो जाती है तो चेला लोग ही मारते हैं, जिनका डलिया उठता है। यह भी है कि गुरू से भी किसी प्रकार की गलती खाने पीने में हो जाने पर उसे भी चेला लोग ही पीटते हैं। जब तक पाठ बांधा हुआ है तब तक किसी का भी सोने का बिछावन में नहीं सोना है, न ही किसी का कपड़ा लता को पहनना है और न ही किसी के विछावन में पैर रखना है। अपना कपड़ा को ही रोज धोकर पहनना पड़ता है।

रात भर मंत्रों का जाप किया जाता है। सप्ताह में दो दिन ''शनिवार और मंगलवार'' उपवास करना पड़ता है सिर्फ पानी पी सकते हैं। छोटे बच्चे दूध या फल खा सकते हैं। परन्तु विश्वास यह है कि जिनमें भगवान सवार हो जाता है, उन्हें न भूख और न ही प्यास लगती है। रोज की तरह उन्हें सुबह चार बजे उठ कर पूजा–पाठ करके ही अपने घर का काम के लिए जा सकते हैं।

दशहरा के बाद ''नयाखानी'' का पूजा होता है। उस समय भी उपर्युक्त सभी पूजा समान लगता है। जैसे–कारी पाठी, कसया बकरा, चरका (सफेद)

बकरा, चीनी मिठाई और चिवड़ा।

कहीं–कहीं देखा गया है कि इन्द जतरा में भी भक्तों को चढ़ाया जाता है। जिसके लिए चार बांस, जो बिलकुल ही सीधा होना चाहिए। जिसमें एक में लाल, एक में हरा, एक में सफेद और एक में काला झण्डा हो, उसे गाड़ते है। साथ में पूजा करने के लिए धूप–धुवन, अरवा चावल, सिन्दुर, फल–फूल इत्यादि होना चाहिए। इन्द जतरा में विधि विधान से झण्डा गाड़ा जाता है। वहाँ पर भी मंत्रों का उच्चारण किया जाता है। मंत्र उच्चारण के समय कुछ भक्तों को सवारी भी हो जाता है। जिससे वे बांस के ऊपरी छोर पर चले जाते है, किसी प्रकार का गलती नहीं होने पर बांस नहीं टुटता है, ऐसा लोगों का विश्वास है।

उन्हीं चेलों को काम के लिए चुना जाता है। जैसे–घंटा बजाने के लिए, दुवारी के लिए, एक टुली के लिए, एक कांस चेला, एक दुवारी चेला और एक शंख चेला। उसी दिन से ''बिसारी'' घूमते हैं। बिसारी घूमते समस सारा दिन उपवास रहना पड़ता है, पूजा के बाद शाम में खाना खा सकते हैं। तत्पश्चात बिसारी घूमने निकलते हैं। इसके लिए एक ''डौड़ा'' (डलिया) को फूलों से सजाया जाता है। उसके साथ कांसा का एक लोटा। उस समय सभी ''गुरू'' और ''चेला'' के घर एक–एक दिन बारी–बारी से जाते हैं। इसमें एक लड़का, लड़की बनती है और वो साड़ी पहनती है। जो सजाया हुआ डौड़ा को सिर में ढोती है। एक लड़का धोती पहनता है, जो लोटा को सिर में ढोता है। रास्ते में चलते समय मंत्रों का उच्चारण करते जाते हैं। जैसे एक दिन पुगु में तो एक दिन कांसी टोली में, एक दिन फट्ठी में, ऐसा करते हैं।

अन्त में ''सिध्द'' खाने का दिन आता है। उस दिन सभी सभी चेले अपने लिए एक कसया बकरा और एक कारी पाठी खरीदते हैं। पूजा पाठ होने के बाद बकरा का सिर को खिलाया जाता है, साथ ही बकरे का कलेजी और फोकसा दिया जाता है। मांस को जब तक नहीं खाते हैं तब तक अपने स्थान से नहीं हटना है, उसे किसी को नहीं देना है। यदि किसी कारण से खा नहीं पा रहा है तो उसे वहीं गाड़ देता है। उस दिन कितना ही क्यों न बारिश हो, उसी स्थान पर सोना पड़ता है। बारिश से बचने के लिए छाता या अन्य किसी साधन का प्रयोग कर सकता है।

5.6.8 गुरू दक्षिणा

जब पाठ खत्म हो जाता है तब गुरू दक्षिणा का बारी आता है। सभी चेला मिलकर गुरू के लिए कांसा दान करते हैं। साथ ही अपने इच्छा अनुसार धोती और गुरूआईन के लिए साड़ी दिया जाता है इसके अलावे एक या दो पैला चावल, दाल, आलु सिधा दिया जाता है।

5.6.9 कवंरू मंत्र के प्रकार

5.6.9,1 झरनी मंत्र

किन्ही व्यक्ति को कोई रोग या नजर–गुजर लग गया है तो सबसे पहले चावल लेकर अपने गुरू और देवताओं का नाम लेकर चावल को चारों कोना छिंटते हैं। इसके बाद झाड़ू का चरी को लेकर झरनी शुरू करते हैं।[29]

187	हाँथ चले हाथो चले,	हाथ चले, हाथो चले
	खरिका मुठा मेला चले, बात	खरिका मुठा मेला चले, बात रोग
	चले, गरूड़ भीख बरण	रोग चले, गरूड़ विष बरण
	चले छप्पन रोग चले, गरूड़	चले छप्पन रोग चले, गरूड़
	भीख चले, कोट नेक चले।	विष चले, कोट नेक चले
	अरे हाथ तोय चल तरे चू बने	अरे हाथ तेरा चल पहले तू बने
	चले दहाई चू काल कूट नगर	चले दहाई चू काल कूट नगर
	भीख बायें दहिने चले	विष बायें दहिने चले
	सत गुरू के बांधो पांव विसारी	सत गुरू के बांधो पांव विसारी
	कदम कुमारी सिलोट नामे देवी	कदम कुमारी सिलोट नामेदेवी
	तुम्हारे जांव सत–सत पदमा	तुम्हारे जांव सत–सत पदमा
	जन्म भार चले पुर सिन्दुर भावके	जन्म भर चले पर सिन्दुर भाव
	औजार भीख शंकर बीजक	औजार विष शंकर बीजक
	फुलका लुगा बाम रे बाम के	फुलका कपड़ा बाम रे बाम के
	छोड़ी कांदना गेल विजवान	छोड़ रोना गया बिजवान
	मान भैर तील मान भैर पावन	मन भर तील मन भर पावन
	ऊँचा के कुछ कुछ नैना	ऊँचा के कुछ कुछ नैना
	कोन्द–कोन्द दुखना गन ढ़ोड़ा	कौन–कौन दुःख गन ढ़ोड़ा
	दुःख चले दिन के अवतार दिनके	दुःख चले दिन के अवतार दिन
	पास सैताल गुरू में लागल	पास सताया गुरू में लगाया
	सतडिखा दे कैला राम	सतडिखा के कैला राम
	चिड़िया के तीन भार एक भार	चिड़िया के तीन भार एक भार
	आकाश एक भार पताल गरूड़	आकाश एक भार पताल गरूड़
	भिखारी बाण सुमैर लोभी भैंस	भिखारी वाण सुमरे लोभी भैंस
	पताल। सखनी सोरी धनी भैरो	पताल। सखनी सोरी धनी भैरो
	भला चबुतरा माय देवी घुमाय	भला चबुतरा माँ देवी घुमाया
	भैरो भंगो समय डको मान	भैरो भंगो समय डको मान

[29] कौंरू भगत और उनके मंत्र के बारे में पुगु बड़का टोली के श्री फागु उराँव, श्री तेजपाल उराँव एवं बुद्देव उराँव से लिया गया है। इसके आलावे पुगु बेहरा टोली के कुलदीप बड़ाईक से भी कुछ जानकारी लिया गया है।

पूछे गणपत ओझा सबक	पूछे गणपत ओझा सबका
नोकर हरिया फरिया शंकर	नौकर हरिया फरिया शंकर
जाने बाप तो कौंरू दलो बिजली	जाने पिता तो कौंरू है बिजली
बने धरलो छपे धरलो बापे	वन में पकड़े छाप पकड़े पिता
गरूड़ भिखारी बाण सुमरै लोभी	गरूड़ विष वाण सुमरै लोभी
भैस भिखारी बाण सुमरै लोभी	भैंस विष वाण सुमरै लोभी
भैंस पताल। हरियतो खोपा	भैंस पताल। हरियतो खोपा
बांध मन छपना भीड़ करमा	बांध मन छपना भीड़ करमा
हाथ पैर धर्य बोले ऐरे पेरवां	हाथ पैर धर्य बोले ऐ रे कबूतर
पखन खांव जय सैकाल भीख	पत्थर खाय जय सौ काल विष
नहीं भाँव धर धर भीख माइर	नहीं भांव पकड़ विष मार
माइर खाँव गरूढ़ भिसारी बाण	मार खायें गरूड़ बिसारी वाण
सुमरै लोभी भैस पताल।	सुमरै लोभी भैंस पताल
धरती बांधो पिरती बांधो धिरती	धरती बांधो पृथ्वी बांधो
स्नान बजुक सान कल	स्नान बजुक शान कल
माय भय ऊंगली चुमाय	माता भय ऊंगली चुमाय
चुमाय हनुमान सोखा करे	चमाय हनुमान सोखा करें
माशो मच्छरी विसरे विसर	मांस मछली बिसर–बिसर
ओठाए चोठाय पेट कन्छी खाय	ओंठ चाट पेट कांजी खाय
के नाली मध के टोपी जल के	के नाली मध के टोपी जल के
देवी मैनापुर सै सहा सै बटटा	देवी मैनापुर सौ सह सौ बांटा
सोने के खुरी कोन द्वार सिरी	सोने के थाली कौन द्वार सिरी
द्वार लिरी द्वार अड़ाई जुगनी	द्वार लिरी द्वार अड़ाई जुगनी
कपेड़ा जोड़ल बती अटाईक	कपड़ा मिलकर बत्ती अंईठ कर
डस लो गोहमन नाग झरबु	डस लो गोहमन नाग झाड़ेगें
सौ पुरती। मनसा माय।।	सौ पूरती। मनसा माय।।

5.6.9,2 झमीरा मंत्र

झारनी के समय ही इस मंत्र का भी प्रयोग करते हैं।

188	झमिरा रे झमिरा सोने मला	झमिरा रे झमिरा सोने नहीं
	झारू रे झमिरा।	झाड़ो रे झमिरा
	झमिरा को मन्त्र रूनु मला	झमिरा का मन्त्र रूनु नहीं
	झुनू झारू गुरू बाबा सरगो	झुनू झाड़ो गुरू बाबा स्वर्ग
	बाधा झारू झारू से केसा	बांधा झाड़ो झाड़ो से बाल
	बथा खाख भी।	दर्द बथा भी।
	झमिरा रे झमिरा	झमिरा रे झमिरा

सोने मला झा रू रे	सोना नहीं झाड़ो रे
झमिरा–झमिरा के मंत्र	झमिरा के मंत्र
तरे रूनू मला झुनू	तरे रूनु नहीं झुनु
झारू रे गुरू बाबा।	झाड़ो रे गुरू बाबा

5.6.9.3 अपना शरीर बांधने का मंत्र

किन्ही के घर में ओझा करने गये हैं। तब कोई बाहर का व्यक्ति बाण न चला दे, इसके लिए सबसे पहले अपने शरीर को बांधता है। (बलकु बाबा दुन्दुरिया, गुमला, फरवरी 05, 2014)

189	सातो लोक के हे दे	सातो लोक के हे दे
	देवता पितर ले के चलते	देवता पितर ले के चलते
	सब साफ सुथर के ले के	सब साफ सुथरा के ले के
	पार्वती महादेव के देखना होगा	पार्वती महादेव के देखना होगा
	बंइध–छाइन्द के हमके रास्ता	बांध–छांध कर हमें रास्ता
	कटा–खूटी न गड़े,	कांटा खूंटी न गाड़े
	बजरंग बली हनुमान बीर,	बजरंग गली हनुमार वीर
	जय जगरनाथ के छाइट के	जय जगरनाथ के छांटकर
	ओम नमः स्वहः, ओम नमः स्वहः	ओम नमः स्वहः ओम नमः स्वह
	ओम नमः स्वहः	ओम नमः स्वहः

5.6.9.4 रास्ता चलने का मंत्र

यदि रात–विकार रास्ता चलते समय कहीं डर–भय या अपशकुन लग रहा है तो इस मंत्र को बोलकर चलने पर एक छिपकली भी आवाज नहीं करता है।

190	डहर चालो डहर बांधो,	रास्ता चले रास्ता बांधो
	हाट चालो हाट बांधो,	बाजार चले बाजार बांधो
	पहर चालो पहर बांधो,	पहर चले पहर बांधो
	दोषी दुश्मन कर चलैंय,	दोषी दुश्मन का चलाया
	दोषी दुश्मन बंधो,	दोषी दुश्मन बांधो
	हे दे बांधा छांधा के	हे दे बाध छांध के
	डहर हिठा थी, कोई काटा	रास्त चल रहे हैं कोई कांटा
	खुटी गड़ेक न देवे, भगवान बबा,	खुंटी चुभने न देना भगवान
	तोहरे मालिक हेकी, तोहरे	आपकी मालिक हैं, आप के
	छउवा–पुता, जन्म करम देले	बच्चा, जन्म करम दिये
	और भुला थी चला थी,	और घुम रहे हैं चल रहे हैं

ले के महादेव पार्वती,	ले के महादेव पारवती
सरना अयो, धरम बबा	सरना माँ धरम बाबा
कभी कोनो प्रकार के	कभी किसी प्रकार का
दुक्ख तकलीप न देबे।	दुःख तकलीन नहीं देना।

5.6.9.5 आदमी बांधने का मंत्र

यदि कोई व्यक्ति काबु से बाहर है। वह बहुत ही छटपटा रहा है। वैसी स्थिति में उसने शरीर को बांधने के लिए इस मंत्र का प्रयोग करते हैं।

191	डाइन चले डाइन बांधो	डाइन चले डाईन बांधो
	सुता चले सुता बांधो,	धागा चले धागा बांधो
	लेबद चले लेबदा बांधो,	लेबदा चले लेबदा बांधो
	लाठी चले लाठी बांधो,	लाठी चले लाठी बांधो
	तीर तरवाइर लेके बलुआ,	तीर तलवार लेके बलुआ
	टंगा, छुरी बसिला के लेइके,	टांगा, चाकु, बसिला के ले के
	हाँथ चले हाँथ बांधो,	हांथ चले हांथ बांधो
	गोड़ चले गोड़ बांधो,	पैर चले पैर बांधो
	जेतना के बंइध छाइन्ध के	सभी को बांध छांध कर
	कटनी करा थी। निरंकाल लेके	कटनी कर रहे हैं, निरंकालकर
	देव तक बचन हाम बंधा थी	देव तक वचन हम बांध रहे हैं
	साफ सुथार कइर के महादेव	साफ सुथरा करके महादेव
	और परवती बंइध–छाइन्ध	और पारवती बांध छांद के
	देश–देश के देवता पितर	देश–देश के देवता पितर
	कमरू कमछा, माता सात सौ	कमरू कमछा, माता सात सौ
	चेला बेटा के पुराबे, फटया	चेला बेटा के पूरा करनाफटया
	के इसराय के गुरू बाबा, सुकरा	के इसराय के गुरू बाबा,सुमरा
	भगत बंइध छाइन्ध के निरंकाल	भगत बांध छांद के निरंकाल
	ले के चलबयं साफ सुथार ले के	लेके चले, साफ सुथरा लेके
	पबया के देवता पितर	पबया के देवता पितर
	ले के मगदा गुरू जन्ना गुरू,	लेके मगदा गुरू, जन्ना गुरू
	लोहरा गुरू, महली गुरू,	लोहरा गुरू, महली गुरू
	राइत गुरू दिन गुरू, चन्द्र गुरू,	रात गुरू, दिन गुरू, चांद गुरू
	सुरज गुरू, आकाश गुरू, पाताल	सूरज गुरू, आकाश गुरू,पताल
	गुरू, हवा गुरू, पानी गुरू,	गुरू, हवा गुरू, पानी गुरू
	जट्टा गुरू साफ सुथार कइर के	जट्टा गुरू साफ सुथरा करके
	पलादिर करलयं बंधना गुरू	पालन करना बंधना गुरू
	बांध बांधो गंगा यमुना के लहाइर	बांध बांधो गंगा युमना लहर

बंधो लाहइर ले के काइट के	बांधो, लहर लेके काट के
आदिवासी देवता	आदिवासी देवता
पितर काईट के चलबय,	पितर काट के चले
जय हो भगवान माता पिता।	जय हो भगवान माता–पिता।।

5.7 दानाहा भगत

दानाहा भगत को ''बछी दान भगत'' नाम से भी जाना जाता है। ये भगत झाड़ फूँक करने के समय बलि देते हैं। कौंरू या नागमतिया भगतों की तरह इन्हें भी पाठ बांधना होता है। बलकु बाबा (दुन्दुरिया, गुमला फरवरी 05, 2014) ने बातये हैं कि इन भगतो ने खास तौर से कुछ मामलों में मंत्रों के रूप में अपने वंशजों को भी अपने कुल देवता के रूप में स्वीकार किया है। ये अपने देवता को आदर पूर्वक याद करते हैं। जब भी कोई ओझाई का कार्य करते हैं बछी दान करते हैं। जो कि अपने देवता को उपहार देना समझा जाता है।

एस.सी. राय (OR&C,318) इन्हें भी गुरूमुख रूपी एक मंत्र उनके कान में फुसफुसा कर इन्हें गुण देते हैं। जो इन्हें हर कार्य के समय उपयोग में लाते हैं। यह मंत्र बहुत ही छोटा होता है परन्तु बहुत ही कारगर सिद्ध मंत्र है। ये महादेव और पार्वती को शक्ति देवी–देवता के रूप में पूजा करते हैं। जिनके लिए बकरी का मांस को कुछ लोग त्याग देते हैं और कुछ लोग लेते हैं।

ये लोग आपने आपको ''विष्णु भगत'' कहते हैं क्योंकि ये विष्णु या श्रीकृष्ण को अपने आर्दश मानते हैं। ये बकरी के मांस सहित सभी प्रकार के मछली और मांस से परहेज करते हैं। परन्तु दानाहा भगत की मान्यता है कि महादेव और शक्ति की देवी, देवी माय की पूजा करते हैं। जिनके लिए वे बकरे की बलि देते हैं और बकरियों के मांस के साथ–साथ मछली भी ले सकते हैं। ये भगत भी औरों की तरह खान–पान में शुद्धता का पालन करते हैं। इस भगत में भी विद्या सीखने या शिष्य बनने के लिए गुरू पकड़ना पड़ता है और अन्य भगतों की तरह अपनी भक्ति साबित करने के लिए प्रशिक्षण के दौर से गुजरना पड़ता है। खान–पान में भी शुद्धता बर्तनी होती है और कठोर नियमों का पालन करना पड़ता है। शराब के सेवन से भी परहेज करना होता है।

5.8 नेम्हा भगत

नेम्हा भगत, सोखा भगत की तरह ही होते हैं। श्री बलकु भगत (दुन्दुरिया गुमला, फरवरी 5,2014), (राय, 216) ने बताया कि ये भी सोखा भगतों की तरह सुबह शाम, भगवान को पूजा–पाठ करते हैं। धूप–धूवन दिखाते हैं और फूल प्रसाद चढ़ाते हैं। इनमें उनके वंशज भी पूजा पाठ करते आये हैं। वे आज भी अपने नियमों का पालन करते हैं। नेम्हा भगत को उनके सादा जीवन के लिए

भी जाना जाता है। वे किन्हीं का बनाया हुआ भोजन नहीं करते थे। वे जहाँ भी जाते स्वयं बनाते और खाते हैं। वे साफ–सुथरा रहने वाले भगत हैं। वे इसके लिए आदत बना लिये हैं। इनका जीवन भी सादा होता है। इसी लिए नेम्हा भगत को ''सादा भगत'' के नाम से भी जानते हैं। एस.सी.राय (OR&C,316) ने नेम्हा भगत के बारे में खोज की और उसके बारे में कुछ इस प्रकार से लिखे हैं। नेम्हा भगत पिछले सात या आठ पीढ़ी की बात की है। सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध परिवारों में से एक उराँव भगत, जो राँची थाना के तुम्बा पुरियो के भैरो भगत के बारे में कहा जाता हैं। उनका पुत्र किसुन भगत पूरे देश में एक शक्तिशाली भगत के रूप में प्रतिष्ठा हासिल की थी। कहा जाता है कि उन्होंने छोटा नागपुर के तत्काकालिन राजा देवनाथ साही को बचाया था। खास कर उनकी पत्नी को बार–बार होने वाले कष्टों से बचाया था। उन्होंने यह भी बताया है कि ईसाई युग के अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह नहीं थी।

5.9 टाना भगत

हम जानते है कि समाज में किसी न किसी रूप में दुःख और तकलीप आते रहता है। उस समय किसी न किसी रूप में इस पृथ्वी पर कोई न कोई महामानव जन्म ले लेता है। उसी प्रकार अंग्रेजों के काल में उराँव समाज में मुसिबत हवा की तरह बहते आ रहा था। जिससे लोग कोई भी कार्य करने में असहजता महसूस कर रहे थे। मुसिबत के ऊपर मुसिबत बढ़ते जा रहा था। इससे निजात पाने का रास्ता ही नहीं दिखाई दे रहा था। इसी समय लगभग प्रथम विश्व युद्ध होने से पूर्व घाघरा से नेतरहाट सड़क बनना प्रारम्भ हुआ। सड़क बनाने के लिए अंग्रेज वहाँ के आदिवासी लोगों को जबरजस्ती पकड़–पकड़ कर ले रहे थे। वे इतना दुःख दे रहे थे कि उराँव लोगों का जीना–खाना हराम हो गया। कोई भुकम्प जैसे घर गिरने लगा। ऐसी ही दशा को देखकर एक नया धर्म की शुरूआत हुई जिसका नाम है ''टाना भगत'' अन्दोलन।

उराँव और मुण्डा जाति के लोग इस छोटानागपुर में पहले कब्जा करने वाले हैं। खूंटकटी, भूंईहरी, कोटवार खेत, इन्हीं लोगों का बनाया हुआ है। इसे कोई भी न बेच सकता है और न कोई खरीद सकता है। दिल्ली मुगल बादशाह यहाँ के लोगों के लिए मलगुजारी बनाया। मलगुजारी देने नहीं सकने के कारण नागपुर का 45 वाँ राजा दुर्जन साल को ग्वालियर जेल में 12 वर्ष का सजा दिया गया। ये जमीनदार दूसरे जाति के लोगों को कर्ज लेने के लिए गाँव का ठिका दिया। जिससे उराँव और मुण्डा जाति के बहुत सारे खेत को लूट लिये और अंग्रेजों के काल में बहुत अधिक मलगुजारी बैठाये। उराँव और मुण्डा लोग लड़ाई लड़े, मुकदमा भी लड़े परन्तु आदिवासियों का खेत को नहीं लौटा सके। उराँव और मुण्डाओं का खूँटकटी, भूँईहरी और नेग–चार का खेत जमीनदारों के हाथ में चला गया।

वहीं एस0सी0 राय (O.R&C.341) ने लिखा है कि नये से आन्दोलन शुरू करने वाले नेताओं में संदेह हुआ कि जिनके लिए वे लम्बे समय से मद्द के लिए आस लगाये हुए थे, वे उनके कृषि और आर्थिक क्षेत्र में सहायता करने में असमर्थ थे और अपनी असमर्थता भी समाप्त होने लगी थी। उन्होंने सोचा कि उन्हें छोड़ देना ही नहीं चाहिए बल्कि उन्हें उराँव देश से निष्काषित ही कर देना चाहिए। उन्हें अपने पूर्वजों या धर्म में विश्वास होने लगा। उन्होंने घोषणा की कि ''कुडुख़ धर्म'' में उनका अब कोई विश्वास नहीं रहा। वे अपने धर्म को ''भगत'' या ''भक्ति'' धर्म कहने लगे। जो भक्ति और प्रेम का धर्म था। वे अपने भजनों में लगातार ''टान'आ' (खींचना), ''टाना'' शब्दों का प्रयोग करने लगे। जिससे कि अपने नजदीकी लोगों द्वारा इन्हें टाना भगत से संबोधित करने लगे। इसके लिए जिस व्यक्ति को जन्म दाता माना जाता है, वे हैं ''जतरा उराँव''। वे उस समय लगभग 25 वर्ष आसपास के नव जवान व्यक्ति थे।

1902 से 1908 ई0 तक नागपुर का सर्वे हुआ। उस समय पश्चिम

नागपुर, जैसा घाघरा, विशुनपुर, डुम्बारी, नेतरहाट आस–पास के उराँव लोगों के खेत को जमीनदर लोग बहुत अधिक मात्रा में लूट लिये थे। मलगुजारी भी बहुत अधिक था। उनका कार्य करना भी कठिन था। 1912–13 ई0 के आस–पास विशुनपुर से महुवाटांड़ तक सड़क बनाने के लिए नेतरहाट में साहब लोगों का काम करने के लिए, नया सड़क बनाने के लिए जबरजस्ती पकड़–पकड़ कर ले रहे थे। बरसात का समय था, खेती–बारी करने का दिन था। फिर भी दारोगा साहब लोग अपना समान ढोने और सेन्दरा खेलने के लिए रात–दिन ले रहे थे और इसके बदले में एक पैला जिन्होर दाना दिया जाता था। उराँव लोग उधर अधिक थे और इनसे बचने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। कचहरी भी दूर था, पैसा नहीं रहने के कारण मुकदमा करने के लिए भी परेशानी हो रहा था।

ऐसे समय 1914 ई0 के आस–पास उराँव जाति के बीच में एक नया धर्म आन्दोलन ''टाना धर्म'' आन्दोलन की शुरूआत हुई। इसके अगुवा जतरा टाना भगत थे। इन्होंने 20 लोगों के साथ मिलकर इसकी शुरूआत की। इनका कहना था ''भईयो! आप लोग सभी भूत को मनाने के लिए बकरी, मुर्गी देते हो, उसे छोड़ दो, एक ही धर्मे (भगवान) को विनती करो, मांस–मछली खाना और हड़िया पीना छोड़ दो, किसी भी जीव–जन्तु की हत्या मत करो, कंठी पहनो, अपने आंगन में तुलसी रोपो, भूत के ऊपर विश्वास मत करो, वृस्पतिवार को हल मत जोतो, शिकार खेलना छोड़ दो, इससे हमारा शरीर को ही नुकसान होता है। श्रृंगार करने और लोभ करना, को भी छोड़ दो, सादा मुटिया कपड़ा पहनो, जमीनदारों का कार्य करना छोड़ दो, दूसरे लोगों का भी काम करना छोड़ दो। ये सब बातों को हम अपने दिल में उतारेगें तभी हम इनसे निजात पा सकते हैं।''

जतरा भगत के इस बात को तो लोग शुरू में नहीं मान रहे थे परन्तु बाद–बाद में मानने लगे। इनके बातों को सुनने के लिए दूर–दूर से आने लगे। मूल रूप से वृस्पतिवार को हल जोतना छोड़ दिये और एक स्थान पर जमा होने लगे। इस आन्दोलन से अंग्रेज सरकार सिकुड़ने लगी थी। सरकार जतरा भगत के ऊपर उराँव लोगों को भड़काने के जुर्म में 1916 ई0 में अपने चार साथियों के साथ पकड़कर जेल में डाल दिया। उसे राँची का जेल में रखा गया। सजा मिलने के बाद दूसरा गुरू बटकुरी के ''देवमनिया'', ये सभी बातों को प्राचार करने लगी। इन्हीं के साथ राँची, गुमला, लोहरदगा, पलामू और हजारीबाग जिला के लगभग दो लाख से अधिक लोग इनके विचार से जुड़ गये। प्रारम्भ में तो उराँव लोगों को सुधारने का कार्य करने लगे परन्तु बाद में सेठ साहुकोरों के कार्यो के खिलाफ कार्य करने लगे।

इसकी शुरूआत जतरा टाना भगत के आन्दोलन से हुई है। इनका जन्म गुमला जिला के विशुनपुर प्रखण्ड के चिंगरी नवा टोली में सितम्बर 1888 ई0 में हुआ था। इनके पिता का नाम कोडल उराँव और माता का नाम लिबरी उराँव था। इनके पत्नी का नाम बिरसो था। इनके पुत्र बुधु, बंधु, सुधु और देशा तथा

दो पुत्री बिरसी और बुधनी थे।

जतरा भगत बचपन से ही कुछ अलग थे। वे अपने गांव से कुछ ही दूरी में हेसराग गाँव, एक भांगा भगत के घर रोज अपने साथियों के साथ ओझा–मति सीखने जाया करते थे। जाने के पहले रास्ते में पड़ने वाले अरंगलोया तालाब में स्नान किया करते थे। एक दिन रास्ते में पड़ने वाले फुसरा पेड़ में चढे, उसमें पड़की खोंसला और उसमें दो अण्डा था। उसे वह करया में लिया और पेड़ से उतरने लगा तभी किसी प्रकार हुआ और अण्डा जमीन पर गिर गया। उस अण्डा में बच्चा था। उसे देखकर, उन्हें अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोचने लगा कि मैं दो पक्षी बच्चा का प्राण ले लिया। उसी समय से उनके दिल में किसी जीव को नहीं मारने की सोच जन्म लिया और ठान लिए कि आज से किसी जीव का हत्या नहीं करेगें।

वहीं पाण्डो कुमारी (काचापड़ा, अगस्त, 03,2020) ने बतायी कि जतरा भगत नगेसिया पाठ पढ़ाते थे। पाठ पढ़कर समाप्त करने के बाद अपने चेलाओं को सिद्ध देने के लिए एक स्थान पर बुलाया। उनमें किसी ने बकरा तो किसी ने मुर्गा लेकर आये। उन्हीं चेले में से एक ने अचानक जतरा भगत से पूछा ''हे जतरा! तुमने इतने सारे जानवरों को इकट्ठा किस लिए किये हो? वे बोले ''मेरे चेलाओं को सिद्ध देने के लिए। इसे काटेगें और भगवान के लिए देगें।'' तभी युवक ने कहा ''सभी जीव जन्तु तो भगवान ने ही बनाये हैं, सभी कोई भगवान के ही बच्चे हैं, क्या उसी बाल–बच्चे को काट कर दोगे? उनके लिए, उनके ही बेटा–बेटी को जान से मारोगे, तब तुम खुश रहोगे।'' तभी जतरा बोले ''नहीं।'' जतरा आज से तुम ऐसा काम करना छोड़ो। ऐसा कहकर जाने लगे। थोड़ा दूर दिखाई देने के बाद छिपित हो गये। उसी स्थान से जतरा के मुंह से अचानक निकलने लगा।

रोज की तरह जतरा भगत एक दिन ''जाहू कोना'' का तालाब में स्नान कर रहा था। उसी समय पानी के अन्दर ही कुछ दिखा, पानी के अन्दर से ही बरहमते–बरहमते छंटाते हुए कहने लगा (चौठी उराँव,कु.क.क.131) –

5.9.1 टाना मंत्र

192	''टन'आ बबा टन'आ,	निकालो बाबा निकालो
	नादन टन'आ	भूत को निकालो
	कों–ड़ा कुची ता	कोना कुची का
	नादन टन'आ	भूत को निकालो
	कांसा पीतर मना,	कांसा पीतर हो
	ढकना नू ओना	ढक्कन में खाओ
	इंज्जो–अहड़न अम्बा,	मछली मांस खाना छोड़ो
	सोड़ा नू ओना	पत्तल में खाओ
	टन'आ बबा टन'आ।''	निकालो बाबा निकालो

जतरा भगत का ये मंत्र पूरे देश में फैल गया। ये आन्दोलन था कि नाद माने अंग्रेज, जमीनदार और महाजन लोगों को कहा गया है, जो हमें सता रहे थे। ''कोंड़ा कुची ता नादन टन'आ'' का माने ''कोणा–कोणा से इन लोगों को घींच कर निकालो।''

ये सभी बातों को जतरा भगत भरवा होकर मुझे भगवान ने ही ऐसा बताया। वे अपने दिल में जैसे सोचे थे वैसे ही बताये कि ''भाई लोग! तुमलोग अभी सभी भूत को मानते हो, उसके लिए बकरी, मुर्गी देते हो, उसे छोड़ दो, एक भगवान को गीत से गोहराओ। मांस, हड़िया–दारू को छोड़ो, मांस–मछली खाना छोड़ो, किसी भी जीव की हत्या मत करो, कंठी पहनो, अपने आंगन में तुलसी लगाओ। भूत पर नहीं विश्वास करो, गाय का सेवा करो, वृस्तपतिवार को हल मत चलाओ, सेन्दरा जाना छोड़ो, इससे हम ही को नोकसान है। श्रृंगार–पतार को लोभ करना छोड़ो, सादा मुटिया कपड़ा पहनो, साहुकार, महाजन का काम करना छोड़ दो, उनका भरिया जाना छोड़ दो, ये सभी बातों को अपने जहन में उतारो गे तो इस दुःख से निकल सकते हैं। अब सोना युग आया, हमारा देश आया। यही बात हरिवंश टाना भगत (कुडुख़ टाना,7) में लिखे हैं।

इसके बाद सभी अंग्रेज, साहुकार, महाजन को भगाने और भगवान के बताये संदेश को, अपने चेलों को बताने लगे। वे कहा करते थे जो टाना धर्म को नहीं मानेगें वे मर जायेगें। कहा जाता है कि उनके मंत्र में इतना शक्ति था कि चलती गाड़ी को रोक देता था। अपने मंत्र से लोगों का रोग भी दूर कर रहे थे।

जतरा भगत और उनके साथी जेल से छूटे। जतरा भगत अपने गाँव लौटे परन्तु दो महीने के बाद, 28 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि जतरा भगत को जेल में बहुत अधिक प्रताड़ित किये थे। साथ ही उनके साथियों का कहना था कि उन्हें जेल में ही जहर दे दिया गया था होगा, इसी लिए दो महीने के अन्दर ही उनकी मृत्यु हो गई। उनका मृत्यु 1917 ई के आस–पास हुई थी।

वहीं बीरोत्तम (झ.इ.सं.349) ने लिखा है कि जतरा भगत के द्वारा चलाया गया आन्दोलन सम्पूर्ण उराँव क्षेत्र में जंगल की आग की तरह फैल गया। लोगों ने जमीनदारों और अन्य गैर–आदिवासियों का काम करना बन्द कर दिया। अपने अनुयायियों को मजदूरी करने से रोकने के अपराध में जतरा भगत को उनके अनुयायियों के साथ गुमला के अनुमण्डल पदाधिकारी की कचहरी में मुकदमा चलाने के लिए उपस्थित किया गया। 1916 ई0 में उन्हें एक वर्ष की सजा हुई। और बाद में एक शर्त पर छोड़ा गया कि वह अपने नये सिद्वान्तों का प्रचार नहीं करेगा और शान्ति बनाये रखेगा। किन्तु जेल में मिली घोर प्रताड़ना के फलस्वरूप जेल से बाहर आने के दो मास के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई, परन्तु उनका आन्दोलन फलता फूलता रहा।

रविन्द्र कुमार भगत ने जतरा टाना भगत के बारे में लिखे हैं कि जब जतरा भगत ने इस आन्दोलन को शुरू किया तब वह मती (ओझा) का प्रशिक्षण

ले रहा था। कहा जाता है कि एक रात वह जब प्रशिक्षण लेकर लौट रहा था। तब धर्मेश ने उसे दर्शन दिया और कहा कि वह मतिभाव सीखना बन्द कर दें और भूत–प्रेत तथा बलि इत्यादि में विश्वास करना छोड़ दे। वह माँस–मदिरा का परित्याग कर दें। उन्होंने वृस्पतिवार को हल नहीं चलाने को कहा। जतरा ने लोगों से कहा कि ईश्वर नहीं चाहता कि लोग जमींदारों, अन्य धर्मावलंबियों तथा गैर–आदिवासियों के यहाँ कुलियों एवं मजदूरों का काम करें। उसने घोषणा की कि ईश्वर ने उसे जनजातियों का नेतृत्व सौंपा है। उन्हें समझाने को कहा है कि वे धर्मेश की पूजा करें क्योंकि इसी से उनकी इच्छाएँ पूर्ण होगी। इस तरह उसने उन विचारों को व्यक्त किया जो आदिवासियों के मानस को काफी समय से उद्वेलित कर रहे थे। दूसरे शब्दों में उसने एक निश्चित जनजातीय धर्म स्थापित करने में लोगों की सहायता की। वस्तुतः इस प्रक्रिया की शुरूआत बिरसा मुण्डा के समय में ही हो गई थी। जतरा तथा अन्य परवर्ती जनजातीय मसीहाओं ने उस परिकल्पना को मूर्त रूप दिया।[30]

हरिवंश टाना भगत (कुड़ुख़ टाना, 38) में लिखे है कि टाना भगत सुमदाय की उत्पति समाज को हर तरह से उपर उठाने के लिए, धनी–गरीब, ऊँच–नीच, छुआ–छूत के सब भेदों को मिटाकर, समाज का सुधार करने हेतु, सदभावना और चरित्रवान बनाने हेतु हुई हैं।

जतरा भगत के मरने के बाद ये राजनीतिक आन्दोलन का रूप ले लिया। अंग्रेज सरकार का विरोध होने लगा। 1918 ई में महात्मा गाँधी राँची आये हुए थे। उनके साथ टाना भगतों से मुलाकात हुई थी। दोनों का विचार मिला। महात्मा गाँधी उनसे बहुत खुश हुए। वे भी गाँधी के विचार से प्रभावित हुए। अन्त में गाँधी के ही दिखाये गये रास्ते में चलने के लिए प्रेरित हुए। टाना भगतों ने ठान लिए कि बिना लड़े ही आन्दोलन की शुरूआते करेगें और सादा खादी कपड़ा पहनेगें, हम ही लोग कपड़ा बुनेगें, गाँधी टोपी पहनेगें। तिरांगा झण्डा के साथ घंटी रखना भी तय किया गया और आज भी टाना भगत लोग ये सभी को करते आ रहे हैं और तिरंगा झण्डा फहराते हैं।

टाना भगतों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए कुछ नियम कानून भी बनाये। जो इस प्रकार है। (हरिवंश टाना भगत, कुड़ुख़ टाना,54)

तलिका 31 टाना भगत का सामाजिक कार्य

1. प्रत्येक गाँव में प्रार्थना सभा का संचालन करें।
2. प्रत्येक गुरूवार को समाज में लक्ष्मी दिवस मना कर हल नहीं जोतें।
3. गुरूवार को सुबह छः बजे सभी मिलकर ईश्वर की प्रार्थना करें।
4. प्रार्थना सभा में हरेक घर से एक मुट्ठी चावल जमा करें और घर के

[30] राँची एक्सप्रेस, 2 अक्टूबर 1988, झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति, पृ 348 से।

औरतें रसोई के चावल को रोज पकाते समय मुठिया रखें।

5. प्रार्थना के बाद गाँव की सफाई करें और औरतें घर को लीपकर स्नान करके धूप जलाकर रसोई पकावें। बिना स्नान कोई भी नहीं करें।
6. अपने प्रगति के लिए शिक्षा को जरूरी समझें।
7. लक्ष्मी धर्म हेतु गौ भक्षण नहीं करें।
8. छूवा–छूत न माने।
9. मद निषद करें।
10. रचनात्मक कार्य के द्वारा सभी तरह के उद्योगों से स्वालम्बी बने।
11. खादी पहने, मधु पालन, कुकुट पालन, मत्सय पालन, सुवर पालन आदि भी रचनात्मक कार्य हैं।
12. सत्य अहिंसा और प्रेम वरतें।
13. माता–पिता और बड़ों का आदर करें।

तालिका 32 : टाना भगतों की विशेषता, पाण्डो कुमारी के अनुसार –

1. टाना भगतो ने अपने आंगन में खादी कपड़ा के चरखा छाप अंकित तिरंगा झण्डा गाड़ते हैं।
2. झण्डा के सामने तुलसी पौधा रोपते हैं।
3. आज भी टाना भगतों ने स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हैं।
4. जेनऊ, खादी कपड़ा और टोपी पहनकर अपने साथ घंटी, संख लेकर उनके मूर्ति एवं तस्वीर को पूजा करके, फूल माला पहनाकर, हांथ जोड़कर, उनका नाम लेते हुए विनती करते हैं और

193 धरती माता की जय
लक्ष्मी माता की जय
महात्मा गांधी की जय
जतरा वीर की जय
बुधु वीर की जय
बिरसा बाबा की जय
पापी–मुदाई की छय
धर्म की जय
फिर घंटी और संख को बजाते हैं।

5. हड़िया–दारू, मांस–माटी नहीं खाते हैं।
6. बकरी, मुर्गी, सूवर आदि नहीं पालते हैं।
7. गाय, बैल और भैंस पालते हैं

8. गुरूवार को हल नहीं चलाते हैं। इसी दिन समिति भी बनायी जाती है।
9. पूजा पाठ स्थान को गोबर से लिपाई करते हैं।
10. कांसा लोटा में साफ पानी, दूध, मक्खन, धूप–धुवन, अगरबत्ती, नारियल, अरवा चावल, अरवा चावल का आंटा, फूल, मिठाई आदि का उपयोग करते हैं।
11. इनके बीच गुरू और गुरूवाईन भी होते हैं।

अपने भगवान और पुरखे को याद करने के लिए भजन गीत भी पूजा–पाठ के समय गाने लगे।

194

अरजी	**विनती**
बीड़ी बबास झीलीमिली	सूरज बाबा झिलीमिली
झकामाक अरेगा लगेदस।।	झकामका चढ़ रहा है।।
पईरी चो'आ दरा अरजी	सुबह उठो और विनती
विनती डान्डोत नना।।	विनती कर घुटना टेको।।
अर्जी बिनती डान्डोत नना दरा	विनती कर घुटना टेको और
आड्डो, कुड्डिन हो'आ	बैल, कुदाल ले लो
कि उयागे काला।।	और जोतने जाओ।।
उयागे कालोय होले	जोतने जाओगे तो
धरमे बाबस सोने बूंद	धर्म बाबा सोने बूंद
पोंयतोस चि'ओस। भला रूपे बूंद	बरसायेगा। भला रूपे बूंद
झीमीकोस चि'ओस।।	झिमका देगा।।
सोने बूंद पोंयतोस चि'ओस	सोने बूंद बरसायेगा
होले महालखी आयो सृजन मनो।	तब महलखी माँ सृजन होगी
भला महालखी आयो सृजन मनो।।	भला महालखी माँ सृजन होगी
महालखी आयो सृजन मानो होल	महालखी माँ सृजन होगी तो
होरमत हंसी से र'ओत।	सभी हंसते रहेगें
भला होरमत खूंसी ती र'ओत।।	भला सभी खुंश से रहेगें।।

इस तरह से टाना भगतों ने अपने धर्म के विस्तार के लिए कई भजन गीतों का सृजन किया और इसे टाना भगत समाज के आलाव अन्य समाज में भी फैलाने का कार्य किया। आज भी इनके कार्य की सराहना सरकार भी करती है।

प्रार्थना –

टाना भगत का एक समिति था। जिसमें खादी कपड़ा, टोपी पहनकर और समिति में घंटी, संख लेकर गुरूवार के दिन जामा होते हैं। समिति के कुछ लोग पहले आते हैं। जो बाद में आते हैं वे ''धरम'' बोलते हैं। वहां इकट्ठा होने के बाद धर्म दान करते हैं। जिसे एक कोपी में लिखा जाता है। वहीं पर कुछ बात–विचार करते हैं। इतना होने के बाद पूर्व मुंह कर प्रार्थना करते हैं।

195	सिरजन बिरजन बाबा होय	जनम करम बाबा होय
	निरामला अम्म तरू	पवित्र पानी से
	सिरीजन मना बाबा	जनम हो बाबा
	बिरीजन मना बाबा	करम हो बाबा
	भगवान बाबा होय	भगवान बाबा होय
	धरती अयो गो	धरती माँ
	निरामला अम्म तुरू	पवित्र पानी से
	सिरजन मने अयो	जनम हो बाबा
	बिरीजन मने अयो	करम हो बाबा
	जतरा गुरू बाबा होय	जतरा गुरू बाबा होय
	बिरीजन मना बाबा	करम हो बाबा
	जतरा गुरू बाबा होय	जतरा गुरू बाबा होय
	निरामला अम्म तुरू	पवित्र पानी से
	सिरजन मने अयो	जनम हो बाबा
	बिरीजन मने अयो	करम हो बाबा
	बिरसई गुरू बाबा होय	बिरसई गुरू बाबा हो
	निरामला अम्म तुरू	पवित्र पानी से
	सिरजन मने अयो	जनम हो बाबा
	बिरीजन मने अयो	करम हो बाबा
	बुधु वीर बाबा होय	बुधु वीर बाबा हो
	निरामला अम्म तुरू	पवित्र पानी से
	सिरजन मने अयो	जनम हो बाबा
	बिरीजन मने अयो	करम हो बाबा
	सिरजन बिरीजन मना तले	जन्म करम हो उसके बाद
	टाना भगतर ही चाली नुम	टाना भगतों के आंगन में

बरा बाबा बली नुम बरा	आओ बाबा, दरवाजा में आओ
चली नुम बली नुम बरोय होले	आंगन में दरवाजा में आआगे तो
जले, धूपे, दूधे ढाईर ननोन बाबा	पानी, धूप, दूध दूंगा बाबा
जले, धूपे, दूधे ढाईर ननोन तले	पानी, धूप, दूध दूंगा, उसके बाद
पूरबे पछिमें, उतारे दखिने	पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
हेक्खा जोड़र की	हाथ जोड़कर
आराजी ननोन बाबा	अरजी करेगें
बिनाती ननोन बाबा	विनती करेगें
आराजी बिनाती ननोन होल	अरजी विनती करेगें तो
आशिर्वाद चि'के बाबा	आशिर्वाद देना बाबा
आशिर्वाद चि'के तले पापी मनेवारिन	आशिर्वाद देना, तब पापी मानव को
उधारिम नना बाबा	उधार करो बाबा
सुधारिम नना बाबा	सुधार करो बाबा
उधारिम सुधारिम नना तले	उधार सुधार करो उसके बाद
सिखायो नना बाबा	सिखाना करना बाबा
पढ़ायो नना बाबा	पढ़ाना करना बाबा
सिखायो पढ़ायो ननोय होले	सिखाना पढ़ाना करना तब
टाना ही लूरन बाबा	टाना का ज्ञान बाबा
टाना ही कानून बाबा	टाना का कानून बाबा
बचना टूड़ना ननोय होले	पढ़ना लिखना करेगें तो
52 जिलान ता ने'अना	52 जिला का मांगना
रहचा दिम बाचकम बाबा	था ही बोले बाबा
हिके दिम बाचकम दव	है ही बोले बाबा
एम्हय बिल्ली हिके दिम बाचकम	हमारा दीया है ही बोले
खने टूड़ना मंज्जा बाबा चिपताना	तब लिखना हुआ बाबा छपवाना
मंज्जा टूड़कन चिपताना मंज्जा	हुआ लिखा को छपवाये हुआ
खने जन्म जुगा गे रहीयो केरा	तब जन्म–जुग रह गया
बबा	बाबा
रहीयो केरा खने	रह गया तब
लाखो राज मंज्जा बाबा	लाखो देश हुआ बाबा

स्वाराज मंज्जा बाबा	अपना देश हुआ बाबा
लाखो राज स्वाराज मंज्जा खने	लाखो राज अपना राज हुआ तब
बेटा–बेटी गे आजादी मंज्जा	बेटा बेटी के लिए आजाद हुआ
बाबा आजादी मंज्जा	बाबा आजाद हुआ

भगतों के बारे में उपर्युक्त सभी कथनों के बीच मैं यही कहना चाहता हूँ कि भगतों पर पूर्ण विश्वास न करें। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि किसी भगत के पास जाने पर वे टाल–मटोल कर जबाब देते हैं। जब मैं छोटा था, मैं बिमार था और मेरे माता–पिता भगत के पास ले गये। वे अपने मंत्रों का जाप किये और बोले कि किसी दिन किसी से कहा–सुनी हुआ। मैं कुछ देर सोचने के बाद कहा, एक व्यक्ति से तो हुआ है, परन्तु उतना जोर से तो नहीं हुआ है। परन्तु वे बोले कि नहीं, उन्हीं का भाख लग गया है। तब कैसे ठीक होगा? तब जाओ और उन्हें मार दो। सब ठीक हो जायेगा। इसके बाद मैं कुछ नहीं बोला और झाड़–फुंक कराने के बाद वापस आ गया। मैंने सोचा उनसे तो उतना बड़ा बात नहीं हुआ है कि वो मुझे कुछ कर दे। ये सब विचार आने के बाद मैं उन्हें कुछ नहीं बोला और न ही उन्हें मार–पीट किया। सब अभी तक ठीक–ठाक चल रहा है। इसी तरह सरन उराँव (स.स.41,43) ने भी अपने व्यक्तिगत अनुभव बताये हैं। उन्होंने बतलाये है कि सभी संदेश के घेरे में ही डुबे रहते हैं। जैसे भगत कह दिया कि उसका घर की लम्बाई, उत्तर, दक्षिण है, उसका दरवाजा पश्चिम की ओर है, घर के आंगन में एक विशाल पेड़ डलिया में दिखता है, इन्यादि। भगत या ओझा को इस बात की भी पूर्ण जानकारी रहती है कि आपसी बैर, दुश्मनी या किसी तरह का मनमुटाव केवल अगल–बगल के घरों या गाँव के लोगों के बीच ही हो सकती है। जब वे ओझा या भगत के पास से वापस लौटते हैं और मन ही मन उस तरह का घर ढूंढ़ते हैं। जो भगत बतलाया है उस तर का घर संयोग से मिल गया तो लोग भीतर ही भीतर समझने लगते हैं कि अमुक घर की औरत डायन–बिसाही है। इसी प्रकार से इवान्स प्रिचण्ड ने कहा है कि जादू–टोना काल्पनिक आपराध है। डायन जो चाहती है, कर नहीं सकती है। ओझा भी किसी शत्रु को मारने के लिए मंत्र–तंत्र करता है, चाहे वह सफल हो या न हो। इससे केवल एक मनोवैज्ञानिक क्षुब्ध शांत होती है।

यह सच है कि डायन–बिसाही को वैज्ञानिक नहीं मानती है। 2005 में बच्चों और शिक्षक के बीच डायन–बिसाही और स्वस्थ्य पर जोरदार बहस हुई। बच्चे सभी पक्ष को तो मान गये। परन्तु एक पक्ष को नहीं माने। बच्चों का पक्ष कहता है कि ''छिठा'' जिसमें जोर से पेठ दर्द होता है, बिना भगत अर्थात जड़ी बूटि से ही ठीक होता है, दवा से नहीं। डॉ0 कहते हैं नहीं दवा से ठीक हो जायेगी। दोनों पक्ष अपने–अपने में अडिग रह गये। पर सच यही है कि छिठा बिमारी में जड़ी–बूटि को ही भगवान का नाम लेकर टांग देने ही ठीक हो जाता है, दव से नहीं।

वहीं जलेश्वार उराँव (लोहरदगा, जनवरी,10,2015) ने डायन–विसाही के बारे में बताते हैं कि डायन–विसाही कुछ नहीं होता है। जो होता है, वह हमारे कर्मो का फल है। जैसा कि बरसात के दिनों में खाने–पीने के चीजों के ऊपर बहुत ही सावधानी बरतनी है। आसाड़ महीना आने के बाद पुरखे लोग, कहीं मेहमान आना–जाना नहीं करते थे और न ही जैसे–तैसे खाते थे। बाहर का चीज भी नहीं खाते थे। ताकि किसी प्रकार का बिमारी न पकड़े। परन्तु खाने–पीने नहीं जानने के कारण बिमारी पकड़ने पर, डॉक्टर के पास न जाकर भगत के पास जाते हैं। और उनके कहने पर भूत और डायन–बिसाही का शक करते हैं। इससे आपस में ही मनमुटाव हो जाता है। हम अपने स्वस्थ्य पर ध्यान देगें तो किसी प्रकार की बीमारी नहीं होगी।

साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि पहले हमारे पूर्वज आकाल मृत्यु वालों को, किसी प्रकार का गमी नहीं करते थे। जिससे मृत आत्मा को खाने–पीने के लिए नहीं मिलता था। जब उन्हें भूख लगती थी तो जिसे सकता, उसे ही पकड़ लेता था और कुछ पागल जैसे वर्ताव करता था। जब भगत के पास जाते थे तो उसे झाड़–फूक करते हैं और उन्हें खाने के लिए मुर्गी वैग्यरह देने से वह शांत हो जाता और छोड़ देता था। आज हम उन्हें भी गमी करते हैं, परन्तु उनका छाया घर अन्दर नहीं कर, नदीं में स्थान दे देते हैं। ऐसा करने पर जिन अच्छी आत्मा को कुण्डी में खाने–पीने के लिए देते हैं। उस समय अन्य तरह का भी, नाम नहीं कहते हुए देते हैं, उसी से वे भी खा लेते हैं। जिससे उनकी आत्मा को खाने के लिए मिल जाती है और नहीं भटकती है।

5.10 कुछ बीमारी का दवा

हमारे अदिवासी समाज में आज भी कई प्रकार के दवा बनायी जाती है। जो कि बहुत की कारगर साबित हुआ हैं। जो कि किसी डॉक्टर के पास जाने पर नहीं ठीक होता है। जो उराँव समाज के अलावे अन्य समाज में भी दिखाई देता है। परन्तु इसे संग्रह करने में सबसे बड़ी परेशानी ये है कि कोई बताना नहीं चाहता हैं। इसके लिए या तो उन्हें गुरू बनाकर सेवा करना होगा या उनके कहे अनुसार काम करना पड़ेगा।

5.10,1 धाइध का दवा

निम्न समानों को मिलाकर पीस दें और सुबह खाली पेट पीना है। जबतक दवा चल रहा है। मशाला, मांस, मछली, अण्डा, उरद दाल, बैगन नहीं खाना हैं।

5.10,1,1 मंत्र

196	सील चढ़े, सील बांधो,	सील चढ़े सील बांधो
	घना चले, घना बांधो	घाना चाले घाना बांधो
	छेनी चले, छेनी बांधो	छेनी चले छेनी बांधो
	लोहरा कर बाती बांधो[31]	लोहार का बत्ती बांधो

5.10.1,2 जड़ी बूटी

घोड़ा काटा का पत्ता (दोन में धनिया पत्ता जैसा होता है) दुबला घाँस (सफेद के लिए सफेद और लाल के लिए हरा दुबला धाँस) मिसरी और नारियल।

5.10.2 खुरहा

यह बैल का पैर से संबंधित बिमारी है।

5.10,2.1 सामग्री

मुनगा डाली तीन पीस लगभग एक–एक बीता का होना चाहिए, उसे छुरी या अन्य किसी प्रकार के सामान से नहीं काटना चाहिए। यदि बैल काला है तो काला का नाम लेकर मुनगा डाली तोड़ना है।

---

[31] चरवा बाबा खोरा पतरा टोली गुमला ने इस प्रकार से मंत्र एवं दवा बताये है। उन्होंने यह भी बताये कि मंत्र को जाप कर सिद्धि प्राप्ति के बाद सिलोट में चावल या मसाला पिसने पर पिस ही नहीं पाएगें।

5.10,2.2 मंत्र

जिस गाँव में बनाया जाता है उस गाँव के पहान पुजार महतो का नाम लेकर वही मुनगा डाली से झाड़ कर तीनों डाली से तीन बार उतारना है। जैसे उतार रहे हैं वैसा ही छत पर फेकते जाना है। मुनगा डाली जिस तरह सूखते जाता है उसी तरह खुरहा कम होते जाता है। कहा जाता है कि यदि किसी प्रकार का बहाना है तो नहीं अच्छा होता है।

5.10.3 पैर ठंढ़ा हो जाने पर

5.10.3.1 समान – करौन्दा जड़, भुखुल काटा का बीज, ढेल काटा का जड़, मुनगा का जड़, भीजरी भाटा का जड़।

5.10,3.2 बनाने की विधि

सबसे पहले भुखुल काटा को तेल में डालना है। जब तेल उबल जाय तो सभी समान को डाल देना है। इसके बाद जयफर, कुछ देर के बाद सिन्दरीप को डाल कर कुछ देर बाद उतार देना है। फिर इसे रोज दिन सुबह शाम मालिस करना है, ठीक हो जाएगा।

5.10.4 विषकरणा

हींग और गुड़ को मिलाकर उसे गोल बना लें, फिर बच्चा को सुबह शाम खिलाएँ, कुछ दिन के बाद ठीक हो जाएगा।

5.10.5 छोटे बच्चों का पैर बझाना

जन्म लेने के बाद यह रोग बच्चों में देखा जाता है। ऐसा करने पर बच्चा का दिनों दिन शरीर कमजोर होता जाता है। इससे मां का भी दूध कम होने लगाता है। बच्चे में चिढचिढ़ा पन आ जाता है।[32]

5.10.5,1 समान

आधा किलो घी, पपीत जड़, लाल ठेपा का जड़, पुंसगी घांस का जड़।

5.10.5,2 बनाने की विधि

इसे धीमी आंच में सबसे पहले कड़ाही में पूरी घी को डाल कर गर्म होने दे फिर सभी को एक साथ डाल दें। दस से पन्द्रह मिनट बाद उसे उतार कर ठण्डा होने पर किसी साफ डब्बा में रखें।

---

[32] श्रीमति चिमनी उराँव, पुगु बड़का टोली, गुमला के अनुसार कुछ भी दवा बनवा रहे हैं तो उसे यथा संभव दान करें तभी दवा का लाभ होगा अन्यथा नहीं।

जिसके लिए दवा बनाया जा रहा है। उनका नाम, गांव, जन्म दिन, गोत्र, माता पिता का नाम, पहान, पुजार, महतो का नाम और उसके साथ जिसने यह विद्या दी है, उनका नाम लेकर तीन टिप्पा धरती में गिरा कर वही गिराया हुआ तेल के साथ मिट्टी को उठा कर तीन बार फूँक कर फेकना है।

5.10,5.3 लगाने की विधि

इसे सबसे पहले थोड़ा सा तेल हाथ में लेकर भगवान को गोहरा कर धरती में प्रत्येक दिन देना है। उसे बाद हथेली में लेकर बच्चा को थोड़ा सा मुंह में चटाना है, नाभी में डालना है, हांथ और पैर का नसूर (नाखून) में डाल कर पूरे शरीर को मालिस करना है। इसे दिन में दो बार कर सकते हैं। ऐसा कुछ दिन करने पर ठीक होना पता चल जाएगा।

5.10.6 मां का दूध नहीं होने पर

किसी मां का बच्चा जन्म लेने पर, बच्चा को दूध पिलाने के लिए दूध नहीं हो रहा है तब इसकी जरूरत होती है।

5.10.6,1 समान

एक पाव कच्चा उरद, दूध घांस, अरवा चावल, सिन्दुर, धवन, एक लोटा पानी।

5.10.6,2 बनाने की विधि

इसके लिए उरद को गीला कर पकाया जाता है। फिर उसमें पूजा पाठ कर दूध घांस को पीस कर उरद दाल में मिलाया जाता है। उसके बाद सारा उरद दाल को खाना है। उस दवा को खाने के बाद ही वहां से उठ सकती है। पेशाब भी करने नहीं जाना है।

5.10,6.3 मंत्र

इसमें जिस तरह से घर में पूजा होता हैं उसी तरह प्रारम्भ में नाम लिया जाता है। जिस तरह से अपने पूर्वज आये हैं और गांव के देवी देवताओं का नाम। इसके बाद का–''हे दे आज फलनी का शरीर में किसी प्रकार का रोग–पाप है उसे धोकर ले जाना और जिस तरह से आकाश से पानी बरस रहा है, उसी तरह से फलनी का दूध आना और जिस तरह से पेड़ से छत से पानी गिरता है, उसी तरह से फलनी का दूध सरसराय के आना और आज छोटा बच्चा अच्छी तरह से पीयेगा और अच्छा से पलेगा बढ़ेगा।''

इस तरह से पांच बार नेवछ कर, एड़िया कर चारों दिशा फेकते हैं। इसके पश्चात उस दवा को खाना है। इसमें भी खाने वाले भगवान को दे कर ही खाती है। यह दवा सुबह खाली पेट बनाना होता है। यदि किसी प्रकार का

करगुणी नहीं है तो 24 घण्टा के अन्दर दूध हो जाता है और अधिक से अधिक तीन दिन तक में आ जाना चाहिए।

श्री दया उराँव पुगु बड़का टोली, गुमला, के अनुसार यदि किसी प्रकार का करगुणी नहीं है ता दूध होना ही है। पर मैं दवा बनाने के समय एक भी पैसा नहीं लेता हूँ, पूरी तरह से ठीक होने पर अपने इच्छा अनुसार देना बोलता हूँ परन्तु दूर्भाग्य यह है कि अधिकतर लोग बिमारी ठीक होने के बाद भूल जाते हैं। हम भगवान का नाम लेकर दवा बनाते हैं तो भगवान को देने के लिए बुला कर या घर लाकर अपने इच्छा अनुसार एक गिलास पानी भी दे, वही बहुत काफी है।

5.10.7 गर्भवती का बच्चा न होना

जब किसी गर्भवती पेट से है और उसका समय हो गया है। बच्चा होने में दिक्कत हो रही है और ऑपरेशन का नौबत आ गया हो। तो यह देहाती नुकसा बहुत ही बड़ा कारगर सिद्ध हुआ है। श्री दया उराँव के अनुसार उनके जानकारी में अभी तक ऑपरेशन करने की जरूरत इस दवा से नहीं हुई है। इसमें जिसके लिए दवा करना है, उसके नाम से कद्दू या कोंहड़ा का जड़ उखाड़ना है। उसे सफेद धागा में बांध कर गर्भवती महिला को पूर्वज, पहान, पुजार, महतो और देवी देवताओं का नाम लेकर तीन बार नेवछ के टांग देना है। बच्चा होने पर उसे तुरन्त उस दवा को तोड़ कर फेक भी देना है। इस तरह आदिवासी समाज में अनगिनत जड़ी बूटियों से दवाईयां बनाई जाती हैं। परन्तु अब यह विलुप्त के कगार पर है। यदि इसे उपयोग किया जाय तो समाज के लिए बहुत ही कारगार साबित होगा। जिसे आज भी बचाए एवं संजो कर रखना अति अवश्यक जान पढ़ता है।

6 उपसंहार

उराँव लोकसाहित्य, उराँव लोक का दर्पण है क्योंकि उराँव लोगों का सारा जीवन–यापन लोकगीतों एवं लोककथाओं में ही समाहित रहता है। ये लोकगीत एवं लोककथा लोकसाहित्य के अन्तर्गत आते हैं। अध्ययन के माध्यम से ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वजों का गीत, कहानी एवं बुझुवल आदि बताने का यही कारण रहा होगा कि वे लोगों को जीवन जीना, संस्कृति, नाच–गान, सवंग, डर–भय आदि का ज्ञान प्रदान कर रहे थे। ताकि अपनी भाषा एवं संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए खुशी पूर्वक अपना जीवन यापन कर सके।

उराँव आदिवासी समाज सदियों से स्थान परिवर्तित करता आया है। उसका यही कारण रहा होगा कि उराँव समाज किसी लड़ाई झगड़ा को प्रतिकार नहीं किया है, इतिहास गवाह है। ये बिलकुल शान्त रहने वाली जनजाति है। किसी से लड़ाई झगड़ा करना नहीं चाहती है, इनके मन में तनिक भी लोभ लालच की भावना नहीं है। परन्तु अभी स्थिर खड़ा दिखाई देता है। लेकिन बाहरी लोगों ने इन्हें भरपूर तोड़ने का प्रयास किया है।

उराँव आदिवासी इतनी खुशहाल रहने वाली जनजाति है जो किसी सामान्य जाति में नहीं देखा जा सकता है। घर में खाने के लिए है या नहीं, परन्तु लगभग प्रत्येक घर में मांदर मिल ही जाती है। कहीं से थके मांदे आने पर मांदर बजाकर थके दिल को बहलाना और थकावट दूर करना, साथ में गीत भी गाना, ये इनकी सबसे बड़ा गुण है। पर्व त्योहारों में भी और दिनों के लिए खाने पीने के लिए है या नहीं, परन्तु त्योहार के दिन के लिए कहीं से काम कर के जुगाड़ करता है। उस पर्व में कम से कम दो दिन बहुत ही आनन्द से मनाता हैं। जो कि उराँव आदिवासी समाज का सबसे बड़ी विशेषता है।
इसके आलावे और एक इनकी एक और विशेषता मुझे देखने का मिला। देखा गया कि कोई विधवा घर में अकेली है। उसका घर में काम करने के लिए कोई नहीं है। या कहें किसी असहाय व्यक्ति को। यदि उनके घर में कोई कार्य है और लोगों को मजदूरी लगाकर उक्त कार्य कराना चहती है। तो उन्हें कार्य करने के लिए मजदूर नहीं मिलते हैं। परन्तु घर में एक हड़िया उठाकर मद्द के लिए गाँव वाले को कहेगें तो उनका काम जल्दी से हो जाएगा। इस तरह से देखा गया है कि मद्द के द्वारा बहुत सारे कार्य, जिसे गाँव के लोग खुशी पूर्वक करेगें, जो कि मजदूरी देने पर नहीं करेगें। इसी से यह जान पड़ता है कि उराँव आदिवासियों के बीच पैसा उतना मैयने नहीं रखता। जितना की कार्य में हाथ बटा देना।

कहा भी जाता है कि किसी भी जाति को मिटाना है तो उसकी भाषा और संस्कृति को मिटा दो, वह जाति स्वतः मिट जाएगी। अतः उराँव जनजाति वर्ष में अलग–अलग त्योहार मनाते हैं। प्रत्येक त्योहार के लिए अलग–अलग

गीत एवं राग है। उराँव लोग उन्हीं गीत को गाते है जो उस पर्व एवं मौसम से संबंधित हो। जो आज आधुनिकता के प्रभाव से, लोगों से दूर होता चला जा रहा है। परन्तु आधुनिकाता के दौर में लोगों का अंधविश्वास आज भी भरा पड़ा है। गांव देहात से लेकर शहर तक झाड़–फूक में विश्वास करता है और ओझा गुणी का काम करता है। यह कहाँ तक सच्चाई है, यह कहा नहीं जा सकता परन्तु अधिकतर शिक्षित परिवार भी इसमें विश्वास रखता है। लोगों को इस अंधविश्वास से उपर उठकर सोचने की जरूरत है। ताकि लोगों में अंधविश्वास को दूर किया जा सके और लोगों को टूटने से बचाया जा सके।

मैंने पाया कि उराँव लोकसाहित्य की प्रासंगिकता आज भी गाँव देहातो में बनी हुई है जो संचार के साधनों से दूर हैं। आज भी बड़े चाव से दादी, नानी–नाना के द्वारा बच्चों को कहानी किस्से सुनाया करते हैं। बच्चे भी सुनने में ललाईत रहते हैं। परन्तु आज टेलिविजन एवं अन्य मनोरंजन के साधनों का आविष्कार के फलस्वरूप इसकी प्रासंगिकता का अभाव होता जा रहा है। इस प्रकार उराँव लोकसाहित्य व्यक्ति और समाज से वंचित होता जा रहा है।

इस प्रकार उराँव लोकसाहित्य के अमूल्य ज्ञान एवं धरोहर को बनाय रखना, इसे लोगों के बीच फैलाना, अपनी भाषा, संस्कृति एवं रीति–रिवाज को संरक्षित रखना अनिवार्य है। इसी आशा के साथ मैं इस उराँव लोकसाहित्य पुस्तक को आपके सामने लाने का एक प्रयास है। इस शोध प्रबंध से किन्ही सज्जन को थोड़ी सी प्रेरणा मिले तो मैं समझूगाँ कि मेरा कार्य सफल रहा।

7 संदर्भ ग्रंथ सूची

अनुज, डॉ0 भुनेश्वर, नागपुरी लोकसाहित्य, भुवन प्रकाशन, साहू टोली, बहुबाजार, राँची, 1992

अहमद, डॉ0 जियाउद्दीन, विहार के आदिवासी, मोतीलनाल बनारसीदास बंगला रोड, जवहर नगर, दिल्ली, 1969

अनिल, डॉ0 सन्तराम, कनौजी लोकसाहित्य, अभिनव प्रकाशन, 21–ए दरियागंज, दिल्ली, प्रथम सं0 1975

आर्चर, डब्लयु0 जी0, लील खोरआ ख़ेख़ेल (पुस्तक भाग–1), भण्डार लहेरिया, सराय मु0 हनुमान, 1941

उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव, लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रकाशन लि0 93 के0पी0 कक्कड़ रोड़, इलाहाबाद, 1957

उत्प्रेती, कुन्दन लाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, अलिगढ़ द्वितीय संस्करण, 1980.

उराँव, कार्तिक, बीस वर्ष की काली रात,

उराँव चौठी'' अरा ''उराँव महावीर,'' कुँडुख़ कत्थअइन अरा कत्थटूड़, 2005, काथलिक प्रेस, राँची, 834001

उराँव, डॉ0 नारायण ''सैन्दा'' चिंचो डण्डी अरा ख़ीरी नव झारखण्ड प्रकाशन ,पुरूलिया रोड, राँची, 1, 2002

उराँव, जीतु, सिन्ध घाटी उराँव़ सभ्यता और जनजातीय भूमिका, पूर्णिमा प्रकाशन, चर्च रोड राँची, 2010

उराँव, जीतु, कुड़ख़र का प्रचीन इतिहास, सुदर्शन प्रेस चर्च रोड,राँची, 2005

उराँव, डॉ0 हरि, हिन्दी भाषा एवं उराँव़ भाषा का तुलनात्मक अध्ययन के0 के0 पब्लिकेशन, 618 कटरा, इलाहाबाद, 2010

उराँव, डॉ0 हरि, (प्रधान सम्पादक) कुँडुख़ लोक साहित्य, 2013, झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची, 834008

उराँव, सुखदेव, सरना दर्शन, अम्बेडकर मिशन प्रकाशन, डॉ0 अम्बेडकर मार्ग चितकोकहरा, पो0 अनीशाबाद, पटना–2, प्रथम संस्करण, 1993

उराँव, रघुनाथ, सत्य सरना डहर, सत्य सरना प्रार्थना सभा, मदनपूर, वरटोली, पिठौरिया, राँची (झारखण्ड) 2013

कुजूर, ब्र0 मिखाइल, उराँव संस्कृति, कृषि विकास केन्द्र भूसाड़, चन्दवा, पलामु, 1993

कुजूर, श्री मंगरा, करम, विद्यालय प्रेस, तेलिनीपाड़ा हुगली (पं0बं0), 1999

कुजूर, विजय आशिष, उराँव़ भाषा साहित्य : एक अध्ययन, साक्षी प्रिंटस, राँची 2007

कौण्डिन्य, डॉ0 भिक्षु, मिसिंग जनजाति का लोकसाहित्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, सरस्वती भण्डार, गांधीनगर, दिल्ली, 1989

खलखो, डॉ0 शान्ति, उराँव संस्कृति : परिवर्तन एवं दिशाएँ, उराँव विकास समिति, 2009

गुप्त, श्री राजेश्वर, चीन–बंगाल का जादू, देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, देहली, 6

गौतम, डॉ0 सुरेश, एवं ''गौतम डॉ0 वीणा'' भारतीय लोकसाहित्य कोश, खण्ड 3, संजय प्रकाशन, 4378/4 बी,209, जे0एम0डी0 हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 2010

टेटे, वन्दना, आदिवासी दर्शन और साहित्य, विकल्प प्रकाशन, 222/बी,प्रथम तल, गली नं0 33, पहला पुस्ता, सोनिया विहार दिल्ली, 2016

टोप्पो, एडमन, उराँव़ कत्थ खीरी अरा डण्डी, जनजातीय भाषा अकादमी, राँची 1976 (आई0ए0 भाग)

टोप्पो, एडमन, उराँव़ कत्थ खीरी अरा डण्डी, जनजातीय भाषा अकादमी, राँची 1976 (आई0ए0 भाग)

टोप्पो, डॉ0 इग्नासिया, खड़िया लोकगीतों की पहचान, काथलिक प्रेस, राँची, 2004

टोप्पो, श्रीमति सीता, स्व कार्तिक उराँव की स्मृति में, सिरासिता प्रकाशन, वास्ते श्रीमति सीता टोप्पो, करम टोली राँची, 1994।

तिर्की, डॉ0 सिकरादास, मुण्डारी लोक साहित्य में इतिहास, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, चेशायार होम रोड बरियातु, राँची, 2010

तिर्की, अहलाद, उराँव़ पुरखा खीरी, तिर्की अहलाद टंगरा टोली, काँके, राँची, 1984,

तिरकी, भिखु, उराँव सरना धर्म और संस्कृति, 2011, झारखण्ड झरोखा, दुकान न0 D.G. 23 न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट, रातु रोड राँची, 834001

तिर्की, महली लिविन्स, करम, 2008 L. Tirkey,BA/11-D,DDA Flats, new Delhi-110067

तिग्गा, जुलियस, कुडुख़ भाषा, नृत्य कला और संस्कृति, 2015 L. Tirkey,BA/11-D, Munirika , DDA Flats, New Delhi-110067

प्रसाद, डॉ0 राम रतन, आदिवासी लोगगीतों की संस्कृति, डॉ0 राम रतन प्रसाद, अनंग प्रकाशक, बी–107/गली मंदिरवाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोड़ा, दिल्ली–53, 2014

प्रसाद, डॉ0 दिनेश्वर, लोकसाहित्य और संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन 15–ए0 महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 1, 1973

परमार, डॉ0 श्याम, मालवी लोकसाहित्य, हिन्दुस्तान एकेडेमी, इलाहाबाद,

1969
भगत, डॉ0 नारायण, ख़द्दी (सरहुल), श्री समीर उराँव, विधायक, सिसई विधान सभा क्षेत्र, झारखण्ड, 2006
भगत, डॉ0 नारायण, छोटानागपुर के उराँव रीति रिवाज, 2013, झारखण्ड झरोखा, दुकान न0 D.G. 23 न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट, रातु रोड राँची, 834001
भगत, पुरखा पचबल देवचरण, अद्दी धरम, पुरखा पचबल दंवचरण भगत एवं जय चाला इन्टरप्राईजेज, रांची, 2008
भगत, पुरखा पचबल देवचरण, अद्दियर गहि नेग धरम (संस्कार)
भगत, भिखराम, राजी पड़हा की अनमोल कड़ियाँ, भाग 1
भगत, भिखराम, राजी पड़हा की संविधान, राजी पड़हा, बागी लकड़ा, बेल पादा–पड़हा, ओड़िसा, संशोधत संविधान संस्करण 2004
भगत, भिखराम, राजी पड़हा संदेश, राजी देवान, राजी पड़हा, ग्राम पो0 घाघरा, जिला गुमला। (बिहार)
भगत, महेश, उराँव़ भाषा शिक्षण एवं साहित्य, शिवांगन पब्लिकेशन, शिव भवन, कमलाकान्त रोड, रातु रोड, राँची, 2013
भगत, शिव प्रकाश, क्या आदिवासी प्राकृतिक पूजक हैं, जय चाला ईन्टरप्राईजेज, पावा टोली, हेहल ईटकी रोड, राँची, झारखण्ड, 2017
मिंज, अलबिनुस, उराँव़ हांस भांसी, एम0किरण किशोर हाउस, राँची, 1995
रोहतगी, सरोजनी, अवधी लोकसाहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, दिल्ली, 1971
वीरोत्तम, डॉ0 बी, झारखण्ड : इतिहास और संस्कृति, पंचम संस्करण 2013, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द मार्ग, राजेन्द्र नगर, पटना, 800016
लकड़ा, बिहारी, आदिवासी और लरका आन्दोलन, राजा कसपूर बारह पड़हा, 1966,
लकड़ा, प्रो0 पी0, कुड़ुख़ कत्थ पण्डी, उराँव़ भाषा प्राध्यापक साहित्य परिषद्, 1989
शर्मा, श्री राम, लोकसाहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
सिन्हा, डॉ0 आदित्य प्रसाद, लोक जीवन के सांस्कृतिक प्रसंग, विकल्प प्रकाशन, 222/बी,प्रथम तल, गली नं0 33, पहला पुस्ता, सोनिया विहार दिल्ली, 2011
सिन्हा, डॉ0 आदित्य प्रसाद, झारखण्ड की जनजातीय लोक संस्कृति पर्व–त्योहार एवं देवी देवता, विकल्प प्रकाशन,222/बी,प्रथम तल, गली नं0 33, पहला पुस्ता, सोनिया विहार दिल्ली,2016
हान, एफ0, उराँव़ फोकलोर, द बंगाल सेक्रेटरेट बुक डिपो, कलकत्ता, 1905
Archer, W.G., The Blue Grove, the Poetry of the Uraons,

2006, Gyan Publishing House, New Delhi, 110002

Ahmad, Syaed, Kim Amy, The Kurux of Bangaldesh: A Sociolinguistic Survey, 2006

Hahn, Revd. Ferd, Kurux Folklore in the Original, Calcutta, the Bengal Secretariat Book Depot. 1905.

Kobayashi, Masato & Tirkey, Bablu, The Kurux Language, Grammar, Texts and Lexicon, Leiden Boston. Brill.2017

Lakra, John, Sevartham, St. Albert's College, Faculty of Theology, Ranchi-India, 1986.

Roy, Sarad Chandra, Oraon Religion and Customs, 1915, Gyan Publishing House, New Delhi-110002

8 पत्र—पत्रिकाओं की सूची

उराँव, डॉ0 हरि, सरना फूल सरना, नवयुक संध, राँची, 2007

उराँव, डॉ0 हरि, बखला अशोक कुमार, भगत महेश, सँवसे ख़ेख़ेल ता कुँडुख़ कत्था विश्वपटल पर कुँडुख़ भाषा हिन्दराजी कुँडुख़ बकलुरिया खोंड़हा नई दिल्ली, 2012

उराँव, डॉ0 हरि, सरना फूल, सरहुल पूर्व संध्या, 17 मार्च 2010, सरना नवयुवक संघ केन्द्रीय कार्यलय, राँची, रजि0 नं0 186 / 92

उराँव, डॉ0 हरि, सरना फूल, करम अंक, 11 सितम्बर 2016, सरना नवयुवक संघ केन्द्रीय कार्यलय, राँची, रजि0 नं0 186 / 92

खलखो, डॉ0 शान्ति, उराँव़ डहरे, उराँव़ लिटेरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 2010

खलखो, डॉ0 शान्ति, बक्कहुही (शब्दक्रान्ति) तैमासिक कुँडुख़ पत्रिका, अद्दी अखडा प्रकाशक, राँची, झारखण्ड, (भारत) अंक—03 / 02— 2017, अप्रैल—जून 2017

खलखो, डॉ0 शान्ति, बक्कहुही (शब्दक्रान्ति) तैमासिक कुँडुख़ पत्रिका, अद्दी अखडा प्रकाशक, राँची, झारखण्ड, (भारत) अंक—06, जनवरी—मार्च 2018

मण्डल, सम्पादक, सरना फूल(सरहुल विशेषांक), सरना नवयुवक संघ राँची, सरना नवयुवक संघ, केन्द्रीय कार्यालय राँची, 1992

मिंज, डॉ0 उषा रानी, उराँव़ डहरे, उराँव़ लिटेरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया क्र0 7, 2013

मिंज, डॉ0 दिवाकर, और ''उराँव बिरसा'' करम त्योहार पत्रिका ,2015

सरना फूल, सरहुल पूर्व संध्या, 18 मार्च 1991,वर्ष 8,अंक 6 सरना नवयुवक संघ राँची, सरना नवयुवक संघ, केन्द्रीय कार्यालय राँची।

सरना दर्शन, राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा मुड़मा, राँची, वर्ष.2,अंक. 10, जून 2017।

9 साक्षात्कार की सूची

उराँव, अनिल, लोहरदगा, झारखण्ड
उराँव, कृष्णा, अटरिया, पो0 अटरिया, थाना, गुमला, जिला,गुमला, झारखण्ड।
उराँव, गोहरा, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला, गुमला, झारखण्ड, 835207।
उराँव, चरवा खोरा पतरा टोली, पो0 खोरा, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, चामु, पलमा डुगडुगिया, अरांगी, थाना घाघरा, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, चिमनी, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, जीतु, करौन्दा सरना टोली, पो0 करौन्दा, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, जीतु, पुरानी राँची, झारखण्ड।
उराँव, दया, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, प्रेमचन्द, पलमा डुगडुगिया, अरांगी, थाना घाघरा, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, फागु, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, मनेश्वर, अरांगी, थाना घाघरा, जिला गुमला, झारखण्ड।
उराँव, महादेव, जन्ना, पो0 डुमरडीह, थाना गुमला, जिला–गुमला, झारखण्ड।
उराँव, रावनी, ग्राम आंजन, पो0 आंजन,थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड
उराँव, सुखदेव, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, झारखण्ड।
कुमारी, चन्द्रमुनी, सुपाली, पो0 मुरगू, थाना सिसई, जिला गुमला, झारखण्ड।
कुमारी, जीरामनी, खरता, थाना कैरा, जिला लोहरदगा, झारखण्ड।
कुमारी, पाण्डो, आंरगी, काचापारा, थाना घाघरा, जिला गुमला, झारखण्ड।
कुमारी, रायमुनी, सुपाली, पो0 मुरगू, थाना सिसई, जिला गुमला, झारखण्ड।
कुमारी, सीता, चुगलू, पो0 सकरपुर गम्हरिया, थाना गुमला, जिला–गुमला, झारखण्ड।
कुमारी, सुरजमुनी, चुगलू, पो0 सकरपुर गम्हरिया, थाना गुमला, जिला–गुमला, झारखण्ड।
कुमारी, सुमित्रा, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।
गोप, रति, पुगु खोपा टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।

तिर्की, बबलु, बेन्दोरा, थाना चैनपुर, जिला गुमला, झारखण्ड।

तिर्की, बुद्देव, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।

देवी, बन्दी, चुगलू, पो0 सकरपुर गम्हरिया, थाना गुमला, जिला–गुमला, झारखण्ड।

देवी, मंगरी, इर्रो फटकपुर, पो0 बसुआ, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।

देवी, भिनसारी, पुगु बड़का टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला–गुमला, झारखण्ड, 835207।

देवी, रूपनी, पो0 सकरपुर गम्हरिया, थाना व जिला–गुमला, झारखण्ड,।

बड़ाईक, मनोज चीक, कोटेंगसेरा, गुमला, झारखण्ड।

भगत, जलेश्वर, सरना प्रार्थना सभा लोहरदगा, झारखण्ड।

भगत, देवराम, जिंड़गा, पो0 सकरपुर गम्हरिया, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।

भगत, डॉ0 नारायण, कुशुम विहार, रोड न0 09, मोरहवादी, राँची, झारखण्ड।

भगत, बलकु, दुन्दुरिया, गुमला, झारखण्ड।

मिंज, माधुरी, जिंड़गा, पो0 सकरपुर गम्हरिया, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।

लकड़ा, सोमनाथ, पुगु करमडीपा, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला–गुमला।

लोहरा, चुन्दा, पुगु खोपा टोली, पो0 अरमई, थाना गुमला, जिला गुमला, झारखण्ड।

10 सामग्री संकलन क्षेत्र

प्रखण्ड गुमला के ग्राम–आँजन, जन्ना, चुगलू, इर्रो, फटकपुर, अटरिया, पुगु बड़का टोली, खोपा टाली, पुगु करम डीपा, जिड़ंगा, कोटेंग सेरा, खोरा पतरा टोली, करौन्दा सरना टोली, दुन्दुरिया।
प्रखण्ड सिसई – बरगाँव सेला टोली, सुपली, मुर्गू
प्रखण्ड घाघरा – आंरगी, पलमा डुगडुगिया
प्रखण्ड – चैनपुर
लोहरदगा – लोहरदगा जिला सरना प्रार्थना सभा, खरता कैरो थाना,
राँची – पुरानी राँची, मोरहाबादी

11 शब्द सूची

अगुवा 84,91
अड़ी 115
अचरेल 133
अपन बिरन 149,150
अनुसूचित जनजाति 36
अरवा चावल 98
अस्वाभाविक मृत्यु 154
आदमी बांधने का मंत्र 283
आम डाली 98,140
आतीर पातीर 169
आदि धर्म 36,37,38
आसारी 25
ओझा गुणी 254
इक्कड़िंग बक्कड़िंग 160
ईमली बच्चा 82
उराँव 02
उराँव में सादरी का प्रयोग 23
उपदेशी भगत 258
उरागन ठाकुर 02
उतुर खिलना 145
ऊसंगी 58
एकना दिम तोकना 17
एन्दरा हो'ओय 161
ऐतिहासिक कथा 208
कंड़सा गांथना 100
कंड़सा नाचवाना 121,152
कुडुख़ 02
कूंड़ा 122
कुण्डी 150
कुण्डी का समान 150
कुडुख़ धर्म 36,286
कुड़खय का तुड़कय 03
कुसराईन 71
कत्थ पण्डी 7
कनियारी गाड़ना 96
कपड़ा पहनाना 59
करम कथा 235
करम काटना 54
करम गाड़ना 57
करम डौड़ा 58,87
करम पर्व 51
करम पहान के घर 54
करम विर्सजन 63
करम पूजा 58
करम की तीन डाली 237
करम पेड़ की महत्ता 66,246
कसैली 98
कन्ना 116
कातिक करम 66
कांज कुंवार उतारना 113
कांज कुंवार विवाह 109
कस्सा हड़िया 115
कडिरका बोड़ए 117
कांजी पानी 71
काया बांधने का मंत्र 271
कान बिधवान 81
काम बांटना 278
काला जादु मंत्र 257
कोना कोना 165
किन्दारना 238
कीमाड़ो 57
कीरो डण्डा 126
कुडुख़ धर्म 36
कुछ बीमारी की दवा 297
कुदरत 39
कुड्डा 78,80
केकड़ा पकड़ना 42
केन्दरा अस्सुस 211
कोसना 41
कोंहा बेंज्जा 152
कौंरू मंत्र के प्रकार 280
कौंरू भगत 277

खटवाईर 169
खाना देना 117
खाना पकाना 138
खाता बही में नाम 114
खुरहा 297
खेती के गीत 69
खेल का उद्देश्य 158
खेल का महत्व 189
खोल्ला 74
खीर भात पकाना 42
खीरा चढ़ाना 60,239
ख़द्दी 33,207
ख़द्दी मनाने का उद्देश्य 41
ख़ेख़ेल बेंज्जा 33,44
गया 167
गमी 136
गमी का औचित्य 137
गर्भावास्था में सावधानी 72
गरूड़ मंत्र 275
गंगा जमुना की कथा 193
गंगा पार 167
गांव बनाना 152
गुगु चू 162
गुड़ चिवड़ा 239
गुरू दक्षिणा 270,279
गोबर गड्ढा 71
गोन्दली 27,69
गोदना 81
घड़ा 115
घर पवित्र करना 151
घर देखने जाना 86
चंगरी 96
चकर मकर 171
चाल 207
चाल गुटी 160
चाला टोंक्का 33,44,205
चाला टोंक्का में पूजा 43
चाला पच्चो 33,44,207
चामठोक 72
चाम बैठाना 82
चावल रंगना 89
चिगली बाकना 41
चिंची बुंची 172
चीती 273
ची चन्दो पापा 171
चुमावन 122
चुरिल 75,137,153
चुरिल गढ़हा 75
चुन्दी रखना 77
चेर बेरे 172
चोल्ला ख़द्द 84
छट्ठी 77
छटका 70
छट्ठी शब्द का नामकरण 77
छाया लाना 148
छोटा मेहमानी 90
छिलका रोटी 54
छिठा 296
छुर्रे 162
छूरा 74
छोटा मेहमान 98
जंगला गदी 166
जनतंत्र 28
जतरा 28
जन्म संस्कार 71
जनी शिकार 24
जावां उठाना 51,238
जावां फूल 60,238
जामहड़ 73
जितिया करम 65,245
जेठवारी गीत 25
जेनऊ 03
जेरका बच्चा 76
जुब्बी ए–रना 88

जुड्डुब खेत्तु बोड़ए 91
जुवाईठ 114
झण्डा 147
झमीरा मंत्र 281
झरनी मंत्र 261,280
झरनी मंत्र के समान 261
झिपा 175
टट्टी में दीया जलाना 238
टोना 249
टुना 252
ठड्डुपास 40
ठाकुर 03
टाना धर्म 287
टाना भगत 286
टाना भगतों का सामाजिक कार्य 290
टाना भगतों की विशेषता 291
टाना भगतों की विनती 292
टाना मंत्र 288
टुण्टा 140
ढेला पूजा 117,126
ढुड़ही 98
ढुड़हवा 102
ढेला पूजा 117,126
डउड़ा 58
डलिया देखना 259
डलिया मंत्र 260
डली ढिबा 119
डण्डा कट्टना 38,126
डाईन 257
डाईन विद्या 253
डाईन डईया के प्रति धारणा 255
डुण्डे 94
डिड्गर कुक्कोस 198
डिम्बो बोहा 126
तंत्र मंत्र की उत्पति 250
तपावन 143
तम्बाकु 67,88
तलवार पकड़ना 104
तांबा पैसा 98
तिलक बैठाना 81
तीन चक्कर लगाना 59
तुलसी 143
तुलसी की विशेषता 143
तुली भीख 274
तुरी बाल 74
दंतना 80
दरवाजा ढकना 108
दसई करम 65
दड़ियाना 115
दानाहा भगत 284
दानो दाईत 195
दक्षिण दिशा में सिर करना 139
देव कुड़िया 258
दो भाई एक बहन 198
दोना पकड़ना 89
दोवा बर विवाह 109
दुबला घांस 98
दुवारी लीपना 278
दोना पकड़ना 89
दोषी 62
धप्पा 161
धर्मे 33,38,39
धर्मी अयंग 205
धर्मेश 38
धार्मिक कथा 202
धाईध दवा 297
धान और उरद 79
धान काटने के गीत 70
धुकना हड़िया 117
धुमकुड़िया 187
धुवन 98
धूप धूवन जलाना 60
धोकड़ी लड्डु 48

नईहरी भूत 133
नहलाना 59,102
नाक घरवा 167
नागमतिया भगत 267
नागमतिया मंत्र के प्रकार 270
नाच के आधार पर 20
नाद खेदना 42
नाम पकड़ना 76
नासन गठरी 253
नाभी गाड़ना 78
निषेध 143
नेखय हकुड़ 163
नेग बरी 95
नेतो डुबिन डाईन 252
नेम्हा भगत 284
ने–म 40
नेवथरिया बिदा 129
नेर्र डिम्बो 125
नौर पूंप 42
पट्टा में विवाह 114
पनबरती 105,105
पत्ता तोड़ना 94
परसौंती 80
पईरी मंज्जा 173
पहला पद प्रश्न 22
पशु–पक्षि की कथा 193
परिकथा 218
परि के द्वारा सहायता 218
पहान का चुनाव 39
पहान पहानिन का विवाह 44
पाठ बांधना 268,277
पाठ घुंसने की विधि 268,277
पान कसैली 128
पानी चढ़ाना 42
पानी लाना 125
पाप 62
पुतड़ी जलाना 145
पुल्खी गाड़ना 155
पूजा करना 58
पूजा मंत्र 270
पूंप खे़र्रना 45
पैर बझाना 298
पैर धोना 90
पोंटोंग 251
प्रतीक चिन्ह 71
प्रसूति का खान–पानी 73
प्रसव पूर्व तैयारी 74
प्राणाम 90
प्रेम विवाह 109
फलना 55
फूल बांटना 61
बंधनी मंत्र 272
बंक्की बींड़ी 202
ब'आ तो कोकरा 165
बड़ा मेहमान 91
बच्चा खेलाना 106
बण्डा चिगालो 231
बज्जा 70,122,137
बरका सोंपना 119
बहुरता 131
बबु चढ़ाना 60
बबु बांटना 64
बयनाला बोड़'ए 117
बाल नदी में बहाना 79
बाल कथा 223
बाला पहनाना 83
बाईंह जोड़ना 92,118
बारात आना 107
बांस डाली 98
बिसारी 279
बिसाहा 254
बिहरी 2269
बित्ती 168
बीजक मंत्र 269

बीजरको 137
बुढ़ी करम 48
बैराखी 127
बोजड़ो 81
भक्ति धर्म 286
भगतों का मंत्र 257
भगतों के प्रकार 257
भसुर मनवाना 131
भाख काटना 125
भाई बहन की कथा 223
भुला भटका मंत्र 272
भूत–प्रेत की कथा 195
भूंईफूट भगत 258
भीतर लीपना 278
भोजन देना 144
मउवा 137
मंत्र 228,260,297,298,299
मंत्र की परिभाषा 249
मंत्र का भाग 256
मक्का मन्न 46
मड़वा गाड़ना 95
मलदव 75
मन्न 157
मनोरंजन कथा 211
महेदो जाट 97
मानव संबंधी कथा 189
मानी पिटरी 115
माँ का दूध 299
मिरघीरी 108
मुड़हा बच्चा 75
मुर्गी बलि देना 43
मे–रा 87
मोरा 17,70
रंगोनी काटा 76
रम्फ 02
रास्ता चलने का मंत्र 271,282
राख में चिन्ह देखना 142
रूईदास ता कुड़ुख़ बे–लस 208
रेचा 167
रोगे करम 48
रोटी चिवड़ा 60
रोपा गीत 69
लड़की बिदाई 124
लड़का–लड़की का बातचीत 111
लकड़ी फाड़ना 89
लेगा लाना 130
लीख फटाफट 164
लिंग पता करना 79
लिटिया चोर 226
लोकगीत की विशेषता 184
लौटाने का मंत्र 272
लौह सिंग्हा 147
वर्जनाएं 83,131
विनती 61
विष उतारने का मंत्र 273
विषकरणा 298
विदाई 94,124
विवाह समान 110
विवाह लड्डु 98
विवाह के प्रकार 109
शरीर बांधने का मंत्र 271,282
शगुन अपशगुन 87
शव जलाना 142
शव को खाना–पीना 139
शुद्धिकरण 76
शून्य का उपासक 35
सृजन कथा 215
सखुवा पेड़ 95
सगई विवाह 109
समधी बोड़'ए 117
समधी जोड़ना 92
समधी में वार्तालाप 119
सरना 33,34,35
सरना टांड़ 33

सरना माँ 33
सरहुल 34,35
सरहुल की महत्ता 45
सरना धर्म 35
सरात आना 127
सर्रहुल्लो 35
सफेद मंत्र 257
सामाजिक कथा 226
साल 46
सारना 35
साईस बराकत 64
साहसिक कथा 198
सादरी 24
सिन्दुर 98
सिन्दुर टीका देना 60
सिर मुड़ाना 142
सिधु 98
सिद्धी 269,279
सीखा 81
सीरा लीपना 278
सुड़ी मण्डी 43
सुपाड़ी 98
सुरगुजा फूल 239
सूत बंधौनी 89
सूप बैठाना 45
सून्य विन्दु 35
सोखा भगत 258
सोतरा 40
स्नान करना 125
हड्डी चुनना 147
हड़िया लेना 87
हसिया 105
हीरी जोरी बांधना 149
हीरी जोरी उतारना 151
क्षेत्र के आधार पर 21

12 परिशिष्ट

अगुवा – किसी भी शुभ कार्य, खासकर विवाह के लिए लड़का–लड़की या उनके परिवार के बीच सूचना वाहक का कार्य करता है। विवाह में बिना अगुवा का कार्य नहीं होता है।

उड़िया – बांस का बना होता है। बास को टोकरी का आकार के रूप में बनाते हैं। परन्तु यह टोकरी से बड़ा होता है।

कडरू – भैंस का बच्चा को कडरू कहते हैं।

करम डौड़ा–डौड़ा यानि डलिया, करम में पूजा थाली के रूप में डौड़ा का प्रयोग करते हैं, वही करम डौड़ा है। जो बांस का बना पराथ की आकृति के समान होती है।

कांजी पानी–बासी भोजन का पानी को कांजी पानी कहते हैं। इस पानी को घड़ा में रखते हैं। अधिक दिन का कांजी पानी और अच्छा होता है। जिससे जन्म के बाद बच्चों का मुंह धोया जाता है।

कांसी – जिसे पोण्डरा भी कहते हैं। यह एक प्रकार का घांस ही है, जिसका पत्ता लम्बा तथा फूल सफेद होता है, जिसे सितम्बर महीने के आस–पास खेतों में देखा जा सकता है, जो सफेद दिखाई देता है।

कुण्डी – मृत्यु संस्कार के अन्तिम चरण में, मृत आत्मा को जहाँ स्थान देते हैं, उस स्थान को कुण्डी कहते हैं। यह नदी के किनारे ही होती है।

केउन्द – यह एक पेड़ है, जिसे भेलवा भी कहते हैं, जिसके पत्ता से बीड़ी बनाया जाता है।

कुसराईन – गर्भवती महिला को सेवा–सुथर करने वाली महिला को कुसराईन कहते हैं।

खोपा – महिलायें अपने बाल को समेटकर पीछे की ओर अपने बालों को समेटकर गोल बांधती है। जिसे ही खोपा कहते हैं।

ग्वालिन – गाय, बैल चराने वाली महिला को ग्वालिन महिला कहते है।

गुंगू पत्ता– जिसे सिहाईर या पानी पत्ता भी कहते हैं। जिससे डण्टलों को जोड़ कर बनाया जाता है। जिसका आगे की ओर खुला रहता है। वर्षा के लिए पहनने के लिए आरामदाय और गर्म रहता है। जिसे ढकाकर अराम से खेतों में काम किया जा सकता है। इसे अधिकतर महिलायें पहनती है।

गुलाईची फूल – यह एक प्रकार का पेड़ है, जिसका फूल सफेद होता है। जिसे उराँव जाति के सभी पूजा में चढाया जाता है।

गोन्दली – इसका बीज मड़ुवा के बीच जैसा होता है। इसे धान की तरह टांड़ में बोते हैं। यह गोड़ धान से पहले पकता है। इसलिए पहले जमाने में भोजन के रूप में खाने के लिए प्रयोग करते थे। आज यह नहीं दिखाई देता है।

गोंयठा – गोबर को लेकर चट्टान या दिवाल में गोल बनाकर सुखाया जाता है या कहें गोबर के सूखे हुए अंश को ही गोंयठा कहा जाता है।

चंगरी – बांस को पतला फाड़कर चारकोण बनाया जाता है। जो प्रीच की तरह होता है। कुछ चंगरी गोल भी होता है।

छिलका रोटी–चावल को भिंगाकर, उसे सिलोट में पीस कर तई में रोटी पकाते हैं। पर्व त्योहार में अधिकतर छिलका रोटी ही बनता है।

जामहड़ – जामहड़ सिर के माथा में होता है। यह बहुत ही पतला तथा सफेद होता है। जिन गर्ववती महिलाओं में जामहड़ अधिक होता है, उसे बच्चा देने में तकलीप नहीं होती है। चावल खाने और चावल का माड़ पीने से जामहड़ अधिक बैठता है।

जुब्बी – जहाँ बरतन वैग्यरह धोते हैं, उस स्थान को जुब्बी कहते हैं।

डम्भेरा – ट्टठी या दीया, जो मिट्टी का बना होता है। दीया का बड़ा रूप ही डम्भेरा है।

डिम्बोबोहा– यह एक छोटा झाड़ी नुमा पौधा होता है।

ढुड़ही – यह एक प्रकार का घांस होता है, जिसका पत्ता, प्याज के पत्ता जैसा लम्बा होता है, जो अधिकतर नदी, नाला या दलदल वाली स्थान में पाया जाता है।

दोना – दोना, पत्ता को सिलकर बनाते हैं। सखुवा के पत्ता को दोनों छोर में पत्ता को ऐसा मोड़ते हुए सिलते हैं, जिससे बीच में गड्ढा बन जाय,

नूड़ा – घर को गोबर से लिपाई करने के लिए पूवाल का प्रयोग करते हैं। जिस पुवाल के साथ लिपाई करते हैं, उसे ही नूड़ा कहते हैं।

पकसी – यह लकड़ी का बना होता है। हल जोतने के समय, दोनों बैल के कन्धा के ऊपर लकड़ी को रखते हैं, वही पकसी है।

पींड़ा – बाहर छत के नीचे, दीवाल से सटा हुआ और जमीन से कुछ ऊँचा, बैठने के लिए बनाते हैं, जिसे ही पींड़ा कहा जाता है। परन्तु कहीं पूजा स्थान में भी झण्डा से लगा हुआ, कुछ ऊँचा उठा हुआ भाग को भी पींड़ा कहते हैं। झण्डा से लगा हुआ को सिरा भी कहते हैं।

पुतड़ी – मृत्यु संस्कार के दिन समसान घाट में मिट्टी का मूर्ति बनाकर जलाते हैं, जिसे ही पुतड़ी जलाना कहते हैं।

बरबण्डो – अधिक गर्मी पड़ने पर हवा का नमी सुख जाता है और हवा चारों ओर चक्कर लगाते हुए उपर की ओर उठता है। बरबण्डो कहते हैं।

बिदगी – उरद दाल को भिंगाकर, पीसा हुआ को बिदगी कहते हैं। जिसे ही रोटी पकाया जाता है।

बिण्डो – पुवाल को मेढकर गोल बनाकर, पुवाल से ही बांध दिया जाता है।

बीजरको– किन्ही का मृत्यु के समय आंगन में धान निकालते हैं। वही धान को बीजरको कहते हैं।

बेनवा – बांस को पतला चीर कर मोटा धागा से चौखोड़ बीनकर बनाते हैं,

जिसे पकड़ने के लिए डण्टा लगाते हैं। गर्मी में इसे ही चलाकर हवा का आनन्द लेते थे। दूसरा सिर्फ बांस का ही बना होता है।

बैराखी – यह झण्डा है। उराँव जाति खास रूप से विवाह संस्कार के समय, ढेला पूजा में तथा मृत्यु संस्कार के गमी में सफेद कपड़ा का प्रयोग करते हैं। यह त्रिकोण होता है तथा सफेद कपड़ा का बना होता है।

भारजोर – किसी भी सामग्री को ढो कर ले जाने की क्रिया को भार–जोर कहते हैं। किसी भी सामग्री को बहिंगा के सहारे ढोया जाता है। बहिंगा बांस का लगभग पांच–छः फीट का लम्बा डण्डा जैसा होता है। उसी में दोनों तरफ रस्सी के सहारे झुला कर किसी भी वस्तु को ढोया जाता है।

भूंडू – दीमक का बनाया हुआ ऊँचा उठा भाग को भूंडू कहते हैं।

मथाईन – टीला या पहाड़ का ऊँचा भाग को मथाईन कहते हैं।

महादेव जाट–जिसे ही जरजटा, कईसलगो भी कहते हैं। यह कांटीला और लतेदार होता है। इसका जड़ से कई प्रकार के बीमारी का दवा भी बनाया जाता है।

मुटिया कपड़ा – खादी कपड़ा।

मोरा – मोरा धान का पोटली है, धान को सुरक्षित रखने के लिए बीन्द से मोरा बांधते हैं। बीन्द पुवाल से ही बनता हैं।

रंगबाज – यह बच्चों में होने वाला एक बीमारी है। जो नस को पकड़ता है। जिससे नस बन्द होते जाता है और नस का खून काला दिखाई देता है। नस फटने पर बच्चे का मृत्यु भी हो सकती है। गोहरा उराँव के अनुसार गर्वधारण के लगभग 5–6 महीना के आस–पास एक बार सूवर का बांस खिलाना चाहिए। जिससे यह रोग होने की संभवना नहीं रहती है।

रानू – चावल का आंटा में कई प्रकार के जड़ी–बूटियों को मिलाकर अण्टा की तरह गोल बनाकर पूवाल में रखते हैं तथा कुछ दिन के बाद वह गर्म हो जाता है, उसके बाद उसक निकाल कर छाया में सूखाते हैं। जिससे हड़िया बनाया जाता है।

लावा – मकई का भुट्टा जैसा ही धान को लावा फूटाया जाता है।

लिंगी – कांसी का पत्ता को ऐंठकर बनाते हैं। महिला हो तो तीन और पुरूष हो तो पांच डण्टल जैसा बनाते हैं।

लुड़पी – अरवा चावल का गूंथा हुआ को लगभग दो इंच जैसे गोल बनाकर तेल में पकाते हैं। जिसके अन्दर छेद करने के लिए पीपल का डण्टल डालते हैं।

लेण्डा फूल– यह दलदल वाली स्थान में पाया जाता है। इसका छोटा सा पौधा होता है तथा इसका फूल का रंग नीला होता है। कई एक गांव मे इसी फूल को करम पूजा में चढाते हैं। महिलायें खोपा में तथा पुरूष

कान में खोंसाते हैं

लौहसिंग्हा –लोहार द्वारा भट्ठी में लोहा गलाने पर, आग में अधिक तपने से लोहे का कुछ अंश वही भट्ठी में तप कर छोटा–छोटा गिरता है।

सिधु – यह एक पेड़ होता है।

सिलोट – यह पत्थर का बना होता है। जो लगभग डेढ़ फीट लम्बा तथा एक फीट चौड़ा होता है। जिसे कुडुख़ भाषा में पट्टा या पट्टचाचा भी कहते हैं। इसके उपरी सतह में दहिना से बांया थोड़ा–थोड़ा गढढ़ा खोदा जाता है। इसका उपयोग घर में मशाला पीसने के लिए उपयोग करते हैं।

सोतरा – सोतरा का अर्थ अपवित्र होना होता है।

परिचय

नाम : डॉ. तेतरू उराँव

पिता : स्व. दया उराँव

माता : स्व. चिमनी उराँव

जन्म : 08 दिसम्बर, 1983

जन्म स्थान : पुगु बड़का टोली, पोस्ट-अरमई, जिला-गुमला

शिक्षा : राजकीय प्राथमिक विद्यालय, पुगु घाँसी टोली, गुमला।
माध्यमिक राज्य सम्पोषित उच्च विद्यालय, कोलेबीरा।
इन्टर+स्नातक (अर्थशास्त्र) - कार्तिक उराँव महाविद्यालय, गुमला
स्नातकोत्तर (कुड़ुख़) राँची विश्वविद्यालय राँची, यू.जी.सी. नेट,
पीएच.डी.-उराँव लोकसाहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

Life Membership-Dravidian Linguistic Association

Profession - Assistant Professor in Kurux, Kartik Oraon College, Gumla. R.U. Ranchi, Jharkhand, India

Publication - जम्बु झरिया, गाँव का खेल, नेर्र सहिया, कुँडुख़ खेल, उराँव और मुण्डा आदिवासियों के मृत्यु संस्कार का अध्ययन, द्रविड़ कुल की कुँडुख़ एवं तमिल भाषा, उराँव समुदाय की कुँडुख़ एवं तमिल भाषा का अन्त: संबंध, Kurux, अगहन जतरा, Etymological Source of Kurux Expressive.

Workshop : Kurux, Lexicography Workshop, Linguistics Department, University of Tokyo, Japan, (09 To 17 Dec. 2016)

Kurux and Malto Lexicography Workshop, Research Institute for Humanity and Nature, Japan. (25 July to 2 Aug. 2019)

Paper Presented - International Conference on Dravidian Linguistics 2016 & 44th All India Conference of Dravidian Linguists, University of Hydrabad (16th To 18th Jun 2016)

UGC SPONSORED INTERNATIONAL SEMINAR. HISTORY OF MEGALITHIC CULTURE AND THEIR SEQUENTIAL MIGRATION TO ASIAN COUNTRIES WITH AN ANALYTICAL VIEW OF INDIAN TRIBES. DECEMBER 10-12, 2017.

झारखण्ड की ऐतिहासिक धरोहर एवं कला-परम्परा कला संस्कृति खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, राज्य संग्रहालय, राँची, होटवार, राँची (दिनांक 16.02.2013)

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand) Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jh.jharokharnc@gmail.com

ISBN : 978-81-951741-1-9

978-81-951741-1-9

मूल्य : 350.00 रू.